SOCIAL STUDIES (Hindi Medium)
CLASS VII

सामाजिक अध्ययन कक्षा - VII

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, तेलंगाणा हैदराबाद

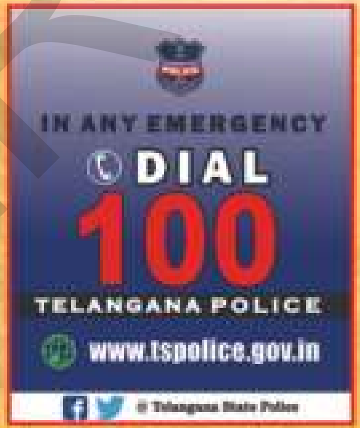

तेलंगाणा सरकार द्वारा मुफ्त वितरित

सामाजिक अध्ययन कक्षा VII

सामाजिक अध्ययन

कक्षा VII

Free

SOCIAL STUDIES (Hindi Medium)
CLASS VII

तेलंगाणा सरकार द्वारा मुफ्त वितरित

SCERT TELANGANA

बाल अधिकार बिल

प्रत्येक अठारह वर्ष से कम आयु के बालकों की अभिवृद्धि तथा विकास, उसके माता-पिता की प्राथमिक जिम्मेदारी है। राज्यों को बालकों के अधिकारों को आश्वस्त करते हुए उनका सम्मान करना होगा।

- मुझे अपने दृष्टिकोणों को सहजरूप रूप में अभिव्यक्त करने का अधिकार है, जिसे गंभीरता से लिया जाना चाहिए, और प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है कि वह दूसरों को सुने। [अनुच्छेद-12,13]
- मुझे अच्छे स्वास्थ्य की देखरेख का अधिकार है और प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है कि वह दूसरों को प्राथमिक स्वास्थ्य की देखरेख और स्वच्छ पेयजल प्राप्त करने में सहयोग दे। [अनुच्छेद- 24]
- मुझे अच्छी शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है, और प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है कि वह सभी बच्चों को पाठशाला जाने के लिए प्रेरित करे। [अनुच्छेद- 28,29,23]
- मुझे प्यार पाने और चोट एवं दुर्व्यवहार से सुरक्षा का अधिकार है और प्रत्येक व्यक्ति का यह दायित्व है कि वह दूसरों को प्यार करे और उसका ध्यान रखे। [अनुच्छेद-19]
- मुझे अपनी योग्यताओं को प्राप्त करने का अधिकार है, और प्रत्येक व्यक्ति का यह दायित्व है कि वह दूसरों की भिन्नताओं को सम्मान दे। [अनुच्छेद- 23]
- मुझे अपनी परंपराओं और विश्वासों पर गर्व करने का अधिकार है, और प्रत्येक व्यक्ति का यह दायित्व है कि वह दूसरों की संस्कृति एवं विश्वास को सम्मान दे। [अनुच्छेद- 29,30]
- मुझे अपनी सुरक्षा और सुविधाजनक आवास का अधिकार है, और प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है कि वह सभी बच्चों को आवास के लिए आश्वस्त करे। [अनुच्छेद- 27]
- मुझे त्रुटियाँ करने का अधिकार है, और प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है कि वह स्वीकार करे कि हम अपनी गलतियों से सीखते हैं। [अनुच्छेद- 28]
- मुझे उत्तम भोजन का अधिकार है और यह प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है कि लोगों को भूख से रक्षा करे। [अनुच्छेद- 24]
- मुझे स्वच्छ वातावरण का अधिकार है, और प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है कि वह इसे प्रदूषित न करे। [अनुच्छेद- 29]
- मुझे अहिंसा के साथ रहने का अधिकार है (शाब्दिक, शारीरिक, मानसिक), और प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है कि वह दूसरों को हानि न पहुँचाये। [अनुच्छेद - 28, 37]
- मुझे आर्थिक शोषण से सुरक्षा का अधिकार है, और प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है कि वह आश्वस्त करे कि किसी बच्चे को काम करने के लिए दबाव नहीं डाला जाये और उसे एक एक मुक्त एवं सुरक्षित वातावरण मिले। [अनुच्छेद- 32, 34]

इन अधिकारों और दायित्वों को संयुक्त राष्ट्र के बाल अधिकार सम्मेलन-1989 में प्रतिपादित किया गया। इसमें यह संपूर्ण विश्व के बच्चों और प्रौढ़ लोगों के अधिकार निहित हैं। भारत सरकार ने इस दस्तावेज पर 1992 में हस्ताक्षर किये।

क्या आपको पता है कि इन प्राकृतिक आपदाओं का सामना करते समय हमें क्या करना चाहिए और क्या नहीं?

SCERT TELANGANA

सामाजिक अध्ययन

कक्षा- VII

Social Studies (Hindi Medium)

संपादक

श्री सी. एन. शुभ्रमन्यम,
एकलव्य, मध्य प्रदेश

प्रो. जी. ओंकारनाथ, अर्थशास्त्र विभाग,
हैदराबाद विश्वविद्यालय

प्रो. आई. लक्ष्मी, इतिहास विभाग, उस्मानिया
विश्वविद्यालय, हैदराबाद

प्रो. एस. पद्मजा, भूगोलशास्त्र विभाग,
उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद

डॉ. एम. वी. श्रीनिवासन, असिस्टेंट प्रोफेसर,
डी.ई.एस.एस.एच., एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली

डॉ. के नारायण रेड्डी, असिस्टेंट प्रोफेसर,
भूगोलशास्त्र विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद

डॉ. एम.वी.एस.वी. प्रसाद, असिस्टेंट प्रोफेसर,
डी.ई.एस.एस.एच., एन.सी.ई.आर.टी, नयी दिल्ली

श्री के. सुरेश
मंचि पुस्तकम, हैदराबाद

डॉ. सी. दयाकर रेड्डी, असोसियेट प्रोफेसर, महिला
महाविद्यालय, उस्मनिया युनिवर्सिटी।

श्री राममूर्ति शर्मा,
शिक्षा विभाग, पंजाब सरकार

श्रीमती के. भाग्य लक्ष्मी, मंचि पुस्तकम, हैदराबाद।

श्री एलेक्स.एम. जॉर्ज, एकलव्य, मध्य प्रदेश

सलाहकार लिंग संवेदनशीलता

श्रीमती चारु सिन्हा, IPS
निदेशक, A.C.B तेलंगाणा, हैदराबाद

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

श्रीमती शेषु कुमारी, निदेशक,
एस.सी.ई.आर.टी.,
हैदराबाद

श्री बी. सुधाकर, निदेशक,
सरकारी पाठ्यपुस्तक मुद्रण विभाग,
हैदराबाद

डॉ. एन. उपेन्द्र रेड्डी, प्रोफेसर,
पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तक विभाग,
एस.सी.ई.आर.टी., हैदराबाद

तेलंगाणा सरकार द्वारा प्रकाशित, हैदराबाद

कानून का आदर करो। शिक्षा द्वारा बढ़ो।

अधिकार प्राप्त करो। विनम्र व्यवहार करो।

SCERT TELANGANA

© Government of Telangana, Hyderabad.

First Published 2012

New Impressions 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020

All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form or by any means without the prior permission in writing of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition including this condition being imposed on the subsequent purchaser.

The copy right holder of this book is the Director of School Education, Hyderabad, Telangana.
We have used some photographs which are under creative common licence. They are acknowledge at the end of the book.

This Book has been printed on 70 G.S.M. Maplitho,
Title Page 200 G.S.M. White Art Card

Free Distribution by Government of Telangana 2020-21

Printed in India
at the Telangana Govt. Text Book Press,
Mint Compound, Hyderabad,
Telangana.

SCERT TELANGANA

रचयिता

श्री के. लक्ष्मीनारायण, प्रवक्ता, डी.आई.ई.टी., अंगलुर, कृष्णा
श्री एम. नरसिंहा रेड्डी, जी.एच.एम., जेड.पी.एच.एस.पेद्दाजंगमपल्ली, वाई.एस.आर.कड़पा
श्री के सुब्रहमण्यम, प्रवक्ता, डी.आई.ई.टी., कर्नूल
श्री एम पापय्या, प्रवक्ता, एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाना, हैदराबाद
डॉ. बी.वी.एन. स्वामी, एस.ए., जी.एच.एस. हुज़ूराबाद, करीमनगर
श्री पी. श्रीनिवासुलु, एस.ए., जेड.पी.एच.एस. बंडापोसानिपल्ली, मेदक
श्री अयाचितुला लक्ष्मण राव, एस.ए.,जी.एच.एस. धंगरवाड़ी, करीमनगर
श्रीमती एस.सुवर्णा देवी, प्रवक्ता, सरकारी स्नातक महाविद्यालय, नरसापुर, मेदक
डॉ. राचर्ला गणपति, एस.ए., जेड.पी.एच.एस. लादेल्ला, वरंगल
श्री कोरिवि श्रीनिवास राव, एस.ए., एम.पी.यू.पी.एस., पी.आर.पल्ली, तेक्काली, श्रीकाकुलम.
श्री सीएच. राधाकृष्णा, एस.ए., जेड.पी.एच.एस. वेंकटापुरम, श्रीकाकुलम
श्री. टी. राम कृष्णा, एस.ए., जेड.पी.एच.एस. देव पनुगोंडा, पश्चिम गोदावरी
श्री के. कुमार स्वामी, एस.ए. जेड.पी.एच.एस. दौडेपल्ली, आदिलाबाद
श्रीमती बी. सरला, एस.ए. , जेड.पी.जी.एच.एस. इन्दुकुरपेट, नेल्लूर
श्री पी.वी.कृष्णा राव, एल.एफ.एल.एच.एम. पी.एस. मोहल्ला सं. 16, येल्लंदु, खम्मम
श्री ए.आर. रमेश राव, एस.ए., जेड.पी.एच.एस. रोड्डम, अनंतपुर
श्री पी.वी.कृष्णा राव, एल.एफ.एल.एच.एम. पी.एस. मोहल्ला सं. 16, येल्लंदु, खम्मम
श्री पी.रथंगापानी रेड्डी, एस.ए., जेड़.पी.एच.एस. पोलकमपल्ली, अड़कल, महबूबनगर
श्री पी.गंगीरेड्डी, एस.ए., जेड़.पी.एच.एस., कोंदुर्ग, महबूबनगर
डॉ. चिकनाला श्रीनवास, जी.एच.एम., दुर्गमगड्डा, करीमनगर
श्री यु.आनन्द कुमार, एस.ए., जेड.पी.एच.एस. सुजाता नगर, खम्मम
श्री एन.सी. गजन्नाथ, जी.एच.एस., कुलसुमपुरा, हैदराबाद
श्रीमती हेमाखत्री, आई.जी.एन.आई.एस., हैदराबाद (प्रूफ रीडिंग)

समन्वयक

प्रो. जे. राघवुलु, एस.सी.ई.आर.टी., ए.पी., हैदराबाद
श्री एम.पापय्या, प्रवक्ता, एस.सी.ई.आर.टी., हैदराबाद
श्री एस. विनायक, सहसमन्वयक, पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तक विभाग,एस.सी.ई.आर.टी., हैदराबाद
डॉ. राचर्ला गणपति, एस.ए. जेड.पी.एच.एस. लादेल्ला, वरंगल
श्री अयाचितुला लक्ष्मण राव, एस.ए.,जी.एच.एस. धंगरवाड़ी, करीमनगर
श्री पी. श्रीनिवासुलु, एस.ए., जेड.पी.एच.एस. बंडापोसानिपल्ली, मेदक

हिन्दी अनुवाद समन्वयक

डॉ. पी. शारदा, एस.सी.ई.आर.टी., ए.पी., हैदराबाद
डॉ.राजीव कुमार सिंह, राज्य हिन्दी संसाधक,यू.पी.एस.याडारम, मेडचल, रंगा रेड्डी
सय्यद मतीन अहमद, एस.सी.ई.आर.टी., हैदराबाद

हिन्दी अनुवादक

शोभा महेश्वरी, अध्यापिका, एस.जी.वी.एम. हाई स्कूल कोठी, हैदराबाद
डॉ.सैयद एम.एम.वजाहत,राज्य हिन्दी संसाधक, जी.एच.एस.शंकेश्वर बाज़ार, हैदराबाद
डॉ.शेख़ अब्दुल गनी, राज्य हिन्दी संसाधक, जी.एच.एस. रामन्नापेट, नलगोंडा
जी. किरण, राज्य हिन्दी संसाधक, जी.एच.एस. फार डेफ मलकपेट, हैदराबाद
कविता, राज्य हिन्दी संसाधक, हैदराबाद
गीता रानी, अध्यापिका, आर्य कन्या हाई स्कूल, हैदराबाद
अनिल शर्मा, हैदराबाद

नितिन कुमार चिद्रे, हिन्दी अनुवादक, हैदराबाद
सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त', राज्य हिन्दी संसाधक, जेड.पी.एच.एस.पसुमामुला, हयातनगर, रंगारेड्डी
मुरारी, हिन्दी अनुवादक, एन.आई.एम.एस.ई.एम.ई, हैदराबाद
निर्मला, हिन्दी अध्यापिका, हैदराबाद।
बाबूराव, राज्य हिन्दी संसाधक, जेड.पी.एच.एस.सुद्दुलम, निजामाबाद
ऋतु भसीन, राज्य हिन्दी संसाधक, यू.पी.एस., दोड्डि अलवाल, रंगारेड्डी
एन. हेमलता, राज्य हिन्दी संसाधक, जेड.पी.एच.एस. रामन्नागुड़ा, रंगारेड्डी

चित्रांकन

श्री कुरेल्ला श्रीनिवास, एस.ए., जेड.पी.एच.एस.
पोचमपल्ली, नलगोंडा
श्री बी. किशोर कुमार, एस.जी.टी., एम.पी.यू.पी.एस.,
अलवाला, अनुमुला, नलगोंडा
श्री पी.आंजनेयुलु, जियोमपर,
सी.ई.एस.एस.-टी.सी.एस., हैदराबाद

DTP-डिजाइन

किशन थाडुजु, कम्प्युटर संचालक, सी&टी विभाग,
एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाना
कन्हैया दारा, कम्प्युटर संचालक, सी&टी विभाग,
एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाना, हैदराबाद
श्रीमती के पावनी, ग्राफिक डिजाइनर &
कम्प्युटर संचालकत, हैदराबाद

तेलंगाणा सरकार द्वारा मुफ़्त वितरित 2020-21
SCERT TELANGANA

छात्रों के नाम पत्र

"जैसे ही मेरी माँ दिन भर खेत और घर का काम पूरा करके थककर लेटती है, मैं उनके पास बैठकर आश्चर्य से सोचता हूँ कि स्त्रियों के लिए जीवन इतना कठिन क्यों हैं? मैं घर से बाहर देखता हूँ तो मुझे तरह-तरह के लोग मिलते हैं- वे विभिन्न भाषाओं में बातें करते हैं, वे विभिन्न रीति-रिवाजों का पालन करते हैं, मुझे आश्चर्य होता है कि वे कौन हैं और इनमें इतनी भिन्नता क्यों है?

समाचार पत्र पढ़ने से मालूम हुआ कि, बहुत से किसान जो मेहनत करके हमारे लिए खाद्यान्न उत्पन्न करते हैं, वे निराश होकर आत्महत्या कर रहे हैं। मुझे आश्चर्य होता है कि किन कारणों से वे इतने निराश हुए। जब मैं किसी शहर की ओर चलता हूँ तो मुझे विशाल और सुन्दर इमारतें, बड़ी-बड़ी सड़कें और मंदिर, मसजिद और गिरिजा घरों को देखकर आश्चर्य होता है कि इन्हें किसने बनाया है और इसपर कितना खर्च हुआ होगा? झोपडपट्टियों में दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति में रहने वाले हज़ारों लोगों को देखकर मुझे आश्चर्य होता है कि उनको शहरों जैसे सुंदर घरों में रहने की सुविधा क्यों नहीं हैं?

हमारे बुजुर्ग इन समस्याओं की चर्चा करते हुए कहते हैंद्ध कि हमें चुनाव में सही लोगों को चुनना चाहिए। मुझे आश्चर्य होता है कि कौन शासन करते हैं? और कैसे शासन की बागडोर संभालते हैं। दादी माँ हमें पुराने ज़माने के राजा महाराजा और रानियों की कहानियाँ सुनाती थीं और कहती थीं कि एक ऐसा समय था जब देवी-देवता और संत आम लोगों के साथ चलते थे। मुझे आश्चर्य होता है कि क्या यह संभव था?

मेरे पास ऐसे बहुत से प्रश्न हैं जिनका उत्तर किसी न किसी के पास तो होगा? शायद इन सभी प्रश्नों के उत्तर एक आदमी नहीं दे सकता। कुछ ऐसे भी प्रश्न होंगे जिनका उत्तर कोई नहीं जानता हो? मुझे उन प्रश्नों के उत्तर स्वयं खोजने हैं? वह कैसे? मेरी मदद कौन करेगा?

प्यारे साथियो **!**

आप के मन में जो प्रश्न उठ रहे हैं, वे बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इनका समाधान खोजना सबके लिए उपयोगी है। इनमें से कुछ प्रश्नों के उत्तर खोजना बहुत ही कठिन कार्य है। उनका एक निश्चित उत्तर नहीं हो सकता। वास्तव में विविध लोगों ने विविध रूपों से इनका उत्तर देने का प्रयास भी किया है। ऐसा भी हो सकता है कि गहन अध्ययन के बाद तुम्हारा भी एक अलग उत्तर हो। सामाजिक विज्ञान के अध्ययन के द्वारा समाज को समझने का प्रयास किया जाता है। इसके लिए प्रश्नावली तैयार की जाती है। विविध स्रोतों से इनके उत्तर प्राप्त किये जाते हैं। इससे हम समझ सकते हैं कि लोग प्रश्नों का उत्तर विभिन्न रूप से क्यों देते हैं? उदाहरण के लिए यदि हम किसी से पुछते हैं कि स्कूलों की तुलना में कॉलेजो में लड़कियों की संख्या कम क्यों है? तो भिन्न लोगों से भिन्न-भिन्न ज़वाब प्राप्त होंगे। यदि आप यह जानना चाहते हैं कि धनवानों की बस्तियों की तरह झोपड़पट्टी में साफ-सफाई की व्यवस्था क्यों नहीं रहती? तो इसका भी ज़वाब मिलेगा। लेकिन लोग ऐसे प्रश्नों के भिन्न-भिन्न उत्तर क्यों देते हैं? समाज शास्त्र इस समस्या का हल निकालने का प्रयास भी करता है।

सामाजिक विज्ञान समस्या का हल खोजने का प्रयास ही नहीं करता बल्कि उस समस्या के अध्ययन के लिए कठोर पद्धतियाँ अपनाता है। सामाजिक विज्ञान उस अध्ययन में यह जानने की कोशिश करता है कि यह समस्या कैसे उत्पन्न हुई? उसमें क्यों और कैसे परिवर्तन आये। वह यह जानने का प्रयास भी करता है कि क्या समूचे विश्व में समस्याएँ समान हैं या विभिन्न स्थानों में अलग-अलग। इन्हें विविध दृष्टिकोणों से समझने का प्रयास किया जाता है। जैसे- क्या प्राचीन काल में दुनिया भर के कॉलेजों में लड़कियों की संख्या कम है? ऐसी कौन-सी समस्या है जिसके कारण कॉलेजों में लड़कियों की उपस्थिति कम है? अपनी लड़कियों को कॉलेज न भेजने वाले माता-पिता इसका क्या उत्तर देते हैं? और अपनी लड़की को कॉलेज भेजने वाले क्या उत्तर देते हैं? लड़कियों का क्या विचार है? अध्यापक क्या कहते हैं? सामाजिक विज्ञान मूल समस्या का समाधान पाने के लिए इन सब प्रश्न हमारे सामने रखता है। लेकिन कोई भी समाजवैज्ञानिक मूल समस्या का स्पष्ट और निश्चित उत्तर नहीं दे सकता। यह आप ही को निर्णय लेना है कि आप को कौन सा समाधान स्पष्ट और सुविधाजनक लगता है।

संपादक गण

SCERT TELANGANA

इस पुस्तक के बारे में

यह पुस्तक समाजशास्त्र के पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आपको समाज का अध्ययन कराने का एक भाग है, अतः आपको यह समझना चाहिए कि यह पुस्तक पाठ्यक्रम का एक अंश मात्र है। आप अपनी कक्षा में विषय के बारे में चर्चा करके, अपने विचारों का आदान-प्रदान करके, समाजशास्त्र के पाठ्यक्रम को भली-भाँति समझ सकते हैं। समाजशास्त्र चाहता है कि आप तथ्यों के बारे में बहुत से प्रश्न करें, सोचें और समझें। समाजशास्त्र के अध्ययन के अंतर्गत आपको अपनी कक्षा से बाहर अपने साथियों के साथ बाज़ार में, पंचायत या नगरनिगम के कार्यालय में, गांव के खेतों में, मंदिरों-मसजिदों और वस्तु संग्रहालयों में जाकर विविध विषयों की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। आप विभिन्न लोगों से जैसे किसान, दुकानदार, कार्यालय कर्मचारी, पुजारी आदि से विभिन्न विषयों के बारे में चर्चा कर सकते हैं।

यह पुस्तक आपको विभिन्न समस्याओं का परिचय कराती है और अपने आप समझने योग्य भी बनाती है। क्योंकि महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें समस्याओं का समाधान नहीं हैं, बल्कि यह पुस्तक ही अपूर्ण है। यह पुस्तक तभी पूर्ण होगी जब आप कक्षा में अपने सहपाठियों तथा अध्यापकों के साथ अपने प्रश्नों पर अपने अनुभवों को जोड़ते हुए चर्चा करेंगे। अगर आप इस पुस्तक में चर्चित किसी भी विषय से सहमत नहीं हैं तो आप निडरता से अपने कारण प्रस्तुत कीजिए। आपके कुछ साथी आप से सहमत नहीं होंगे। आप समझने की कोशिश कीजिए कि ऐसा क्यों हैं? अंत में आप अपना एक निश्चित ज़वाब पायेंगे। आपको समस्या का हल सोचना है। अगर आप निश्चित रूप से जवाब नहीं दे पाये तो आपको और सोचना चाहिए। यदि तब भी उत्तर न मिले तो, आप अपने प्रश्नों को अपने मित्रों तथा अपने अध्यापकों के सामने रखें ताकि वे आपकी मदद कर सकें।

यह पुस्तक आपको समाज के अनेक पहलुओं के बारे में जानकारी देगी, जैसे- भूमि में विविधता और लोग, लोग अपनी जीविका कैसे चलाते हैं, लोग अपनी ज़रूरते कैसे पूर्ण करते हैं, इस समाज में लोगों के बीच अंतर है तो उनमें समता कैसे लायी जाये? लोग विविध रूपों में भगवान की अर्चना या आराधना कैसे करते हैं? और अंत में एक दूसरे से सम्पर्क करते हुए एक संस्कृति का निर्माण कैसे करते हैं?

इन विषयों को समझने के लिए आपको पृथ्वी के बारे में अध्ययन करना है। जैसे पर्वत, मैदानी क्षेत्र, नदियाँ और सागर। इनके बारे में समझने के लिए आपको सैकड़ों या हजारों साल पहले क्या हुआ है, जानना चाहिए। आपको अपने आसपास विभिन्न प्रकार के लोगों से मिलकर बातचीत करनी चाहिए।

कक्षा में इस पुस्तक का अध्ययन करते समय आपके मन में अनेक प्रश्न उठेंगे। आपको उनका हल ढूँढ़ने का प्रयास करना है। पाठ में दिये गये क्रिया कलाप करने हैं। पाठ का अध्ययन करना उतना महत्व नहीं रखता जितना महत्व आप द्वारा प्रश्नों पर चर्चा या क्रियाकलाप का होता है।

अनेक पाठों में आपको परियोजना कार्य करने के लिए दिया जायेगा। इन परियोजना कार्यों के द्वारा आप सामाजिक शास्त्र का विश्लेषण तथा प्रदर्शन कर सकेंगे। ये कार्य किताबों में लिखी गई बातों को याद करने की अपेक्षा महत्वपूर्ण है।

कृपया यह याद रखें कि आप पाठ को कंठस्थ न करें बल्कि इसपर चिंतन करके इसके संबंध में अपना एक दृष्टिकोण बनायें।

- हम विषय से संबंधित मानचित्र, तालिका और ग्राफ का उपयोग पुस्तक में दिया गए के अतिरिक्त भी कर सकता है।
- चर्चाएँ, साक्षात्कार आयोजन वाद-विवाद और परियोजनाएँ पाठ के आरंभ में, बीच में और हमने क्या सीखा के बाद भी कर सकते है। बच्चे में सामाजिक जागरूकता, भावात्मकता और सकारात्मक व्यवहार के विकास के लिए आयोजित करे। इस पर गौर किया गया।

निदेशक,
एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाणा, हैदराबाद

आभार पूर्ति/अभि स्वीकृति

हम निम्न व्यक्तियों के योगदान का आभार प्रदर्शन करते हैं। डॉ के.एन.आनन्दन-भाषाविद, केरल, डॉ पी.दक्षिणा मूर्ति-सेवा निवृत उप निर्देशक, तेलुगु, अकादमी, दीपा श्रीनीवासन, कृतिका विश्वनाथ, के.भाग्यलक्ष्मी, आर.वी.व्यास, राममूर्ति शर्मा, राय सिनाय जिन्होंने हमारी कार्यशीला में भाग लिया, और पाठ्य पुस्तक की गुणवत्ता विकास ने अपना योगदान दिया। हम शिल्पकला संग्रहालय विभाग, डॉ.उपिंदर सिंग, दिल्ली विश्वविद्यालय, तेलंगाणा सरकार का सम्मान करते है, जिन्होंने मूर्तियाँ एवं आकृतियाँ प्रदान की, हम उन छाया चित्रकारों का आभार प्रकट करते है जिन्होंने पुस्तक में उपयोग में लिए गए चित्र जो फ्लीकर, वीकीपीढ़िया या अन्य इन्टरनेट स्त्रोतों से लिए गए है।

हमें अनेकों शिक्षकों, शिक्षाविदों तथा अन्यों से जो प्रतिपुष्टियाँ प्राप्त हुई हैं उससे हमें पुस्तकों के अद्‌यतन और पुनरावृत्ति में बहुत सहायता मिली है। उनकी इन प्रतिपुष्टियों के लिए हम उनके प्रति आभार व्यक्त करते हैं। विशेषकर, हम भारतीय इतिहास जागरुकता एवं अनुसंधान (IHAR), हॉस्टन, यू.एस.ए. के विशेष आभारी हैं जिन्होंने हमारी पाठ्यपुस्तकों की विस्तृत समीक्षा की है जिसके फलस्वरूप पाठ्यपुस्तकों में अनेक सुधार किये गये।

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा मुफ़्त वितरित 2020-21

भारत का संविधान अभिमत

हम समस्त भारतवासी, शपथ लेकर निर्णय करते हैं कि हमने अपने लिए एक सर्व प्रभुत्व संपन्न लोकतंत्रात्मक, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष गणराज्य की संवैधानिक रचना कर ली है तथा समस्त नागरिकों के हित में समान रूप से यही स्वीकार्य है।

न्याय : सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक

स्वतंत्रताः विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, श्रद्धा तथा कार्याचरण में।

समानताः पद तथा अवसरों की तथा इन सभी में इसका विकास।

परस्पर सद्भावः प्रत्येक व्यक्ति के प्रति सद्भाव के साथ-साथ राष्ट्र की एकता एवं संगठ्न की सुरक्षा को निश्चित करते हैं।

आज 26 जनवरी 1949 को हम घोषणा करते हैं कि हमने इस संविधान को स्वीकार कर लिया है, इसी पर कार्याचरण करेंगे तथा यही हम पर लागू होगा।

Subs. by the constitution [Forty-second Amendment] Act, 1976, Sec.2, for "Sovereign Democratic Republic" (w.e.f. 3.1.1977)

Subs. by the constitution [Forty-second Amendment] Act, 1976, Sec.2, for "Unity of the Nation" (w.e.f. 3.1.1977)

SCERT TELANGANA

विषय सूची

	पृष्ठ सं.	महीना
विषय - I: पृथ्वी की विविधता (Diversity on Earth)		
1. विभिन्न प्रकार के मानचित्रों का अध्ययन	1	जून
2. वर्षा और नदियाँ	7	जून
3. जलाशय और भू-गर्भ जल	22	जुलाई
4. महासागर और मत्स्य उद्योग	33	जुलाई
5. यूरोप	42	जुलाई
6. अफ्रीका	58	अगस्त
विषय- II: उत्पादन विनिमय और आजीविका (Production Exchange and Livelihood)		
7. हस्तकला और हथकरघा	69	अगस्त
8. औद्योगिक क्रांति	78	अगस्त
9. कारखानों में उत्पादन -कागज़ मिल	86	सितंबर
10. यातायात प्रणाली का महत्व	95	सितंबर
विषय III: राजनैतिक व्यवस्था और शासन (Political system and governance)		
11. नये राजा और साम्राज्य	101	सितंबर
12. काकतीय -स्थानीय साम्राज्य का उद्‌भव	110	अक्तूबर
13. विजयनगर साम्राज्य के शासक	117	नवंबर
14. मुगल साम्राज्य	126	नवंबर
15. भारत में अंग्रेज़ी साम्राज्य की स्थापना	135	नवंबर
16. विधानसभा में कानून निर्माण	147	दिसंबर
17. जिला स्तर पर कानून का कार्यान्वयन	158	दिसंबर
विषय- IV: सामाजिक संगठन और असमानताएँ (Social organisational inequities)		
18. जातिगत भेदभाव और समानता के लिए संघर्ष	165	जनवरी
19. शहरी मजदूरों का जीवनयापन और संघर्ष	172	जनवरी
विषय- V: धर्म और समाज (Religion and society)		
20. लोक-धर्म	181	फरवरी
21. दैवत्व की ओर आध्यात्मिक मार्ग	188	फरवरी
विषय-VI: संस्कृति और संचार (Culture and communication)		
22. शासक एवं भवन	197	फरवरी
पुनरावृत्ति & वार्षिक परीक्षा		मार्च

तेलंगाणा सरकार द्वारा मुफ़्त वितरित 2020-21

राष्ट्र-गान

- रवीन्द्र नाथ टैगौर

जन-गण-मन अधिनायक जय हे!
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा,
द्राविड़, उत्कल बंग।
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधि-तरंग।
तव शुभ नामे जागे।
तब शुभ आशिष माँगे,
गाहे तव जय गाथा,
जन-गण-मंगलदायक जय हे!
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे! जय हे! जय हे!
जय, जय, जय, जय हे!

प्रतिज्ञा

– पैडिमर्रि वेंकट सुब्बाराव

भारत मेरा देश है और समस्त भारतीय मेरे भाई-बहन हैं। मैं अपने देश से प्रेम करता हूँ और इससे प्राप्त विशाल एवं विविध ज्ञान-भण्डार पर मुझे गर्व है।

मैं सर्वदा इस देश एवं इसके ज्ञान-भंडार के अनुरूप बनने का प्रयास करूँगा।

मैं अपने माता-पिता और अध्यापकों तथा समस्त गुरुजनों का आदर करूँगा और प्रत्येक व्यक्ति के प्रति नम्रता पूर्वक व्यवहार करूँगा। मैं जीव-जंतुओं से भी प्रेम पूर्वक व्यवहार करूँगा।

मैं अपने देश और उसकी जनता के प्रति अपनी भक्ति की शपथ लेता हूँ। उनके मंगल एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

SCERT TELANGANA

अध्याय 1

विविध प्रकार के मानचित्रों का अध्ययन
(Reading Maps of different kinds)

यह दुनिया जिसमें हम रहते हैं, वह विविधताओं से भरी है। पर्वत, चट्टान, समुद्रतट, रेगिस्तान, जंगल, बर्फ से ढके हुए प्रदेश आदि....., इतनी सारी विविधताएँ क्यों हैं? यह सब इन प्रदेशों में रहने वाले लोगों के जीवन पर किस तरह प्रभाव डालते हैं, इन प्रश्नों को पढ़ने और समझने के लिए हमें कुछ मानचित्रों की मदद की आवश्यकता होती है। कुछ मानचित्र हमें ऊँची और नीची जगह की जानकारी देते हैं, तो कुछ मानचित्र वहाँ की वर्षा, गर्मी और सर्दी के बारे में बताते हैं। वहाँ किस प्रकार की फसल उगायी जाती है। और वहाँ किस प्रकार के जंगल हैं, इसके बारे में बताते हैं। इनका अध्ययन करने पर हमें विश्व जगह के बारे में कई जानकारी प्राप्त होती है।

चित्र 1.1 कर्नाटक के पश्चिमी घाट के सदाबहार जंगल

चित्र 1.2 दक्षिण अमेरिका के ब्राजील में कोकना का समुद्र तट

चित्र 1.3 अफ्रीका के लिबिया के सहारा मरुस्थल में एक जलाशय

चित्र 1.4 बर्फ से ढका हुआ महाद्वीप-अंटार्कटिका

SCERT TELANGANA

पाठशाला के एटलस की प्रतियाँ लाकर देखिए कि उनमें कितने प्रकार के मानचित्र हैं। इनकी सूची बनाने से आप उन्हें सरलता से पढ़ और समझ सकेंगे। पिछले साल आपने साधारण मानचित्र पढ़ा था। हम इस साल ऊँचाई दर्शाने वाले मानचित्र के बारे में पढ़ेंगे। परंतु पहले हमें यह देखना है कि पिछले वर्ष हमने क्या पढ़ा था?

- भारत का **राजनैतिक** मानचित्र कक्षा में लगाइए। इस मानचित्र को ध्यान से देखकर ध्यान से निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
  - i. मेहर हैदराबाद से भोपाल गई। उसने किस दिशा में यात्रा की?
  - ii. अशोक लखनऊ से चेन्नई गया। उसने किस दिशा में यात्रा की?
  - iii. रजिया मुंबई से भुवनेश्वर गई। उसने किस दिशा में यात्रा की?
  - iv. वेपरेचु कोहिमा से जयपुर गया। उसने किस दिशा में यात्रा की?
- इस तरह के और प्रश्न बनाइए और अपने मित्रों से पूछिए।
- मानचित्रों में दिखाये गये प्रतीकों को देखिए। तेलंगाणा की सीमारेखा पहचानने का प्रयास कीजिए। अपनी अंगुलियों को सीमाओं की रेखाओं पर घुमाइए।
- अपनी अभ्यास पुस्तिका में भारत के राज्यों और अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के लिए चिह्न अंकित कीजिए।
- क्या आप तेलंगाणा के उत्तर, दक्षिण, पश्चिमी तथा पूर्वी दिशाओं में आने वाले राज्यों की सूची बना सकते हैं?
- कक्षा VI में आपने मानचित्र में दी गयी स्केल की सहायता से एक स्थान से दूसरे स्थान की दूरी को मापना सीखा है। अब हैदराबाद और विभिन्न राज्यों की राजधानियाँ जैसे जयपुर, इंफाल, गाँधी नगर और तिरुवनंतपुर के बीच की दूरी को जानने का प्रयास कीजिए।

SCERT TELANGANA

संकेत

हम किसी भी भौतिक चित्र को दर्शाने के लिए चिह्नों का उपयोग करते हैं। आपने कक्षा छह में यह देखा ही है।

अगर हम भारत के मानचित्र में दिल्ली दिखाना चाहते हैं तो बिन्दु (●) के द्वारा दर्शा कर उसके पास दिल्ली लिख देते हैं। मंजिरा नदी दिखाने के लिए हम एक रेखा ( ) उसकी दिशा में दर्शाते हैं और रेल मार्ग के लिए हम पटरी रेखाएँ ( ) दर्शाते हैं। तेलंगाणा के मानचित्र में हम मेदक या हैदराबाद क्षेत्र दिखाना चाहते हैं तो हम उसका सीमांकन कर उसे किसी रंग या चित्र के रूप में प्रदर्शित करते हैं। यह वास्तविक चिह्न कहलाता है। अतः भौतिक मानचित्रों में बिन्दु, रेखा या क्षेत्र के प्रतीकों की सहायता से विविध तत्व दर्शाये जाते हैं।

- इस किताब के कुछ मानचित्रों को देखकर उनमें दिये चित्रों की सूची बनाकर नीचे की तालिका में लिखिए।

संकेत बिन्दु (पाइंट सिंबल)	संकेत रेखा (लाइन सिंबल)	संकेत क्षेत्र (एरिया सिंबल)
1. दिल्ली	1. नदी	1. खेल का मैदान
2.	2.	2.
3.	3.	3.

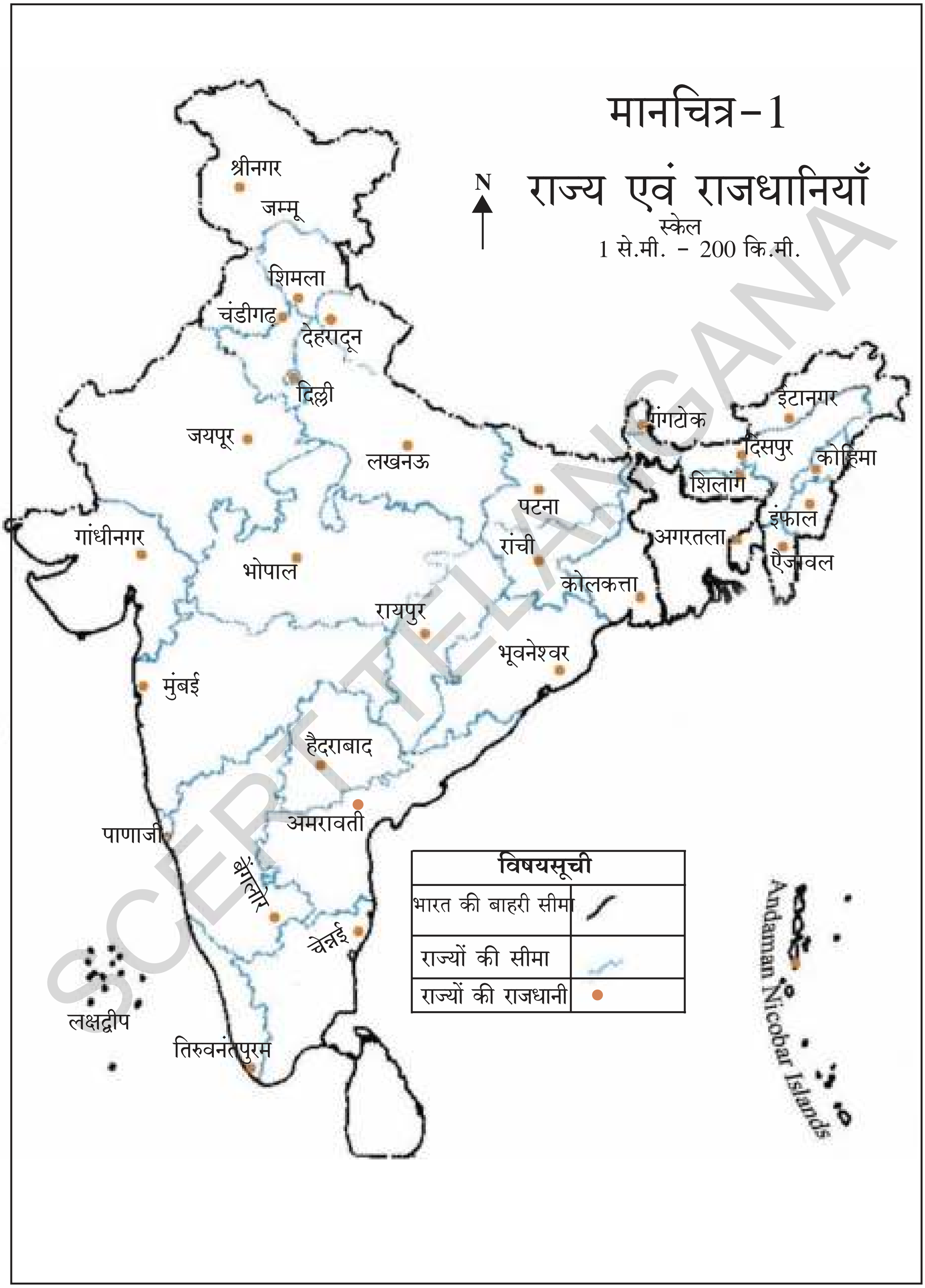

SCERT TELANGANA

भौतिक मानचित्र (Physical Maps)

एटलस में कुछ मानचित्र आपने भौतिक मानचित्रों के रूप में पाये होंगे। इस मानचित्र में अलग-अलग भूमि अलग-अलग रंगों (हरा, पीला या भूरा) में दर्शायी गयी है। वास्तव में ये विविध प्रकार की भूमि को दर्शाते हैं। इनमें मैदान, पर्वत, पठार आदि जगहों की ऊँचाइयों का चित्रण भी होता है।

क्या हम एक समतल कागज पर भूमि की ऊँचाइयों को प्रस्तुत कर सकते हैं? क्यों नहीं, हम नीचे दिये चित्र दिये जैसा चित्र बना सकते हैं।

चित्र 1.5 निमपुर गाँव का चित्र

आप देख रहे हैं कि यह चित्र है, मानचित्र नहीं। यहाँ पर्वतों की ऊँचाई के कारण पीछे का भाग दिखाई नहीं देता। **मानचित्र किसी जगह को छिपाये बिना सभी जगहों को दर्शाने वाला होना चाहिए।** क्या आप इस स्थान को मानचित्र के रूप में दर्शाने का तरीका खोज सकते हैं?

एक तरीका यह है कि मानचित्र में ऊँचाई को, रंगों द्वारा दर्शाया जाये। आइए देखें, इसे कैसे दर्शायेंगे।

भूमि की ऊँचाई-मापन

भूमि की सभी ऊँचाइयाँ समुद्र तल के आधार पर मापी जाती हैं। क्योंकि सभी समुद्र आपस में जुड़े हुए हैं। अतः **पूरे विश्व में समुद्री स्तर को लगभग समान लिया जाता है।** इस युक्ति को समझने के लिए नीचे दिया गया निमपुर गाँव का चित्र देखिए।

आप देख रहे हैं कि निमपुर गाँव समुद्र से पचास मीटर की ऊँचाई पर है।

- मंदिर समुद्र तल से कितने मीटर ऊँचाई पर है?
- पर्वत की चोटी समुद्र तल से कितने मीटर ऊँचाई पर है?

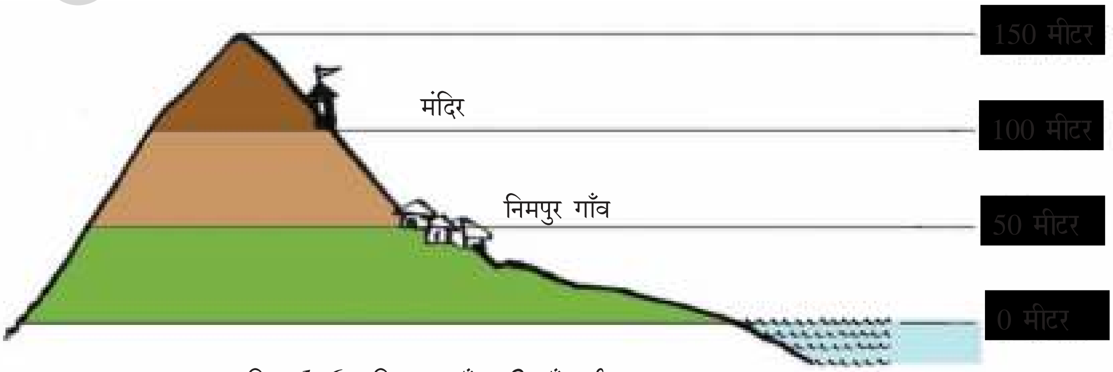

चित्र 1.6 निमपुर गाँव की ऊँचाई

SCERT TELANGANA

मानचित्र में ऊँचाई दर्शाना

निमपुर गाँव के क्षेत्र का मानचित्र देखिए (1.7).

आप देख रहे हैं कि निमपुर गाँव के मानचित्र में ऊँचाई के लिए तीन स्तर बताये गये हैं- पहला - 0 से 50 मीटर, दूसरा 51 से 100 मीटर और तीसरा 101 से 150 मीटर। जो स्थान 50 मी. से अधिक ऊँचाई वाले स्थान है। वे 100 मी. की ऊँचाई से नीचे आते है। ऊँचाई को अलग-अलग रंगों से दर्शाया गया है।

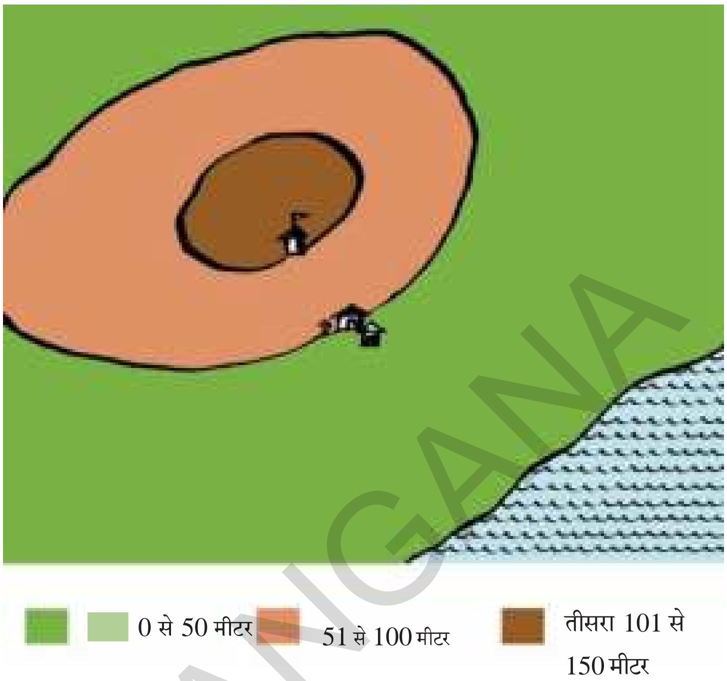

चित्र 1.7 निमपुर गाँव की ऊँचाई का चित्र

- निमपुर गाँव की ऊँचाई का मानचित्र देखिए। कौनसा रंग समुद्र के निकटवर्ती क्षेत्र को दर्शाता है?
- इस मानचित्र में सर्वाधिक ऊँचाई का क्षेत्र किस रंग से दर्शाया गया है।

अब आप भारत या तेलंगाना के भौतिक मानचित्र को देखिए। अपने अटलस या दीवार पर लगे मानचित्र में पढ़कर तालिका -1 में दिये गये स्थानों का ऊँचाई-स्तर और रंग मालूम कीजिए और निम्न तालिका भरिए।

तालिका **-1**

स्थान	ऊँचाई	रंग संकेत
हैदराबाद	..... से .....मी. तक	
खम्मम	..... से .....मी. तक	
आदिलाबाद	..... से .....मी. तक	
नलगोण्डा	..... से .....मी. तक	

- इस प्रकार के अन्य प्रश्न बनाकर एक-दूसरे से पूछो।
- यदि आपके पास भारत का मानचित्र है तो कुछ राज्यों की राजधानियाँ बताइए।
- यदि आपके पास संसार का मानचित्र है तो विश्व में विभिन्न शहरों का ऊँचाइयाँ बताइए।

परिरेखाएँ (Contour Lines)

परिरेखाएँ अर्थात वह रेखा जो समान ऊँचाइयों के स्थानों को जोड़ती हैं। आप निमपुर के मानचित्र में देख सकते हैं कि जो रेखा निमपुर से गुजरती है। यह 50 मीटर की परिरेखा है। इस रेखा पर होने वाले सभी स्थानों की ऊँचाई 50 मीटर होगी। ये रेखाएँ भूमि के स्वरूप पर आधारित होती हैं। अतः ये़ टेढ़ी-मेढ़ी भी हो सकती हैं। यह एक-दूसरे को नहीं काटसकती। दो परिरेखाओं के बीच की दूरी भूमि के स्वरूप पर आधारित होती है। भूमि की सतह ऊँची हो तो ये नजदीक रहती हैं। भूमि कम ऊँचाई वाली हो तो परिरेखाएँ दूर-दूर होंगी।

ऊँचाई दर्शाने वाले मानचित्रों के उपयोग

यह मानचित्र हमें तराई की प्रकृति को समझने में सहायता करता है। जहाँ पर्वत व घाटियाँ होती है। यदि आप तेलंगाना का भौतिक मानचित्र देखें तो मालूम होगा कि गोदावरी नदी का ढ़लान पूर्व की ओर है, यदि आप ढलान के पश्चिम की ओर यात्रा करेंगे तो आप पठारी क्षेत्र में पहाड़ी पर पहुँचेंगे। यह पठार प्रदेश कृष्णा और गोदावरी जैसी नदियों से विभाजित हैं जो अपने भीतर अनेक गहरी और चौड़ी खाइयाँ बनाती है।

SCERT TELANGANA

सड़कों और बाँधों के निर्माण के समय उनकी ऊँचाई जानने के लिए ये मानचित्र आवश्यक हैं। पहाड़ी प्रांतों (ऊँच-नीच स्थान) में सड़क निर्माण के समय ये मानचित्र उसके मार्ग निर्धारण में सहायक होते हैं। उसी प्रकार बाँध निर्माण के समय ये पानी की ऊँचाई के कारण कितने प्रांत पानी में डूब सकते हैं, इसका अनुमान लगाने में सहायक होते हैं।

औसत समुद्री स्तर (Mean Sea Level)

समुद्र में लहरें चलती ही रहती हैं। इनमें ऊँची-नीची दोनों प्रकार की लहरें होती हैं। ये कभी स्थिर नहीं रहती है। परिणामतः समुद्र स्तर घटता या बढ़ता रहता है। अतः इनमें से किस ऊँचाई को समुद्र स्तर की ऊँचाई मान या O मीटर मानें। इस समस्या के समाधान के लिए विविध समय में उसकी तरंगों की ऊँचाई के मापन के औसत के आधार पर समुद्र तल की शून्य स्तर की जाँच की गयी। बहुत समय तक ऊँचाई वैज्ञानिकों ने समुद्र के उच्च व निम्न स्तर का अवलोकन किया। तत्पश्चात उन्होंने समुद्र स्तर का निर्धारण किया, जिसे औसत समुद्री स्तर (Mean Sea Level- M.S.L) कहा गया।

- यदि आपका घर रेलवे स्टेशन के पास हो तो वहाँ पर लगे बोर्ड के आधार पर उस प्रांत की ऊँचाई का पता लगाइए। जिसे .............M.S.L के रूप में उल्लेख किया जाता है। अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखिए।

- चित्र 1.6 & 1.7 देखिए और बताइए कि यदि 30 मीटर ऊँचाई तक बाढ़ का पानी आता है तो क्या निमपुर गाँव डूब सकता है?
- चित्र 1.8 देखकर निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखिए।
- नदी के बहाव के मार्ग को दर्शाइए।
- सबसे कम ऊँचाई वाली भूमि .... मी. से .... मी. के बीच होगी।
- इस मानचित्र में दो ऊँचे प्रदेश हैं, उनकी ऊँचाई बताइए।

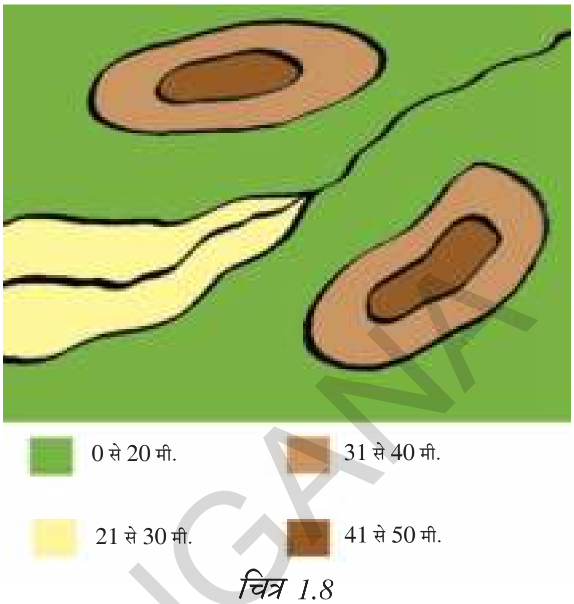

चित्र 1.8

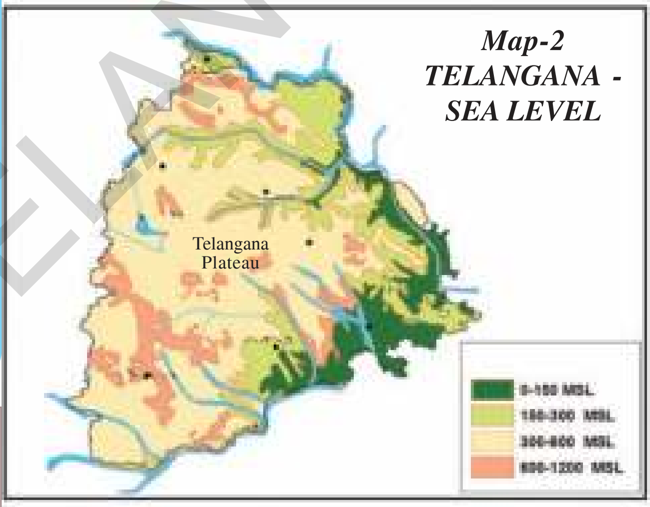

आपने क्या सीखा?

1. विश्व के सभी समुद्रों के तल समान क्यों हैं?
2. समुद्र तल किस प्रकार मापा जाता है?
3. ऊँचाई दर्शाने वाले मानचित्रों के उपयोग क्या हैं?
4. उच्च उन्नतांश या निम्न उन्नतांश पर रहने वाले लगों की जीवनशैली में आपको क्या अंतर दिखाई देता है?
5. मानचित्र लोगों के लिए किस प्रकार उपयोगी हैं?
6. पृष्ठ 5 के परिरेखाएँ अनुच्छेद को पढ़िए और विचार व्यक्त किजिए।
7. तेलंगाना मानचित्र का निरीक्षण कर 150 M.S.L. से नीचे वाले जिलों की सूची तैयार कीजिए।

SCERT TELANGANA

अध्याय

2

वर्षा एवं नदियाँ (Rain and Rivers)

पृथ्वी के सभी प्राणियों का जीवन जल पर ही आधारित है। जैसा कि आप जानते हैं पृथ्वी का 71% भाग जल से भरा है। हम फसल उगाने के लिए जल पर निर्भर रहते हैं। किन्तु हमें वर्ष भर जल समान मात्रा में नहीं प्राप्त होता। पृथ्वी पर भी जल समान मात्रा में उपलब्ध नहीं है। जल के लक्षण भी हर स्थान पर एक समान नहीं होते।

वर्षा कौन से महीनों में अधिक होती है? इस पर चर्चा कीजिए। गाँव व शहर में वर्षा कहाँ अधिक होती है? कहाँ मीठा पेयजल और कहाँ नमकीन या कठोर जल प्राप्त होता है? इस पर चर्चा कीजिए । इस अध्याय में हम जल की विविधता, उसकी उपलब्धता एवं उसके महत्व के बारे में पढ़ेंगे।

भाग - I

सूर्य, बादल एवं वर्षा

अप्रैल, मई और जून की असहनीय गर्मी के उपरांत वर्षा ऋतु आती है, जो कुछ माह के लिए होती है। क्या आपको पता है कि वर्षा कैसे होती है? वर्षा लाने वाले बादल कहाँ से आते हैं? आपको इसकी जितनी भी जानकारी हो उसके बारे में कक्षा में चर्चा कीजिए।

वाष्पीकरण: (Evaporation)

पावनी प्रातः जल्दी उठ गई। वह गर्म पानी से स्नान करना चाहती थी। इसीलिए उसने चूल्हे पर एक पतीले में पानी गरम किया। जैसे ही पानी गरम होने लगा उसकी वाष्प ऊपर रखे ढक्कन को छूने लगी और बाहर ठंडी हवा के कारण वो वाष्प पानी की बूँदे बन गई। उसने जब पतीले का ढक्कन उठाया तो वो बूँदे वापस पतीले में गिर गई। यह देखकर उसे पता चला कि जल वाष्प बनकर उड़ जाता है और उसके उपरांत ठंडक के कारण पानी बन कर जम जाता है।

वर्षा की कहानी जलवाष्प से प्रारम्भ होती है। जलवाष्प क्या है? जब आप अपने गीले वस्त्र खुले में सुखाते हैं, तो आप देखते हैं कि उनका जल कुछ देर बाद गायब हो जाता है और वस्त्र सूख जाते हैं। इसी

SCERT TELANGANA

तरह अगर आप एक प्लेट में पानी रखेंगे तो वह भी कुछ दिन बाद सूख जायेगा। वास्तव में उन गीले वस्त्रों का जल और थाल का पानी वाष्प बन कर वायु में एक प्रक्रिया द्वारा घुल जाता है, जिसे 'वाष्पीकरण' कहते हैं। जब पानी नहीं उबलता है तब भी उसका वाष्पीकरण होता है।

धरती पर जल के कई स्रोत है, जैसे सागर, नदियाँ, जलाशय, झील आदि। इन सभी स्रोतों से जल का निरंतर वाष्पीकरण होता रहता है। जहाँ भी नमी है, वहाँ वाष्पीकरण होता है। वाष्पीकरण हमारे शरीर से, पेड़-पौधों से और मिट्टी द्वारा भी होता है। वातावरण में तापमान बढ़ने के साथ ही वाष्पीकरण की प्रक्रिया भी तेज हो जाती है।

- आपके विचार से किस ऋतु में वाष्पीकरण अधिक होता है- ग्रीष्म या शीतऋतु में?
- वाष्पीकरण कब अधिक होता है, दिन में या रात में?
- चित्र 2.1 को ध्यान से देखा और उन सभी स्थानों की सूची बनाओ, जहाँ से वाष्पीकरण होता है।
- आपके अनुसार अधिकतम वाष्पीकरण कहाँ-कहाँ होता है? पेड़ पौधों द्वारा, नदियों द्वारा, महासागर द्वारा, या मिट्टी द्वारा?

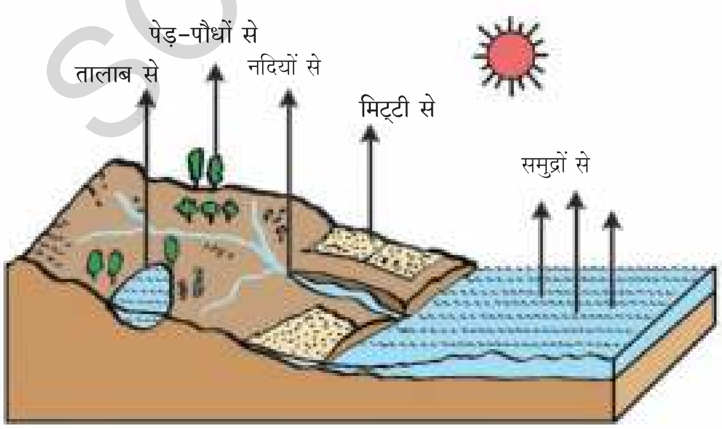

चित्र 2.1 वाष्पीकरण

बादलों का बनना और वर्षा

जब जल वाष्प अधिक तापमान के साथ ऊपर उठता है तो वह आकाश में पहुंच जाता है। वहाँ वह ठंडा हो जाता है। यह इसलिए होता है क्योंकि वह पृथ्वी की सतह से दूर पहुँच जाता है। यह जल वाष्प शीतल होकर छोटे-छोटे जल-कण के रूप में बदल जाते हैं। यह जल-कण वातावरण में स्थित धूल-कण एवं धुएँ के साथ मिलकर बड़े आकार के हो जाते हैं। ये जल के छोटे-छोटे कण मिलकर बादल बन जाते हैं।

- ऊपर दिए गए खाली डिब्बे में वाष्प किस तरह बादल बनते हैं, उसका चित्र बनाइए। चित्र का नामांकन पृथ्वी, आकाश, उठता हुआ वाष्प, शीत, धूल के कण एवं पानी की बूँदें बादल आदि से कीजिए।

SCERT TELANGANA

जैसे-जैसे बादल ऊपर उठते रहते हैं ठंडक बढ़ जाती है और अधिक जल-कण की रचना होने लगती है। यह छोटे कण मिलकर बड़े कण बन जाते हैं। जब इसका भार बढ़ने लगता है और जब ये बादल इस भार को नहीं संभाल पाते तब वे वर्षा के रूप में गिरने लगते हैं।

- आपके विचार से वर्षा के लिए बादलों का ऊपर उठना क्यों आवश्यक है?
- क्या आपने कभी ओस देखी है? ये कहाँ बनती हैं?
- दिन के कौन-से समय में आपको कुहरा दिखाई देता है।
- कौनसी ऋतु में हमें कुहरे वाले दिन अधिक दिखाई देते हैं?
- क्या आपने कभी हिमपात देखा है? उसमें और वर्षा में क्या अंतर है?
- क्या आपने कभी ओलों की बौछार (hail storm) का देखा है?

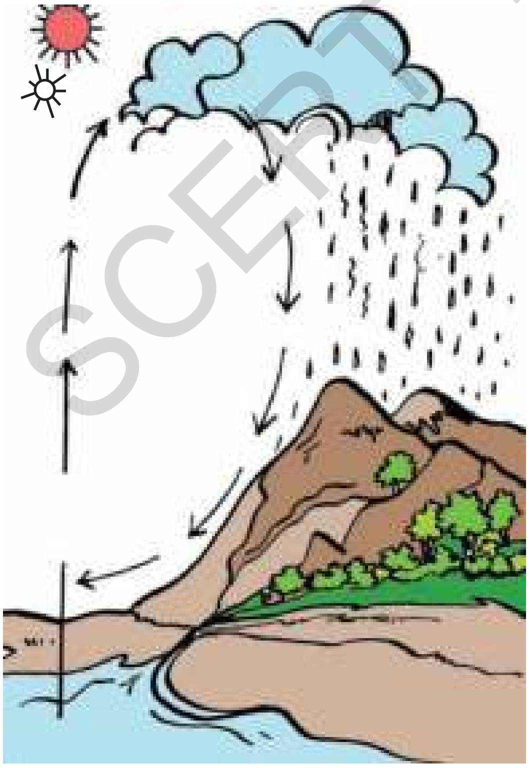

चित्र 2.2 जल-चक्र

कुछ महत्वपूर्ण अंश

वाष्पीकरण (Evaporation) **:** जल का वाष्प में बदलना वाष्पीकरण कहलाता है। वह प्रक्रिया जिसमें वाष्प, जल में बदल जाता है उसे द्रवीकरण कहते हैं। बादल, हवा में लटकते हुए छोटे-छोटे जल के कण होते हैं।

जल-चक्र(**Water Cycle**)

जल का चक्र इस प्रकार है-समुद्र से जल का वाष्प बनकर उठना, आकाश में बादल बनना, धरती पर वर्षा बनकर गिरना एवं भूमि की ढलान से नदी बनकर बहना और अंत में वापस समुद्र में जा कर मिलना इसे ही जल-चक्र कहते हैं।

अवक्षेपण (Precipitation) **:** जलवाष्प की विभिन्न द्रवीकरण की स्थितियों को ही अवक्षेपण कहते हैं। यह ओस के रूप में, कोहरा, वर्षा, बर्फ एवं ओलों के रूप में होता है।

आर्द्रता (Humidity) **:** वातावरण में पाये जाने वाले अदृश्य जल वाष्प को आर्द्रता के नाम से जाना जाता है। जब तापमान और आर्द्रता अधिक होती है तो हम बेचैनी महसूस करते हैं। हमें पसीना आने लगता है, जो जल्दी सूखता भी नहीं। हम अपने शरीर पर चिपचिपाहट का अनुभव करते हैं। इस तरह का मौसम उमस कहलाता है।

पवन एवं बादल

वाष्पीकरण धरती की पूरी सतह पर होता है, अतः बादल भी सभी ओर छाते हैं। लेकिन अधिकतर वाष्पीकरण और बादलों का निर्माण समुद्र की सतह पर होता है। क्योंकि समुद्र जल से भरे हैं, जो हजारों कि.मी. तक फैले हुए हैं। परिणामस्वरूप समुद्र पर भी अधिक वर्षा होती है, बादल हमारे देश के भीतरी भागों

SCERT TELANGANA

में हज़ारों कि.मी. तक यात्रा करके हमारे लिए वर्षा लाते हैं। क्या आप जानते हैं कि ये देश के भीतरी भागों में किस तरह से आते हैं?

वर्षा ऋतु में हवाएँ किस दिशा से बहती हैं ?

ये पवन की धाराएँ अरब सागर एव बंगाल की खाड़ी से हमारे लिए वर्षा के बादल लानी (transport) हैं। इन्हें मानसून हवाएँ कहते हैं। इन्हें दक्षिण–पश्चिमी मानसून हवाएँ भी कहते हैं क्योंकि ये इस दिशा में बहती हैं। ये हवाएँ केवल ग्रीष्म ऋतु में बहती हैं।

मानसून हवाओं की दो भुजाएँ मानी जाती हैं, एक अरब सागर से बहती है और दूसरी बंगाल की खाड़ी से बहती है। मानचित्र–1 में दर्शाए गए संकेत हमें इन हवाओं की दिशाएँ दिखाते हैं।

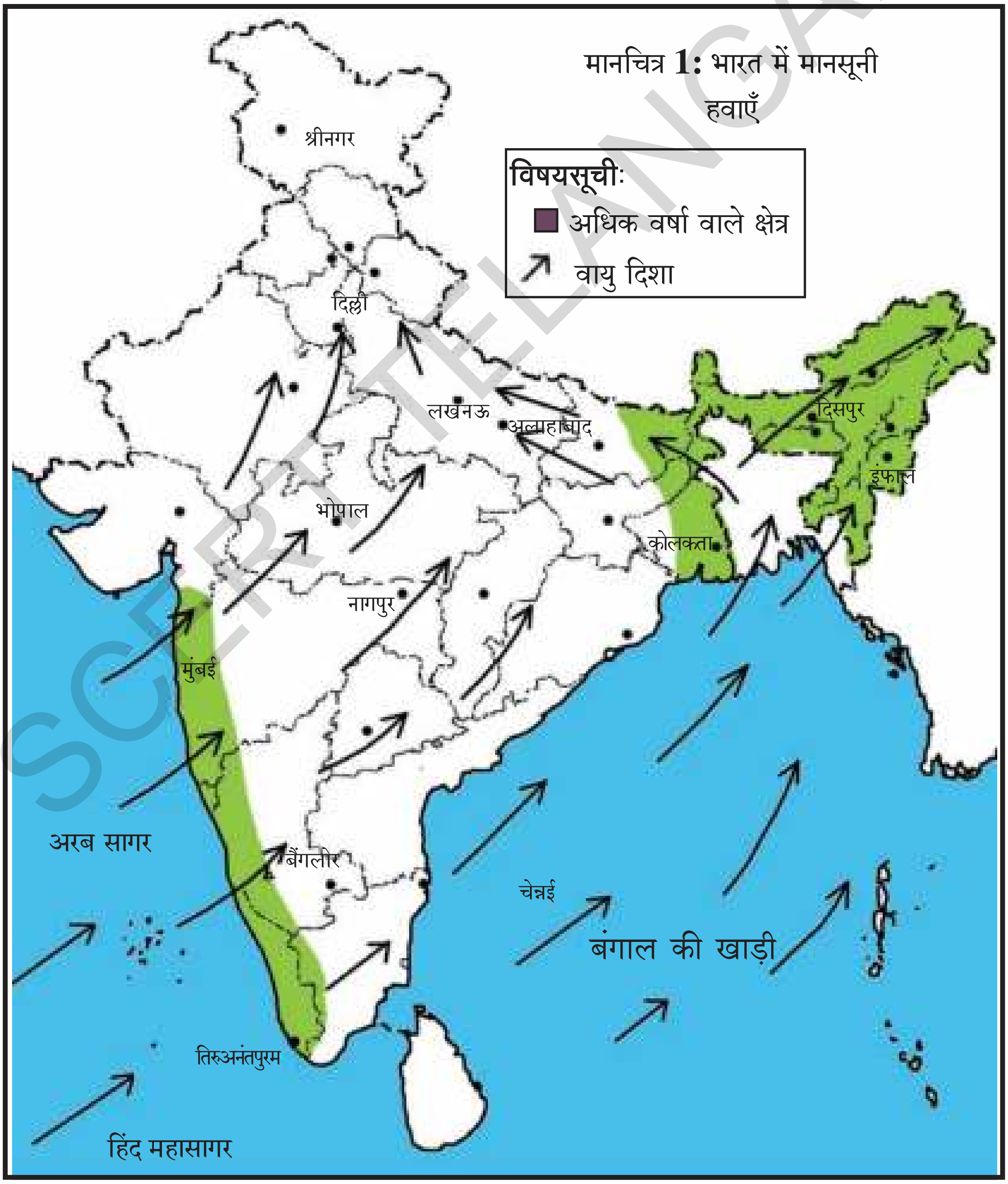

SCERT TELANGANA

- हवाएँ बंगाल की खाड़ी पर छाये बादलों को देश के किस भाग में ले जाएँगी ?
- हवाएँ अरब सागर पर छाये बादलों को देश के किन भागों में ले जाएँगी ?
- पश्चिम बंगाल, लखनऊ एवं दिल्ली में वर्षा लाने के लिए हवाएँ किस दिशा में बहेगी?
- मुम्बई, हैदराबाद एवं बैंगलूर में वर्षा लाने के लिए हवाएँ किस दिशा में बहती हैं?

तेलंगाणा में वर्षा

- आपके क्षेत्र में किन महीनों में सबसे अधिक वर्षा होती है? 3 अधिकतम वर्षा वाले महीनों के नाम लिखिए।
- आपके क्षेत्र में सबसे निम्न(कम) वर्षा वर्ष के किन महीनों में होती है? ऐसे किन्हीं तीन महीनों के नाम लिखो।
- क्या आपके क्षेत्र में हर वर्ष एक समान वर्षा होती है या हर वर्ष उसमें बदलाव होता है?
- क्या आपके इलाके में कभी सूखा पड़ा है?
- क्या आपने कभी बाढ़ का अनुभव किया है?

तेलंगाना राज्य में मार्च और जून में प्रतिदिन तापमान बढ़ता है। जब दक्षिण पश्चिमी मानसून जून में प्रारम्भ होता है, तब बादलों से अच्छादित हवाएँ तेलंगाना क्षेत्र में पहुँच जाती हैं। जैसा कि आप चित्र 1 में देख सकते हैं। वर्षा तात्कालिक प्रभाव यह पड़ता है कि एक सप्ताह की वर्षा के पश्चात तापमान में अचानक बहुत अंतर आ जाता है। मानचित्र देखिए।

दक्षिण पश्चिम मानसून तेलंगाणा में सामान्य वर्षा लाता है। तेलंगाणा के उत्तर एवं पूर्वी भाग में अधिक वर्षा होती है। तेलंगाणा पठारी भाग के अधिक भाग में न्यून वर्षा होती है। तेलंगाणा के महबूबनगर और जोगुलांबा जिले में बहुत थोड़ी वर्षा होती है। मानचित्र 2 को देखिए।

पर्वतीय श्रृंखलाएँ जैसे पश्चिमी घाटियाँ वर्षा को लाने वाली हवाओं के रास्ते में आता है तथा वे उन्हें ऊपर उठा देती हैं। ऊपर उठते ही हवाएँ ठंडी हो जाती हैं और जलवाष्प तेज़ी से जम जाते हैं। यह अधिक ऊँचाई पर पहुँचते हैं तो वर्षा का रूप धारण कर लेते हैं। इस प्रकार की वर्षा अधिकतर पर्वतीय क्षेत्रों में देखी जा सकती है।

मई से अक्तूबर के महीनों में बंगाल की खाड़ी में चक्रवात का निर्माण होता है। ये चक्रवात हमारे क्षेत्र में वर्षा लाते भी है या नहीं भी। यह बंगाल की खाड़ी के चक्रवात की गहनता पर तथा तटीय भाग को पार करने के पश्चात चक्रवात की दिशा पर निर्भर करता है। कभी-कभी इस भाग में चक्रवात और मानसून मिलकर वर्षा को फैलाते है और फसलों को भी हानि पहुँचाते हैं।

अक्तूबर के बाद वायुदिशा परिवर्तन कर बंगाल की खाड़ी से होते हुए दक्षिण-पश्चिम (नैरुवी) दिशा की ओर चलने लगती हैं। परिणामस्वरूप तेलंगाना क्षेत्र में अक्टूबर से नवंबर महीनों के बीच कम वर्षा होती है। इसे उत्तर पूर्वी मानसून या (retreating) वापस लौटने वाला मानसून भी कहते है।

सिरसिला शहर में 10 वर्षों में वर्षा

वर्ष	मि.मि. में वर्षा	वर्ष	मि.मि. में वर्षा
1996	933	2001	763
1997	695	2002	605
1998	926	2003	819
1999	823	2004	619
2000	895	2005	891

Source: Tahasildar office, Sircilla

- सिरसिला शहर में औसतन वर्षा कितनी है?
- ऊपर के अंकों को देखिए। सिरसिला में किस महीने अधिकतम वर्षा तथा न्यूनतम वर्षा होती है।
- किन दो वर्षों में अधिक वर्षा हुई?

SCERT TELANGANA

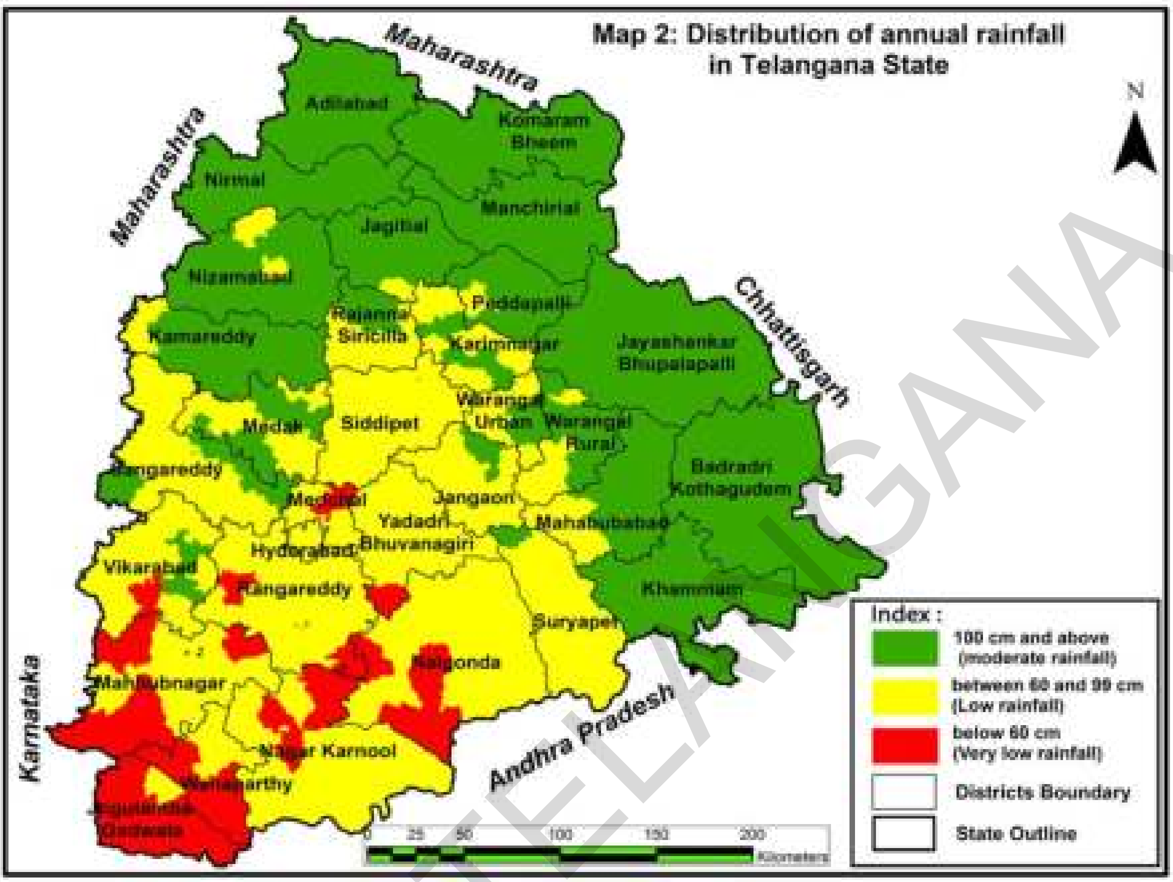

Map 2: Distribution of annual rainfall in Telangana State

SCERT TELANGANA

- उपर के मानचित्र में तेलंगाणा के विभिन्न भागों में वर्षा दर्शायी गई है।

i. क्या आपके जिले में भारी, औसत या न्यूनतम वर्षा होती है?

ii. कौन-से शहर में न्यूनतम/अधिकतम वर्षा होती है - जोगुलांबा,कोमुरमभीम, यादाद्री, हैदराबाद।

iii. कुछ और प्रश्न तैयार कर एक दूसरे से पूछिए।

- आपके अटलस में भारत के भौतिक मानचित्र को देखिए और पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट को पहचानिए। निम्न वाक्यों में रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।
- पश्चिमी घाट निम्न राज्यों तक फैला हुआ है ______,______,______.
- पूर्वी घाट निम्न राज्यों तक फैला हुआ है ______, ______, ______.
- कौनसे क्षेत्र में पश्चिमी एवं पूर्वी घाट विभाजित होते है?
- अपनी पुस्तिका में भारत का मानचित्र बनाइए : उसके पश्चात पश्चिमी घाट और पूर्वी घाट उतारिए, उसके बाद तेलंगाणा के भागों को बताइए; अन्त में महीनों के अनुसार उनका नामांकन कीजिए जिन महीनों में वहाँ वर्षा होती है।

वर्षा मापन

वर्षा की मात्रा को मापने के लिए वर्षामापी यंत्र (rain guage) का उपयोग होता है। एक इकाई क्षेत्र में हुई वर्षा के अनुपात को से.मी में मापा जा सकता है। आइए जानें कि हम वर्षा की मात्रा को कैसे मापते हैं? कहाँ अधिक और कहाँ कम वर्षा हुई इसे हम कैसे बता सकते हैं? हमें कैसे मालूम होगा कि निजामाबाद में अधिक वर्षा होती है या रंगारेड्डी में।

स्वयं वर्षामापी यंत्र तैयार कीजिए

चित्र 1. वर्षामापक यंत्र बनाने के लिए उपरोक्त वस्तुएँ संग्रहित कीजिए

चित्र 2. बोतल के ऊपरी भाग को इस प्रकार काटिए। कटे हुए बोतल का भाग ऊपर से नीचे तक एक समान होना चाहिए

चित्र 3. बोतल के ऊपरी भाग को उल्टा कर बोतल में लगाएँ

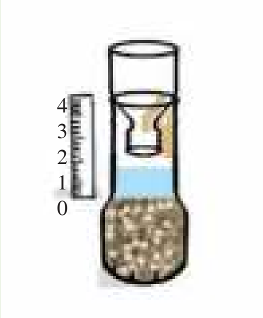

चित्र 4. अपने द्वारा सूचित "o" चिह्न तक बोतल को रेत और पानी से भर दीजिए। यदि आपके बोतल का तल समतल है तो आपको अधिक पानी भरने की आवश्यकता नहीं है। स्केल से पानी की ऊँचाई मापिए। आप जानेंगे कि आपके प्रांत में कितने से.मी वर्षा हुई.

SCERT TELANGANA

अब बाहर खाली जगह पर बोतल रखिए। बोतल में वर्षा होते समय कुछ भी बाधा न आने पाये। वर्षा रुकने के बाद बोतल में पानी की ऊँचाई मापें। इस प्रकार उस दिन की वर्षा को हम से.मी. में माप सकते हैं। इस बोतल को यदि सप्ताह या महीने भर बाहर रखा जाये तो सप्ताह या महीने में कितनी वर्षा हुई मापा जा सकता है।

जब वर्षा होती है तब बोतल में पानी का स्तर ऊपर होता है। पानी के स्तर को स्केल से मापने से पता चलता है कि निर्धारित समय में कितनी वर्षा हुई।

भाग -II

नदियों का प्रवाह

वर्षा के रूप में आने वाला धरती का पानी से कहाँ चला जाता है? इस पानी का कुछ भाग ज़मीन में मिल जाता है। कुछ भाग ज़मीन के ऊपरी तल पर(प्रवाहित) बहता रहता है। बाकी पानी वाष्प बन कर हवा में मिल जाता है। ज़मीन में मिल जाने वाले पानी के बारे में हम अगले पाठ में पढ़ेंगे। इस पाठ में भूमि के ऊपरी भाग पर बहते पानी के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

नदियाँ

क्या आपने ढ़लाऊ भूमि पर लघु जलधारा बहती हुई देखी है? वर्षा के मौसम में वर्षा का पानी प्रदेशों में, पर्वतों, पहाड़ियों से झीलों में बहता है। झीलें कुछ दिनों बाद सूख जाती हैं। पर्वतों पर बहने वाली जल की धाराएँ (Channels) बनती हैं।

जब दोबारा वर्षा होती है तो फिर से पानी उन्हीं धाराओं से बहता है। इस प्रकार नदियों एवं घाटियों का निर्माण होता है। यह विधि नीचे दिये गये चित्र में देखिए। चित्र 2.3.

चित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए

- संकेत के द्वारा नदी के प्रवाह की दिशा बताइए?
- भूमि के ढलान की दिशा संकेत द्वारा सूचित कीजिए ?
- क्या भूमि की ढलान की दिशा में ही नदियाँ प्रवाहित होती हैं? बताइए।

जलधाराओं का नदी रूप धारण करना

अपने स्त्रोतों पर नदी अधिकतर क्षीण धारा के रूप में आरंभ होती है। जैसे-जैसे वह आगे बहती है वह बड़ी और चौड़ी बनती है। यह इसलिए होता है क्योंकि कई छोटी धाराएँ, धारा के बहाव में मिल जाती है। छोटी नदी या धारा जो बड़ी नदी में मिलती है उसे 'उपनदी' कहते है।

जैसे-जैसे नदी का रुप बड़ा या चौड़ा होता जाता है, जल का प्रवाह कम होता जाता है। इसमें बहकर आया कचरा, मिट्टी आदि नदी के नीचले भाग में पहुँच जाता है और इससे समतल भूमि का निर्माण होता है।

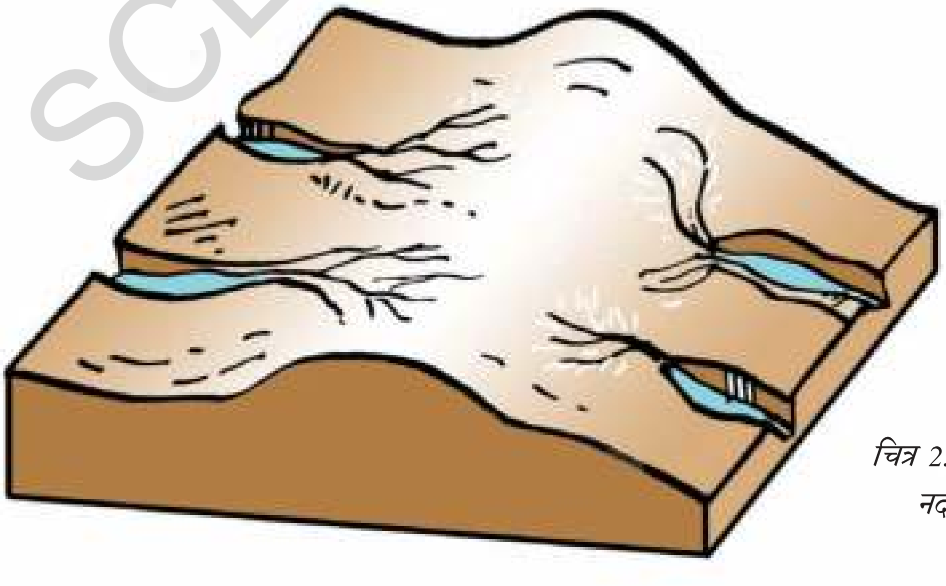

चित्र 2.3 ढलान एवं नदी निर्माण

SCERT TELANGANA

नदी समुद्र के समीप बहते समय और भी धीमी गति से बहने लगती है। वह अपने साथ कचरा या मिट्टी नहीं ले जा सकती। वह अपने मार्ग पर संग्रहित करती है। और वे भर जाती है। लेकिन बाढ़ आने पर नदी समुद्र तक पहुँचने के लिए नये मार्ग बना लेती है। इस तरह नदियाँ जहाँ समुद्र में मिल जाती है, उस जगह पर डेल्टा बनता है। अपने राज्य में दो विशाल डेल्टा हैं। ये गोदावरी एवं कृष्णा नदी पूर्वी तट पर डेल्टा बनाती है। उनमें वर्ष भर पानी रहता है। वैसे भी कई छोटी नदियाँ जिनमें वर्षाऋतु में पानी रहता है। ऐसा क्यों?

पश्चिम की घाटियों से प्रारम्भ होने वाली नदियाँ जैसा – कृष्णा, गोदावरी को वर्षा का अधिक जल मिलता है। वर्षा का पानी धीमी गति से भूमि में मिल जाता है। यह वर्ष भर नदियों में बहता रहता है। वही दूसरी ओर सूखे क्षेत्रों से आरंभ होने वाली बहुत सारी नदियाँ को वर्षा का अपर्याप्त जल मिलता है। जैसे डिन्डी, मन्जिरा, मूसी नदी में पानी के अभाव में बढ़ती है। पूर्वी घाटियों में प्रारंभ होने वाली नदियाँ में भी साधारण वर्षा होती हैं। वे नदियाँ तेजी से बहती हुई समुद्र में मिल जाती हैं। इस प्रकार वर्षा का मौसम न होने पर कुछ नदियाँ सूख जाती हैं।

मानचित्र-3 तेलंगाणा की नदियाँ

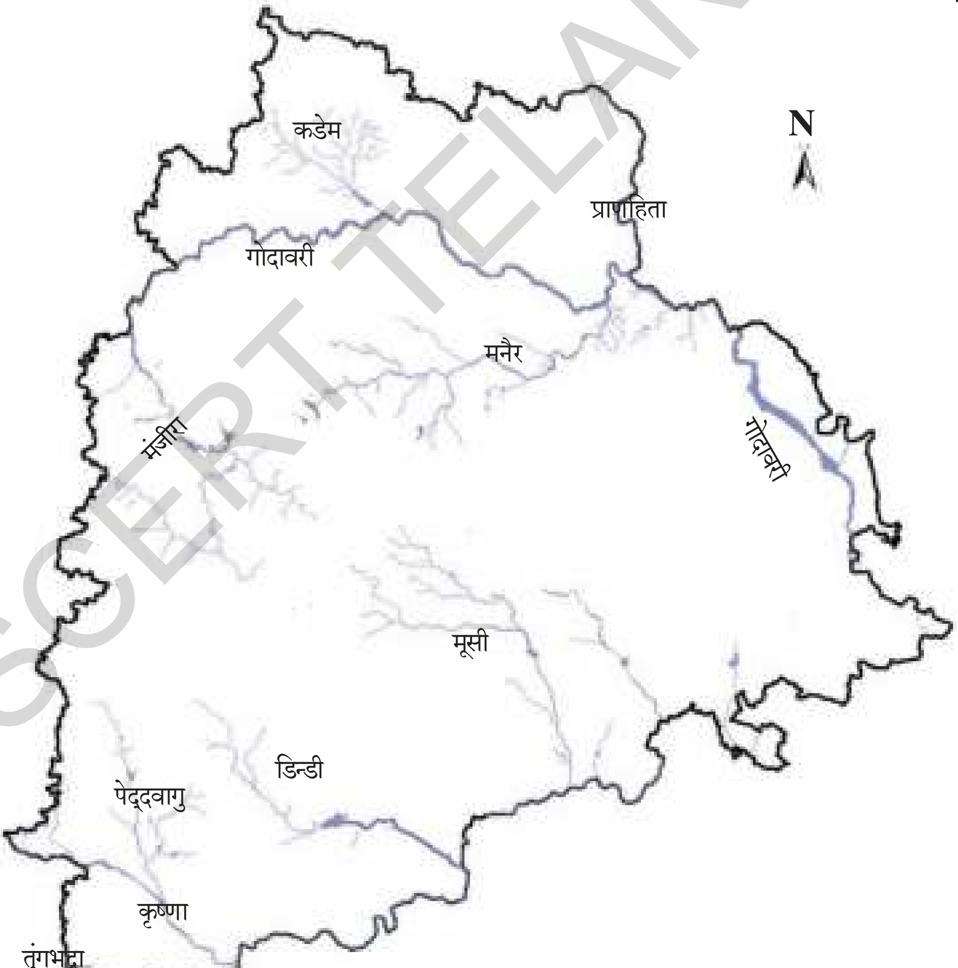

Based on map prepared by
Telangana State Remote Sensing Applications Centre
Planning Department,
Govt. of Telangana.

SCERT TELANGANA

- मानचित्र 3 में तेलंगाना राज्य की केवल बड़ी नदियाँ अंकित कीजिए। ध्यान दीजिए कि कृष्णा नदी के कुछ भाग दक्षिणी भाग की सरहद और गोदावरी उत्तर पूर्वी भाग की सरहद बनाती है।
- आपके जिले की महत्वपूर्ण धाराओं को अंकित कीजिए और बड़ी नदी जो इससे मिलती है – पहचानिए।
- आपके जिले में बहने वाली धाराएँ वर्ष भर बहती हैं या केवल वर्षा ऋतु में बहती हैं। अंकित कीजिए।

जिले	धारा का नाम	नदी में मिलना

- आप क्या सोचते है कि तेलंगाना मानचित्र में ढ़लाऊ दिशा क्या है। उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम या पश्चिम से पूर्व?

बाढ़ तथा बाढ़ द्वारा बने मैदान

किसी भी नदी में वर्ष भर समान मात्रा में पानी नहीं रहता। यदि बरसात के मौसम में नदी भरपूर बहती है तब भी गर्मियों में पानी कम हो जाता है। चित्र 2.4 , 2.5 देखिए, नदी अपने ऊँचे किनारों के साथ विशाल रूप धारण किया हुआ है। यह रेत और पत्थरों से भरा हुआ है। इनके बीच नदी छोटी नहर के रूप में बहती है। आपने देखा होगा कि यहाँ कोई वृक्ष नहीं है। क्योंकि प्रतिवर्ष जब भारी वर्षा होती है तो वहाँ छोटे या बड़े वृक्ष नहीं लग सकते। इस प्रकार नदियों के पास के बिना वृक्षों के भू-भाग को बाढ का मैदान कहा जाता है। सभी बड़ी नदियों के पास इस तरह के मैदान होते हैं।

आपने यह जाना है कि देश में अधिक वर्षा के कारण बरसात के मौसम में बाढ़ आती है। आपने कृष्णा, गोदावरी, ब्रह्मपुत्र, गंगा आदि नदियों में आने वाली बाढ़ के बारे में भी पढ़ा होगा।

2.5 चित्र को ध्यान से देखकर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

- क्या नदी का जल भाग मैदान को पूरी तरह से घेरे हुए है? या शुष्क मौसम छोटी सी नहर के रूप में बह रहा है?
- क्या नदी का जल बाढ़ के मैदानों तक ही है या नदी के किनारों के ऊपर भी बह रहा है?
- कृषिभूमि, वृक्ष आदि को बाढ़ किस प्रकार प्रभावित करती है।
- क्या आप बता सकते हैं बाढ़ कृषि के लिए किस प्रकार लाभदायक है?

SCERT TELANGANA

चित्र - 2.4 बाढ़ का मैदान

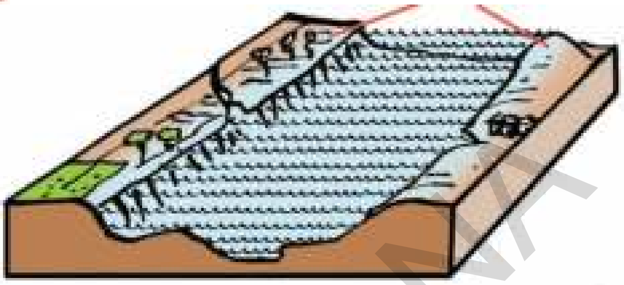

चित्र - 2.5 बाढ़

हमारे देश में वर्तमान वर्षों में बाढ़ एक बहुत बड़ी समस्या बन चुकी है। देश के कुछ भाग हर वर्ष बरसात में बाढ़ की चपेट में आते हैं। जिसके कारण जनता,फसल, प्राणी आदि की हानि होती ही रहती है। आइए पता लगाइए कि बाढ़ से बचने के लिए हम क्या कर सकते हैं?

ज़मीन पर यदि पेड़-पौधे (पेड़-पौधे, घाँस) अधिक लगायें तो वर्षा के पानी के प्रवाह की गति कम हो सकती है। यदि जल प्रवाह की गति धीमी हो तो पानी ज़मीन में घुल-मिल जायेगा। नदी में पहुँचने वाले पानी के आयात में अचानक वृद्धि के कारण बाढ़ आती है। इस प्रकार पेड़-पौधे लगाकर, जल प्रवाह की गति को धीमी कर, पानी नदी में ही रोका जा सकता है। जिससे अचानक बाढ़ को रोका जा सकता है। साथ ही भूगर्भ जल को भी बढ़ाया जा सकता है।

वनस्पति अन्य प्रकार से भी बाढ़ रोकने में भी सहायक होती हैं। यह वर्षा के जल से मिट्टी के अपरदन को कम करते हैं।

बडे पैमाने पर वृक्षारोपण

हरित के नाम पर मुख्य रूप से पहल अधिकांश सरकार ने वनीकरण कार्यक्रमों की शुरुआत की ओर केन्द्रित किया है। तेलंगाणा राज्य बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण कार्यक्रम के साथ सब से आगे है।

राज्य सरकार पूरे राज्य भर में 230 करोड पौधारोपण कर रही है। इसका उद्देश्य प्रत्येक गाँव में 40,000 पौधे और प्रत्येक विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र में 40 लाख पौधारोपण की योजना बनायी है। लोगों की प्रतिनिधि, ग्रामीण और समुदाय के प्रतिनिधि, बंजर भूमि, तालाब के किनारे, सामुदायिक स्थान, आवासीय कॉलनियों सभी सड़क किनारों पर पौधारोपण करके इस कार्यक्रम को सफ़ल बनाने की कोशिश कर रहे हैं।

मृदाक्षरण को रोकना

वन आच्छादन, बाढ़ नियंत्रण और मिट्टी का क्षरण को नियंत्रण करता है। वृक्षों की जडे अपनी क्षमता से न केवल मृदा का क्षरण रोकते हैं बल्कि सतह के पानी के प्रवाह को कम करता है जो बाढ़ का कारण बनता है। सड़को का निर्माण के लिए पचास वर्ष से अधिक पुराने वृक्षों को काट दिया जा रहा है। इसलिए पौधारोपण अनिवार्य हो गया।

SCERT TELANGANA

पौधारोपण कार्यक्रम को प्रभावी बनाने के लिए, पौधों का पालन व सुरक्षा तथा कार्यक्रम की निगरानी करने के लिए ग्राम्य स्तर पर सरपंच की अध्यक्षता में हरित रक्षक समिति को तैनात किया गया है। इसी तरह जिला तथा राज्य स्तर पर समितियों का गठन किया गया है।

- आपके विद्यालय में वृक्षारोपण के अंतर्गत कौन से क्रियाकलाप किये गये?
- बडे पैमाने पर पौधारोपण करना क्यों आवश्यक है?

उदाहरण के लिए गंगा नदी को ही लीजिए। पहले हिमालय पर घने जंगल थे जहाँ से गंगा और उसकी उपनदियाँ बहती थी। इन वर्षों में बड़ी मात्रा में वृक्षों को काटा गया, जिससे हिमालय में वनक्षेत्र में कमी आयी है। परिणामस्वरुप जब भी वहाँ भारी वर्षा होती है, वर्षा का पानी तेज़ी से पर्वतों की ढलावों से बहता हुआ, नदियों के बाढ़-मैदानों में जमा हो जाता है। पानी अपने साथ बड़ी मात्रा में मिट्टी और रेत लाता है और उसे नदियों के तल में जमा कर देता है। इसके परिणामस्वरुप बार-बार बाढ़ आती है जिससे नदी के किनारे जन-धन की भारी हानी होती है।

कहने का तात्पर्य है कि पेड़-पौधों की सुरक्षा का महत्व बढ़ गया है। साथ ही साथ हमें वृक्षारोपण की ओर भी ध्यान देना होगा।

- क्या आप बता सकते हैं कि बाढ़ की रोकथाम में वन और वनस्पतियाँ किस तरह सहायक है?
- क्या अकाल के प्रभाव को कम करने में वन और वनस्पतियाँ सहायक हो सकती है।

तूफान और बाढ़ की चुनौती

हमारा देश लम्बे तटीय क्षेत्र से घिरा हुआ है और अकसर बंगाल की खाड़ी के विनाशकारी तूफान का सामना करता है। जब समुद्र से तेज हवाएँ बहती हैं, तेज वर्षा धरती को झिंझोड़ देती हैं और ऊँची लहरें समुद्र को असुरक्षित बना देती है। ऐसी परिस्थिति जून से दिसम्बर महीनों के बीच होती है। हमारे पूर्व तटीय भाग में भयंकर तूफान नवंबर 1977, में आया था। जिसकी ज्वारीय लहरें 6 मीटर ऊँचाई तक पहुंची थीं। चक्रवातीय आंधी और बाढ़ तटीय क्षेत्रों में लगभग 100 गांव उसकी चपेट में आ गये थे और 9941 लोगों की मृत्यु हुई थी। ऊँचाई से देखने पर ये प्रांत ऐसे लगते थे, जैसे बाढ़ के पानी में डूबे हुए हों।

तूफान एक ऐसी प्राकृतिक आपदा है जिस पर मानव का कोई जोर नहीं। इस प्रकार की प्राकृतिक आपदाएँ हमारे जीवन पर प्रभाव डालती ही रहती हैं, कभी कम तो कभी अधिक। हमारा समाज भी इसके लिए मानसिक रूप से तैयार है। उदाहरण के लिए जहाँ तूफान की संभावना अधिक होती है, उन तटीय क्षेत्रों में बसने वाली जनता के पास उससे बचने के साधन या तो उपलब्ध नहीं हैं या बहुत कम हैं। इन तटीय प्रांतों में रहने वाले मछुआरों के मकान तूफान के कारण क्षतिग्रस्त होते ही रहते हैं। क्योंकि अधिकांश गरीब मछुआरे यहीं रहते हैं। पक्के मकानों में बसने वाले लोगों के पास तो कुछ दिन का आहार पहले से ही जमा होता है ऐसी प्राकृतिक आपदाओं के कारण गरीब जनता को ही अधिक नुकसान उठाना पड़ता है।

जब बाढ़ का पानी वापस चला जाता है तो पेयजल के सभी संसाधन प्रदूषित हो जाते हैं। इसे पीने के लिए उपयोग में नहीं लाया जा सकता। लेकिन गरीब जनता विवश होने के कारण उसी प्रदूषित जल का सेवन करती है। इस कारण उन्हें अनेक बीमारियाँ जैसे- हैजा, पेचिस, पीलिया आदि का सामना करना पड़ता है। क्योंकि कुछ ही लोगों को शुद्ध पेयजल की आपूर्ति हो पाती है। जिनके

SCERT TELANGANA

पास स्रोत है वे ही सुरक्षित पीने के पानी की बोतल का प्रबंध सड़कों के टूटने व अधिक वर्षा के कारण प्रभावित प्रदेशों में राहत कार्य कर सकते हैं सरल नहीं है। यहाँ लोगों को अपने ही संसाधनों पर निर्भर रहना पड़ता है।

तूफान से जीवन, फसल, संपत्ति आदि का नुकसान तो होता ही है, साथ ही भविष्य भी प्रभावित होता है। गरीब जनता द्वारा अपने लिए एकत्रित की गयी ज़रूरी वस्तुएँ जैसे- आहार, धान्य वस्तुएँ, पशु, वाहन, छोटी दुकानें, आदि नष्ट हो जाती हैं। अपने जीवन निर्वाह के लिए फिर से उन्हें ये संसाधन जुटाने पड़ते हैं। बहुत से परिवार अपने ऐसे सदस्यों को भी खो देते हैं, जिनके काम पर उनका निर्वाह होता है। स्थिति सामान्य होने तक दैनिक मजदूरों को हानि उठानी पड़ती है। प्राकृतिक आपदा के बाद कुछ सप्ताह तक उन्हें काम भी नहीं मिलता। इससे केवल उनकी फसलों की ही हानि नहीं होती बल्कि उनकी भूमि भी क्षतिग्रस्त हो जाती है।

तूफान, बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं से जनता अपनी सुरक्षा कैसे करें?

सरकार द्वारा तैयार की गई लंबावधि योजनाओं जनता एवं सरकारी संस्थाओं के बीच आपसी सहयोग के द्वारा प्राकृतिक आपदाओं से बचा जा सकता है। इस आधुनिक युग में पूर्व सूचित प्रणाली के द्वारा तूफान, बाढ़ आदि प्राकृतिक आपदाओं का अनुमान लगाना कोई कठिन कार्य नहीं है। सरकार को जिन प्रान्तों में प्राकृतिक आपदाओं की संभावना हो उन प्रान्तों में इन प्रणालियों की स्थापना कर आवश्यक सुरक्षा के कदम उठाना चाहिए।

सरकार भी दीर्घकालीन सुरक्षाएँ देने के लिए उत्तरदायी होती है। संपूर्ण जनता के लिए पक्की सड़कें तथा समुद्री तटों, नदियों के किनारे या निम्न भूमि में रहने वाले लोगों के लिए पक्के सुरक्षित भवनों का निर्माण करवाया जाना चाहिए। इसी प्रकार प्राकृतिक आपदा से सुरक्षा के लिए जल, आहार, चिकित्सा सुविधा भी उपलब्ध कराने का उत्तरदायित्व सरकार पर है।

चित्र 2.6 बंगाल में तूफान का चित्र

लोगों को प्राकृतिक आपदाओं का सामना करने लिए कैसे तैयार किया जाये?

1. तूफान एवं बाढ़ ऋतुओं पर आधारित होते हैं। इन ऋतुओं में तूफान/बाढ़ के समय दूरदर्शन, रेडियो आदि के समाचारों को ध्यान से सुने। संचार माध्यमों के द्वारा घर-घर इसकी जानकारी पहुँचाई जाये। उन्हें सचेत किया जाए। यह कार्य प्रायः घर-घर जाकर या लाऊडस्पीकरों के द्वारा किया जाता है।
2. हर घर में आपातकालीन किट तैयार रखा जाये। इसमें कुछ कागज, आहार की वस्तुएँ, धन, आपातकाल में सम्पर्क हेतु उपयोगी फोन नंबर आदि रखे जायें।
3. पास के पुनरावास केन्द्र की जानकारी पहले से ही सूचित की जाय।
4. यदि आवश्यक हो तो घर की दीवारें, छत, दरवाज़े, खिड़कियाँ मजबूत बनायी जाये।
5. तूफान की सूचना मिलते ही तुरंत पेयजल, आहार, वाटर प्रूफ बैग में रख लें।

SCERT TELANGANA

6. तूफानी चेतावनी की सूचना मिलते ही बाहर न जायें। मुख्य रूप से तटीय क्षेत्रों में न जायें।
7. खिड़कियाँ दरवाजे बंद कर घर में ही रहें।
8. यदि आपके मकान में सुरक्षा संभव न हो तो पास के पक्के मकान में जायें।
9. यदि आप किसी वाहन पर हों तो उसे रोककर तटीय प्रदेश, वृक्षों, विद्युत स्तंभों से दूर रहें जो तेज हवाओं के कारण उखड़ कर गिर सकते हैं।
10. तूफानी हवाओं के रुकने के बाद भी आधिकारिक सूचना तक घर से बाहर न निकलें।
11. रेडियो/टीवी प्रसारण द्वारा दिये गये सुझावों का पालन करें।
12. तूफानी हवाएँ कम हो जाने पर सड़क पर गिरे पेड़ों और खंभों के पास से गुजरते समय सावधानी बरतें। वहाँ आंशिक रूप से उखड़े पेड़ या खंभे हो सकते हैं।
13. ऐसे समय में साँप अपने बिल से बाहर निकल आते हैं, उनसे सावधान रहें।
14. बाढ़ के पानी में न जायें क्योंकि वह गहरा हो सकता है।
15. विद्यार्थी होने के नाते आप सभी उपरोक्त सुरक्षा सावधानियों के प्रति जनता को जागरूक करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

यदि आपको घर छोड़ना पड़े–

1. कपड़े, आवश्यक दवाइयाँ, मूल्यवान वस्तुएँ आदि वाटर प्रूफ बैग में रखकर सुरक्षित स्थान पर जायें।
2. रसोई सामग्री, स्टील, पीतल की वस्तुओं, वस्त्रों को चारपाई या ऊँचे स्थान पर रखें। (विशेषकर विद्युत उपकरण)
3. बिजली के स्विच बंद करें।
4. चाहे आप घर में रहे या बाहर चले जायें शौचालयों के ऊपरी भाग को रेत के थैला से बंद कर दे ताकि गंदगी विपरीत दिशा में बाहर न आ सके। इसके लिए ड्रेनेज का रास्ता बंद कर दें।
5. घर को ताला लगाकर सुरक्षित प्रांत में जाने के रास्ते के बारे में अच्छी तरह जान लें।
6. अनजान गहरे व प्रवाहित पानी वाले स्थानों में न जाये।

बाढ़ के समय :

1. उबला पानी ही पीये।
2. खाद्य सामग्री को ढक कर रखें। पर्याप्त भोजन ही लें। अत्यधिक मात्रा में भोजन न करें।
3. डायरिया फैलने पर चाय, चावल का उबला पानी, नारियल का पानी ही लें।
4. बच्चों को खाली पेट न रहने दें।
5. आस-पास के स्थानों को संक्रमण से बचाने के लिए ब्लीचिंग पाउडर और चूने का छिड़काव करें।
6. बाढ़ के पानी में जाने से बचें। यदि जाना आवश्यक हो तो अपने पैरों के लिए समुचित सुविधा की व्यवस्था करें। साथ ही साथ लकड़ी से पानी की गहराई जाँच लें। घुटने से अधिक पानी हो तो उससे दूर रहें।
7. बाढ़ के पानी से भीगा आहार न लें।
8. ग्रामीण प्रांतों में पानी उबालकर ही पियें। पानी की शुद्धता के लिए हालोजिन टेबलेट का उपयोग किया जाय। (अधिक जानकारी के लिए ग्रामीण स्वास्थ्य चिकित्सक से सलाह लें।)
9. बाढ़ के समय साँप का काटना साधारण बात है, इसलिए आवश्यक सावधानी बरतें।

SCERT TELANGANA

मुख्य शब्द :

1. नदियाँ, उपनदियाँ   2. द्रवीकरण   3. वार्षिक वर्षा   4. बाढ़ के मैदान

आपने क्या सीखा ?

1. जल, जल- वाष्प में कैसे बदलता है? वाष्पीकरण के कारण बादल कैसे बनते हैं? बताइए।
2. अधिक मात्रा में वाष्पीकरण और बादल का निर्माण कहाँ होता है?
3. मेघ गहरे भू-भाग तक कैसे पहुँचते हैं?
4. अधिकतम वर्षा कहाँ होती है? सही उत्तर चुनिए।
   a) वायु दिशा में स्थित समुद्री तटीय प्रदेश
   b) वायु दिशा में स्थित पर्वतीय प्रदेश
   c) समुद्र से दूर का भू-भाग
5. गोदावरी नदी पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है, क्यों?
6. जलचक्र के प्रमुख स्तरों के बारे में बताइए।
7. आपके गाँव व शहर के पास कुछ नदियाँ व झीलें होंगी। उनके बारे में पता लगाकर नीचे दी गयी तालिका भरिए।

क्रम	नाम	उद्‌गम स्थान	किस नदी में मिलती है	किस समुद्र में मिलती है

8. आप के प्रांत में नदियों, जलधाराओं में क्या वर्ष भर पानी रहता है ? क्या पहले इन नदियों में अधिक पानी रहता था अपने बुजुर्गों से पूछ कर लिखिए।
9. किस प्रकार लोगों को बाढ़ का सामना करने के लिए तैयार किया जाता है?
10. चक्रवात और बाढ़ के चित्र जमा किजिए और एलबम बनाइए।
11. बाढ़ विनाश का पोस्टर तैयार कीजिए।

परियोजना : आपके गाँव/मुहल्ले में जहाँ पानी व्यर्थ किया जाता है, तालिका में जानकारी दीजिए, कारणों पर चर्चा कीजिए, पानी बचाने के कुछ उपाय बताइए।

क्र. सं.	**स्थान जहाँ पानी व्यर्थ किया जाता है**	**कारण**	**पानी की रोकथाम/ सुरक्षा के उपाय**

SCERT TELANGANA

अध्याय **3**

जलाशय एवं भू-गर्भ जल (Tanks and Ground Water)

भाग - I

जलाशय(Tanks)

कई हजारों वर्षों से हमारे पूवर्जों ने जलाशयों का निर्माण करके वर्षा के जल को उसमें सुरक्षित किया है। हमारे पास बृहद शिला युग में निर्मित जलाशयों के कई प्रमाण हैं, जिसका उपयोग उन्होंने कृषि के लिए किया था। काकतीय, विजयनगर शासक एवं नायकों ने कई जलाशयों का निर्माण तेलंगाणा में किया था। जिसके कारण सूखे क्षेत्रों में कृषि का विस्तार हुआ। आज भी आप इन क्षेत्रों के कई ग्रामों में एक या दो जलाशय देख सकते हैं।

जलाशयों का निर्माण कैसे हुआ?

साधारण तौर पर इन जलाशयों का निर्माण नहर के एक तरफ पत्थर और मिट्टी की दीवार बना कर इस प्रकार किया जाता था कि एक तरफ दिवार के साथ एक बड़ी झील बन सके। नीचे दिये गये चित्र को देखो :

इन जलाशयों का निर्माण कभी राजाओं द्वारा, कभी किसी सेना के अधिकारी द्वारा, तो कभी नायकों द्वारा किया जाता था। कभी-कभी गाँव के लोग मिलकर भी जलाशय का निर्माण कर लेते थे। अधिकतर स्थानों पर लोग इन जलाशयों के निर्माताओं के स्मरण में मंदिर बनवाते थे, उनके बारे में कथाएँ लिखते थे या त्यौहार मनाते थे। गाँव के सभी लोग इन जलाशयों की देखभाल करते थे। कभी इसकी दीवार की मरम्मत करते, तो कभी बाँध की, या फिर जलाशय के तल से कीचड़ निकाल कर साफ करते। वह यह भी देखते थे कि कोई जलाशय के जल को प्रदूषित न करे और जल के प्रवाह में भी रुकावट न हो। वे जलाशय की देखभाल के लिए एक व्यक्ति की नियुक्ति भी करते थे। इस विशेष व्यक्ति को 'निरठ्ठी' या 'नीरू कट्टे मनीषी' कहते थे।

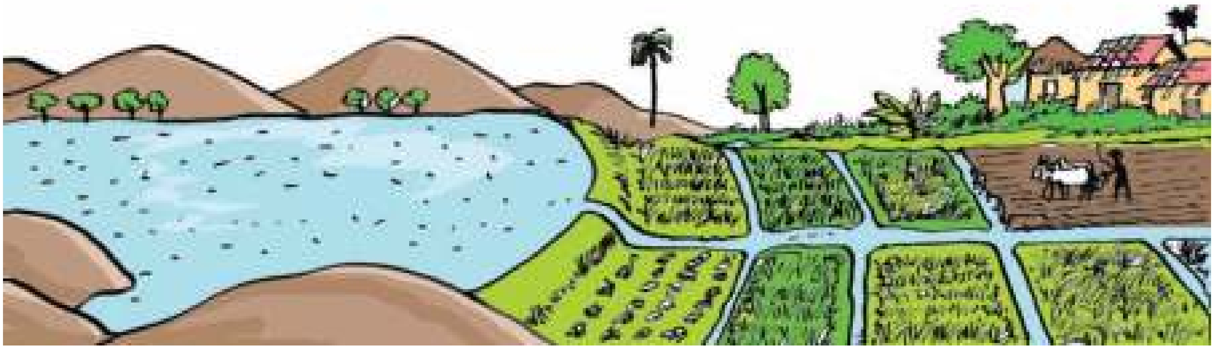

चित्र - 3.1(a) जलाशय एवं खेत

SCERT TELANGANA

जलाशय किस तरह हमारे सहायक है?

जलाशय न केवल ग्रामीणों को एवं पशुओं को पेय-जल प्रदान करते हैं, बल्कि सिंचाई के लिए भी उपयोगी होते हैं। सिंचाई में वे इस तरह काम आते थे कि अकाल में भी कुछ फसले उगा सकते थे। ये जलाशय आस-पास के कुओं में भी जल-स्तर बढ़ाने में सहायक होते थे।

वर्षा ऋतु के बाद, और जलाशयों में जल का स्तर कम होने के बाद, जलाशय के तल में कुछ फसलें भी उगाई जाती थीं।

महत्वपूर्ण बात यह थी कि यह जलाशय न केवल वर्षा के जल को व्यर्थ होने से रोकते थे, बल्कि मिट्टी के कटाव को भी रोकते थे। प्रति वर्ष लोग जलाशयों के कीचड़ को इकट्ठा करके उसे खेतों में खाद के रूप में उपयोग करते थे।

हमें यह याद रखना चाहिए कि ये जलाशय किसी एक व्यक्ति के न हो कर गाँव के सभी व्यक्तियों के लिए थे। पूरे गाँव को इससे लाभ प्राप्त होता था।

आज के दौर में जलाशयों की कमी

पिछले बीस-तीस वर्षों में इन जलाशयों को अनदेखा कर दिया गया। न उनकी मरम्मत की गई, न सफाई।

चित्र 3.1(b) रामप्पा जलाशय-जयशंकर जिला

लोगों ने इन जलाशयों की भूमि खरीदकर या तो इन पर घर बनाने शुरू कर दिये, या खेती। इसका परिणाम यह हुआ कि आज हम राज्य के हर भाग में इन सूखे जलाशयों की दयनीय स्थिति देख सकते हैं। इनकी देखरेख करने के बजाय हम उनमें बड़ी मात्रा में धन राशि खर्च कर और गहरे ट्यूब-वेल खोद रहे हैं। लेकिन इससे सिर्फ कुछ लोगों को ही लाभ हो सकता है और आने वाले समय में जल-साधनों में कमी आ सकती है। जलाशय सभी के लिए जल साधनों का निर्माण करते हैं।

परियोजना

- अपने आस -पास के क्षेत्र के जलाशयों के विषय में सूचना प्राप्त करो और उस पर एक रिर्पोट तैयार करो।
- जलाशय और उसके आसपास के क्षेत्रों का रेखीय मानचित्र तैयार करो।
- उस जलाशय में जल कहाँ से आता है? बचा हुआ जल कहाँ जाता है? पता करो।
- उस नदी या नहर का नाम पता करो जिस पर यह जलाशय बना है। या उन पर्वतों का जिनके पास ये जलाशय बनाये गये।
- जलाशय का बाँध किससे बनाया गया? और उसकी देखभाल कौन करता है?
- जलाशय का निर्माण किसने करवाया और यह कब बनाया गया?
- अगर इस जलाशय की कोई कथा है तो उसे लिखो।
- जलाशय और उसके आसपास के विभिन्न वस्तुओं की व्याख्या तैयार करो एवं उनके चित्र एकत्र करो।
- यहाँ कौनसी फसल होती है? पानी पर किसका नियंत्रण है? और किस तरह से पानी छोड़ा जाता है? पता करो।

SCERT TELANGANA

मिशन काकतीय (हमारा गाँव – हमारे जलाशय)

तेलंगाना निर्माण के पश्चात हमारी सरकार ने राज्य में जलाशय द्वारा लघु सिंचाई का कार्यक्रम आरम्भ किया। इस कार्यक्रम को "मिशन काकतीय", "मन उरु मन चेरुवु", कहते है। इसका लक्ष्य है लगभग 47000 जलाशय की सतह से मिट्टी निकालना और मरम्मत तथा जलाशय पर बांध बनाना है।

आपके क्षेत्र में इस कार्यक्रम के लागू किए जाने की जानकारी प्राप्त कीजिए। कितने जलाशयों में वृद्धि हुई और क्या लोगों को इससे फायदा हुआ है।

MISSION KAKATIYA

जलाशय में मत्स्यपालन

जलाशय केवल पेयजल या फसलों के लिए सिंचाई ही नहीं उपलब्ध कराते बल्कि मछुआरे के लिए जीविका भी प्रदान करते है। अधिकतर मछुआरे मुख्य रूप से बेस्ता (गंगापुत्र), गोण्ड्ला और मुदिराज, (तेनुगु) समुदाय के होते हैं। ये समुदाय नदियों और जलाशय पर अपनी जीविका चलाते है। आइए सूर्यापेट जिले के एक गाँव से उनके जीवन की जानकारी प्राप्त करेंगे।

चित्र 3.1 (d) : कट्टा मैसम्मा देवी

बेथावलु गाँव

यह गाँव सूर्यापेट के पास कोड़ाडा से 16 कि.मी. दूर है।

गाँव के प्रौढ़ व्यक्तियों के अनुसार "बेथावलु" जिसका नाम काकतीय के कनिष्क पदाधिकारी बेथाला रेड्डी के नाम पर रखा गया। उन्होंने अपनी पत्नी विराला देवी के नाम से जलाशय बनवाया। इसीलिए गाँववासी उस जलाशय को वीरला देवी जलाशय या एरलादेवी जलाशय कहते थे। आज भी इस जलाशय से 1900 एकड़ भूमि की सिंचाई की जाती है जबकि इसके निर्माण के समय वास्तविक रूप से 3000 एकड़ भूमि की सिंचाई के लिए किया गया था। नाजायज अधिकार एवं जलाशय में जमा मिट्टी के कारण आयकट (जलाशय का क्षेत्र) कम हो गया।

चित्र 3.1 (c) : वीरला देवी जलाशय

इस जलाशय के पास कट्टा मैसम्मा और गंगम्मा जो जलाशय की रखवाल मानी जाती थी, का एक प्रार्थना गृह भी बनाया गया था। मछुआरे और ग्रामवासी यहाँ मछली पकड़ने के पहले प्रार्थना करते थे और उनके सम्मान में वार्षिक त्यौहार भी मनाते थे।

SCERT TELANGANA

चित्र 3.1 (e) : जाल फेंकना

चित्र 3.1 (f) : मिछली पकड़ना

बेथावलु गाँव में बेस्ता (गंगापुत्र) और मुदिराज समुदाय के 600 परिवार हैं। जिनमें से 60-70 घरेलु लोग मछली पकड़ कर अपना जीवन चलाते है। वे अधिकार मार्च और अप्रैल में ही जलाशय में मछली पकड़ते हैं। बचे हुए समय में वे छोटे किसान या मजदूर के रूप में काम करते है।

जलाशय में मछली पकड़ना

प्राचीन काल में विभिन्न प्रकार की मछलियाँ जैसे – बुड़ापाराकालु, जेलालु, कोड़ीपेलु, चन्दामामालु, कुन्तमुखुलु, पुलीशालु, इसुका, ड़ोनडुलु, पोपेरालु, गन्द्रापाराकालु, गुरूयोपिलालु, कोरामिनुलु, वालुगलु आदि आसानी से धाराओं, छोटी नदियों और नहरों में मिल जाती थी। जब जलाशय में पानी बहता था अपने आप मछलियाँ उत्पन्न होती थी। आधुनिक समय में अधिक खेतों में अत्यधिक कीटनाशक एवं रसायनिक खाद के उपयोग के कारण ये कम होती जा रही है। इसीलिए अब मछली मत्स्य पालन केन्द्र में कृत्रिम रूप से छोटी मछलियाँ तैयार की जा रही है और संकरण के लिए जलाशय में छोड़ दी जाती है। जब वे थोड़ी बड़ी हो जाती है तब उन्हें पकड़कर बेच दिया जाता है। इनमें मेरिगे, रावु, बोचे (कटला) और बंगारू तीगा महत्वपूर्ण है। यह मछलियाँ आज मुख्य रूप से बाजार में मिलती है। प्रत्येक मछली का अपना एक स्वाद होता है। क्या आपने उपरोक्त मछलियों का स्वाद चखा है?

- हम कुछ ही प्रकार की मछलियाँ क्यों खाते है?
- केट फिश पर प्रतिबंध क्यों लगा दिया गया है?

जाल के प्रकार

मछली पकड़ने के लिए मछुआरे विभिन्न प्रकार के जाल का उपयोग करते है। पतली जाली में 30 कन्नूलू (छिद्र) होते है जबकि मोटी जाली में 60 कन्नूलू होते है। इन जाली को कहीं–कहीं “सन्नपु वाला और डोडुवाला” भी कहते है। इन जालो में लोहे या जस्ते से बने मोती होते है। सनुफ वाला कम वजन की होती है। वे सनुफुवाला से मछली और झींगा मछली पकड़ते है। डोडुवाला से 1000 ग्राम से 5 किलो की मछली को पकड़ा जाता है। डोडुवाला वजनी होती है। क्या आप सोच सकते है क्यों?

- आपके क्षेत्र के मछुआरे परिवार से मिलिए और देखिए कि वे कैसे मछली पकड़ते है।
- पता लगाइए कि आपके क्षेत्र में कैसी जाली का उपयोग किया जाता है और कक्षा में चर्चा कीजिए।

मछुआरे दो तरीको से मछली पकड़ते हैं – एक छिछले पानी में और एक गहरे पानी में। जब जलाशय में कम पानी होता है तब विसीरेवाला का उपयोग करते है। कच्चुवाला का वजन कम होता है। मछुआरे आगे

SCERT TELANGANA

स्थिर पानी में जाते हैं, कच्चुवाला को फेंकते है। इसका उपयोग तभी किया जाता है जब पानी गहरा होती है।

- चर्चा कीजिए कि जाल का उपयोग जल की गहराई पर क्यों चुना जाता है।

मछली पकड़ना

मछुआरे सबेरे जल्दी ही मछली पकड़ने निकल जाते है। कुछ लोग जहाँ पानी गहरा नहीं होता वहाँ विसिरे वाला का उपयोग करते है। दूसरे झील में थर्माकोल से बनी फेरी में उस स्थान पर जाते हैं जहाँ गहरा जल होता है और कच्चुवाला को फैलाते है। मछली पकड़ने का काम दिन में दो बार किया जाता है। वे मछली 4 बजे से 8 बजे तक सबेरे पकड़ते है तथा उन्हें बाजार में ले जाते है। फिर वे 1 बजे से 4 बजे तक दोपहर में पकड़ते है और बाजार ले जाते है। वे सर्दी, वर्षा और गर्मी की परवाह नहीं करते और मछली पकड़ते है। मछली बेचने के बाद बची हुई मछलियों को साफ धोकर धूप में सुखाया जाता है। जब मछली कम मात्रा में पकड़ी जाती है तो उन्हें कोड़ाड़ या सूर्यापेट में बेचने के लिए देते है तथा भारी मात्रा में पकड़ी जाने पर हैद्राबाद जैसे शहरों में ले जाते है। अधिकतर पुरूष मछली पकड़ते है और स्त्रियाँ उन्हें बाजार में बेचती है। चित्र 3.1(g) को देखिए।

मछुआरों की सहकारी समितियाँ

मछली पकड़े के लिए परिवार को सहकारी समिति की सदस्यता की आवश्यकता होती है। यह सदस्यता का आयकट पर निर्भर करती है। अधिकतर समिति 1 हेक्टर (2 ½ एकड़) के लिए एक सदस्य लेती है। आज समिति में 339 सदस्य है। समिति मछली विभाग को 2,35,000 रू. जलाशय में मछली पकड़ने के लिए अदा करती है। समिति को जलाशय में ड़ालने के लिए बीज खरीदने पड़ते है। उन्हें उत्पादन को सही मात्रा में प्राप्त कर सभी सदस्यों में समान भाग से वितरित करना पड़ता है।

चित्र 3.1 (g) : मछली बाजार

- आपके गाँव की सहकारी समीत के सदस्यों से मिलिए और सहकारी समिति के कार्यों की जानकारी प्राप्त कीजिए।
- आपके विचार में मछुआरे समुदाय को मत्स्य विभाग को धन क्यों अदा करना पड़ता है?

हाल ही में मत्स्य जलाशयों में नवीन पद्धति देखी जा सकती है। मछुआरे बहुत गरीब होते है और अपना घर चलाने के लिए ऋण लेते है। वे अपने मत्स्य केंद्रों से मछली संकरक (फिश सीडिंग) भी नहीं खरीद सकते है। इसीलिए उन्हें व्यापारियों से कर्ज लेने के लिए विवश किया जाता है। व्यापारी उन्हें अग्रिम ऋण देते है और जलाशय में मछली संकरक ड़ालने की जिम्मेदारी भी लेते है। इसके बदले में मछुआरे को अपना संपूर्ण मत्स्य उत्पादन व्यापारी को उसके द्वारा निर्धारित दर पर ही बेचना पड़ता है जो कि बाज़ारी भाव से 10 से 20 कम होता है। इस प्रकार व्यापारी अधिक लाभ प्राप्त करते है। यदि बैंक सहकारी समितियों को ऋण दे सके तो मछुआरे व्यापारी ठेकेदार से मुक्त हो सकते है।

- आपके विचार में बैंक मछुआरो को ऋण देने में अरूचि क्यों रखती है।

SCERT TELANGANA

भाग- II

भू–गर्भ जल (Ground Water)

वर्षा का जल न केवल नदियों और नहरों में बह जाता है, बल्कि मिट्टी में भी मिल जाता है। यह जल भूमि के नीचे पाये जाने वाले पत्थरों की दरारों में, कंकड़ तथा रेत के नीचे जमा हो जाता है। यह भूगर्भ जल है जहाँ हम बोरबेल और कुँओं से पहुँच सकते है।

ऐसी चट्टानें जिनमें दरारें या छोटे छेद होते हैं और जल संचयन कर सकती है उन्हें भेद्‌य चट्टान कहते हैं। तेलंगाणा के कुछ क्षेत्रों में चट्टानें जैसे ग्रेनाईट, कड़पा के चूने के पत्थर आदि काफी मजबूत होते हैं और उनमें छेद भी नहीं होते। उनके भीतर पानी नहीं जा सकता। जल अधिकतर ऐसी चट्टानों पर ही जमा होता हैं। क्योंकि पानी उनके नीचे नहीं पहुँच पाता इसलिए इन्हें अभेद्‌य चट्टान कहते हैं। हमारे तेलंगाणा राज्य में अधिकतर ऐसी चट्टानें ही पायी जाती हैं। तेलंगाणा का छोटा सा भाग जो नदियों के पास है, वहां पर रेत एवं मिट्टी तथा कंकड़ की गहरी परतें पायी जाती हैं। इन परतों में भी जल इकट्ठा होता है।

भूगर्भ में चट्टानों के बीच जो जलीय परत इकट्ठी होती है, उसे जलदायी (एक्केफर) स्तर कहते हैं। जलदायी स्तर की परत की मोटाई से हमें उस क्षेत्र में उपलब्ध भूगर्भ जल का पता चलता है।

अपने क्षेत्र में पाये जाने वाले कुओं का पता कीजिए और मालूम कीजिए कि भूमि से उनकी गहराई कितने फीट है? क्या उसके नीचे कोई चट्टानें हैं? वे किस प्रकार की है? उस कुएँ का मालिक कौन है? उसे कब खोदा गया और कितना खर्चा आया? कुओं की जानकारी जोड़िए और एक पुस्तिका बनाइए।

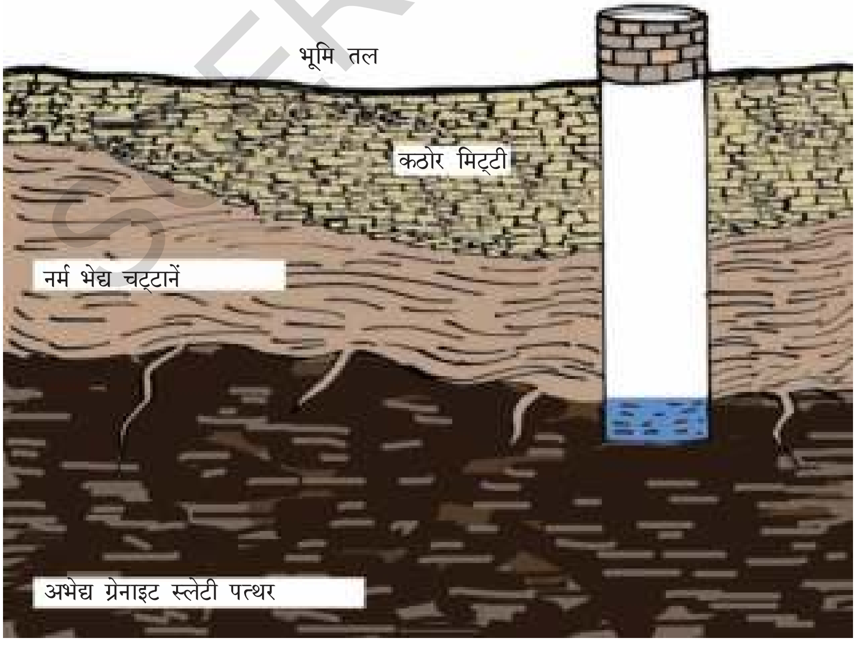

चित्र 3.2. पृथ्वी की सतह के नीचे जल एवं चट्टाने

- अगर अ–भेद्‌य चट्टानें न होतीं तो क्या भू–गर्भ में जल इकट्ठा होता?
- अगर भेद्‌य चट्टान, अभेद्य चट्टानों के नीचे हो तो क्या होता? भू–गर्भ जल कहाँ इकट्ठा होता?

SCERT TELANGANA

जल–तालिका या भू–गर्भ जलस्तर

चित्र 3.3 में दिये गये कुओं को ध्यान से देखिए। सभी कुओं में जलस्तर एक समान है। यह जलस्तर वर्षा के बाद का है। आप देख सकते हैं कि सभी में जल 5 फीट तक की गहराई में प्राप्त हो रहा है । इसका अर्थ यह है कि अगर आप इसी क्षेत्र में एक और कुँआ खोदोगे तो उसमें भी जल इसी गहराई तक प्राप्त होगा। यह भूमि गत जल का स्तर है, जिसे जल–तालिका (Water-Table) भी कहते हैं।

जल का स्तर कभी भी स्थिर नहीं होता। ग्रीष्म ऋतु में वह गहराई में चला जाता है और मानसून के समय ऊपर हो जाता है।

तेलंगाना में भू–गर्भ जल एवं चट्टानें

तेलंगाणा में अधिकतर मिट्टी के नीचे की चट्टानों में ग्रेनाईट पाए जाते हैं जो मजबूत एवं अभेद्य चट्टाने हैं। लेकिन इन चट्टानों के ऊपर का भाग(लगभग 20 मी.) टूटा हुआ होता है। इसमें से कई चट्टानों में दरारें होती हैं जो 50 से 100 मी. तक की गहराई में हैं। इन दरारों में भी जल होता है। आमतौर पर हम जो कुएँ खोदते हैं वो इस ऊपरी अपक्षयीत (वेदर्ड) परत में ही पाये जाते हैं। लेकिन यंत्र से जो ट्यूब–वेल खोदी जाती है, वे भूमि के भीतर तक की दरारों में जाकर पानी बाहर निकलती है।

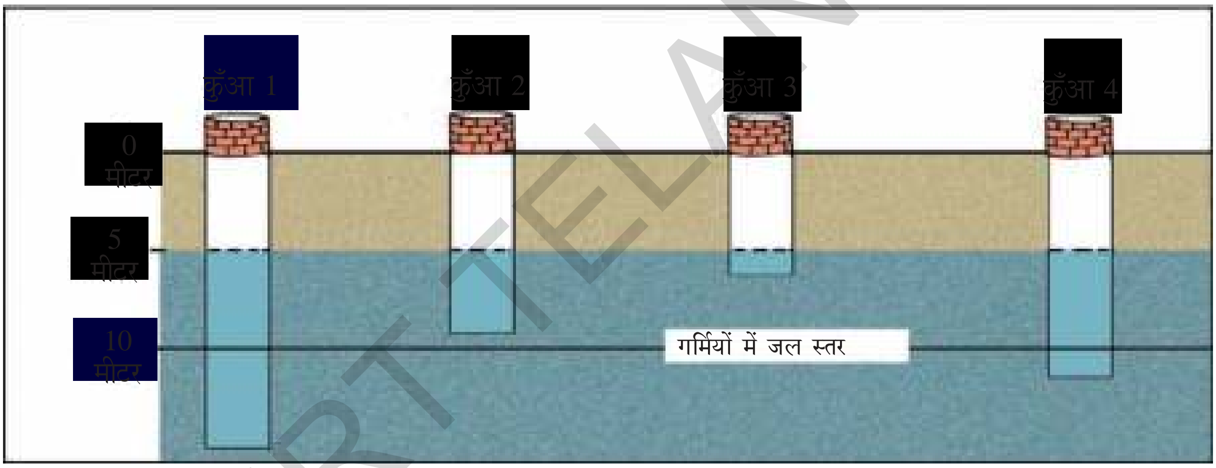

चित्र 3.3. भू–गर्भ जल स्तर

चित्र 3.3 देखकर नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखो:

i. भू–गर्भ जलस्तर पृथ्वी की सतह से ....मी. नीचे है।

ii. ग्रीष्म ऋतु में अगर जल का स्तर भूमि के स्तर से 10 मी. नीचे हो जाए तो चारों में से कौनसा कुँआ सूख जाएगा?

iii. कौन से कुएँ में अधिक जल प्राप्त हो सकता है?

चित्र 3.4 को देखकर इन प्रश्नों के उत्तर लिखो:

- क्या आप पता कर सकते हैं कि अ–भेद्य चट्टानों के नीचे जल किस तरह प्रवेश करता है और नीचे चट्टान की दरारों तक कैसे पहुँचता है?
- ग्रीष्म ऋतु में कौनसा कुँआ पहले सूख जायेगा? कारण बताइए?
- अगर चट्टान में दरार न हों तो भी क्या कुएँ में जल हो सकता है?

SCERT TELANGANA

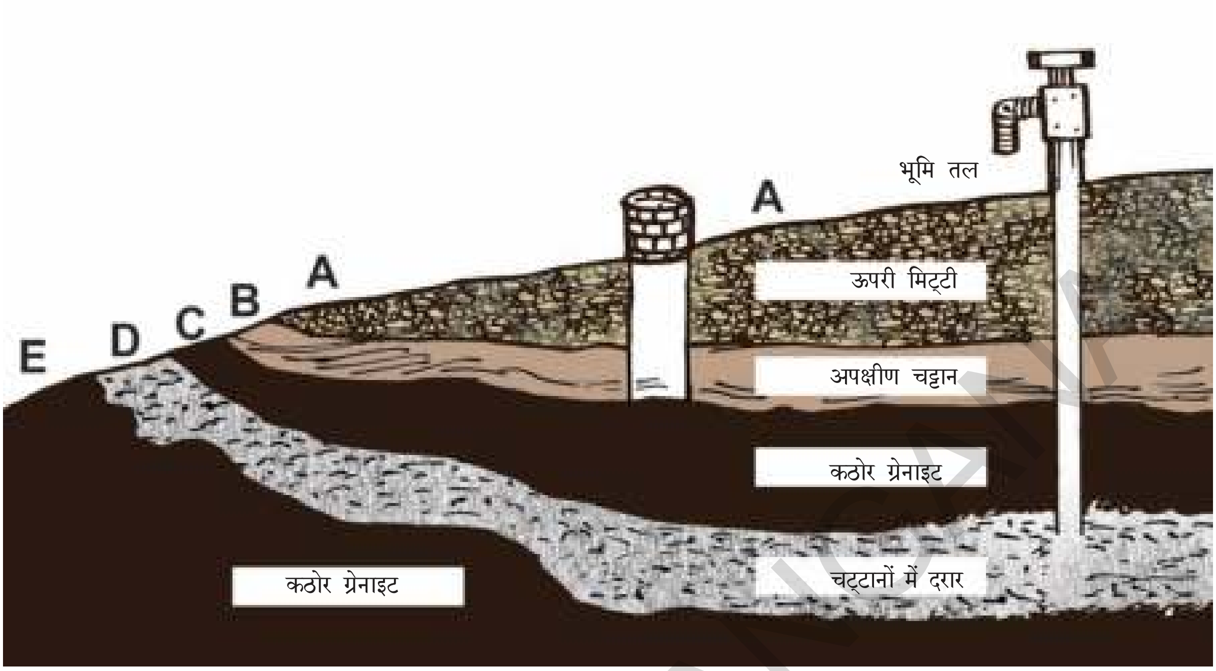

चित्र 3.4. भू तल पर चट्टानें एवं जल

तेलंगाणा के कई मण्डलों में चट्टानें ग्रेनाइट नहीं परन्तु इनमें थोड़ा पानी जा सकता है। कड़पा में चूने के पत्थर पाये जाते हैं जो काफी सख्त होते हैं, पर अधिकतर टूटे हुए होते हैं और इनमें काफी दरारें भी होती हैं जो जल को इकट्ठा होने का मौका देती हैं। कुछ चट्टानों की दरारों में जल प्राप्त हो जाता है।

कृष्णा और गोदावरी नदी के तट के क्षेत्रों में रेत और गाद (सिल्ट) की गहरी परतें पाई जाती हैं। यहाँ पर जल-स्तर नदी में पाए जाने वाले जल पर आधारित होता है। सामान्यतः इन नदियों में जल अधिक होता है। यहाँ भूमि के भीतर 5 से 7 मी के नीचे जल मिल जाता है इसीलिए यहाँ कुएँ खोदना बहुत सरल है।

- क्या आप को पेनमाकुरु, दोकुर और पेनुगोलू ग्राम के कुएँ और ट्यूब-वेल याद है जो आपने VI कक्षा में पढ़ा था?

भूमि-गत जल का पुनर्भरण (रिचार्जिंग ग्राउंड वाटर)

जल ऐसी भूमि पर तेजी से बहता है जहाँ पर पेड़, पौधे, घांस, पत्थर जैसी कोई रुकावट न हो। किन्तु अगर हम वर्षा के जल के प्रवाह में पेड़-पौधों एवं बाँध बनाकर रुकावट डालेगे तो यह जल वहीं पर मिट्टी में मिलकर भूमि के भीतर चला जायेगा। पहाड़ के ढलान पर घास उगाई जाती है ताकि ऊपर से बहने वाली जलधारा को भूमि के भीतर जाने का मौका मिल सके। जलप्रवाह के आस-पास छोटे बाँध भी बनाये जाते हैं ताकि पानी का लंबे समय तक संग्रह किया जा सके। इनसे जल अधिक प्राप्त हो सकता है और जल का पुनःसरचण हो सकता है।

लेकिन तेलंगाणा के कई भागों में देखा जा रहा है कि हम आवश्यकता से अधिक जल भूमि से निकाल रहे हैं। इसका अर्थ यह है कि हम भूमिगत जल का सीमा से अधिक उपयोग कर रहे हैं। वनों को काटने से भूमि के भीतर जाने वाला जल भी कम हो गया है। इसी कारण प्रति वर्ष आधे से दो मी. तक जलस्तर में गिरावट देखी जा रही है।

SCERT TELANGANA

यदि हम भूमि में जमा होने से अधिक पानी निकालेंगे तो कुछ समय बाद भू जल कम हो जाएगा। अन्त में थोड़ा पानी शेष रहेगा। कुछ वर्षों से भूमिगत जल का अधिक उपयोग किया जा रहा है। इससे स्थिति गंभीर हो सकती है।

- क्या आप कोई ऐसा उपाय बता सकते है जिससे व्यर्थ किये बिना भू-गर्भ जल का कम उपयोग हो?

हमारे देश के अधिकतर भागों में केवल तीन से चार महीनों तक ही वर्षा होती है। अतः शेष समय में हमें भूमि-गत जल पर ही अधिक निर्भर रहना पड़ता है। नदी, कुएँ एवं तालाब सभी का जल स्रोत यह भू-गर्भ जल ही है।

क्या हम भूगर्भ जल में वृद्धि कर सकते हैं? आपने देखा होगा कि जहाँ पेड़, वनस्पति या पत्थर आदि नहीं होते वहाँ जल तेजी से बहता है।

वर्षा का जल बह कर नदियों एवं नहरों में मिल जाता है। यदि हम पेड़-पौधे अधिक लगाएंगे एवं बाँध का निर्माण करेंगे तो जल भूमि के अंदर चला जायेगा, जिससे भू-गर्भ जल की मात्रा में वृद्धि होगी। इस लिए भूगर्भ जल बढ़ाने के लिए पेड़, घांस और मेढ़ बनाई जाती है।

पिछले कई वर्षों से इन उपायों द्वारा जल की मात्रा को बढ़ाने के प्रयत्न किए जा रहे हैं। ऐसे तरीके जलाशय व नदियों के लिए अपनाये जा रहे हैं। इसीलिए पेड़-पौधे अधिक उगाये जा रहे हैं और मेढ़ बनाये जा रहे हैं। ऐसे प्रयत्नों को 'भू-गर्भ जल का विस्तार कार्यक्रम, नाम दिया गया है। इस योजना के अन्तर्गत पहाड़ के ढलानों पर जहाँ से नहर प्रारम्भ होती है, वहाँ घास उगाई जाती है तथा छोटी मेढ़ें बनायी जाती हैं ताकि पानी के बहाव को रोका जा सके। इससे भूमिगत जल की मात्रा में वृद्धि होगी और जल का पुनःसंचयन भी।

- क्या आपके क्षेत्र में कोई जलसंभर (watershed) विकास योजना है? उस स्थान पर जाने की कोशिश कीजिए और वहाँ कार्य कैसे होता है, उसे समझाइए। इस का मानचित्र भी उतारिए।

भूमि-गत जल के विशिष्ट लक्षण

भूमिगत जल में कई खनिजों का मिश्रण होता है। कभी जल मीठा होता है तो कभी नमकीन।

- कुएँ, बोरवेल, झील एवं तालाब का पानी इकट्ठा करो। क्या आप बता सकते हैं कि इसमें से कुछ कुओं का पानी मीठा तो कुछ का खारा या नमकीन क्यों होता है?

यह अंतर भू गर्भ जल में घुले खनिजों के कारण है। यह खनिज धरती से नीचे पायी जाने वाली चट्टानों और मिट्टी के कारण है। ये खनिज भूमि के भीतर पाये जाने वाली चट्टानों और मिट्टी से निकलते हैं। इस प्रकार जल में घुलने वाले खनिज के आधार पर पानी की प्रकृति और स्वाद बदलता है। तेलंगाना के कई मण्डलों में कुछ खनिज जैसे सोडियम, फ्लोराइड, क्लोराइड, लोहा, नाइट्रेट इत्यादि बहुत मात्रा में पाये जाते हैं। ऐसा जल पीना हमारे स्वास्थ के लिए हानिकारक है। इनसे ऐसी बिमारियाँ पैदा हो सकती हैं जो हमारी हड्डियों एवं दाँतों को हानि पहुँचा सकती हैं। (चित्र 3.5) ऐसी परिस्थिति में हमें इस जल से अतिरिक्त खनिज निकालकर जल को शुद्ध कर लेना चाहिए।

कई बार अधिक मात्रा में खाद एवं कीटनाशक औषधियों के उपयोग एवं ठीक प्रकार की जल निकासी न होने से भी जल प्रदूषित होता है। हमारे देश में हर दिन-ब-दिन यह समस्या बढ़ती हो जा रही है। हम जब तक उसके निवारण के सुरक्षित उपाय नहीं ढूंढेंगे, तबतक कुओं एवं नदियों का जल पीने एवं नहाने के लिए सुरक्षित नहीं रहेगा।

SCERT TELANGANA

चित्र 3.5 पानी में फ्लोराइड की अधिक मात्रा से पीड़ित

भू-गर्भ जल का उपयोग

भूमिगत जल जैसे नदियाँ, झील, आदि जलीय चट्टानों के ऊपर भूमि पर रहने वालों के लिए ही नहीं बल्कि सभी के लिए जल के प्रमुख स्रोत हैं। ये न सिर्फ नदी के आस-पास रहने वालों, बल्कि सभी के लिए उपयोगी हैं। किन्तु इस जल का उपयोग अधिकतर वे लोग ही करते हैं, जिनके पास इस प्रकार की भूमि है।

जिन लोगों की भूमि जलीय चट्टानों के ऊपर होती वे उस जल का आवश्यकता से अधिक उपयोग करते हैं, जिससे आस-पड़ोस के लोगों का जल-स्तर कम हो जाता है। कुछ लोग ट्यूब-वेल इतना गहरी खोदते हैं कि जलस्तर में और गिरावट आ जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि पड़ोस के कुएँ सूख जाते हैं। जब तक हम भू-गर्भ जल को सार्वजनिक साधन के रूप में उपयोग करते रहेंगे और उसके उपयोग पर प्रतिबन्ध नहीं रखेंगे तब तक क्या उसका लाभ सभी उठा सकेंगे। कुछ वर्षों बाद ऐसा भी समय आयेगा जब गहरे ट्यूब-वेल वाले व्यक्तियों जल नहीं बचेगा।

- क्या आप कोई ऐसा उपाय बता सकते हैं जिससे भूमिगत जल का सभी समान रूप से उपयोग कर सकें। वे लोग भी जिनके पास कोई भूमि नहीं है। ऐसी योजनाएँ बनाइए और अपनी कक्षा में इस पर चर्चा कीजिए।

आज की पीढ़ी ने जल को अपने पूर्वजों से एक पवित्र पूँजी के रूप में पाया है। हमें भी इसे आने वाली पीढ़ी को भेंट करना है। हमें ऐसे रास्ते खोजने चाहिए जिससे हम जल को सुरक्षित रख सकें। उसका उचित उपयोग कर सकें। यदि ऐसा न हो तो आने वाली पीढ़ी पानी के लिए विनाशकारी युद्ध करने पर विवश हो जायेगी, जिसके उत्तरदायी सिर्फ हम होंगे।

मुख्य शब्द :

1. भेद्य चट्टानें
2. अभेद्य चट्टानें
3. वनस्पति
4. जलीय चट्टानें या जलदायी स्तर
5. महापाषाण युग

हमने क्या सीखा?

1. गलत वाक्य सुधारोः
   a. जल मैदान से पठारों की ओर बहता है ।
   b. पठार में रेत एवं कंकड़ का घना संचय होता है।
   c. भूमिगत जल कभी भी नहीं सूखेगा।
   d. महबूबनगर में कुएँ खोदना बहुत सुलभ है।

SCERT TELANGANA

2. चित्र में बताये गये कुएँ गोदावरी के मैदानों में हैं। लेकिन चित्र में एक त्रुटि दिखाई गयी है। क्या आप उसे सही कर सकते हैं?

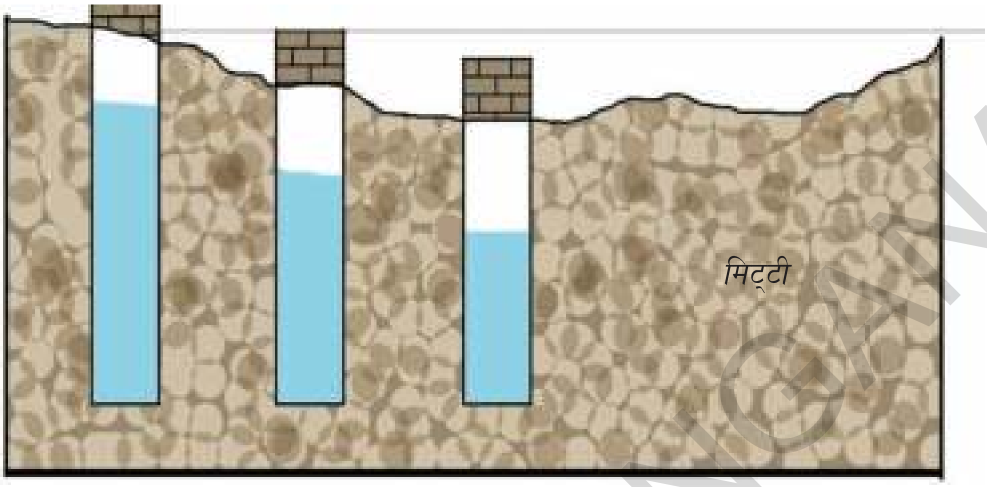

3. इनमें से कौन-से क्षेत्र में आप अधिकतम रिसाव की अपेक्षा कर सकते हैं?

4. पललेम्ला ग्राम के कुछ कुओं के मालिकों ने जब अपने कुओं से जल निकालने के लिए मशीनों का उपयोग किया तब दूसरे कुओं का जलस्तर कम हो गया। इस समस्या के संभावित समाधान पर चर्चा कीजिए।
5. जहाँ भूमिगत जल की मात्रा कम है, क्या बोरवेल खोदने पर वहाँ कोई अंकुश होना चाहिए? क्यों?
6. आप के क्षेत्र में भू-गर्भ जल के पुनः संचयन के तरीकों के बारे में विचार कीजिए।
7. चित्र 3.1(a) देखिए। इसकी तुलना अपने मुहल्ले से कीजिए।
8. आपके गाँव का चित्र बनाइे और उसमें अपने गाँव के जल स्त्रोतों को दर्शाइए।
9. 'भूमि गत जल के विशिष्ट लक्षण' अनुच्छेद को पढिए और उस पर विचार व्यक्त कीजिए।

परियोजना :

जलाशय/कुंटा की जानकारी प्राप्त कर सूचना भरिए।

क्र. सं.	जलाशय का नाम	अयाकट (क्षेत्र में)		जलाशय के अन्य उपयोग	मरम्मत न होने के कारण	मरम्मत के बाद के लाभ
		पूर्व से	वर्तमान			

SCERT TELANGANA

अध्याय 4

महासागर एवं मत्स्य उद्योग (Ocean and Fishing)

भाग - I

धरती को एक जलग्रह कहते हैं। क्योंकि यह एक ही ऐसा ग्रह है जिसमें जल की मात्रा प्रचुरता में है। लगभग 71% धरती का भाग सागर एवं महासागरों से घिरा है। आपकी नजर में सागर एवं महासागरों की छवि कैसी है? क्या आपने समुद्र या महासागरों को देखा है या उनके विषय में सुना है? धरती पर नमकीन पानी से भरे क्षेत्र को समुद्र कहते हैं। बड़े समुद्री क्षेत्रों को सागर कहते हैं। सागर या महासागर जल के ऐसे विशाल भाग हैं द्वीपों द्वारा विभाजित होते हैं।

- आपके गाँव/शहर में पाये जानेवाला जल नमकीन है या पीने योग्य है।? क्या आपके गाँव/शहर में हर स्थान पर भिन्न-भिन्न प्रकार का जल मिलता है।
- विभिन्न जल-स्रोतों को आप किन नामों से बुलाते हैं? क्या विशाल एवं लघु जल स्रोतों के अलग-अलग नाम होते हैं?
- गोलक या विश्व के मान चित्र पर पाँच समुद्र एवं पाँच महासागरों के नाम ज्ञात करो। ये धरती का जो भाग घेरे हैं? इस पर अपना हाथ फेरे।

जल के भीतरी भाग में क्या है इसकी जानकारी प्राप्त करना बहुत ही रोचकता वाला विषय है। जल की ऊपरी परत से उसके भीतर क्या है यह हम पता नहीं कर सकते। आपको नदी या **जलाशय या तालाब** की ऊपरी परत **छूकर** उसे **पहचानने** का अवसर तो जरूर प्राप्त हुआ होगा।

- आपने जल स्रोतों के भीतर क्या देखा या अनुभव किया उसके विषय में बताइए।
- आपने जो जल स्रोत देखे उनकी गहराई कितनी थी ?

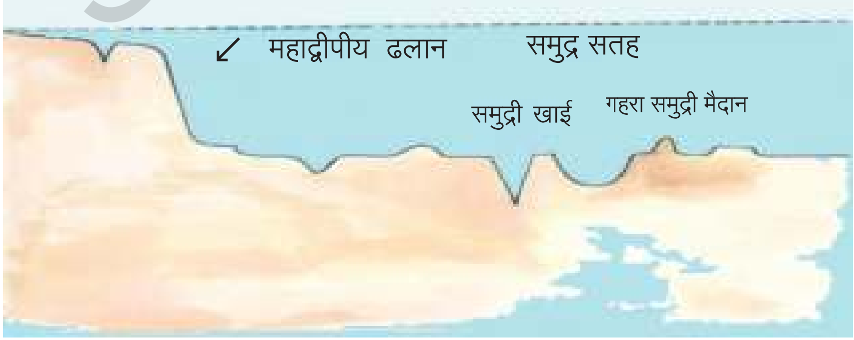

चित्र 4 समुद्र की उभरी आकृति का चित्र

महासागर का उभार

महासागर का भूतल धरती के तल के समान ही होता है। सागर का तल समतल नहीं होता। उसमें पहाड़, पर्वत, पठार, मैदान, एवं खाई आदि भी होते हैं। समुद्र के अंदर की खाइयाँ कहीं-कहीं इतनी गहरी होती हैं कि

SCERT TELANGANA

उसमें विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत माऊन्ट एवरेस्ट रख दे तो वो भी डूब जाएगा। समुद्र के भूतल का विशाल भाग लगभग 3–6 कि.मी. समुद्रतल से नीचे होता है।

चित्र 4.1 में आप समुद्र के भीतरी भाग में पाए जाने वाले विभिन्न भूभागों को देख सकते हैं एवं चित्र 4.2 में आप हमारे देश के आस–पास के समुद्रों में पाए जाने वाली उभरी आकृतियों को देख सकते हैं।

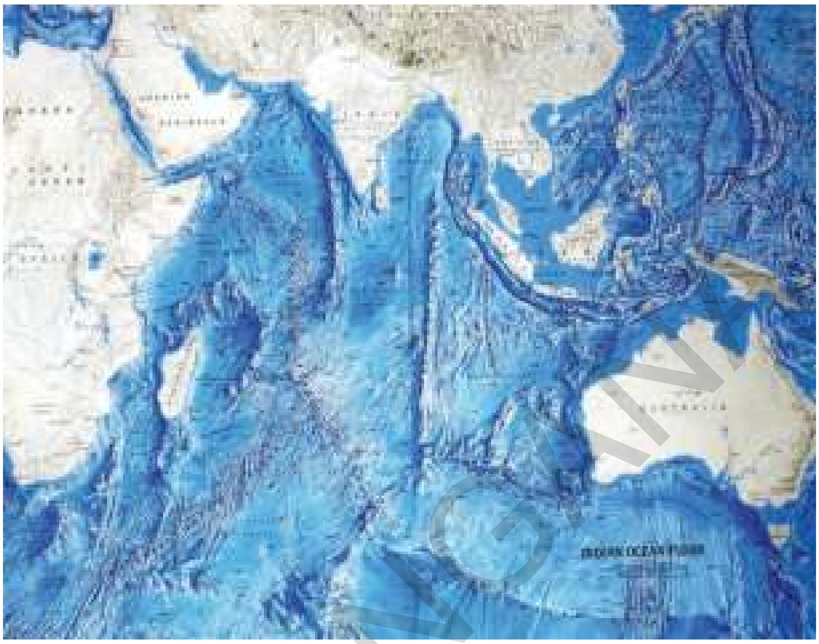

चित्र 4.2 हिन्द महासागर की उभरी आकृति

चित्र 4.2 में भारत के भूभाग को ध्यान से देखो और फिर बंगाल की खाड़ी, अरब सागर तथा हिन्द महासागर की ओर देखो। इनमें पर्वत, पहाड़, मैदान एवं खाई पहचानो।

समुद्र का जल कभी भी शांत नहीं रहता। इनमें विभिन्न प्रकार की गतियाँ होती हैं।

- क्या आपने नदी में विभिन्न प्रकार की गतियों का अनुभव किया हैं? आपको लहरों, प्रवाह एवं बाढ़ के प्रवाह एवं घटाव के विषय में तो पता होगा। इन अनुभवों को कक्षा में अपने मित्रों के साथ बांटो।

समुद्री जल में तीन प्रकार की गतियाँ होती हैं।

1) लहरें : समुद्र के तल पर जब जल उठता और गिरता है तो उसे लहरें कहते हैं। जब समुद्र के पार से धीमी हवाएँ चलती हैं। तब लहरों का निर्माण होता है। जितनी तेज़ हवा होगी उतनी ही ऊँची लहर होगी।

2) धाराएँ : महासागरों में जल एक स्थान से दूसरे स्थान तक विशाल धाराओं में बहता है। यह धाराएँ जो समुद्र तल पर अधिकतर एक ही दिशा में बहती है उन्हें समुद्री धाराएँ कहते हैं। ये समुद्री धारा दो प्रकार के होते हैं। गर्म धारा एवं शीत धारा। गर्म धारा वाली लहरें भूमध्यरेखीय क्षेत्र से ध्रुवों की ओर बहती है। शीत धारा वाली लहरे ध्रुवों की ओर से भूमध्यरेखीय क्षेत्रों की ओर बहती है। इनका निर्माण अधिकतर प्रचलित हवाओं के कारण एवं तापमान में अन्तर के कारण तथा सागर की लवणता के कारण होता है।

3) ज्वार भाटा : प्रति दिन समुद्र में लय एवं ताल के साथ उठने एवं गिरने वाला जल ज्वार भाटा कहलाता है। समुद्र तट के सभी किनारे कुछ समय के लिए निम्न ज्वार–भाटा एवं कुछ समय के लिए ऊँचे ज्वार भाटा का अनुभव प्राप्त करते हैं। हर दिन ज्वार–भाटा की लहरें एक समान ऊँचाई में नहीं उठती। जब लहरें ऊँची होती हैं तब जल तट पर आगे तक आता है। जब निचला ज्वार भाटा होता है जल तट से दूर चला जाता है। ज्वार भाटा की लहरें मछली पकड़ने में बड़ी उपयोगी होती हैं। कुछ स्थानों पर ज्वार भाटा लहरें नदी द्वारा लाए गए कीचड को वहाँ ले जाती हैं जिससे पानी के बहाव में रुकावट नहीं आती।

SCERT TELANGANA

भाग–II

चित्र

समुद्र तट पर मछुआरों के गाँव :

महासागर का जल हमेशा नमकीन होता है। उसमें कई खनिज लवण धुले हुए होते है। महासागर वर्षा का मुख्य स्रोत है। समुद्र मत्स्य एवं अन्य समुद्री खाद्य पदार्थ के भंडार घर है। यह नमक का मुख्य स्रोत हैं। समुद्र हमें अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए प्राकृतिक जलमार्ग प्रदान करते हैं। चलिए हम आंध्र प्रदेश के एक तटीय गाँव भावनापाडू चलते है और वहाँ के रहने वाले लोगों के विषय में जानकारी प्राप्त करते है।

- आन्ध्र प्रदेश के मानचित्र में उसका समुद्र–पट देखो और तटीय प्रदेश कौन से है ज्ञात करो।
- उस जिले को पहचानो जहाँ भावनापाडू गाँव है।
- भावनापाडू गाँव के चित्र को देखकर इन को पहचानो :

i) इसमें जल स्रोतों को पहचानो।

ii) कृषि को छोड़कर दूसरे अन्य कार्यों के लिए उपयोग किए जाने वाले भू–भागों को पहचानो। इन भू–भागों को किन कार्यों के लिए उपयोग किया जाता है।

मत्स्य उद्योग :

सवेरे के चार बजे हैं। अप्पलकोण्डा की पत्नी उसे नींद से जगाकर थोड़ा चावल खाने के लिए देती है और 5 बजने तक अप्पलकोण्डा समुद्र में जाने के लिए तैयार हो जाता है। उसके मित्र तट पर उसकी राह देखते हैं। ये सभी गरीब मछुवारे हैं। इनके पास इनकी अपनी नाव या जाल नहीं है। ये लोग टाटा राव की यांत्रिक नाव पर काम करते हैं। नाव पर कुल 20 लोग हैं। टाटा राव भी इनके साथ मिलकर काम करता है। यह नाव एक दिन पहले ही पूरी व्यवस्था के साथ तैयार कर ली गई। इसमें सभी आवश्यक वस्तुएँ रख ली गई हैं।

चित्र 4.3 भावनापाडू गाँव की व्यवस्थाएँ

SCERT TELANGANA

चित्र **4.4.** भावनापाडु गाँव का हवाई दृश्य

समुद्र में जाने से पहले वे नाव के इंजन, खींचने वाली रस्सी, अतिरिक्त डीजल की जाँच करते हैं तथा अपना भोजन भी साथ रख लेते हैं। इसके बाद वे अपनी इष्ट देवी की प्रार्थना करते हैं, जिसमें उनकी अपार भक्ति एवं विश्वास है।

टाटा राव ने यह नाव उड़ीसा के रहने वाले मरकोण्डा से छः (6) लाख रुपए में खरीदी है। उसने यहाँ राशि एक निजी ऋणदाता से ऊँची ब्याज दर पर ली है। उसके पास अपनी निजी सम्पत्ति न होने के कारण उसे बैंक से ऋण नहीं मिला। उसे रोज मछली पकड़ने के लिए भी मध्यस्थ लोगों से उधार माँगना पड़ता है। उसे हर यात्रा के लिए 5000/– खर्च करने पड़ते हैं जिसे वह डीजल एवं मजदूरी पर खर्चता है। क्योंकि उसने मध्यस्थ व्यक्ति से पैसे उधार लिए है उसे अपनी मछली भी उसी को बेचनी पड़ती है, जिसका दाम मध्यस्थ व्यक्ति निर्धारित करता है। अब नाव चलने के लिए तैयार है। सभी 20 लोग नाव पर सवार होकर समुद्र में 15–20 कि.मी. की दूरी तक चले जाते हैं।

धन्नम्मा, जो अप्पलकोण्डा की पत्नी है वह पति के जाने के बाद अपने घरेलू कार्य में लग जाती है, तथा अपना काम 9 बजे तक पूरा कर लेती है। इसके बाद वह नमक तैयार करने वाले स्थल पर काम करने के लिए चली जाती है। कभी–कभी वह खेती के काम पर भी चली जाती है। उनके पास न तो खुद के खेत हैं न ही नमक तैयार करने के स्थल। उनका परिवार अपने दैनिक वेतन पर ही निर्भर है। नमक बनाने वाले स्थल पर काम करते हुए धन्नम्मा अपने पति के फोन का बेसब्री से इंतजार करती है। उसे अपने पति की सुरक्षा तथा उस दिन वे कितनी मछली पकड़ेंगे इसका चिन्ता है। वह सोचती थी कि अगर वे अधिक मछली पकड़ेंगे तो उन्हें अधिक धन भी प्राप्त होगा।

मछुआरे दोपहर 1 बजे से लेकर रात के आठ बजने तक किसी भी समय लौट आते हैं। कभी–कभी रात में देर भी हो जाती है। जिस दिन हम वहाँ पर थे, उस दिन वे लोग पारा नामक विचित्र मछली पकड़कर रात के तीन बजे वापस आये।

SCERT TELANGANA

चित्र 4.5

चित्र 6

चित्र 5 : लंगर डाली हुई नाव, मछली पकड़ने वाले जाल के साथ
चित्र 6 : नाव का इंजन, भोजन के डिब्बे, डीजल के डिब्बे एवं देवी की प्रतिमा

कुछ मध्यस्थ लोग अस्थायी रूप से मछली को संग्रह कर के रखते हैं, तथा उन्हें अलग करके ठंडे, डिब्बों में बंद करके उन्हें दूरस्थ प्रदेशों में जैसे हैदराबाद, कोलकत्ता, चेन्नई, बेंगलूर, केरल आदि ले जाते हैं। इन्हें मछुआरे से चार गुणा अधिक धन प्राप्त होता है। नीचे के चित्र में 4.9 मध्यस्थ पोतय्या के अड्डे को ध्यान से देखो।

- मछली के व्यापार में मध्यस्थ व्यक्ति मछुआरे से अधिक धन कैसे कमा लेता है?
- नीचे के चित्र में थर्माकोल (Thermol) के डिब्बे मध्यस्थ व्यक्ति पोतय्या के अड्डे पर क्यों रखे गए हैं?

मछली का बड़ा व्यापार जिस पर हमने अभी तक चर्चा की है उसके साथ–साथ गाँव में मछली का **छोटा** व्यापार भी होता है। कर्राटेप्पा एक गाँव की बनी हुई नाव है जो 5 कि.मी. तक समुद्र में चलती है और छोटी मछलियाँ पकड़ने के काम आती है। यह नाव मछुआरों की पत्नियाँ जिन्हें **बेराकट्लु** कहते हैं वे समुद्र में ले जाती हैं। वे लोग इन मछलियों को आस–पास के छोटे शहर जैसे नाऊपाडा, टेक्कली, पुण्डी एवं पालासा में बेच आती हैं।

कर्राटेप्पा की तुलना में **मारापडवा** (यांत्रिकनाव) में प्राणों को अधिक संकट है। क्योंकि वे समुद्र में दूर तक जाती हैं। आश्चर्य की बात यह है कि इस नाव में न कोई जीवन सुरक्षा के लिए कवच होता है (Life Jackets) और न ही प्राथमिक चिकित्सा का सामान। समुद्र में मछली पकड़ना बहुत ही खतरनाक एवं बहादुरी का व्यवसाय है।

चित्र 4.7

चित्र 4.8

चित्र 4.7 नाव से उतारी गई मछलियाँ नीलाम घर की ओर ले जाती हुई।

चित्र 4.8 नीलाम घर में फैली हुई मछलियाँ, मध्यस्थ व्यक्ति जो पहले ही वहाँ पहुँच चुका है।

SCERT TELANGANA

चित्र 4.9 मध्यस्थ व्यक्ति का अड्डा मछली रखने के भंडार घर।

चित्र 4.10 मध्यस्थ व्यक्ति के अड्डे से शहरों में बेचने के लिए मछलियाँ वाहन में लादी जा रही हैं

जाल : दोपहर में घर पहुँचने के बाद अप्पलकोण्डा ने भोजन किया और उसके बाद किसक्की वयललू (टूटे हुए जाल) को लेकर पास के तूफान आश्रय केंद्र में जाकर उन्हें ठीक करने लगा। यह भावनापाडू में एक आम दृश्य है।

मछुआरों के पास कुछ खास औजार होते हैं, जिनसे वे जाल की मरम्मत करते हैं जैसे नूलूकर्रलू (चित्र 4.12) (जाल ठीक करने का काँटा) नूलूकण्डा (धागा) और एक समतल लकडी जिससे जाल के गोल चक्र के नाप का पता चलता है।

जाल विभिन्न प्रकार के होते हैं। जो जाल के **परत** के अनुसार होते हैं जिन्हें कन्नुलू (चक्र) कहा जाता है। हाल ही में मछुआरे एक नए जाल का उपयोग कर रहे हैं जिसे रिंग नेट कहा जाता है जिससे अधिक से अधिक मछलियाँ पकड़ी जा सकती हैं। इससे मछुआरों का दूसरे शहरों में जाकर बसना कम हो गया है। पहले सूती धागे से जाल बुने जाते थे। लेकिन अभी प्लास्टिक, नायलॉन तथा संश्लिष्ट **धागे** ने उसका स्थान ले लिया है। एक जाल 4–5 वर्ष तक काम आता है। जाल उनके भार एवं उनमें उपयोग किए जाने वाले चक्र को देखकर खरीदे जाते हैं। इन जालों का मूल्य

चित्र 4.11 'बेर्राकन्तेलू' अपनी बारी का इंतजार करते हुए ताकि वो अपने 'थट्टलु' में मछली भर कर पास के शहरों में बेच सके।

SCERT TELANGANA

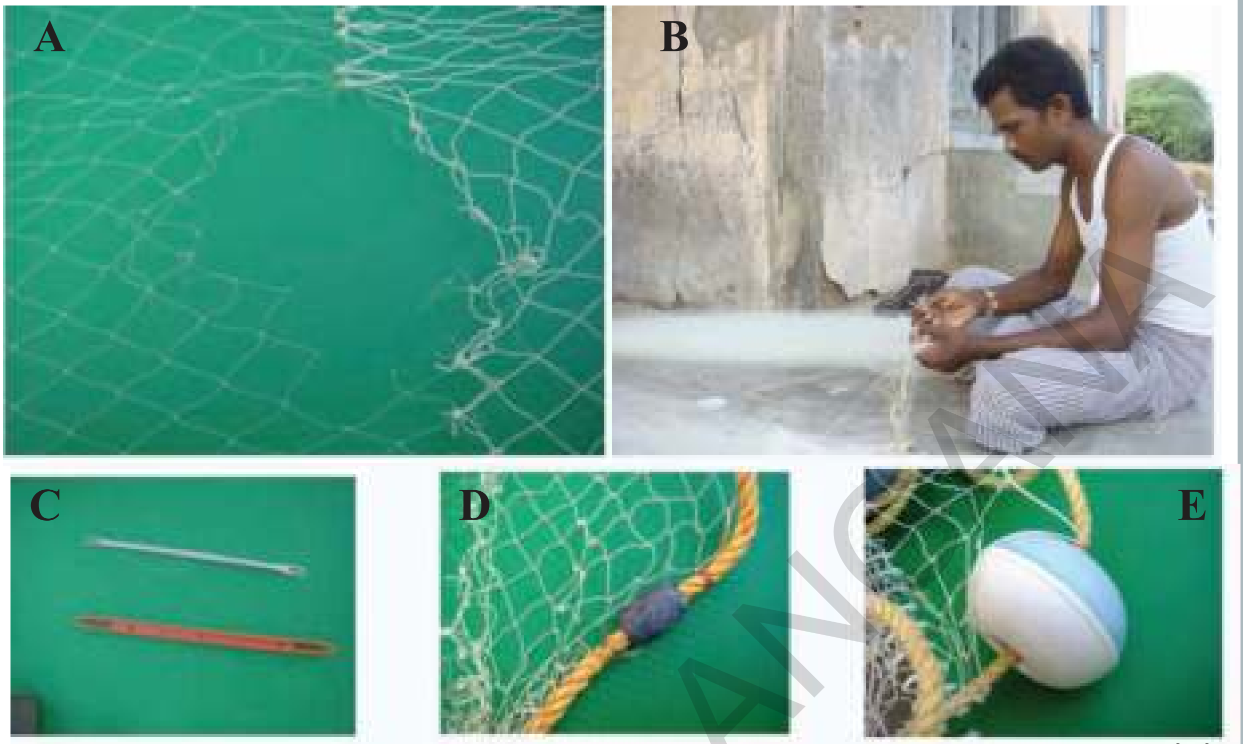

चित्र 4.12(ए) जाल की मरम्मत (बी) सीसे से बने मछुवारा जाल सीते हुए (सी) नूलुकर्रलू (डी) जस्ते से बने मोती (ई) प्लास्टिक के मोती

लगभग रु.250 से लेकर रु.300 प्रति कि.ग्राम होता है। जाल का भार लगभग 500 कि.ग्राम. होता है। यहाँ के मछुआरे अधिकतर जाल उडीसा के बरहमपुर से खरीदते हैं।

कृषि एवं पशुपालन

भावनापाडू गाँव के लोगों का व्यवसाय न केवल मछली पकड़ना है बल्कि वे कृषि का कार्य भी करते हैं और पशुओं और **पक्षियों** को भी पालते हैं।

गाँव में चिकनी उपजा**ऊ मिट्टी** होती है इस पर उगायी जाने वाली मुख्य फसल **धान** है। सिर्फ कुछ एकड भूमि को ही सींचा जाता है। भावनापाडू गाँव वंशधारा नहर के **अन्तिम छोर के** पास ही है। भावनापाडू में जल तभी आता है जब पास के गाँव मर्गीपाडू की सिंचाई का कार्य पूरा हो जाता है। इसीलिए भावनापाडू गाँव की अधिकतर कृषि वर्षा पर निर्भर है।

उस गाँव में कोई जमींदार नहीं है। भावनापाडू के कई खेतिहार छोटे किसान होते हैं। वे कोई भी वाणिज्य फसल नहीं उगाते। हाँ कुछ लोग गाय एवं भैंस पालते हैं। इस गाँव में दो पोल्ट्री फार्म है जो काफी लाभ में चल रहे हैं। गाँव के खेतों में चावल **उनकी आवश्यकता के लिए पर्याप्त** नहीं होता इसीलिए ये चावल राशन की दुकानों में अपने सफेद राशन कार्ड से खरीदते हैं और कभी–कभी बाज़ार से भी खरीदते हैं।

लवणता और पेय जल

गाँव का पानी नमकीन है। अगर कोई समुद्र तट के पास 8–10 फीट गहराई खोदे तो उन्हें पेय जल मिल सकता है। किंतु ग्रीष्म ऋतु में ये कुँए भरने के लिए काफी समय लगता है। अगर आप एक घण्टा रुकेंगे तो आपको एक घड़ा पानी मिल सकता है। इसी कारण औरतों को लम्बे समय तक पानी के इन्तजार में रुकना या फिर 2 कि.मी. तक पेय जल की तलाश में चलना पड़ता है।

SCERT TELANGANA

चित्र 4.13 चित्र 4.14 अड्गेथा तरीके से बनाया जाने वाला नमक का बरतन जिससे बरतन अभेद्य बनता है।

चित्र 4.15 : एक वृद्ध महिला दूरस्थ क्षेत्र से पेय जल जाती हुई।

सरकार ने एक योजना पारित की है जिसके अनुसार पास के गाँव सूर्यामणिपुरम से जल को पम्प द्वारा लिया जाता है। इससे गाँव को कुछ समय के लिए राहत मिली है। किन्तु पानी के टैंक की सफाई एवं पम्प की अनेकों बार मरम्मत का खर्चा एक अडचन है। कुछ समय तक के लिए एक युवा संस्था ने इस की देखरेख की किन्तु **इसने भी कार्य करना बंद कर दिया है।**

सामाजिक जीवन :

भावनापाडू गाँव के अधिकतर लोग गंगम्मा देवी, गौरी एवं शिव की पूजा करते हैं। वे अपनी नाव एवं जाल की भी पूजा करते हैं। उनका महत्वपूर्ण पर्व गौरी पूर्णिमा है। वे गाँव में जो अच्छे काम के लिए धन इकट्ठा होता है उसे इन त्यौहारों पर खर्च करते हैं। 4.16 चित्र को ध्यान से देखिए, अधिकतर गाँव के लोग अप्पलकोण्डा की तरह गोदना गोदाते हैं।

चित्र 4.16 आपके विचार में लोग गोदना क्यों गोदाते हैं? अप्पलकोण्डा के हाथ पर कौन सा गोदना है? उसका क्या अर्थ है?

गाँव में एक खुला मंच है जहाँ पर नाटक, बुर्राकथा, हरिकथा और नृत्य प्रस्तुत किए जाते हैं। यह सभी क्रियाएँ गाँव के जाति मुखिया जिन्हें पिल्लास कहते हैं उनके मार्गदर्शन में होती हैं। लोग गाँव की जनता के रीति–रिवाज एवं परम्पराओं का निर्धारण करते हैं। ये दो गुटों के झगड़ों को सुलझाते हैं। और उन पर दंड या जुर्माना भी लगाते हैं। इस धन **सरकारी अनुदान में जमा** किया जाता है।

मुख्य शब्द

1. औजार रखने का बक्सा 2. कन्नुलू 3. बुर्राकथा 4. यांत्रिक नाव

हमने क्या सीखा?

1. क्या भावनापाडू गाँव आपके रहने वाले क्षेत्र जैसा है? आपको कौन से अन्तर और कौन–सी समानताएँ दिखाई देती हैं? उनकी तुलना नीचे दिए गए भावों के अनुसार कीजिए।

   ए. जीविका के साधन बी. रोजगार के प्रकार सी. जल के साधन डी. कृषि पद्धतियाँ
2. समुद्र में कितने प्रकार की गतियाँ होती हैं? उनमें से कौन सी गति मछुआरों के लिए उपयोगी है?
3. यांत्रिक नाव से मछली पकड़ने में और कर्राटेप्पा से मछली पकड़ने में क्या अन्तर है?
4. यांत्रिक नाव में मछली पकड़ने के लिए ले जाते समय क्या तैयारियाँ की जाती हैं?
5. मछुआरे के औजारों के बक्से में कौन–कौन सी वस्तुएँ होती हैं?
6. धरती की सतह पर एवं समुद्र तल में कौन–कौन सी समानताएँ होती हैं?
7. आपके गाँव/शहर के जल क्षेत्र के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए और नीचे की तालिका में भरिए। उनसे क्या लाभ है?

क्र.सं.	जलीय चट्टान का नाम	उपयोग	सीमाएँ

8. मछुआरों के जीवन से सम्बन्धित एक अलबम बनाइए।
9. मछुआरे मध्यस्थ व्यक्ति के धन पर निर्भर न हो इसके लिए कुछ सुझाव लिखिए।
10. **"मछुआरे का जीवन समुद्र से बंधा है" इस वक्तव्य को आप कैसे समर्थन देंगे?**
11. **पहला अनुच्छेद पढिए "तटीय क्षेत्र में मत्स्य गाँव" इस पर टिप्पणी लिखिए।**
12. पिछले 4 अध्यायों में आपने जल से सम्बन्धित कई पहलाओं के विषय में जानकारी प्राप्त की नीचे धरती पर जल के विषय में और अधिक जानकारी दी गई है। उन्हें ध्यान से देखिए और धरती पर उपलब्ध जल संसाधनों के बारे में वर्णन कीजिए।

शुद्ध जल का वितरण

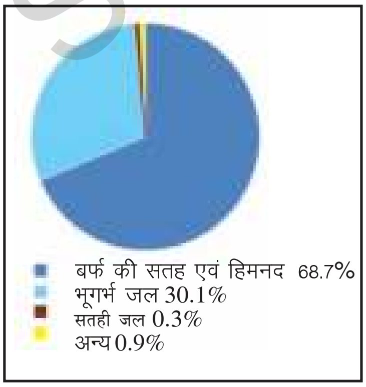

धरती पर जल का वितरण

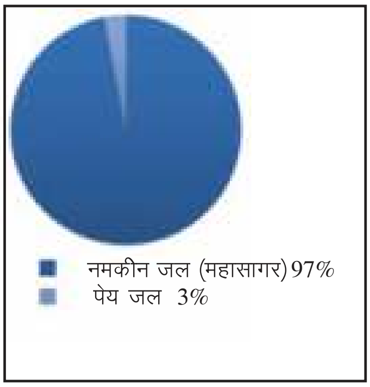

शुद्ध सतह जल का वितरण

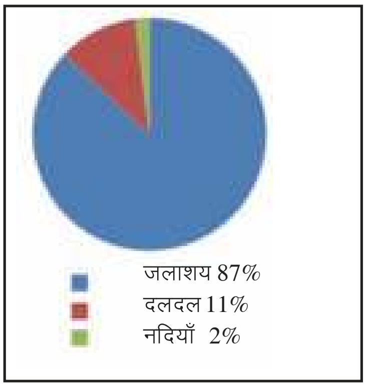

SCERT TELANGANA

अ

अध्याय 5

यूरोप (Europe)

इस पाठ में हम इस बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे कि किस प्रकार यूरोप के लोग विभिन्न प्राकृतिक वातावरण और स्रोतों का उपयोग कर रहे हैं।

यूरोप की स्थिति

यूरोप की स्थिति का पता लगाने और यह देखने कि वह भारत से कितनी दूर है, तुम्हें एक एटलस या ग्लोब की आवश्यकता होगी। मानचित्र-1 देखिए जिसमें यूरोप को हल्का रंग दिया गया है। यूरोप महाद्वीप की सीमाओं को पहचानिए। यूरोप के उत्तर में एक महासागर है। मानचित्र पर उसका नाम पहचानिए। इस महासागर में वर्ष के अधिकतर समय में बर्फ जमा हुआ रहता है।

- यूरोप के पश्चिम में स्थित महासागर का नाम बताइए।

यह महासागर यूरोप और उत्तरी अमेरिका महाद्वीपों को अलग करता है। लगभग ५०० वर्ष पूर्व यूरोप के लोगों ने अमेरिका के लिए समुद्री रास्ता खोजा और यूरोप के लाखों लोग अमेरिका महाद्वीप में जाकर बस गये।

- एटलस में देखकर यूरोप के दक्षिण में स्थित समुद्र का नाम पता करो।

यह समुद्र दक्षिण में स्थित आफ्रिका को उत्तर में स्थित यूरोप से अलग करता है। इस समुद्र के नाम का अर्थ है 'संसार का मध्य भाग'। क्या आप जानते हैं यह इस नाम से क्यों पुकारा जाता है? प्राचीन काल में यूरोप के लोग अमेरिका और आस्ट्रेलिया जैसे दूसरे महाद्वीपों के बारे में नहीं जानते थे। वे सिर्फ यूरोप,एशिया के पश्चिमी भागों और आफ्रिका के उत्तरी भागों के बारे में जानते थे। आप देख सकते हैं कि ये सभी क्षेत्र भूमध्य सागर के चारों ओर स्थित है। इसलिए यूरोप के लोगों ने सोचा कि यह समुद्र संसार के मध्य में है और उसका नाम यह रखा। तब से यह इसी नाम से जाना जाता है।

- यूरोप के पूर्व में स्थित पर्वतों के नाम बताइए।

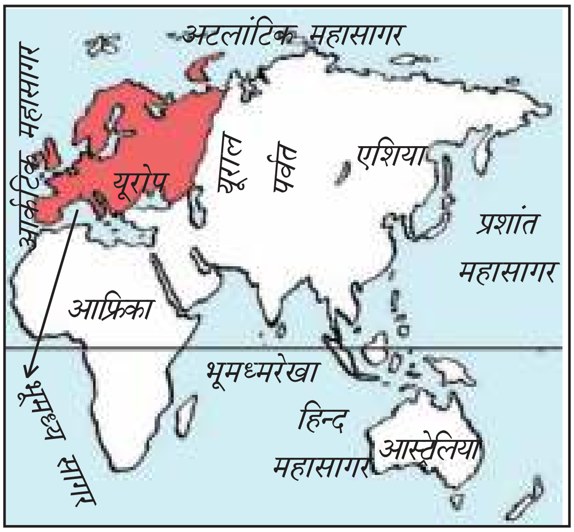

मानचित्र 1: यूरोप की स्थिति

SCERT TELANGANA

ये पर्वत बहुत ऊँचे नहीं है। यूरोप की पूर्वी सीमा पर यूराल पर्वत है। इन पर्वतों के पूर्व में एशिया और पश्चिम में यूरोप है। वास्तव में एशिया और यूरोप एक क्रमबद्ध (Continuous) भू-क्षेत्र है इसीलिए उस भू-क्षेत्र को यूरेशिया कहा जाता है।

- अब आप यूरोप की स्थिति से परिचित हो गये हो। आप यूरोप के देशों पर एक नज़र डाल सकते हो। उनके नाम जानने के लिए मानचित्र 2 देखिए। क्या आपने पहले इनमें से कुछ देशों के नाम सुने हैं?
- आपके उपयोग के लिए मानचित्र 3 खाली छोड़ा गया है। इस मानचित्र पर यूरोप के देशों के नाम लिखिए और उनमें अलग-अलग रंग भरिए। ध्यान रखिए कि कोई भी दो पड़ोसी देशों में समान रंग न हो।

पर्वत, मैदान और नदियाँ

चलिए मानचित्र 4 की सहायता से यूरोप के पर्वत, मैदान और नदियों के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करें। यूरोप में कई बर्फ से ढके ऊँचे पर्वत हैं। मानचित्र में एल्प और पाइरिनीज देखिए। एल्प,यूरोप की सबसे महत्वपूर्ण पर्वत श्रेणियाँ है, जो वर्ष-भर बर्फ से ढकी रहती हैं।

- एल्प कई देशों में फैला हुआ है। मानचित्र 2 और 4 की तुलना करके इन देशों के नाम पता कीजिए।
- एल्प से प्रारंभ होने वाली दो नदियों के नाम लिखो।
- उन देशों के नाम बताइए जिनकी सीमाओं पर पाइरिनीस फैले हुए हैं।
- पूर्वी यूरोप में फैले हुए पर्वतों के नाम बताइए।
- यूरोप के अन्य पर्वत पहचानिए और एक

चित्र 5.1 बुडापेस्ट, पूर्वी यूरोप में डेन्यूब नदी के पास हंगरी की राजधानी

तालिका बनाइए।

कॉकेसियन पर्वत, जो केस्पीयन समुद्र और काला सागर के बीच स्थित है यूरोप की दक्षिणी सीमा बनाते हैं। ये भी बहुत ऊँचे हैं और वर्ष भर बर्फ़ से ढके रहते हैं।

एशिया और यूरोप में बहुत अन्तर है। एशिया में कई पठार है। लेकिन यूरोप में बड़े पठार नहीं हैं। फ्रांस, जर्मनी और स्पेन जैसे देशों में केवल कुछ छोटे पठार ही हैं। यूरोप में विस्तृत मैदान हैं। सम्पूर्ण पूर्वी यूरोप में एक विस्तृत मैदान है, जो रूस, युक्रेन,पोलैण्ड, बाइलोरशिया जैसे कई देशों में फैला हुआ है। इन मैदानों में सर्दियों में अधिक ठण्ड और भारी बर्फ़ गिरती है। गर्मियों में जब बर्फ़ पिघलती है, तो क्षीण जलधाराएँ लगती हैं। ये मिलकर बड़ी नदियों का रूप धारण करती हैं। इन मैदानों से ही डेनीपर और वोल्गा जैसी नदी, जो यूरोप की सबसे लम्बी नदी है, आरंभ होती है।

यूरोप की नदियों का उपयोग केवल खेतों में सिंचाई के लिए ही नहीं बल्कि एक महत्वपूर्ण जलमार्ग के रूप में भी किया जाता है, इन नदियों पर से जहाज, नाव और बैरेज गुजरते हैं और वस्तुओं तथा लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाते हैं। चूँकि ये नदियाँ कई देशों से बहती हैं ये अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और परिवहन को भी सुगम बनाती है। इस संबंध में रीनी (Rhine) महत्वपूर्ण नदियों मे से एक हैं क्योंकि यह कई देशों से बहती है और उत्तरीसमुद्र में जा मिलती है। समुद्र के किनारे कई महत्वपूर्ण व्यापार और खनिजीय शहर हैं जो

SCERT TELANGANA

मानचित्र 2:
यूरोप राजनैतिक

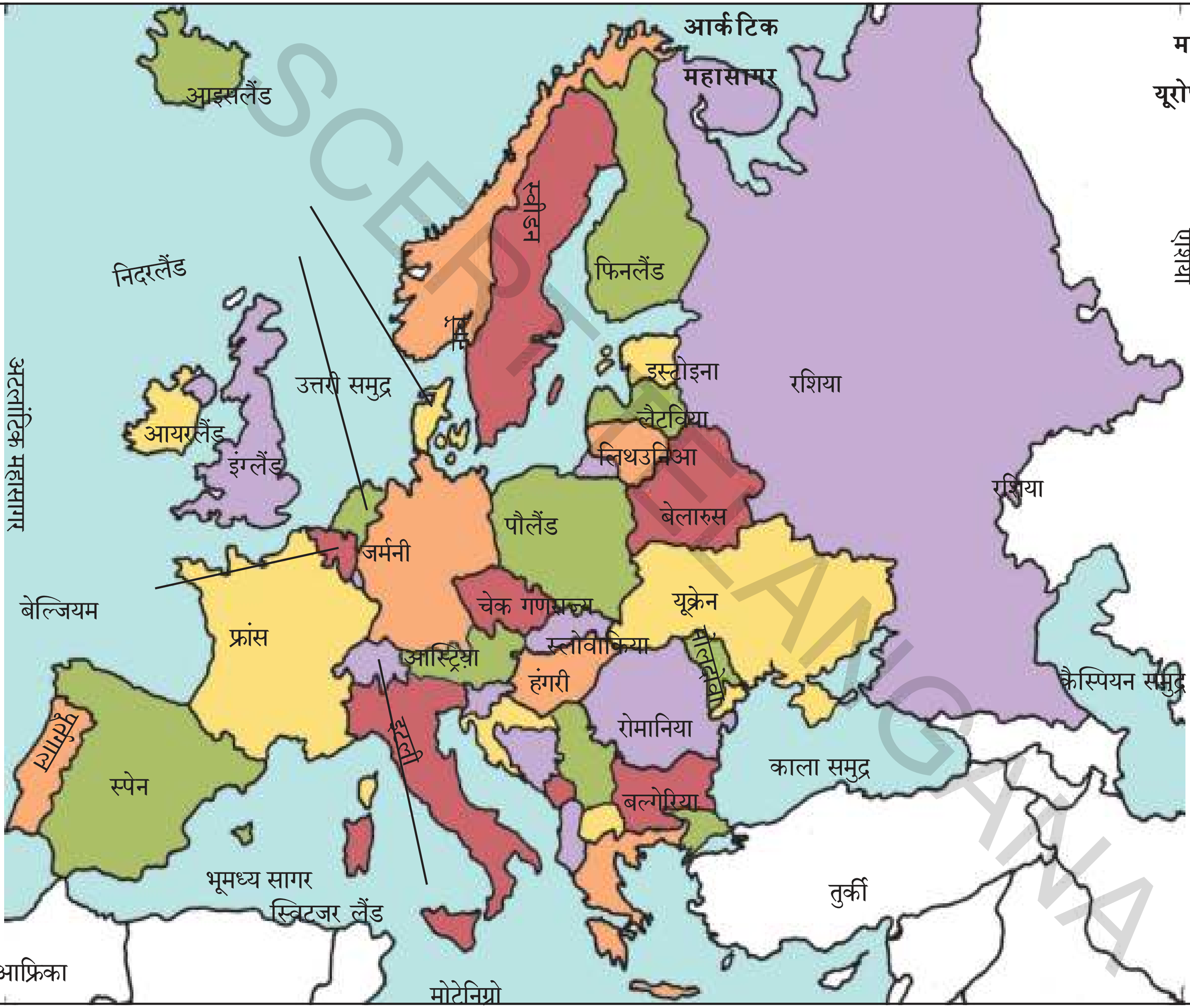

SCERT TELANGANA

यूरोप का अभ्यास मानचित्र -3

SCERT TELANGANA

मानचित्र 4 भौतिक **यूरोप**

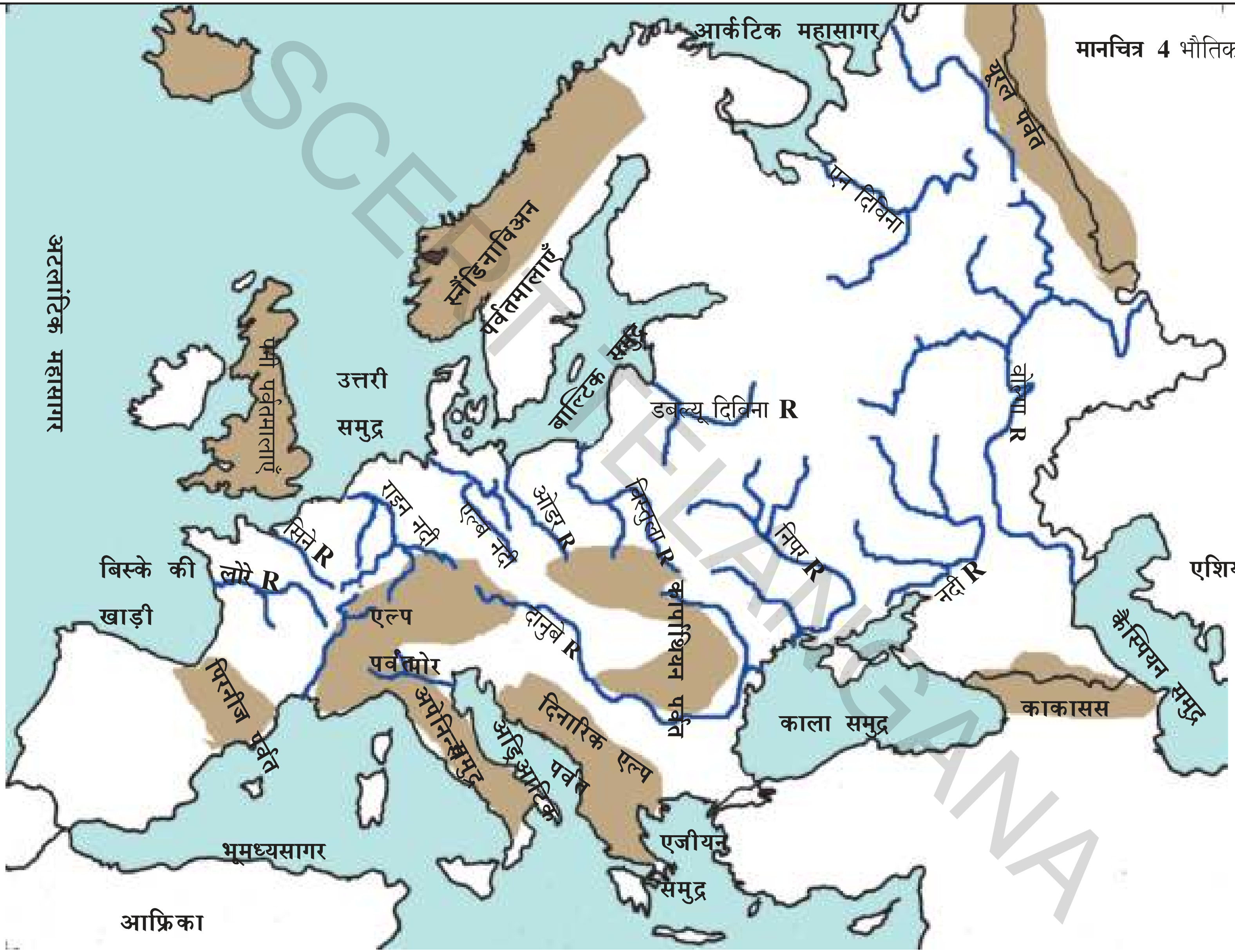

अंतर्महाद्वीपीय व्यापार से जुड़े हैं। राइन नदी के विपरीत, वोल्गा नदी केस्पियन समुद्र में मिलती है, यह एक विस्तृत झील है। इस नदी-मार्ग से समुद्र के किनारे परिवहन संभव नहीं है। इसलिए, वोल्गा नदी के किनारे बसे शहर जलमार्गों द्वारा अंतमहाद्वीपीय व्यापार से संबंध नहीं रखते।

निम्न प्रश्नों के उत्तर देने के लिए मानचित्र 2 और 4 का अध्ययन कीजिए।

- उन देशों के नाम बताइए जहाँ से राइन बहती है 1....... 2....... 3........ 4....... 5........
- उन देशों के नाम लिखिए जहाँ से डेन्यूब नदी बहती है। 1....... 2........ 3........ 4....... 5........
- हंगरी मैदानों की सीमा पर स्थित दो पर्वत श्रेणियों के नाम बताइए 1......... 2...........
- काले सागर के समीप स्थित देशों के नाम 1....... 2........ 3........ 4........ 5........

- महासागरों या समुद्रों के नाम जिसमें निम्न नदियाँ जाकर मिलती है।

नदी	महासागर/समुद्र
1. सीन	
2. राइन	
3. ओडर	
4. पो	
5. डेन्यूब	
6. विस्तुला	
7. वोल्गा	
8. नीपर	
9. डॉन	
10. ड्वीना	

प्रायद्वीप, द्वीप और खाड़ियाँ
(Peninsular, Islands, Bays and Gulf)

आप मानचित्र में देख सकते हैं कि यूरोप का समुद्री किनारा एक समान नहीं है। कई स्थानों में यह दिखाई देता है। जैसे समुद्र भूमि में गहराई से कटा हुआ दिखायी देता है। जैसे बाल्टिक समुद्र। कहीं-कहीं ऐसा प्रतीत होता है जैसे भूमि का एक भाग समुद्र में दूर तक फैला है जैसे इटली।

इटली तीन ओर से समुद्र से घिरा है। भू-भाग जो तीन ओर से समुद्र से घिरे हैं और चौथी ओर से मुख्य भूमि से जुड़े हैं, प्रायःद्वीप कहलाते हैं। नार्वे और स्वीडन भी प्रायःद्वीप के भाग हैं। आप यह मानचित्र में देख सकते हैं। यह प्रायःद्वीप स्केण्डिनेवियन प्रायःद्वीप कहलाता है।

चित्र 5.2 प्रायःद्वीप और खाड़ी

- निम्न में से कौनसा प्रायःद्वीप है :ग्रीस या फ्रांस?
- क्या स्पेन और पुर्तगाल भी प्रायःद्वीप हैं?
- स्केण्डिनेवियम प्रायःद्वीप की पर्वत श्रेणी के नाम बताओ।

यूरोपीय देशों में कुछ देश तीन ओर से नहीं बल्कि चारों ओर से समुद्र से घिरे हैं, वे द्वीप देश कहलाता है। इसमें 'ग्रेट ब्रिटन' ऐसा ही द्वीप देश है।

SCERT TELANGANA

- यूरोप के कुछ अन्य द्वीप देशों के नामों का पता लगाओ।

प्राचीन काल से नदियों ने द्वीप और प्रायद्वीप के लोगों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। मध्य और दक्षिणी यूरोप बड़े पर्वतीय क्षेत्र हैं और यहाँ पर यात्रा और परिवहन कठिन ही नहीं बल्कि खर्चीले भी हैं। तुलना में समुद्री परिवहन आसान और कम खर्चीला है। यह कारण है कि यूरोपीय लोग प्राचीन काल से समुद्री मार्ग का उपयोग अधिक कर रहे हैं।

बड़ी संख्या में खाड़ियों के होने से समुद्री मार्गों को बढ़ावा मिला है। खाड़ी (Bay) समुद्र के वे भाग हैं जो तीन ओर से भूमि से घिरे हैं। खाड़ी में भूमि अंदर की ओर कटती है और खाड़ी का मुख प्रायः चौड़ा होता है जैसे बंगाल की खाड़ी (Gulf) का। खाड़ी समुद्र का संकरा मार्ग है और इसका मुख संकरा होता है । जैसे कि आप मानचित्र में देख सकते हो सम्पूर्ण बाल्टिक समुद्र एक बड़ी खाड़ी है यह ऊँचे समुद्रों के तूफानों से सुरक्षित हैं, इसका उपयोग बन्दरगाह बनाने तथा जहाजों के सुरक्षित लंगर डालने के लिए किया जाता है। और जहाजी माल उतारने और चढ़ाने के लिए किया जाता है। बन्दरगाह बनाने के लिए गहरी खाड़ियों को प्राथमिकता दी जाती है क्योंकि यहाँ बड़ी संख्या में जहाजों का लंगर डाला जा सकता है। जहाजों को गहरे पानी की आवश्यकता होती है ताकि उनका तल समुद्र की तह को न छुए।

- मानचित्र 3 के द्वारा बाल्टिक समुद्र के तीन और पाए जाने वाले देशों के नाम बताइए

जलवायु

यूरोप की जलवायु हमारी जलवायु से ठण्डी है। इसके कई देशों में सर्दियों में बर्फ़ गिरती है। वहाँ की गर्मियाँ भी हमारी तरह गर्म नहीं होती ।

- आपके विचार में यूरोप की जलवायु हमारी जलवायु से भिन्न क्यों है?कक्षा में चर्चा कीजिए।

भूमध्य रेखा से दूरी

भूमध्य रेखा के समीप का क्षेत्र वर्ष भर गर्म रहता है और जब हम भूमध्य रेखा से उत्तर या दक्षिण की ओर बढ़ते हैं तो यह ठंडा होता जाता है। दरअसल ध्रुवीय क्षेत्र वर्ष भर बर्फ़ से ढके रहते हैं।

- उत्तरी यूरोप की भूमध्य रेखा से दूरी जानने के लिए ग्लोब मानचित्र-1 देखिए।
- क्या भूमध्यरेखा से यूरोप भारत से भी अधिक दूरी पर है?
- नार्वे और इटली दो यूरोपीय देश हैं। आपके विचार में कौन-सा देश अधिक गर्म है। क्यों?

अटलांटिक महासागर

भूमध्य रेखा से दूरी के साथ-साथ यूरोप की जलवायु दूसरे तत्व-अटलांटिक महासागर और उससे बहने वाली हवाओं से भी प्रभावित होती है। यह प्रभाव स्थिर भीतरी अंगों की अपेक्षा आटलांटिक महासागर के किनारे स्थित क्षेत्रों में अधिक दिखाई देता है।

- अटलांटिक महासागर के किनारे यूरोप के क्षेत्रों को दर्शाइए तथा बताइए कि ये पूर्वी भाग में हैं या पश्चिमी भाग में हैं?

सर्दियों में पश्चिमी यूरोप काफी ठंडा होता है किन्तु पूर्वी यूरोप में और अधिक ठंड होती है। इसीलिए पोलैण्ड और रशिया जैसे देशों में बहुत ठंड होती है जबकि फ्रांस और ग्रेट ब्रिटेन तुलनागत गर्म होते हैं। रशिया में सर्दियों में इतनी ठंड होती है कि नदियाँ और पास के समुद्र भी जम जाते हैं। लेकिन समुद्री तटों के किनारे पश्चिमी यूरोप के देशों में ऐसा नहीं होता।

SCERT TELANGANA

- मानचित्र में देखिए और बताइए कि कौनसा देश गर्म है - स्पेन का स्लोवाकिया।

आपने यह अनुमान लगाया होगा कि यह अन्तर केवल पश्चिमी यूरोप का अट्लांटिक महासागर की निकटता के कारण है। आइए देखते है कि महासागर यूरोप की जलवायु को कैसे प्रभावित करते है।

पश्चिमी हवाएँ (Westerlies)

अटलांटिक महासागर से यूरोप की ओर वर्ष भर हवाएँ बहती रहती हैं। चूँकि ये पश्चिम से बहती है इसलिए इसे पश्चिमी हवाएँ कहते हैं। (वास्तव में ये दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर बहती हैं।) ये हवाएँ भू-तापमान से गर्म होती है और नम भी होती है। पश्चिमी यूरोप की जलवायु इन गर्म और नम हवाओं से वर्ष भर प्रवाहित होती हैं। क्योंकि ये वर्ष भर रहती हैं।

- पश्चिमी हवाएँ यूरोप पर कैसा प्रभाव दिखा रही है? बताइए।

गर्म महासागरीय तरंगें

महासागर में जल स्थिर नहीं होता वह महाद्वीपों के किनारे एक स्थान से दूसरे स्थान बहता रहता है। यही महासागरीय तरंगें हैं, जो महासागर में हजारों किलोमीटर बहती हैं, जिस प्रकार भूमि पर नदियाँ बहती हैं।

इसी तरह की एक तरंग अटलांटिक महासागर में भी पायी गई। यह तरंग भूमध्य रेखा के समीप से प्रारंभ होती है, जहाँ का जल वर्ष भर गर्म रहता है। यह तरंगें पश्चिमी दिशा से उत्तर अमेरिका की ओर बहती हैं। अमेरिका के पूर्वी तटीय भागों को ये प्रभावित करती हैं और फिर यूरोप की ओर बढ़ती हैं। उत्तर-पूर्व की ओर बढ़ते हुए यह यूरोप के पश्चिमी तट से टकराती है। यह तरंगें अमेरिका में 'खाड़ीप्रवाह', और यूरोप में 'उत्तर अटलांटिक बहाव' कहलाती हैं।

खाड़ी प्रवाह के कारण उत्तर अमेरिका के पूर्वी तट और यूरोप के पश्चिमी तट का पानी सर्दियों में नहीं जमता। इसी कारण सर्दियों में भी इन तटों के बंदरगाहों पर जहाजों का आना संभव होता है।

मानचित्र 5: पश्चिमी हवाएँ

मानचित्र 6: खाड़ी हवाएँ

SCERT TELANGANA

- आपके विचार में यूरोप की जलवायु गर्म हवाओं से अधिक प्रभावित क्यों नहीं होती?

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

- भूमध्य रेखा के समीप का जल .... (गर्म/ठंडा/बर्फ के समान ठंडा) होता है।
- भूमध्य रेखा के समीप से आरंभ होकर खाड़ी प्रवाह अमेरिका के .... तट पर पहुँचता है (पूर्वी/पश्चिमी/उत्तरी)
- खाड़ी प्रवाह .... में मिल जाता है। (अटलांटिक महासागर/भूमध्य सागर/ काला सागर)
- खाड़ी प्रवाह का जल जो यूरोप के तट से टकराता है, होता है...................... (गर्म/ठंडा/बर्फ के समान ठंडा) होता है।
- .... में पश्चिमी हवाएँ अटलांटिक महासागर से यूरोप की ओर बढ़ती हैं। (सर्दियों में/ गर्मियों में /वर्ष भर)
- ये हवाएँ .... होती हैं। (सूखी/नम/बर्फीली)

पश्चिमी यूरोप : वर्ष भर वर्षा

पश्चिमी हवाएँ, जो वर्ष भर बहती हैं, उत्तरी और पश्चिमी यूरोप से अधिक नमी लाती हैं। क्योंकि ये हवाएँ समुद्र से बहती हैं। इसलिए इनमें बहुत नमी होती है और वर्षा का कारण बनती हैं। इसलिए उत्तरी और पश्चिमी यूरोप में वर्ष भर वर्षा होती है। जबकि हमारे देश में केवल कुछ महीने ही वर्षा होती है। पश्चिमी यूरोप में वर्ष भर हल्की वर्षा होती है। आकाश में अधिकतर बादल छाये रहते हैं। भारत में हम ठंडी बौछारों का बेचैनी से इंतजार करते हैं और पश्चिमी यूरोप के लोग उजले प्रकाशयुक्त दिन का।

- भारत और पश्चिमी यूरोप की जलवायु में आपने क्या अंतर पाया?

पश्चिमी यूरोप को खाड़ी प्रवाह के द्वारा अन्य लाभ भी हैं। उष्ण हवाएँ मछली प्रजनन के लिए बहुत लाभकारी हैं। क्योंकि उनमें मछलियों के लिए पर्याप्त खाद्य सामग्री होती है। परिणामस्वरूप ब्रिटेन के समीप उत्तरी समुद्र में मछली उद्योग बहुत अधिक विकसित हुआ है। उत्तरी समुद्र का यह भाग 'डागर बैंक' कहलाता है। मछली यूरोप के लोगों के भोजन का महत्वपूर्ण भाग है। इसीलिए मछली पकड़ना यूरोप का मुख्य व्यवसाय है।

- डॉगर बैंक से लाभान्वित होने वाले कुछ देशों के नाम बताइए।

दक्षिणी यूरोप में भूमध्यसागरीय शीतोष्ण जलवायु

दक्षिणी यूरोप के देशों को ध्यान से देखेंगे तो पता चलेगा कि सभी के दक्षिण में भूमध्यसागर है। ये भूमध्यसागरीय देश कहलाते हैं। भूमध्यसागर के समीप के क्षेत्रों में विशेष प्रकार की जलवायु होती है, जो भूमध्यसागरीय जलवायु कहलाती है।

- मानचित्र-2 देखिए और चार भूमध्यसागरीय देशों के नाम बताइए।

भूमध्यसागरीय देश यूरोप के दक्षिण के देश हैं। जिसके कारण यहाँ सर्दियों में बहुत ठंड नहीं होती और गर्मियों में अधिक गर्मी होती है। पश्चिमी यूरोप के समान यहाँ वर्ष भर वर्षा नहीं होती। पश्चिमी हवाएँ यहाँ केवल सर्दियों के महीनों में ही बहती हैं। ये हवाएँ भूमध्यसागरीय देशों का वर्षा प्रदान करती हैं। दूसरे शब्दों में यहाँ केवल सर्दियों में ही वर्षा होती है। इस प्रकार की वर्षायुक्त सर्दियाँ और सूखी गर्मियाँ भूमध्यसागरीय जलवायु कहलाती हैं। अन्य महाद्वीपों

SCERT TELANGANA

के कई क्षेत्रों में भी भूमध्यसागरीय जलवायु होती है। यह जलवायु रसीले फल उगाने के लिए अधिक उपयुक्त होती है। इसी कारण भूमध्यसागरीय जलवायु वाले क्षेत्र फलों के लिए प्रसिद्ध हैं। दक्षिणी यूरोप में जैतून, अँजीर, अंगूर, संतरे आदि फल अधिक उगाये जाते हैं।

- भूमध्यसागरी और आंध्र प्रदेश की जलवायु की निम्नलिखित आधार पर तुलना कीजिए। मौसम / वर्षा
- आपके राज्य में अत्यधिक वर्षा कब होती है? गर्मियों या सर्दियों के महीनों में।
- पता लगाइए कि क्या आपके क्षेत्र में सर्दियों में हल्की वर्षा होती है? उसे आपकी क्षेत्रीय भाषा में क्या कहते हैं?
- मछलीउद्योग को .... क्षेत्र में अधिक महत्व दिया जाता है।
- फल उत्पादन को .... क्षेत्र में अधिक महत्व दिया जाता है।

चार ऋतुएँ :

हमारे देश में तीन ऋतुएँ हैं, शीत, ग्रीष्म एवं वर्षा लेकिन अधिकतर यूरोपीय देशों में जिसमें फ्राँस भी शामिल है चार ऋतुएँ होती हैं। जो इस प्रकार हैं- शीत, वसंत, ग्रीष्म एवं पतझड़। भूमि ऋतुओं के अनुसार अपना रूप बदलती है। और कृषि में भी बदलाव आता है। भूमि के इस बदलाव को आप दिए गए चित्रों में देख सकते हैं।

शीत ऋतु :– जैसे जैसे नवम्बर का महीना आता है वातावरण ठंडा होने लगता है। दिसम्बर तक ठंड अधिक बढ़ जाती है और कभी–कभी बर्फ़ गिरनी शुरू से जाती है। मैदानों से अधिक बर्फ़ पर्वतों पर गिरती है। सूरज कभी–कभी निकलता है। सूर्य उदय काफी देर से होता है, 9 या 10 बजे तक एवं सूर्यास्त दोपहर, में चार बजे तक हो जाता है। बादल छाए रहने के कारण अधिक अंधेरा हो जाता है। फ्राँस में चौड़े पत्तों के पेड़ पाए जाते हैं, जो शीत ऋतु में झड जाते हैं और पूरी तरह से पत्तों के बिना रह जाते है।

वसन्त ऋतु :– जैसे ही मार्च का महीना आता है फ्राँस का प्राकृतिक दृश्य बदल जाता है। दिन बड़ा होता है और रात छोटी। बर्फ पिघलने लगती है तथा पेड़ों से नई शाखाएँ फूटने लगती है। पेड़ों पर नए हरे पत्ते उगने लगते हैं एवं हर तरफ रंग बिरंगे फूल खिलने लगते है। मैदानों में हरी घास उगने लगती है।

वसन्त ऋतु में खेतों में हल चलाए जाते हैं एवं बीज भी बोए जाते हैं। गेहूँ , रेय, बारली, मकई, जौ एवं चुकन्दर यहाँ की मुख्य कृषि है।

- आपके राज्य में इनमें से कौन सी फसले होती हैं? और किस स्थान पर होती है ?

ग्रीष्म :– फ्राँस में जून से अगस्त तक ग्रीष्म ऋतु होती है। इस समय यहाँ अधिक वर्षा नहीं होती तथा सूर्य की किरणे अधिक होती है। दिन काफी बड़ा होता है, हमारे देश में भी अधिक सूरज सबेरे के चार बजे ही उग जाता है और रात में 8 बजे के बाद सूर्यास्त होता है। किन्तु गर्मी अधिक नहीं होती। वास्तव में उत्तरी देश जैसे स्वीड़न, सूर्यास्त ही नहीं होता। इन देशों को मध्यरात्रि सूर्य भूमि कहा जाता है। यह इसीलिए क्योंकि सूर्य आकाश में ऊँचाई में उदित नहीं होता, क्षितिज के पास होता है, जहाँ धरती और आकाश मिलते दिखाई देते है।

यूरोप में गर्मी में कृषि की जाती है। फसले अच्छी उगती है। सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती, वर्षा की बौछार ही बस हो जाती है। गर्मी के अन्त में फ़सले काटने के लिए तैयार हो जाती है।

SCERT TELANGANA

- सभी चित्रों को ध्यान से देखिए। यह विभिन्न ऋतुओं की है। आप इन में क्या अन्तर देखते हैं।

हमारे देश में कृषि के दो मुख्य ऋतुएँ हैं – रबी एवं खरीफ (शीत एवं मानसून) इसीलिए हम आठ से दस महीने तक अनाज उगा सकते है। लेकिन फ्राँस में तथा दूसरे यूरोपीय देशों में सिर्फ 6 से 7 महीनों तक ही खेती की जा सकती है।

<u>पतझड</u> :– सितम्बर एवं अक्टोबर में जलवायु में फिर से बदलाव आता है। पेड़ों के पत्ते लाल एवं पीले हो जाते हैं, और झड़ने लगते है। खेती का काम बंद हो जाता है। घास काट कर सुखायी जाती है तथा शीत ऋतु में पशुओं को खिलाने के लिए रख दी जाती है। अंगूर तथा दूसरे फल तोड़कर शराब, जैम और शर्बत बनाकर उन्हें डिब्बों में अलग–अलग उपयोग के लिए सुरिक्षत रखा जाता है।

भूमि और कृषि (Land and Agriculture)

यूरोप के मैदान और नदी घाटियाँ बहुत उर्वरक हैं। यहाँ वर्ष भर वर्षा होती है। नदियाँ भी किसी भी मौसम में नहीं सूखतीं। इसके कारण मैदान खेती के लिए बहुत उपयुक्त हैं। लेकिन यूरोप का एक बहुत बड़ा भूभाग पर्वतीय है और खेती के लिए उपयुक्त नहीं है। कुछ देशों में बहुत ही कम कृषि योग्य भूमि है। उदाहरण के लिए नार्वे की केवल तीन प्रतिशत भूमि खेती के लिए उपलब्ध है। इंग्लैंड की तीस प्रतिशत खेती योग्य है। जबकि जर्मनी में यह चालीस प्रतिशत है। यह हमारे देश से बहुत भिन्न है। भारत में पचपन प्रतिशत भूमि खेती करने योग्य है।

हॉलैंड में भूमि की बहुत कमी है। हॉलैंड के लोग (डच) समुद्र को पीछे धकेलने के लिए उसपर तटबंध बनाते हैं, जो डाइक्स कहलाते हैं। कृषि योग्य बनायी गयी भूमि पोल्डर कहलाती है।

पूर्वी और उत्तरी यूरोप में सर्दियों में अत्यधिक सर्दी के कारण भूमि पर कृषि करना संभव नहीं है। भूमि पर लगभग छह महीने तक जमी बर्फ वसंत में पिघलना शुरू होती है। जिससे फसलों को पकने के लिए बहुत कम समय मिलता है। वसंत में बीजों का रोपण होता है, गर्मी के महीनों में फसलें पकती हैं। पतझड़ में कटाई के लिए तैयार हो जाती हैं। परिणामस्वरूप इन भागों में वर्ष में एक ही फसल उगायी जा सकती है। इस प्रकार दक्षिण यूरोप में एक वर्ष में दो फसलें संभव है।

- क्या आप बता सकते हैं कि भूमध्यसागरीय देशों में दो फसलें उगाना कैसे संभव है?

गेहूँ यूरोपीय मैदानों की मुख्य फसल है। फ्रांस, जर्मनी, यूक्रेन, पोलैंड, इटली, ग्रीस आदि में इसकी अधिक उपज होती है। हमने देखा कि दक्षिणी यूरोप में मुख्य रूप से फलों की खेती होती है। अंगूर जैसे फलों का उपयोग शराब बनाने में किया जाता है। भूमध्यसागरीय देश जैसे- पुर्तगाल, स्पेन, इटली और दक्षिणी फ्रांस अपनी शराब के लिए प्रसिद्ध है।

चित्र 5.3 कटाई के बाद सर्दी के लिए चारे के रूप में संग्रहित सूखी घास के गट्ठे

बार्ली, जौ, रागी, शक्कर, कंद, आलू आदि यूरोप की महत्वपूर्ण फसलें हैं। रूस, यूक्रेन और जर्मनी में चुकन्दर से शक्कर बनाई जाती है।

कृषि क्रान्ति

यूरोप एशिया की तरह एक किसानो और जमींदारों का महाद्वीप है। पिछले दो शताब्दियों में इसमें इतना अधिक परिवर्तन देखा गया है कि जनसंख्या का बहुत कम भाग कृषि करता है और वहाँ भारत की तरह छोटे किसान नहीं है। इसका प्रमुख कारण है तकनीकी क्रान्ति जिसने किसानों को बड़ी भूमि पर कम श्रम से कृषि उपज करना बताया है। मशीन, रसायनिक खाद आदि का उपयोग कृषि में अधिक किया जाने लगा और उत्पादन का मुख्य लक्ष्य बाजारों में बेचना बन गया। इसी समय जमींदारों एवं पूंजीपतियों ने छोटे किसानों से कृषि भूमि प्राप्त कर ली जो खेती करना छोड़ कर उद्योग या अन्य सेवाओं में रोजगार तलाश कर रहे थे।

वर्तमान में यूरोपीय खेत

यूरोप में अधिकतर कृषि विस्तृत खेतों में की जाती है - 50 से 100 एकड़ की भूमि में। सामान्यतः किसान अपने ही खेतों में घर बना लेते है। ये फार्म हाऊस बहुत बड़े होते है जहाँ कई कमरे होते है, पशुओं के लिए शेड, खाद्यान्न के लिए गोदाम, मुर्गियों और सुअर के लिए दड़बे आदि भी होते है।

ये बड़े किसान अपने खेतों में काम करने के लिए किसानों को किराए पर लेते है। वे भारी मशीने जैसे टेक्टर, कटाई की मशीन आदि का भी उपयोग करते है। पूरा उत्पादन बाजार में बेचा जाता है। कभी-कभी किसान अपने पास की सहकारी समितियों से मशीने किराए पर लेते है।

SCERT TELANGANA

- आपके क्षेत्र के किसान की औसतन भूमि का पता कीजिए।
- आपके क्षेत्र के किसान भी क्या ट्रेक्टर और कटाई की मशीन किराए पर लेते है?

विशाल धरोहर एवं यांत्रिक कृषि से यूरोपीय कृषक अधिक आय प्राप्त करते है। वे आधुनिक सुविधाओं से व्याप्त आरामदायक घरों में रहते है। रसोई के लिए वे गैस और इलेक्ट्रिक स्टोव का उपयोग करते हैं। पचास वर्षों पहले अधिकतर यूरोपीय किसान अपनी ब्रेड़ (रोटी) स्वयं बनाते थे। परन्तु आज वे अपने उत्पादन का अधिक भाग बेच देते है और बाजार से अपने लिए रोज ब्रेड़ खरीदते है। पास के नगरों में अनेक प्रकार की ब्रेड़ और केक मिलते है। फ्रान्सिसियों का प्रमुख खाध ताजा माँस पोल्ट्री, पशुओं और सुअर के रूप में उपलब्ध रहता है। माँस के धुएँ, सूखाकर या ठण्डे भाग में जमा कर रख कर सुरक्षित रखा जा सकता है। सभी घरों में मचान या तलधरों में माँस, चीस और शराब को संग्रहित किया जाता है। जब उन्हें बड़े ठण्ड़े भवनों (गोदामो) में भी जमा कर रखा जाता है।

अपनी आवश्यकता की अनेक वस्तुएँ किसान अपने पास के नगरों से प्राप्त कर लेते है। रोटी या अन्य खाद्य वस्तुओं के अतिरिक्त कृषि औजार और मशीने पास के नगरों से प्राप्त कर लेते है।

आधुनिक कृषि

यूरोप में कृषि उद्योग की तरह ही व्यावसायिक संस्था की प्रक्रिया बन गई है। अपने द्वारा उत्पादित सारे उत्पादन को बेच कर और बाजार से अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ प्राप्त कर अपना जीवनयापन करते हैं। कृषि तकनीकी में वे हाइब्रीड़ बीज, रसायन, स्वाद आदि का भी आवश्यकतानुसार उपयोग करते है।

हमारे देश की तुलना में, यूरोप में बहुत कम लोग कृषि पर निर्भर रहते है। अधिकतर लोग उद्योग या सेवा क्षेत्र जैसे बैंक, परिवहन आदि में काम करते है। सरकार उन लोगों की अधिक सहायता करती है जो कृषि कार्य से संलग्न है, उन्हें कम लाभ मिलता है इसीलिए सहायक (छूट) दर पर कृषि चलाने में सहायता देती है। गाँवों में कृषि करने के लिए सरकार उन्हें वेतन देती है।

समुद्री मार्गों की खोज

पश्चिमी यूरोप का कोई भी भाग समुद्र से दूर नहीं है। इसके विपरीत एशिया के कई देश समुद्र से हजारों किलोमीटर दूर हैं।

- दीवार मानचित्र या एटलस में देखकर यूरोप के कम से कम छह शहरों के नाम बताइए, जो समुद्री तट पर स्थित हैं।

वहाँ सुमद्री किनारों पर हज़ारों ऐसे स्थायी निवास हैं जहाँ समुद्र से लाभान्वित होते हुए सैकड़ों वर्षों से लोग रह रहे हैं। समुद्री यात्रा के कई सदियों के अनुभव से यूरोपीय नाविकों ने समुद्र पर अपने कौशल और साहस के लिए नाम कमाया था। वे नाव और जहाज बनाने में भी निपुण थे। मुख्य रूप से ये जहाज गहरे समुद्रों में मछली पकड़ने के लिए बनाये जाते थे। बाद में इनका उपयोग अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए किया जाने लगा।

बहुत प्राचीन समय से ही यूरोप के लोग भारत तथा एशिया के अन्य देशों जैसे- इंडोनेशिया और चीन के साथ व्यापार कर रहे थे। इन देशों से यूरोप ने कपास, रेशमी कपड़ा, जवाहरात, हाथी के दाँत, मसाले जैसे- लौंग, काली मिर्च तथा इलायची जैसी चीज़ें प्राप्त कीं जो यूरोप में नहीं मिलती थीं। यूरोपीय लोग इन चीज़ों को अपने देश से लाये जाने वाले सोने-चाँदी के बदले में प्राप्त करते थे। क्या आप जानते हैं कि भारत आने के

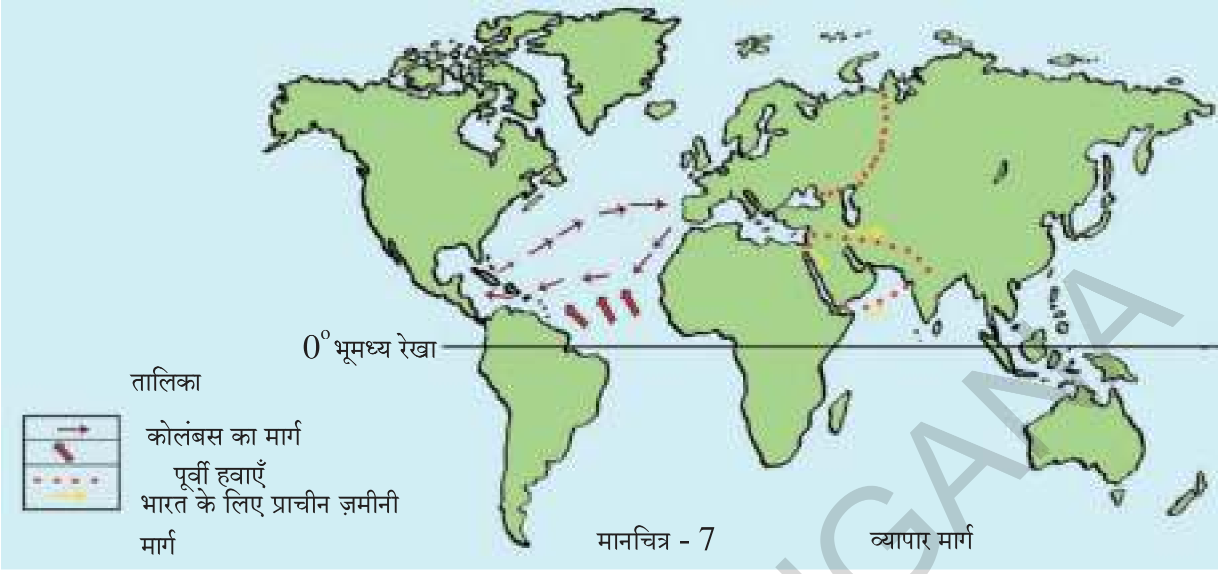

मानचित्र - 7

लिए इन लोगों ने किस मार्ग का प्रयोग किया? मानचित्र सात में देखिए जिनमें दो प्रमुख मार्ग दिये गये हैं। दोनों मार्ग भूमध्य सागर से होकर गुजरते हैं। इनमें से एक मध्यपूर्व, ईरान और अफगानिस्तान से होते हुए भूमार्ग को जाता है तो दूसरा लाल सागर और अरबसागर से होते हुए समुद्री मार्ग को जाता है।

पाँच सौ वर्ष पूर्व पश्चिमी यूरोप के नाविकों, व्यापारियों ने भारत देश के लिए नये मार्गों की खोज की। अरब देश को निरंतर यूरोप से युद्ध जारी रखने के कारण नये मार्गों के खोज की आवश्यकता पड़ी। भूमध्यसागरीय देशों पर इटली के व्यापारियों का नियंत्रण होने के कारण अन्य देशों के लिए यह सरल न था। इसीलिए अन्य देशों के नाविकों ने भारत के लिए ऐसे मार्ग की खोज की जो भूमध्यसागरीय व अरब देशों से नहीं गुजरता था।

- मानचित्र देखकर क्या आप बता सकते है कौन-सा नया मार्ग हो सकता हैं?

प्रायः इस तरह के मानचित्र उन दिनों नहीं थे। उनको मालूम था कि भूमि गोलाकार है न कि समतल। इटली के नाविक क्रिस्टोफर कोलंबस की यह सोच थी कि भूमि गोलाकार होने के कारण भारत देश के लिए पश्चिम से यात्रा की जा सकती है। यदि अटलांटिक महासागर से पश्चिम की ओर यात्रा करते हैं तो चीन से होते हुए भारत पहुँच सकते हैं।

- ग्लोब या अटलस देखकर यह बताइए कि कोलंबस की सोच सही थी या नहीं?

सन् 1492 ई. में कोलंबस अटलांटिक महासागर पार करने हेतु तीन नौकाएँ लेकर निकला। तीन महीने की यात्रा के बाद उसे भूभाग नज़र आया। तब उसने समझा कि मैं भारत पहुँच चुका हूँ। वास्तव में वह भारत देश से बहुत दूर था। वह वेस्ट इंडीज पहुँचा था। वह अमेरिका के पास का एक द्वीप समूह था। कोलंबस से पहले यूरोप वालों को अमेरिका की जानकारी नहीं थी। वह अनायास ही अमेरिका पहुँच चुका था। जल्दी ही यूरोपियों को समझ में आ गया कि वे भारत नहीं पहुँचे बल्कि उन्होंने एक नये भूखंड को पा लिया है। इसके बाद यूरोपीयों ने व्यापार के बहाने वहाँ पहुँचकर, उनपर अधिकार पाकर वहाँ अपना स्थायी निवास बनाया।

SCERT TELANGANA

उन दिनों जहाजों को चलाने के लिए हवाओं का शक्ति के रूप में उपयोग किया जाता था। पश्चिम दिशा में बहने वाली हवाओं के सहारे वे अमेरिका की यात्रा करते थे। क्या वे वही पश्चिमी हवाएँ हैं, जिनके द्वारा यूरोप से अमेरिका की यात्रा की जाती थी? क्या ये पश्चिम की ओर हैं, नहीं ये पश्चिमाभिमुख नहीं हैं। ये यूरोप की दिशा में हैं। ये अलग हवाएँ हैं, जो यूरोप के दक्षिण से दक्षिण-पश्चिम दिशा में बहती हैं। ये वर्ष भर बहती हैं और जहाजों को दक्षिण-पश्चिम यूरोप से लेकर अमेरिका के पूर्वी तट तक पहुँचाती हैं। इन हवाओं को व्यापारी हवाएँ कहते हैं। मानचित्र-7

इसी प्रकार पश्चिमी हवाएँ दक्षिण पश्चिम से पूर्वोत्तर की ओर, पूर्वोत्तर से दक्षिण पश्चिम की ओर बहती हैं। ये विपरीत दिशाओं में वर्ष भर बहती हैं जैसा कि मानचित्र में दिखाया गया है। ये यूरोपियों को सरलता से अमेरिका की यात्रा करने में सहायक होती हैं।

मानचित्र 7 देखकर निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- यूरोप से अमेरिका वापस जाने के लिए नाविकों के कौन-सी हवाएँ उपयोगी है?
- क्या यूरोप वापस आने के लिए व्यापारियों ने व्यापारी हवाओं का उपयोग किया है? कारण बताइए।

कोलंबस के बाद यूरोपवासियों ने अनेक समुद्री मार्गों की खोज की। वे आज केवल अमेरिका ही नहीं आफ्रिका, भारत, आस्ट्रेलिया आदि देशों की समुद्री यात्रा कर रहे हैं। इन देशों से व्यापार करके अपार संपत्ति ले गये हैं। यह संपत्ति यूरोप के औद्योगिक उत्पादनों के लिए सहायक सिद्ध हुई।

आप अगले अध्याय में यूरोप में औद्योगिक क्रान्ति की विस्तृत जानकारी प्राप्त करेगे।

मुख्य शब्द :

1. प्रायद्वीप
2. द्वीप
3. खाड़ी (Bay)
4. तरंगे
5. खाड़ी (Gulf)
6. जलवायु

SCERT TELANGANA

हमने क्या सीखा?

1. अटलांटिक महासागर यूरोप के मौसम पर तो प्रभाव डालता ही है, साथ-साथ वहाँ रहनेवाले लोगों के जीवन व जीवन शैली को भी प्रभावित करता है। इससे संबंधित संदर्भ एकत्र कीजिए तथा इस विषय पर एक निबंध लिखिए।

2. पाठ में दिये गये मानचित्रों की सहायता से निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

   - कौन सा देश भू भाग से घिरा हुआ नहीं है? (हंगरी/रोमानिया/पोलैंड/स्विटजरलैंड)

   - कौनसा पर्वत कैस्पियन समुद्र एवं काला समुद्र के मध्य स्थित है? (एल्प्स/काकासस पर्वत)

   - कौन सा शहर आर्कटिक महासागर के किनारे है? (रूस/ज़र्मनी/स्वीडन/नार्वे)

   - क्या एक जहाज काला समुद्र की ओर से अटलांटिक महासागर पहुँच सकता है? यदि हाँ, तो उसका मार्ग अंकित कीजिए।

3. बंदरगाह गहरे समुद्र की खाड़ियों में क्यों बनाये जाते हैं?

4. पूर्वी यूरोप की अपेक्षा पश्चिमी यूरोप में सर्दी कम क्यों होती है?

5. काला समुद्र के किनारे स्थित किन्हीं चार देशों के नाम लिखिए।

6. पश्चिमी यूरोपियों के लिए पश्चिमी हवाएँ कैसे लाभदायक हैं?

7. भूमध्यसागरीय जलवायु के क्या लक्षण हैं? ऐसे देशों के नाम बताइए जहाँ भूमध्यसागरीय जलवायु पायी जाती है।

8. वे कौन से कारक हैं जो यूरोपी कृषि को सीमित करते हैं?

9. दक्षिणी यूरोप की मुख्य फसलों के नाम बताइए।

10. आप कैसे कह सकते है कि यूरोपीय सैलानियो द्वारा नए मार्ग की खोज के पश्चात देशा के मध्य व्यापारी एवं सांस्कृतिक संबंध विकसित हुए?

11. इस अध्याय का अन्तिम अनुच्छेद - "समय में परिवर्तन के अनुसार............................विकास किया।" पढ़िए और टिप्पणी लिखिए।

12. हमारे देश से यूरोप की कृषि में क्या समानता एवं असमानता?

SCERT TELANGANA

अध्याय 6

आफ्रिका
(Africa)

भारत के पश्चिम में एक विशाल महाद्वीप है। इस महाद्वीप में विस्तृत रेगिस्तान, घने जंगल, लंबी और चौड़ी नदियाँ, अनेक बड़ी झीलें और घास के मैदान हजारों मीलों तक फैले हुए हैं। वहाँ पर ऐसे जंगली जानवर हैं जो हमारे देश में नहीं पाये जाते हैं। विश्व की विशालतम सोने और हीरों की खानें भी यहाँ हैं। इस महाद्वीप का नाम आफ्रिका है। कदाचित् आप यह जानकर आश्चर्यचकित होंगे कि आफ्रिका मानवजाति का पालना है। माना जाता है कि मानवजाति सबसे पहले आफ्रिका में विकसित हुई। तत्पश्चात अन्य महाद्वीपों की ओर अग्रसर हुई।

SCERT TELANGANA

चित्र 6.1 युगोडा के भूमध्यरेखीय (Equitorial) वन

चित्र 6.2 केन्या में सवाना

चित्र 6.3 नील नदी के किनारे केरो शहर

- विश्व के मानचित्र में आफ्रिका को देखिए। इसके चारों दिशाओं में व्याप्त महासागरों के नाम बताइए। इसके पड़ोसी महाद्वीप कौन से हैं?

आफ्रिका : एक विशाल पठार

आफ्रिका के भौतिक मानचित्र को देखिए। क्या आपने महाद्वीप के भीतरी भाग में विशाल मैदानों को देखा हैं? केवल तट पर हमें संकुचित मैदान मिलते हैं। शेष महाद्वीप एक विशाल पठारी भाग है। यदि आप सावधानी पूर्वक मानचित्र देखेंगे तो आप पायेंगे कि पठार की ऊँचाई एक जैसी नहीं है। नील और कांगो नदियों की घाटियों को देखिए। इस पठार पर अनेक पर्वत भी हैं। तंजानिया में किलिमंजारो आफ्रिका का सबसे उच्चतम पर्वत शिखर है।

उच्च पठार में लंबी और संकीर्ण घाटियाँ हैं। इन घाटियों में अनेक विशाल झीलें हैं।

- विक्टोरिया झील को छोड़कर आफ्रिका की दो अन्य झीलों को पहचानिए और उनके नाम लिखिए।
- आफ्रिका के मानचित्र में निम्नलिखित नदियाँ दर्शाइए। आफ्रिका के देशों को दर्शाने के लिए मानचित्र 6 का उपयोग कीजिए। निम्नलिखित नदियाँ किन देशों से गुजरती हैं और किन महासागरों में जाकर मिलती हैं।

नदी	देश	महासागर
नील नाइजर कांगो जांबेजी		

मानचित्र 1 देखिए और निम्न प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- संकुचित तटीय मैदान की औसत ऊँचाई क्या है?
- पठार के बड़े भाग की अधिकतम ऊँचाई क्या है?
- आफ्रिका के दक्षिणी और पूर्वी उच्च पठारों की ऊँचाई ....
- आफ्रिका के उत्तर में .... पर्वत है।

मानचित्र 1: आफ्रिका का उभार मानचित्र

SCERT TELANGANA

उत्तर में एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ विक्टोरिया झील के अलावा कोई नदी दिखाई नहीं देती, यह सहारा मरुस्थल है। यहाँ बहुत कम वर्षा होती है। वहाँ केवल एक नदी है। जो सहारा मरुस्थल से गुजरती है।

पठार पर कुछ विशाल झीलों को देखिए। विक्टोरिया झील आफ्रिका की सबसे बड़ी झील है। यह विश्व की शुद्ध पानी की सबसे बड़ी झीलों में से एक है। नील नदी का उद्‍गम इसी झील से हुआ है। वह क्षेत्र जहाँ से इस नदी का उद्‍गम होता है, वहाँ इतनी अधिक वर्षा होती है कि मरुस्थल से बहने के लिए यह जल पर्याप्त होता है।

नील नदी की सहायता से मरुस्थल में एक सभ्यता का विकास हुआ। मिश्र की सभ्यता कई हजारों वर्ष पुरानी है। हजारों वर्षों तक नील नदी के पानी ने मिश्र में खेतों की सिंचाई में मदद की। (मानचित्र 3 देखें।)

मानचित्र **2:**आफ्रिका - बहिरेखीय

जलवायु

यदि आप ग्लोब पर आफ्रिका को देखेंगे तो पायेंगे कि भूमध्यरेखा इसके मध्य से गुजरती है। इसलिए आफ्रिका उत्तरी और दक्षिणी दो भागों में विभाजित होता है।

- आफ्रिका के दीवार मानचित्र पर कर्क रेखा को पहचानने का प्रयत्न कीजिए और मानचित्र - **2** को नामांकित कीजिए। भूमध्यरेखा के दक्षिण में मकर रेखा है। इसे दर्शाइए और इसका नाम मानचित्र में सही जगह पर लिखिए।
- क्या भूमध्य रेखा अन्य किसी महाद्वीप के मध्य से गुजरती है?

कर्क रेखा और मकर रेखा के बीच के क्षेत्र की जलवायु गर्म होती है। वस्तुतः यह विश्व का सबसे अधिक गर्म क्षेत्र है। यहाँ सर्दी बहुत कम होती है। यह क्षेत्र उष्ण कटिबंधिय क्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है।

- आफ्रिका के मानचित्र में इस क्षेत्र को दर्शाइए। रंग भरिए और उसके उष्ण कटिबंधीय क्षेत्र को नामांकित कीजिए। कर्क रेखा के उत्तरी क्षेत्र और मकर रेखा के दक्षिणी क्षेत्र में अलग-अलग रंग भरिए।

उष्णरेखीय क्षेत्रों के इन दक्षिणी और उत्तरी क्षेत्रों में गर्मी के साथ -साथ सर्दी भी होती है। वे समशीतोष्ण क्षेत्र कहलाते हैं।

अभी तक हम केवल गर्मी और सर्दी के बारे में बात कर रहे थे। अधिक वर्षा वाले गर्म प्रदेशों की जलवायु, कम वर्षा वाले गर्म प्रदेशों से भिन्न होती है।

SCERT TELANGANA

मानचित्र **3:** *आफ्रिका में वर्षा का वितरण*

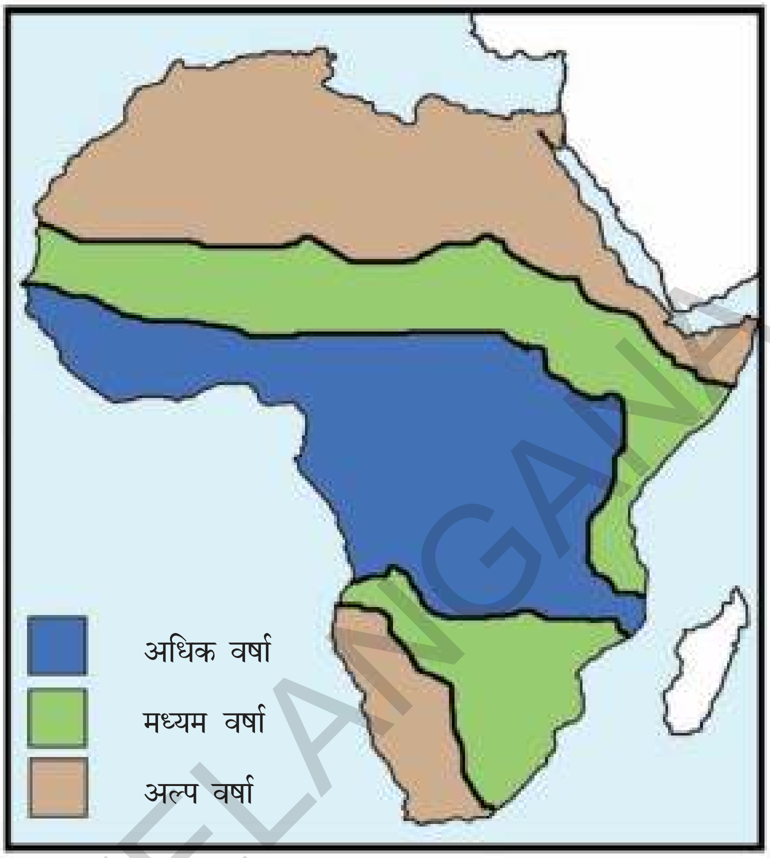

मानचित्र **4:** *आफ्रिका की प्राकृतिक वनस्पति*

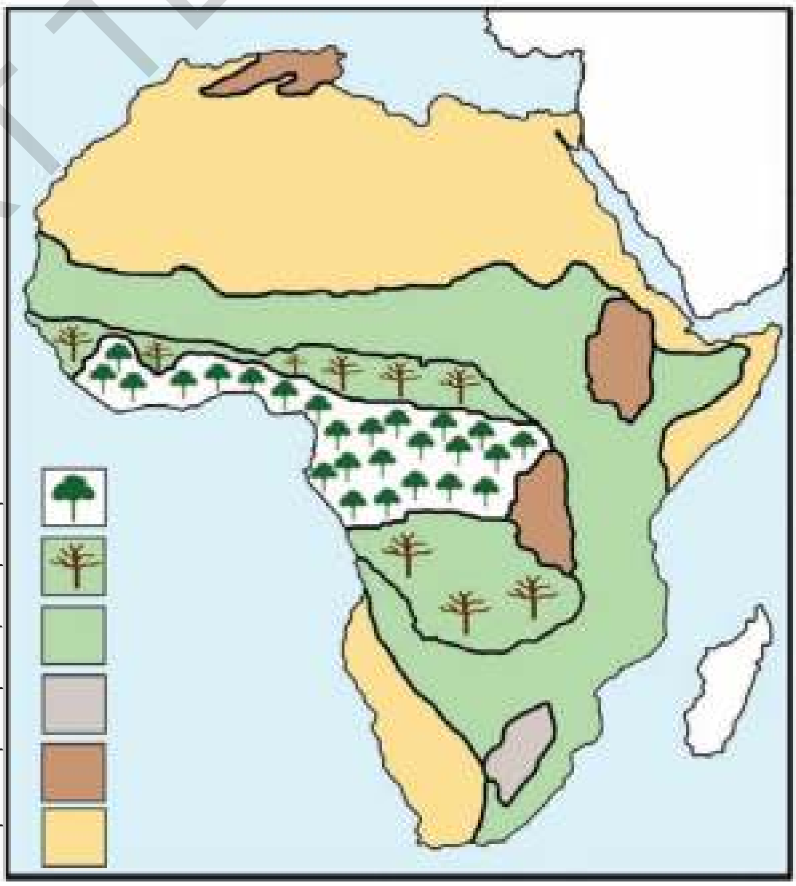

भूमध्यरेखीय वन

चौड़े पत्तों वाले पेड़ और घास

सवाना

उच्च पठार की मुलायम घास

पर्वतीय वनस्पति

मरुस्थलीय वनस्पति

SCERT TELANGANA

अधिक वर्षा वाले क्षेत्र

भूमध्य रेखा के दोनों ओर आफ्रिका के एक विशाल भाग में बहुत अधिक वर्षा होती है। मानचित्र 3 में अधिक वर्षा वाले क्षेत्र देखिए। एक ऐसा क्षेत्र मध्य और पश्चिमी आफ्रिका में है। अत्यधिक वर्षा और गर्म जलवायु के कारण इनमें घने वन हैं।

बहुत कम और मध्यम वर्षावाले क्षेत्र

मानचित्र तीन में मध्यम वर्षा वाले क्षेत्र देखिए। आप देखेंगे कि मध्यम वर्षा वाले क्षेत्र, इसके चारों ओर अत्यधिक वर्षा वाले क्षेत्र हैं। मध्यम वर्षा वाले क्षेत्रों में केवल गर्मी में वर्षा होती है, जबकि भूमध्यरेखीय क्षेत्रों में वर्ष भर वर्षा होती है।

हमारे देश के समान ही आफ्रिका के मध्यम वर्षा वाले क्षेत्रों में निश्चित ही शुष्क और नम मौसम होता है। मध्यम वर्षा के कारण इस क्षेत्र में लंबे घास के मैदान उगते हैं। कुछ स्थानों में यह घास इतनी लंबी होती है कि हाथी भी इनमें छिप सकते हैं। यह क्षेत्र सवाना कहलाता है। मानचित्र चार में यह क्षेत्र देखिए। विभिन्न प्रकार के जंगली जानवर इस क्षेत्र में रहते हैं। आप इनके बारे में आगे पढ़ेंगे।

आफ्रिका का एक बड़ा भूभाग अत्यधिक शुष्क है, जहाँ वर्षा बहुत कम होती है या कई वर्षों से वहाँ वर्षा हुई ही नहीं है।

- मानचित्र 3 में इन शुष्क प्रदेशों को दर्शाइए।

आफ्रिका का लगभग आधा उत्तरी भाग शुष्क क्षेत्र है। यह सहारा मरुस्थल कहलाता है। इस मरुस्थल के कुछ हिस्सों में काँटेदार झाड़ियाँ और छोटी घास उगती है। अन्य भाग में रेत, पहाड़ियाँ, चट्टानें, पत्थर तथा कंकड़ फैले हुए हैं। दक्षिण में एक अन्य शुष्क प्रदेश है जो कालाहारी मरुस्थल कहलाता है।

मानचित्र 2 और 4 का अध्ययन कीजिए और उत्तर दीजिए।

- अत्यधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में .... वनस्पति होती है।
- मध्यम वर्षावाले क्षेत्रों में .... वनस्पति होती है।
- अल्प वर्षावाले क्षेत्रों में .... वनस्पति होती है।

अध्याय के आरंभ में आफ्रिका के विभिन्न क्षेत्रों के चित्र हैं। कहीं पर घने जंगल हैं, कुछ क्षेत्रों में वृक्ष और घांस साथ उगते हैं। कहीँ घास और कंटीली झाड़ियाँ हैं और कुछ क्षेत्रों में किसी भी प्रकार की वनस्पति नहीं होती है।

आफ्रिका के लोग

विभिन्न भाषाओं, जीवन शैलियों और आदतों वाले लोग आफ्रिका के विभिन्न क्षेत्रों में रहते हैं। प्राचीन काल से ही लोग छोटे जनजाति समूहों में रहते हुए पशुओं का शिकार, पशुपालन और कृषि व्यवसाय करते थे। शिकारी भूमध्यरेखीय क्षेत्रों और मरुस्थलों में निवास करते थे। पशुपालक ऊँचे पठारों और सवाना में निवास करते थे और विस्तृत घास के मैदानों में अपने पशुओं को चराते थे। बहुत समय तक कृषि नदी के किनारों के साथ-साथ जंगलों के कुछ भागों में की जाती थी। वहाँ समुद्री तटों पर अनेक शहर है, जहाँ व्यापारी दूर के देशों से व्यापार के लिए आते है।

चित्र 6.4 बोबाब वृक्ष

SCERT TELANGANA

आफ्रिका, यूरोप और एशिया

बहुत समय तक अन्य महाद्वीपों के लोगों को आफ्रिका के बारे में पता नहीं था। यूरोपीय लोग आफ्रिका के केवल उत्तरी तटीय क्षेत्रों से परिचित थे। जबकि भारतीय और अरब के व्यापारी पूर्वी तट के बारे में जानते थे।

- मानचित्र देखिए और अनुमान लगाइए कि यूरोपीय लोग किस प्रकार उत्तरी तटीय क्षेत्रों तक पहुँचे होंगे? यूरोप से आफ्रिका जाने के लिए किस दिशा में जाना होगा? आफ्रिका पहुँचने के लिए किस समुद्र को पार करना होगा?

इन तटीय क्षेत्रों के अलावा यूरोपीय, भारतीय और अरब के व्यापारियों को आफ्रिका के भीतरी भागों की अधिक जानकारी नहीं थी।

लगभग 500 वर्ष पूर्व यूरोपीय लोगों ने आफ्रिका का चक्कर लगाते हुए समुद्री मार्ग द्वारा भारत आने का प्रयास किया। अटलांटिक महासागर को पार करते हुए वे सेंट मेडियरा और एजोरस द्वीपों पर रुकते थे। इन द्वीपों के दक्षिण में जाने के लिए ये भयभीत रहते थे। वे सोचते थे कि दक्षिण में ये द्वीप इतने गर्म होंगे कि समुद्र का पानी उबलता होगा। तत्पश्चात वर्ष 1498 ई. में पूर्तगाली नाविक वास्कोडिगामा आफ्रिका के दक्षिणी बिन्दु की यात्रा करते हुए भारत पहुँचा।

चित्र 6.5 दक्षिणी आफ्रिका में केप ऑफ गुड होप

मानचित्र देखकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

- आफ्रिका से भारत पहुँचने के लिए एक व्यक्ति को किस दिशा में यात्रा करनी होगी? किस महासागर को पार करना होगा?
- क्या एशिया और आफ्रिका धरती मार्ग से जुड़े हैं?

आफ्रिका का तटीय क्षेत्र

यूरोप का अध्ययन करते समय आपने इसकी टूटी हुई तटीय रेखा पर ध्यान दिया होगा। आपने यूरोप की खाड़ियों का अध्ययन किया ही होगा। पुनः स्मरण करने का प्रयास कीजिए कि किस प्रकार इनसे यूरोपियों को समुद्री यात्रा में मदद मिली।

- आफ्रिका के तट की ओर देखिए। क्या आपको टूटा हुआ तट दिखाई दे रहा है, या सीधा तट?
- क्या आपको यूरोप के समान यहाँ भी तटीय क्षेत्र व खाड़ियाँ दिख रही हैं? मानचित्र 6 आफ्रिका के निकट की एक खाड़ी और तटीय क्षेत्र का नाम मान चित्र -6 में देखकर बताइए।

आरंभ में जब यूरोपीय लोगों ने आफ्रिका के भीतरी भागों में जाने का प्रयत्न किया तब आफ्रिका की जनजातियों ने उनसे प्रत्यक्ष संघर्ष किया। यूरोपीय लोग गलत तरीके से व्यापार में लिप्त थे। उन्होंने आफ्रिका के लोगों को गुलाम बनाकर विदेशों में बेचने का प्रयास किया। यूरोपीय लोग आफ्रिका में अपना शासन स्थापित कर संसाधनों का शोषण करना चाहते थे। इसी कारण आफ्रिका के लोगों ने विदेशियों द्वारा उनकी भूमि पर अधिकार करने के प्रयासों को रोका।

दास व्यापार

सोलहवीं सदी में अनेक यूरोपियों ने अमेरिका की ओर गमन कर वहाँ कृषि करना आरंभ किया। अमेरिका में बहुत भूमि थी किन्तु खेतों में काम करने के लिए पर्याप्त लोग नहीं थे। इसके लिए अतिरिक्त लोगों की आवश्यकता थी। इस आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए आफ्रिका से दास व्यापार आरंभ हुआ।

SCERT TELANGANA

गियाना के तटीय क्षेत्रों के साथ-साथ पूर्वी आफ्रिका के लोगों पर मुख्य रूप से अधिकार कर उन्हें दास बनाया गया। अधिकृत लोगों को समुद्र तट पर लाया गया और उन्हें यूरोपियों को बेच दिया गया। दासों के बदले में जनजाति नेता बंदूकें, लोहे की वस्तुएँ, शराब तथा कपड़े स्वीकार करते थे।

चित्र: 6.6 दास

दास बहुत पीड़ित थे। कई दासों की तो बंदरगाह तक पहुँचते-पहुँचते ही मृत्यु हो जाती गयी थी। जहाज दासों से भरे रहते थे। भोजन और औषधि का कोई उचित प्रबंध नहीं था। अमेरिका पहुँचने के लिए कई दिन लग जाते थे। बिमारी और कुपोषण के कारण कई दास अपनी यात्रा पूरी नहीं कर पाते थे।

अमेरिका में भी उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता था। कठोर परिश्रम के बावजूद भी उन्हें उचित भोजन और रहने के लिए घर नहीं दिये जाते थे। इस प्रकार लाखों अफ्रीकी लोगों को दास बनाकर उत्तरी तथा दक्षिणी अमेरिका और उनके आसपास के द्वीपों को ले जाया गया। दास बनने के बाद लाखों लोगों की मृत्यु हो गयी थी। सोलहवीं और सत्रहवीं सदी में अनेक कंपनियाँ दास व्यापार में लिप्त थीं। अंततः उन्नीसवीं सदी में दास व्यापार का अंत हुआ और 1860 में अमेरिका में दासों को स्वतंत्र नागरिक घोषित किया गया।

यूरोपीय उपनिवेश

आरंभ में आपने पढ़ा कि यूरोपीय आफ्रिका का चक्कर लगाकर भारत पहुँचे। तदंतर यूरोपियों ने आफ्रिका के बंदरगाहों पर रुकना आरंभ किया। धीरे-धीरे पुर्तगाली, डच, अँग्रेज़, फ्रेंच और जर्मन लोगों ने भी आफ्रिका के भीतरी भागों में पैर जमाये और इन क्षेत्रों को उपनिवेश बनाना शुरु किया। आफ्रिका का राजनीतिक नक्शा, मानचित्र में दिया गया है। 19वीं सदी के यूरोपीय उपनिवेशियों द्वारा बनाये गये उपनिवेश क्षेत्र इस मानचित्र में दर्शाये गये हैं।

मानचित्र 5 1913 में आफ्रिका में यूरोपीय उपनिवेश

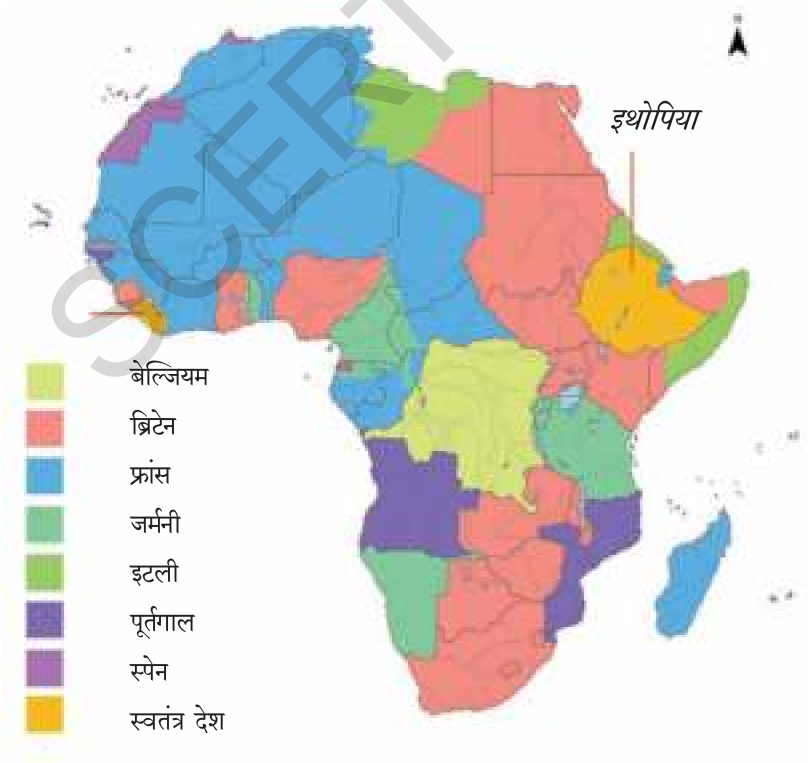

- क्या आप यूरोप के मानचित्र में उन देशों को पहचान सकते हैं, जिन्होंने आफ्रिका में उपनिवेश स्थापित किये।
- किन यूरोपीय देशों ने सूडान और जायर में उपनिवेशीकरण किया ?

SCERT TELANGANA

- क्या आप आफ्रिका के किसी ऐसे क्षेत्र को बता सकते हैं, जहाँ उपनिवेश नहीं बसाये गये?

आफ्रिका में उपनिवेशों के निर्माण के प्रयासों के साथ-साथ यूरोपीयों ने महाद्वीप के आंतरिक भाग की खोज जारी रखी। उन्होंने उत्तर में नील नदी के उद्गम तक की यात्रा की। पश्चिम में उन्होंने पूरी नाइज़र घाटी की खोज की और दक्षिण में केप टाउन से उत्तर की ओर आगे बढ़े। वहाँ उन्होंने झंबेजी नदी के चारों ओर के क्षेत्र की खोज की।

यूरोपीयों ने आफ्रिका की लकड़ी और खनिज का अति विशाल पैमाने पर यूरोप को निर्यात किया। वस्तुतः दक्षिणी आफ्रिका की सोने और हीरे की खाने अभी भी यूरोपीय कंपनियों के नियंत्रण में हैं। जांबिया और जिंबांबे में ताँबे की अमूल्य खाने हैं। बहुत समय से ही इस खनिज का महत्वपूर्ण निर्यात वस्तु माना जाता है।

यूरोपीयों ने आफ्रिका के संसाधनों का निर्यात नहीं रोका। चाय, कॉफी, रबर, तंबाकू आदि उगाने के लिए उन लोगों ने कई बगीचे बनाये। ये उत्पाद भी यूरोप को निर्यात किये गये।

नाइजीरिया में वृक्षारोपण

आप चाकलेट खाने के शौकिन होगे। यह कोको से बनी जाती है जो नाइजीरिया में होता है। कोको के अतिरिक्त दक्षिणी नाइजीरिया में रबड़ की बागवानी, पामतेल के बगीचे पाए जाते है। हर वर्ष जनजाति के लोग जंगल का एक छोटा भाग साफ करते थे और वृक्षों की लकड़ी जला देते थे। अधिकतर वे लोग काम को बाँट देते थे और कटाई के समय एक दूसरे की सहायता करते थे। नाइजीरिया में किसान केवल अपने परिवार की आवश्यकतानुसार फसल बोता था। कुल्हाड़ी से वे लोग खेत को खोदते थे। बैल और घोड़े का प्रयोग भी वे लोग खुदाई के लिए करते थे। आज तेजी से वस्तुएँ परिवर्तित हो रही है। आज लोग बाजारी स्तर पर उत्पादन कर रहे है। शुष्क एवं आन्तरिक क्षेत्रों में कपास का उत्पादन कारखानों के लिए किया जाता है।

लोग नाव से नाईजर नदी को पार कर जाते है और उन वनों से पाम फल लाते है। आरम्भ में यह वृक्ष जंगली वनों में पाए जाते थे। जैसे ही इसकी माँग बढ़ने लगी, वनों के भाग को साफ कर वहाँ उसकी बागवानी की जाने लगी। कोको, रबड़, पाम तथा पाम तेल कानिर्यात किया जाने लगा और नाइजीरिया की विदेशी मुद्रा का अर्जन का साधन बना।

- मानचित्र 4 में नाइजीरिया के उन भागों को ढूँढ़िए, जहाँ ये फसले उगाई जाती है।

अंग्रेजो ने बागवानी आरम्भ की क्योंकि वे जंगलों से प्राप्त होने वाले उत्पादन से संतुष्ट नहीं थे। वे अधिक उत्पादन कर निर्यात करना चाहते थे।

बागवानी में उनके लिए कई चीजे आसान कर दी। सबसे पहले यह कोई कठिन कार्य नहीं था कि जंगल में जाकर वृक्ष का पता लगाना। एक ही स्थान पर वृक्ष लगाने से इनकी देखभाल करना सरह होता है। उत्पादन की कटाई भी बहुत सरल हो गई। व्यापार के लिए उत्पादन में वृद्धिआवश्यक बन गई। नाइजीरिया के लोग इन बगीचों में काम करने लगे, उस समय अंग्रेज प्रबंधक थे। इस प्रकार व्यवसायिक कृषि जैसे पाम कोको और रबड़ का उत्पादन नाइजीरिया में होने लगा।

इतना ही नहीं, कई बगीचों के पास ही कारखाने लगाए जाने लगे, जैसे कोको फल से तेल निकालना, उसे सुखाना, ताड़ के फल से तेल निकालना रबड़ के पेड़ से दूध निकालना आदि काम किया जाने लगा। कोको, ताड़ और रबड़ का अधिकांश लाभ ब्रिटिशों को मिलता था। अधिक लाभ मिलने लगा। नाइजीरिया के लोग वहाँ कृषक मजदूर के समान काम करते थे। भारत में अंग्रेजों के काल में चाय, काफ़ी जैसे बागवानी व्यवसाय की दृष्टि से आरम्भ की गई। 1960 में स्वतन्त्रता मिलने तक नाइजीरिया अंग्रेजों के अधीन था। उसके पश्चात बागवानी एवं बागवानी व्यवसाय नाइजीरिया के लोगों के अधिकार में आ गया और वह उनके लिए लाभदायी रहा।

स्वतंत्र आफ्रिका

पिछली सदी के दौरान अफ्रीकी देश क्रमशः यूरोपीय शक्तियों के नियंत्रण से मुक्त होने लगे। नये देश अस्तित्व में आये। यहाँ लोगों ने अपनी सरकार का निर्माण किया। अभी तक अनेक यूरोपीय अफ्रीकी देशों में ही रह रहे हैं। किन्तु धीरे-धीरे अफ्रीकी लोग उनकी भूमि, वनों, खदानों

SCERT TELANGANA

और कृषि उत्पादनों पर नियंत्रण वापस ले रहे हैं और उनका लाभ उठा रहे हैं।

आफ्रिका के खनिज़

यह महाद्वीप कोयला, ताँबा, टीन, आदि जैसे खनिज़ों में धनी है। इसके अतिरिक्त विश्व में सोने और हीरे का प्रमुख उत्पादक है। यूरोपीयों का प्रमुख लक्ष्य यह था कि आफ्रिका के श्रमिकों से श्रम करवा कर इस संसाधनों को लूटना। आज तक भी अधिकतर खदाने एवं कंपनियों पर इन्हीं का नियंत्रण है।

उदाहरण के लिए तेल या पेट्रोलियम नाइजीरिया के महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाथन है। नाइजीरिया में तेल, खनिज़ एवं शुद्धिकरण पर ड़चो का नियंत्रण था। 1958 से नाइजीरिया से खनिज तेल का निर्यात किया जाने लगा। हारकौट और वारी बन्दरगाह के समीप तेल शुद्धीकरण के कारखाने स्थापित किए गए।

अधिक कारखाने आज भी यूरोपीयों के हाथ में है। नाइजीरिया सरकार की भागीदारी कम मात्रा में है। ऐसी ही स्थिति आफ्रिका से उत्पादित अन्य खनिज़ों के साथ भी है।

इन विदेशी कंपनियों ने तकनीकी एवं इन खनिज़ो और कारखानों की प्रक्रिया में अधिक लागत लगाई जिससे स्थानीय लोगों को रोजगार प्राप्त हुआ। कैसे भी वे आफ्रिकी लोगों से अधिक लाभ कमाने के लिए सस्ते मजदूर लेते थे। इनमें से अधिक कम्पनियाँ वातावरणीय प्रदूषण से भी लापरवाह थी। इस कारण प्राकृतिक वातावरण को अधिक दूषित किया। इससे भूमि की गुणवत्ता एवं मनुष्यों के जीवन पर प्रभाव पड़ा।

- मानचित्र 7 में रंग भरकर और नाम लिखकर आफ्रिका के देशों के बारे में परिचय प्राप्त कीजिए।

मुख्य शब्द :

1. उपनिवेश (Colonies)
2. दास (Slave)
3. पठार (Plateau)

हमने क्या सीखा?

1. यूरोप से उत्तरी आफ्रिका तक पहुँचने के लिए किस समुद्र को पार करना होगा?
2. आफ्रिका के भीतरी भागों तक पहुँचने के लिए यूरोपीयों के सम्मुख आयी तीन कठिनाइयाँ बताइए।
3. आफ्रिका के दो विशाल मरुस्थलों के नाम बताइए।
4. इस अध्याय में आफ्रिका के दो मानचित्र दिये गये हैं। तुलना करो और बताओ कि वर्तमान नाइज़ीरिया और जिम्बाबवे देशों पर किस यूरोपीय देश का नियंत्रण है?
5. आफ्रिका के किन्हीं दो देशों के नाम बताओ जहाँ भूमध्य सागरीय जंगल पाये जाते हैं।
6. यूरोपीयों ने आफ्रिका के साथ किन चीज़ों का व्यापार किया? उन्होंने अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए किस प्रकार से कृषि को बढ़ावा दिया?
7. दास व्यापार से किसका लाभ हुआ? अमेरिका के लोगों को दासों की ज़रूरत क्यों थी?
8. आप कैसे कह सकते है कि दास व्यापार उच्च पाप है?
9. इस अध्याय का अन्तिम अनुच्छेद पढ़िए और टिप्पणी लिखिए।

SCERT TELANGANA

मानचित्र **6:** आफ्रिका के देश

इस मानचित्र को मानचित्र 6 की सहायता से भरिए। सभी देशों को अलग अलग रंग दीजिए। ध्यान रहे कि पड़ोसी देशों को एक ही रंग न मिले।

मानचित्र **7:** आफ्रिका के देश

SCERT TELANGANA

अध्याय **7**

हस्तकला और हथकरघा

भाग- I

अंडुगुला के टोकरी निर्माता

पोलय्या एक टोकरी निर्माता है। वह रंगारेड्डी जिले के माडुगुल मंडल में अंडुगुला का रहने वाला है। वह 35 वर्ष का है। वह एक जनजाति समुदाय येरुकला से संबंध रखता है। पोलय्या का परिवार पीढ़ियों से टोकरियाँ बुनता आ रहा है। उसकी पत्नी बागयम्मा भी टोकरी बुनने का काम करती है। उनके तीन बच्चे हैं। लगभग 30 साल पहले अपने गांव में टोकरियों की मांग की कमी के कारण 25 अन्य परिवारों सहित उनके पिता अपने परिवार के साथ नगर में आए थे। वह हैदराबाद के चादरघाट के फुटपाथपर टोकरियों को बेचता है।

पोलय्या जंगली खजूर के पेड़ों के पत्तों के रेशे का इस्तेमाल करता है। (इथा चटु) वह चाकू से इन पत्तों को छीलकर उन्हें तेज धूप में सूखाता है। वह अपने गाँव अंडुगुला से कच्चे माल के रूप में खजूर के पत्तों को एक साथ लाता है। अंडुगुला गाँव में रह रहे उसके रिश्तेदार अपने पड़ोसी गाँव से इन पत्तों को इकट्ठा करते है और पोलय्या जैसे टोकरी निर्माताओं को बेच देते हैं। अंडुगुला हैदराबाद से लगभग 60 किलो मीटर दूर है।

- टोकरी निर्माण के संबंध में कच्चे माल से आप क्या समझते हैं ? उन्हें कौन इकट्ठा करता है ?

- टोकरी निर्माता किन औज़ारों का इस्तेमाल करते हैं?

खजूर के पत्तों के रेशे के प्रत्येक बंडलों का मूल्य रु.120 होता है। ज्यादूतर पोलय्या और अन्य टोकरी निर्माता दो महीने के लिए 10 बंडलों को लाते हैं। पोलय्या का परिवार एक बंडल में से 25 टोकरियाँ बनाता है। पत्तों के दस बंडलों में से लगभग 250 टोकरियों का निर्माण होता है। एक टोकरी को बनाने में 30 मिनट लगते है। पोलय्या आराम और खाने के साथ सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक टोकरियाँ बनाते है

चित्र 7.1 बाँस के सामानों के साथ टोकरी की दुकान

पोलय्या प्रत्येक टोकरी को रु.20 में बेचता है। कभी-कभी ग्राहक अपने पारिवारिक अनुष्ठानों के अनुसार बड़ी टोकरी की माँग करते है। ये कच्चे माले के इस्तेमाल किए गए मात्रा के

SCERT TELANGANA

चित्र 7.2 टोकरी बुनना

अनुसार ऊँचे दामों पर बेचे जाते हैं। वह सारे साल टोकरियों को बेचता है। दो महीने में वह रु. 5000 की लागत से टोकरियों को बेचता है। हर बार अपने गांव जाने के लिए आवागमन की लागत रु.100 को निकालकर मूल्य रु.1200 होती है। इस प्रकार दो महीने में उसके परिवार की आमदनी रु.3700 होती है। इससे उसके परिवार का खर्च पर्याप्त नहीं हो पाता। अपनी आमदनी पूर्ति के लिए पोलय्या बाँस की बनी वस्तुएं जैसे स्टैंड और ट्रे को खरीदता और बेचता है।

टोकरियाँ बनाना एक कार्य है जिसमें जंगली खजूर के पत्ते, बाँस और बेंत शामिल हैं जो जंगलों में पाए जाते हैं। बड़े उद्योगों द्वारा व्यापक मात्रा में शोषण के कारण जंगलों में कमी पाई गई है। इसने लोगों की जीविका को प्रभावित किया है जो पारंपरिक तौर से वनों पर निर्भर थे। आगे इन वस्तुओं की मांग में अधिक कमी आई। इसने उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर स्थानांतरित होने के लिए मजबूर कर दिया। जो कई पारंपरिक गतिविधियों से जुड़े लोगों के लिए सत्य है। जबकि उन्हें अनेक बार शहरों में बिना मूल संपत्ति के रहना पड़ता है।

शहरी झोपड़पट्टी

पोलय्या एक झुग्गी-झोपड़ी में रहता है जिसमें ठीक तरह से गंदे पानी का निकास नहीं होता, गंदी बदबू और मक्खी-मच्छरों का प्रजनन प्रसार होता है। यहाँ बिजली और सुरक्षित पेय जल की व्यवस्था नहीं है। पोलय्या की झोपड़ी बाँस, चटाई और प्लास्टिक थैलों तथा तरपाल से बनी है। बरसात के दिनों में उनकी छत अनकों बार चूती हैं और बाढ़ में डूब जाती हैं। कभी-कभी नगर निगम के अधिकारी पोलय्या और अन्य टोकरी बुनकर परिवारों की झोपडियों को हटा देते हैं परंतु वे फिर उन्हें बना लेते हैं। .

इसके अतिरिक्त संघर्ष करते हुए पोलय्या जैसे लोगों को नगर में मतदान करने के अधिकार से मना कर दिया गया और वस्तुतः उन्हें राशन कार्ड देने से मना कर दिया क्योंकि उनके पास कोई पहचान-पत्र अथवा आवासीय प्रमाण नहीं है। इस प्रकार वे नगर की लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में भाग नहीं ले पाते थे अथवा गरीबों को उपलब्ध सुविधाओं का लाभ नहीं उठा पाते थे।

टोकरियाँ बनानेवाले

येरुकुला जनजाति के ज्यादातर लोग टोकरियाँ बनाने का काम करते हैं। तेलंगाणा और आंध्र प्रदेश के विभिन्न भागों में निवास करते हैं। ये महिलाओं के पारंपरिक व्यवसाय ज्योतिष(सोधी)

चित्र 7.3

SCERT TELANGANA

येरुका चेप्पुता से येरुकुला कही जाती है। इस जनजाति के लोग येरुकुला भाषा बोलते हैं। इस भाषा में तेलुगु, तमिल और कन्नड भाषा के शब्दों का प्रयोग होता है।

उपयुक्त विकल्प का चयन करें-

क. अधिकांश वन कम होते जा रहे हैं क्योंकि(टोकरी बुनकर/बड़े उद्योगों) द्वारा उपयोग में लाये जा रहे हैं।

ख. पोलय्या बाँस की वस्तुओं को खरीदता है(मंडी के व्यापारियों/अंडुगुला के गांव से)

- कच्चे माल तथा उनसे प्राप्त आय-व्यय को दर्शाते हुए एक तालिका बनाइए।
- क्या आप समझते हैं कि पोलय्या जैसे लोगों को हैदराबाद में मतदान की अनुमति दी जाए और राशन कार्ड दिया जाना चाहिए?

अब आप जान गए कि बाँस की बनाई हुई वस्तुएँ जैसे टोकरियों को बनाने में साधारण निर्माण की आवश्यकता होती है-इसके लिए बहुत कम माल का उपयोग जो ज्यादातर प्राकृतिक संसाधनों से निर्मित हो। ऐसी कई अन्य वस्तुएँ हैं जिनकों कच्चे माल की आवश्यकता होती है और उनको कई जटिल उपकरणों की प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है। उदाहरण के लिए खादी व सूती से बने कपड़े। आज बनाए गए कपड़े या तो हस्त चालित करघा या मशीन करघा या बड़ी मिलों के होते है। हम यहाँ अध्ययन करेंगे कि ये किस प्रकार हथकरघा बुनकरों द्वारा निर्मित किए जाते हैं।

भाग - II

पोचमपल्ली में हथकरघा बुनकर

तेलंगाणा के यादाद्रि भुवनगिरि जिले में पोचमपल्ली एक छोटा सा नगर है। यहाँ के बुनकर एक अनुपम साड़ी का निर्माण करते हैं जो इकत साड़ी कहलाती है, जो विश्व में प्रसिद्ध है। इकत शब्द एक विशेष प्रकार की शैली है जिसमें कपड़ों को रंगा जाता है। जिसका प्रयोग अनेकों बार बंधिनी या पोचमपल्ली के संदर्भ में किया जाता है। ये उच्च गुणवता वाली सिल्क साड़ी है जो साधारतःअधिकांश तीन रंगों में रेखागणितीय आकृतियों में उपलब्ध हैं। यहाँ आस-पास के 100 गाँव में करीब 10,000 बुनकर परिवार इस शिल्प कार्य से जुड़े हैं। .

पोचमपल्ली साड़ियों की एक अनुपम आकृति और रंग है, जो अन्य सिल्क साडियों से भिन्न है। इसलिए यह भारत में प्रथम एकस्व अधिकार प्राप्त हथकरघा कपडा है। इसका मतलब है कि अन्य हथकरघा साड़ी निर्माता पोचमपल्ली इकत साड़ियों के नाम से साड़ियाँ बेच नहीं सकते। केवल पोचमपल्ली तथा उसके आस-पास के गांव में इसे इस नाम से बेचा जा सकते है। ये साड़ियाँ भारत और विदेशों में ऊँचे दामों में बेची जाती हैं।

सिल्क साड़ियाँ बनाने के लिए आपको कच्चे माल जैसे-सिल्क धागा, रंग, और सूती धागे की आवश्यकता होती है। ये बुनकरों द्वारा नहीं बनाये जाते हैं, वे इन्हें बाजार से खरीदते हैं। सिल्क के कीड़ों से सिल्क धागे बनाये जाते हैं, जो शहतूत के पत्तों पर पैदा होते हैं। सिल्क के कीडों को पालने की व्यवस्था छोटे किसान करते हैं। कपास खेतों में पैदा की जाती है और उन्हें धागों के रूप में कारखानों में अथवा घर में तैयार किया जाता हैं। रंगों को प्रायः कारखानों में बनाया जाता है। बुनकर धागा और रंग बाजार से खरीदते हैं।

SCERT TELANGANA

उपकरण: बुनकरों का एक लकड़ी का करघा होता है, जो बुनने के लिए मुख्य उपकरण होता है। इसके अतिरिक्त ये छोटे चाकू का उपयोग भी करते हैं। साड़ी में आकृति बनाने की योजना के बारे में जानना भी बुनकरों के लिए बहुत जरूरी होता है। यदि आप एक साड़ी को देखेंगे तो आप पाएंगे कि उनकी आकृति बहुत जटिल है। ये आकृतियाँ एक विशेष कागज पर एक विशेष अंकन-पद्धति सहित चित्रित की जाती है। वर्षों के प्रयास द्वारा वे आज भी नई आकृति बनाते है।

- नीचे दिए गए डिब्बे में कोई एक साड़ी की साधारण-सी आकृति बनाइए।

साड़ी बुनने की अवस्थाएँ

साड़ी बनाने की कई अवस्थाएँ हैं। इसकी पहली अवस्था धागा बनाने की है। सिल्क के धागे को एक बॉबिन पर लपेटा जाता है। फिर इन धागों को आकृति से चिह्नित किया जाता है। ये चिह्नित आकृतियाँ धागों के किस भाग को रंगा जाए और कौन-से रंग में रंगना चाहिए ये जानने में हमारी मदद करती हैं। धागा रंगने की यह प्रक्रिया बहुत देर तक कई बार दोहराई जाती है। प्रत्येक रंग को अलग से क्रमशः एक के बाद एक रंग कर सूखाया जाता है। रंगने के बाद ही धागों को बुनने के लिए उपयोग में लाया जा सकता है।

धागा रंगना

सिल्क धागे को रंगने के लिए निकाल लिया जाता है, परंतु सूखने के बाद, फिर इसे पुनः खींचा जाता है, थोड़ा खोलकर फिर इसे रंगने के लिए बांध दिया जाता है। यह प्रक्रिया कई बार दोहराई जाती है। साड़ियों को विभिन्न रंगों और शेड में बनाने के लिए विभिन्न रंगने के तरीकों को अपनाना पड़ता है। सफेद और काले के बीच में लाल और भूरे शेड को अलीजरिन रंग का इस्तेमाल करके बनाया जाता है। इस धागे को सरसों के तेल और एलकालीन के मिश्रण में भिगो कर सूखाते हैं, फिर इसे अलीजरीन के पेस्ट में डुबोकर भिगोते हैं और अंत में लाल होने तक उबालते हैं। भूरे रंग के लिए लोह फिलिंग को रंग में मिलाया जाता है। लोह फिलिंग को विनेगर में से काला रंग बनता है।

रैप और वेफ्ट (ताना-बाना)

आप देखेंगे कि कपड़े में धागे ऊपर स नीचे और बगल में कुछ इस तरह होते हैं रैप धागे हैं जो ऊपर से नीचे की ओर तथा वेफ्ट हैं जो धागे बाएं से दाएं की ओर जाते हैं।

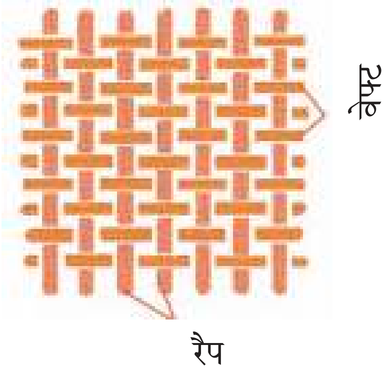

SCERT TELANGANA

आइए, अब हम इकत कपडे के बारे में अधिक जानकारी के लिए पोचमपल्ली बुनकरों के घर में जाकर इस संदर्भ में जानकारी लेते हैं।

जगतय्या पोचमपल्ली का रहने वाला है। उसके परिवार के सभी सदस्य-वह, उसकी पत्नी, बेटा और बहू बुनकर के रूप में काम करते हैं। जब हम उनके घर गए तो हमने देखा कि सभी सदस्य विभिन्न कार्य में लगे हुए थे। जब वह धागे को लपेट रहा था तो उसका बेटा मुरली मागम(करघा) पर बुनाई का काम कर रहा था। अन्य उपकरणों में जैसे चितकसु(एक वेफ्ट इकत के लिए बना झुका हुआ फ्रेम जिस पर खूंटों से बंधे धागों के समूह को रंगने के लिए बांध दिया जाता है।) पन्नी(सरकंडा), अच्छु, धागा और रब्बर ट्यूब को इकत साड़ी बनाने के लिए कई काम में लाया जाता है। अधिकतर उपकरण लकड़ी से बनाये जाते हैं। अब जगतय्या बूढ़ा हो चुका है वह अब ज्यादातर समय धागे को लपेटने का काम करता है और उसका बेटा करघे पर बुनने का काम करता है।

जगतय्या की पत्नी और बहू बॉबिन घुमाते हैं। जगतय्या के नाती-पोते विद्यालय में पढ़ते हैं। यहाँ पर सामूहिक रूप से गली/घरों के बाहर बुनकरों का समूह है जो कुछ लपेटने (wraping) का काम करते हैं।

चित्र 7.4 हथकरघे पर साड़ी बुनता हुआ

चित्र 7.5 धागे लपेटना

SCERT TELANGANA

चित्र 7.6 बॉबिन लपेटना

डिजाइन लाता है। एक बार में जगतय्या को आठ साडियाँ बुनने के लिए कच्चा माल मिलता है। पूरे परिवार को 8 साडियाँ बुनने के लिए लगभग 50 दिन के हिसाब से एक दिन में 12 से 15 घंटे काम करना पड़ता है.. इस काम के लिए उन्हें प्रत्येक साड़ी पर लगभग रु.1200 मिलते हैं।

उसका बेटा मुरली पूरा कच्चे माल-रंगे सिल्क के धागे, जरी और सहकारी समिति जिसका वह सदस्या है तथा बुनकर उस्तादों से

चित्र 7.7 आकार बनाना

साड़ी बुनना जगतय्या के परिवार का एक खानदानी व्यवसाय है। जगतय्या परिवार को इकत साड़ी निर्माण से प्राप्त आय परिवार को चलाने के लिए अपर्याप्त होती है।

मार्च से मई महीनों के दौरान जगतय्या का परिवार एक दिन में मात्र कुछ घंटे बुन पाता है। यदि अधिक गर्मी होती है तो धागा टूट जाता है। इन दिनों पूरा परिवार केवल दोपहर तक काम करता है। महिलाएँ बहुत ज्यादा परेशान होती हैं क्यों कि उन्हें बुनाई से संबंधित काम ही नहीं करना होता है बल्कि घरेलू कार्य की भी देखभाल करना पडती है जैसे खाना पकाना, पानी भरना और बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करना।

इससे पहले जगतय्या का परिवार केवल सहकारी समिति के लिए बुनते थे। सहकारी समितियाँ बुनकरों की अप्रत्याशित मौत अथवा बीमारी के मामलों में बीमा के द्वारा वित्तीय सहायता उपलब्ध कराती हैं। ये घर बनाने के लिए ऋण प्राप्त करने में भी मदद करती हैं। आजकल ये समितियाँ पर्याप्त काम नहीं देती हैं। उन्हें अपने परिवार को चलाने के लिए अतिरिक्त आय का साधन ढूँढना पडता है। अब पोचमपल्ली में एक बुनकर मालिक काम देने

SCERT TELANGANA

के लिए राजी हो गया है और उसके परिवार के लिए तनख्वाह की पूर्ति हो सकेगी, जगतय्या के परिवार ने बुनकर मालिक के यहाँ इकत साडी बुनने का काम शुरू कर दिया है। जगतय्या ने सहकारी समिति की सदस्यता नहीं छोड़ी है तथा आशा करता है कि आने वाले दिनों में उनके काम में सुधार हुगा।

बुनकरों की समस्याएं और सहकारी समितियाँ

तेलंगाना भारत का एक ऐसा राज्य है जिसमें कई हथकरघा है। हथकरघा बुनकर एक गंभीर समस्या का सामना कर रहे हैं। इन्हें बिजली के करघों और मिल से बने कपडे के बीच एक कडे मुकाबले का सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि ये कृत्रिम धागे का उपयोग करते हैं जो कपास अथवा खादी से कम दाम के होते हैं और मशीनों पर बनाए जाने के कारण बहुत सस्ते हैं। ये अपनी अद्भुत सुंदरता और उच्च गुणवत्ता के कारण प्रसिद्ध हैं। फिरभी पोचमपल्ली की साडियाँ मंहगी होती हैं। परंतु बिचौलियों की संलिप्तता के कारण बुनकरों को उचित दाम नहीं मिल पाता है।

इनके खरीददार पूरे विश्व भर में फैले हुए हैं, परंतु बुनकरोंका उनसे प्रत्यक्ष संपर्क नहीं है। शहरों में तीव्रता से फैशन बदल रहा है और बुनकरों के लिए यह मुश्किल है कि कौनसी आकृति मांग में है और इसके लिए उन्हें बिचौलिये पर निर्भर होना पड़ता है कि कौनसी आकृति प्रचलन में है और तदनुसार आकृति को बदला जाए। कच्चे माल जैसे कपास और रेशम के धागों को प्राप्त करने के लिए उन्हें बिचलियों पर निर्भर होना पडता है जिनका उत्पादन केंद्र यहाँ से दूर होता है। इससे हथकरघा उद्योग में बिचौलियों का महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है और वे साडियों के खरीददारों द्वारा दी गई राशि में से काफी अधिक मात्रा में हिस्सा लेने की कोशिश करते हैं।

चित्र 7.8 बुनने की प्रक्रिया

चित्र 7.9 रैपिंग

SCERT TELANGANA

इस समस्या से बाहर आने के लिए बुनकरों को सहकारी समितियाँ बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। सहकारी समितियाँ बुनकरों को कच्चे माल को कम दाम पर खरीदने के लिए सहायक होती है और उनके कपड़ों को बेचने के लिए बाजार की व्यवस्था करती हैं। ये बिचौलियों और व्यापारियों पर उनकी निर्भरता को कम करती है। सहकारी समितियों को बुनकरों को नये डिजाइनों में प्रशिक्षण देने में मदद करना चाहिए।

तथापि, आजकल, तेलंगाणा के कई अन्य भागों के बुनकरों को सहकारी समितियों से पर्याप्त कार्य नहीं मिलता। कुछ सहकारी समितियों द्वारा बुनकरों को कच्चे माल प्राप्त करने और वस्त्र सामग्री को बेचने के संबंध में निर्णय नहीं लेने दिया जाता है। वे बुनकरों को उपभोक्ताओं की रुचि के अनुसार साडियाँ बनाने के अवसर प्रदान नहीं करते। इसने फिर एक बार बुनकरों को बिचौलियों और व्यापारियों के शिकंजे में धकेल दिया।

चित्र 7.10 इकत साड़ी मोड़ना

एक बहुत बडी संख्या में तेलंगाणा में हथकरघा की वस्त्र सामग्रियों को बनाकर उस्ताद बुनकरों और व्यापारियों द्वारा बाजार में बेचा जाता है। उस्ताद बुनकरों और व्यापारियों द्वारा प्राप्त सभी कच्चे माल को बुनकरों को उपलब्ध कराकर तैयार वस्त्र इकट्ठा कर लिया जाता है। फिर वे इन वस्त्र सामग्रियों को थोक विक्रेताओं को बेच देते हैं। वे निश्चित राशी को एक अनुबंध राशि के रूप में बुनकर कार्य के लिए अदा कर देते हैं। बहुत से बुनकर उस्ताद बुनकरों को करघा लगाने और अन्य उपकरणों को खरीदने के लिए ऋण उपलब्ध कराते हैं तथा अन्य बुनकर उस्तादों के लिए साडियाँ बुनने पर पाबंदी लगाते हैं। वे बुनकरों द्वारा किए गए कार्य के लिए मजदूरी के संबंध में निर्णय लेते हैं। चूँकि वे अपनी आय बढ़ाने में लगे रहते हैं इसीलिए यह आम है कि वे बुनकरों को कम धनराशि देने की कोशिश करते हैं। इसीलिए सहकारी समितियों को इन्हें काम उपलब्ध कराना चाहिए और उस्ताद बुनकरों से कथित बुनकरों के परिवारों को बचाना चाहिए।

- इकत साड़ी में प्रयोग में लाये जाने वाले कच्चे माल व उपकरणों की सूची बनाइए।
- जगतय्या के परिवार ने मालिक बुनकर के लिए बुनाई का काम क्यों आरंभ किया?

मुख्य शब्द :

1. कच्चा माल
2. इकत
3. पेटेंट
4. बाँधना एवं रंगना
5. रैप -वेफ्ट
6. सहकारी समितियाँ

हमने क्या सीखा?

1. क्या टोकरियाँ बनाने व कपड़े बुनने का काम करने वाले पर्याप्त आय पाते होंगे?
2. ऐसे सामानों की सूची तैयार करो जिनसे टोकरी का काम लिया जा सके। सूची बनाने से पहले अपने घर के बड़ों से चर्चा कीजिए।
3. हस्तकला के स्थान पर कई उत्पादन आ चुके हैं- ऐसे उत्पादों की जानकारी प्राप्त कीजिए और पता लगाइए इनका उत्पादन कहाँ होता है? चर्चा कीजिए कि हस्त कलाकारों के जीवन पर इसका क्या प्रभाव पड़ सकता है?
4. पोलय्या परिवार हैदराबाद क्यों आया? पोलय्या को हैदराबाद में वोट देने का अधिकार क्यो नहीं है?
5. आपको पोलय्या की तरह हस्तकलाकार मिल सकते हैं। जो टोकरी के अतिरिक्त वस्तुएँ बनाते हैं। ऐसे दो व्यक्तियों से मिलिए और निम्नलिखित जानकारी प्राप्त कीजिए। इस पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

क्रम	हस्तकलाकार का नाम	वस्तु उत्पादन	एक या दो कच्चे पदार्थ जिनसे वस्तु बनती है।	कच्चे पदार्थ का स्रोत
1	पोलय्या	टोकरी	खजूर के पेड़ की शाखाएँ, पत्ते आदि	अंडुगुला- जन्म गाँव
2				
3				

6. पोचमपल्ली की इकत साड़ी को पेटेंट कराने से जुलाहों को किस प्रकार सहायता मिली है ?
7. क्या जुलाहे कच्चा माल प्राप्त करके इकत साड़ी बुनकर लोगों को प्रत्यक्ष रूप से बेचने का प्रयास करते हैं? इसमें क्या चुनौतियाँ हैं?
8. टोकरियों एवं हथकरघों व बुनकर संस्थानों के उत्पादन को फ़्लो चार्ट में दर्शाओ।
9. टोकरी एवं इकत साड़ी बुनकरों की बुनाई में समानता व असमानता की तुलना करते हुए निम्न तालिका भरिए।

कार्य	उपयोगी कच्चा माल	उपयोगी उपकरण	कैसे माल बेचना
टोकरी बनाना			
हथकरघा से बुनाई			

10. तेलंगाना में इन विभिन्न हथकरघो को अंकित कर चार्ट बनाइए।

चर्चा : अपने विद्यालय में गाँव/मुहल्ले से किसी एक कलाकार का आमंत्रित कीजिए और उनके व्यवसाय पर चर्चा कीजिए।

परियोजना कार्य :

1. किसी बुनकर को अपनी कक्षा में बुलाइए या आपलोग उनके कार्यस्थल पर जाइए। कपड़े बनाने की प्रक्रिया दीवार पत्रिका पर लगाइए।
2. गाँव या मुहल्ले के कलाकार से मिलिए और तालिका को भरिए तथा कक्षा में चर्चा कीजिए।

क्र. सं.	**शिल्पकार का नाम**	**व्यवसाय**	**चालु या बंद**	**यदि छोड़ दिया तो कारण**	**यदि चालु हो तो क्या वे संतुष्ट हैं**

अध्याय

8

औद्योगिक क्रांति (Industrial Revolution)

पिछले अध्याय में आपने यह सीखा कि किस तरह कलाकार विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ तैयार करते हैं। हमने यह भी पढ़ा कि मशीनों द्वारा वस्तुओं के उत्पादन की स्पर्धा न कर सकने के कारण कलाकारों ने अपना व्यवसाय छोड़ दिया। इस इकाई में हम यह देखेंगे कि किस तरह वस्तुओं के उत्पादन में मशीनों का एकाधिकार स्थापित हुआ और हमारे समाज में जनता पर इसका क्या प्रभाव पड़ा।

व्यापारियों का बढ़ता नियंत्रण

1500 ई.पू. से 1800 ई.पू. के बीच अमेरिका, यूरोप, अफ्रीका और एशिया में कई प्रकार से व्यापार में वृद्धि हुई। कपड़े का व्यापार भी बढ़ने लगा। यूरोपीय व्यापारी छोटे किसानों और कलाकारों को अग्रिम राशि देकर कपड़े का उत्पादन करवा रहे थे। उस समय खेती द्वारा आमदनी सीमित थी। कई किसान अपने खेत और भूमि गँवा चुके थे। इसलिए जीवनयापन के लिए कपड़ा उद्योग ही एक मात्र साधन था।

उप-ठेका पद्धति अथवा सब कंट्राक्ट सिस्टम(putting out system) के आधार पर इग्लैंड में एक कपड़ा व्यापारी आपूर्तिकर्ता से कपास खरीदता और सूत कातने वाले को देता था। फिर उत्पादन के अगले चरण में सूत जुलाहे के पास पहुँचता इसके बाद कपड़े को धोबी के पास ले जाया जाता था अंत में रंगाई की जाती थी। ये सारे कार्य देश के विभिन्न स्थानों पर हो सकते थे किन्तु दूसरे देशों में बेचने से पहले इन कपड़ों को अंतिम रुप देने का कार्य लंदन मे ही किये जाते थे। इस तरह बड़ी मात्रा में कपड़े का उत्पादन करने वाले कई उत्पादक, व्यापारियों के नियंत्रण में थे। कारखानों की व्यवस्था नहीं थी। कपड़ा तैयार करने की सारी प्रक्रिया एक स्थान पर नहीं होती थी बल्कि विभिन्न परिवारों द्वारा की जाती थी। प्रत्येक व्यापारी के पास उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर 20-25 कारीगर संलग्न थे। उत्पादन के एक-एक टोली में थे।

कुछ समय बाद व्यापारियों ने सभी हस्त कलाकारों को एक ही स्थान पर एकत्रित किया। ताकि हर एक के घर जाकर अपना काम करवाने की आवश्यकता न पड़े। उन लोगों ने छोटी कार्यशालाओं की स्थापना की, जिसे मेनुफैक्चरीज *(manufactories)* कहा जाता था। व्यापारी कच्चा माल देते और हस्त कलाकार अपने अपने औज़ार लाकर काम करते थे। व्यापारी तैयार माल ले जाकर बेच देते। इस तरह धीरे-धीरे हस्त कलाकारों पर व्यापारियों का अधिकार बढ़ता गया। इस चरण को आद्य-औद्योगीकरण (proto-industrialisation') कहा गया। यह एक ऐसा समय था, जब अधिकाधिक लोग उत्पादन में जुड़े रहे, और कर्मचारियों पर व्यापारियों का अधिकार स्थापित हो गया और विश्व में हस्त कलाओं के लिए एक विशाल बाज़ार विकसित हुआ ।

SCERT TELANGANA

औद्योगिक क्रांति का आरम्भ 1750-1850 ई.पू.

इस युग में अनेक परिवर्तन हुए। 1750ई. के आस पास माल के उत्पादन, माल पहुँचाने और लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाने में मशीन और भाप की शक्ति का अधिक प्रयोग बढ़ने लगा। गाँव में रहने वाले लोग काम की तलाश में शहरों की ओर आने लगे। आज हम अपने दैनिक जीवन में कई प्रकार के यंत्र अथवा मशीनों का उपयोग करते हैं, और मशीन द्वारा निर्मित वस्तुओं का उपयोग करते हैं। यह इग्लैंड में मशीन युग का आरम्भ था।

कपड़े की मांग बढ़ने से कालाकार विचित्र परिस्थिति में थे कि मांग के अनुरूप कपड़े के उत्पादन में कैसे वृद्धि करें। उनमें से कुछ लोग सोचने लगे कि इन दिनों हमारे कपड़े की काफी मांग है। किंतु मांग पूरी करने जितना उत्पादन नहीं कर पा रहे हैं, इसके अतिरिक्त हमारे करघे से तैयार माल महंगा भी है। यदि हम ऐसी मशीन बनाएँ जो तीव्र गति से धागा काते और तेज़ी से कपड़ा बुनने का काम करे तो हम कम मूल्य में अधिक माल का उत्पादन कर सकें,फिर ज्यादा लोग हमारा कपड़ा खरीदेंगे, इस तरह हम ज्यादा पैसा कमा सकते हैं।

व्यापार और काम के बढ़ने का परिणाम यह निकला कि कई लोग मशीन बनाने का प्रयत्न करने लगे। बड़ी प्रतीक्षा और प्रयत्न के बाद एक मशीन अथवा यंत्र का आविष्कार हुआ जो कम समय में सूत कात सकता था

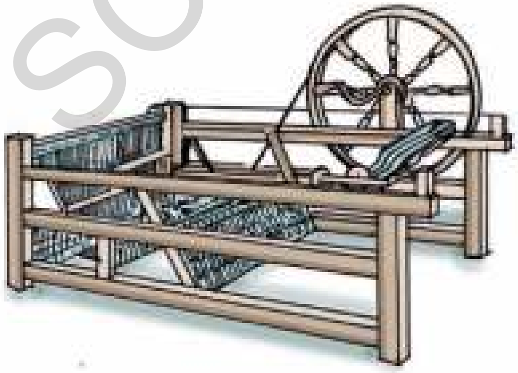

चित्र 8.1 स्पिनिंग जेर्नी-धागा कातने का नया पंत्र

किन्तु ये मशीन इतने भारी थे कि चालक को इसे हाथ या पैर से चलाने में बड़ी कठिनाई होती थी। वे सोचने लगे- क्या ही अच्छा होता यदि मशीन स्वचलित होते। जेम्सवाट के प्रसिद्ध भाप के इंजन के आविष्कार ने उनका यह सपना सच साबित कर दिया।

जेम्सवाट का अविष्कार

जेम्सवाट अंग्रेजी कारीगर था, जिसने मशीनों का आविष्कार किया। उसने अनुभव किया कि वाष्प में बहुत शक्ति है। वाष्प की शक्ति से भारी से भारी वस्तु भी अपने स्थान से हट जाती है। इस बात को मस्तिष्क में रखकर उसने एक यंत्र का निर्माण किया जो मनुष्य या पशु के बिना ही वाष्प की सहायता से चल सकता था।

उसने अपना यह अविष्कार एक उद्योगपति बौल्टन को बताया और दोनों ने साझेदारी में मशीन बनाने का व्यापार आरम्भ किया । बौल्टन में आवश्यकता अनुसार धन निवेश किया और वाट का वेतन भी निश्चित किया। वाट ने वाष्प यंत्र का निर्माण किया। दोनों के बीच यह समझौता हुआ था कि जो लाभ होगा उसका दो तिहाई बौल्टन लेगा और एक तिहाई वाट लेगा। दोनों ने मिलकर

चित्र 8.2 जेम्सवाट द्वारा निर्मित एक वाष्प यंत्र है वाष्प की शक्ति से पिस्टन रॉड को नीचे, ऊपर ढकेलता है जिससे पहिया घूमता है।

SCERT TELANGANA

अनेक वाष्प यंत्रों का निर्माण किया। जब यह स्पष्ट हो गया कि वाष्प से चलने वाली मशीनें बनायी जा सकती है तो सभी प्रकार के कामों जैसे-सूत काटना, कपड़ा बुनना, लोहे के औज़ार बनाना, गाड़ियाँ और पानी के जहाज चलाना आदि के लिए मशीनें बनायी जाने लगी।

- इंग्लैड में स्वचालित मशीनों की आवश्यकता कैसे उभरा?
- एक वैज्ञानिक -आविष्कारक और एक पूँजीपति के बीच यह समझौता क्या आप के विचार में उचित था ? कारण बताइए।

उत्पादन की फैक्टरी व्यवस्था

1750 और1850 के बीच कारखाना व्यवस्था (factory system) नामक एक नई व्यवस्था का उदय हुआ। सामान्य औज़ार और मानवीय शक्ति के स्थान पर नये यंत्र और वाष्प शक्ति का प्रयोग बढ़ता गया। जैसा हम पहले पढ़ चुके है कि पहले उत्पादन घरों में हुआ करता था इसके विपरीत कारखानों में काम करने के लिए सैकड़ो लोग लाये जाते थे। छोटे औज़ार हाथकरघे के स्थान पर मशीनों का महत्व बढ़ गया। इनसे अधिक मात्रा में माल तैयार होने लगा।

उत्पादन की सारी सुविधाओं का स्वामित्व और व्यवस्था पूंजीपतियों के हाथों में थी। वे मज़दूरों के लिए, कच्चे माल और यंत्रों के लिए धन निवेश करते थे। कच्चा माल और मशीन से लेकर तैयार माल तक हर वस्तु फैक्टरी के मालिक की होती थी। गिल्ड प्रणाली के विपरीत मज़दूर केवल मज़दूरी के अधिकारी थे, उत्पादन वस्तुओं पर उनका कोई अधिकार न था।

आरम्भिक काल के कारखाने भयानक हुआ करते थे।

19वीं शताब्दी के बाल कर्मचारी का अनुभव

19वीं शताब्दी में यूरोप के औद्योगिक मज़दूरों को कई प्रकार की विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता था। आइए कोयला खान में काम करने वाले एक इंग्लिश लड़के के अनुभव के बारे में पढ़ें।-

"जब मैं चार वर्ष का था तब से मैं कोयला खान में काम करता हूँ। मज़दूर कुल्हाड़ी और हथौड़े से खोदकर कोयले के बड़े-बड़े वैगन भरते थे। हमारा काम इन भरे हुए वैगनों को ढकेलकर वहाँ तक ले जाना था जहाँ से घोड़े और खच्चर खींचकर ले जाते थे। यह बहुत मुश्किल काम था। भरे हुए वैगनों को पानी और कीचड़ में से ढलानों और उबल-खाबड़ भूमि से नीचे, ऊपर ले जाना थका देने वाल काम था। इस तरह का काम प्रतिदिन बारह घण्टों से अधिक करना पड़ता था। घर जाने तक इतना थक जाते थे कि भोजन करने को भी मन नहीं चाहता था। कल घर जाते हुए मुझे नींद आ गयी। मेरी माँ ने मुझे ढूँढा और घर ले गयी।"

चित्र 8.3 बच्चे कोयला खान में गाड़ी ढकेलते हुए

SCERT TELANGANA

कारखानों और खानों में बाल मजदूरी रोकने के कई अभियान चलाये गए, जिसके कारण यूरोप और अमेरिका में 1936 के बाद बाल मज़दूरी पर प्रतिबंध लगाया गया।

आरंभिक कारखानों के भीतर

यंत्रों के आने से उद्योगों में मुख्य परिवर्तन हुए। अज्ञान व्यक्ति भी मशीन चला सकता था, इस तरह कुशल कलाकार की आवश्यकता ही नहीं रही। इनके स्थान पर बड़ी संख्या में स्त्रियों और बच्चों को बहुत ही कम मज़दूरी पर नौकरी दी जाने लगी।

मशीन का मूल्य अधिक होता है और सामान्य हस्त कलाकार मशीन खरीदने में असमर्थ था। केवल धनवान व्यापारी ही मशीनी कारखानों की स्थापना कर सकते थे।

इस प्रकार मज़दूर अथवा कर्मचारी अपनी गम्भीर स्थिति बताते हैं-

"प्रतिदिन हम सेवेरे 6 बजे काम पर जाते और रात में 8.30 बजे तक काम करते। दोपहर के समय एक घंटा भोजन के लिए केवल एक घंटे का समय दिया जाता। रात तक हम काफी थक जाते इस पर भी कारखाने का मालिक काम में चूकने पर कोड़े से मारता था।

उन दिनों नये मशीनों की स्थापना की जाने लगी जो कई श्रमिकों का काम कर सकते थे, इस तरह बहुत कम श्रमिकों की आवश्यकता पड़ती थी जब भी कोई नयी मशीन लगायी जाती बहुत सारे मज़दूरों को कारखाने से निकाल दिया जाता।"

अधिकतर श्रमिकों के पास कोई दूसरा विकल्प ही नहीं था क्योंकि वे पहले ही अपनी भूमि गँवा चुके थे। यदि उनमें कोई हस्त कलाकार था तो वह पहले ही अपनी दुकान बंद कर चुका था। धीरे-धीरे कारखाने और खान के मज़दूरों ने मिलकर परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए संगठन की स्थापना की। आरम्भ में मज़दूरों ने प्रतिदिन 8 से10 घंटे काम, मज़दूरी में वृद्धि,14 वर्ष से कम आयु के बच्चों की नौकरी पर प्रतिबंध और अतिरिक्त समय काम की अलग मज़दूरी जैसे मांगे की गयी। उनका यह संघर्ष सफल हुआ और श्रमिकों की स्थिति में सुधार आया।

चित्र 8.4 कारखाने में काम करते हुए श्रमिकों का चित्र

SCERT TELANGANA

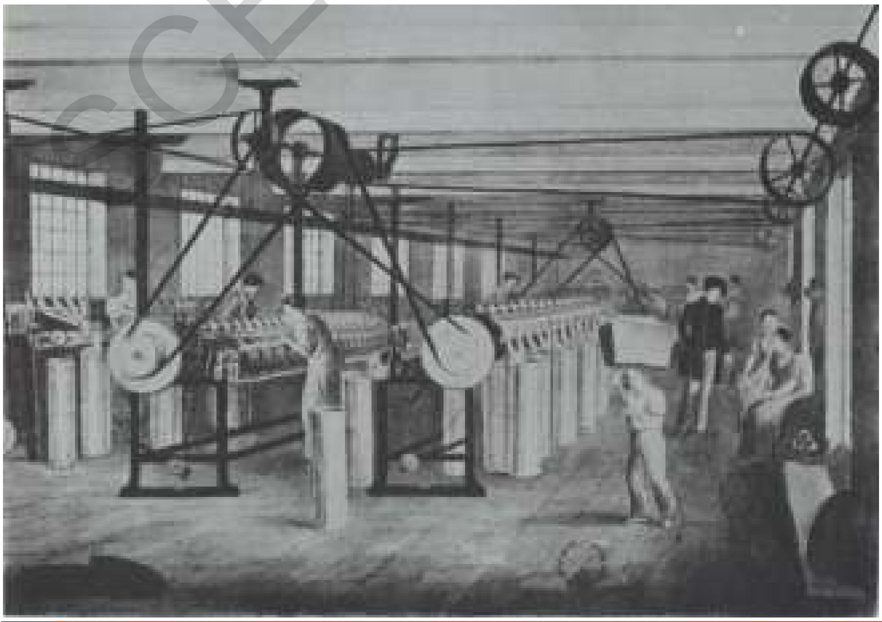

चित्र 8.5, 8.6 & 8.7

- इन चित्रों को देखिए। ये रेखा चित्र कहलाते है। पहले फोटोग्राफ नहीं होते थे परन्तु कलाकार इसमें विस्तृत जानकारी प्रस्तुत करते थे। ये औद्योगिक क्रान्ति के समय बनाए गए। पिछले पृष्ठ पर भी एक रंगीन चित्र दिया गया है। ये चित्र कैसे अलग है? कौनसे चित्र में विस्तृत जानकारी है? आपने इन चित्रों में बच्चों को देखा है? कारखाने में कौनसी विस्तृत जानकारी को आप देख रहे है?

SCERT TELANGANA

- मशीनों पर काम करने के लिए किनकी नियुक्ति की जाती थी?
- क्या आप किसी नजदीकी फैक्टरी के बारे में जानते हैं? 150 वर्ष पूर्व इंग्लैंड की फैक्टरियों से इस फैक्टरी की तुलना कीजिए।

कारखानों में भी अब पर्याप्त परिवर्तन हो चुका है। लगभग सभी काम कम्प्यूटर द्वारा स्वचालित मशीनों से हो रहा है। इसके लिए बहुत कम लोगों और शारीरिक कार्य की जरूरत होती है।

ऊर्जा स्रोत और औद्योगिक विकास

आपने देखा कि कारखानों में मशीन चलाने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है। ऊर्जा कोयला, बिजली, पेट्रोल आदि से उपलब्ध होती है। शुरू में उद्योग कोयला और वाष्प से बनी ऊर्जा पर निर्भर थे। क्रमानुपात ऊर्जा के विभिन्न स्रोतों का विकास हुआ जैसे कोयला और जल द्वारा विद्युत,पेट्रोल, प्राकृतिक गैस, नाभिकीय शक्ति और सौर ऊर्जा आदि।

परिवहन क्रांति

वाष्प इंजन के आविष्कार से जहाज उद्योग को बहुत प्रोत्साहन मिला। जल परिवहन सड़क की तुलना एक तिहाई सस्ता होता है। फिर भी लोग उच्च कोटि के आवागमन के साधन की तलाश में थे। वाहनों में वाष्प इंजन का प्रयोग परिवहन क्षेत्र में बड़ी उपलब्धि साबित हुई। जार्ज स्टीफन के वाहन ने 64 किलो मीटर मार्ग पर लीवरपूल से मेंचेस्टर तक काफी भार लेकर 46 किलो मीटर प्रति घंटा गति से यात्रा की।

1840 के दशक में लौडन मेक आदम ने टूटे पत्थरों से सड़क निर्माण की पद्धति निरुपित की। इससे मज़बूत सड़क तैयार हुई जो सड़क निर्माण में महत्वपूर्ण प्रगति सिद्ध हुई। अगले एक दशक के अंदर तारकोल की सड़कें बनी। ये मोटर कार के लिए उपयुक्त थीं।

20वीं शती के आरम्भिक भाग में राइट ब्रदर्स ने हवाई जहाज़ का निर्माण किया और आज हवाई जहाज एक महत्वपूर्ण परिवहन साधन है।

व्यापार और औद्योगिक उत्पादन

औद्योगिक उत्पादन इतनी बड़ी मात्रा में हुआ कि सारा माल अपने ही देश में बेचना असम्भव हो गया। कारखाना मालिक ने इन्हें अन्य देशों में भी बेचना आरम्भ किया। मशीन द्वारा तैयार वस्तुएँ सस्ती और टिकाऊ होती थीं, इसलिए इनकी मांग सारी दुनिया में बढ़ी, इससे इंग्लैड और अन्य देशों में उद्योग को बढ़ावा मिला। लेकिन उद्योग वाले देशों के पास अपने उत्पादन के लिए आवश्यक कच्चा माल उपलब्ध नहीं था। उदाहरण के लिए कपड़ों के निर्माण के लिए आवश्यक कच्चा कपास भारत और अमेरीका में उत्पन्न किया जाता और अंग्रेज व्यापारी भारत से और अन्य देशों से खरीदकर फैक्टरी मालिकों को बेचते थे। बाद में व्यापारी तैयार वस्तुओं को खरीदकर भारत अमेरिका जैसे देशों में बेचते थे।

अपने व्यापार के लिए औद्योगिक विकास और अपनी आवश्यकताओं के लिए यूरोप के देशों ने कच्चा माल मिलने वाले देशों पर आक्रमण कर दिया। इंग्लैड, फ्रांस, जर्मनी, स्पेन, पूर्तगाल, बेल्जियम और हालैंड अन्य यूरोपी देश एशिया, आफ्रिका, ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका महाद्वीपों में अपने आप को मातृदेश समझकर उपनिवेश बना लिये। (जिस देश के प्राकृतिक संसाधन दूसरे देशों के प्रयोजनों के लिए उपयोग होते हैं, उस देश

SCERT TELANGANA

को उपनिवेश कहते हैं) ये यूरोपीय देश दूसरे महाद्वीपों के उपनिवेश देशों का दोहन करते हुये संपन्न हुए। मानचित्र को देखिए जिसमें 1800ई. के समय यूरोपीय देश ने कहाँ-कहाँ उपनिवेश स्थापित किए।

नगरीकरण -झोंपड़ पट्टी

औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप जनता की ग्रामों से नगरों को स्थानांतरित होने की परिस्थिति उत्पन्न हुई। उद्योग और अन्य शहरी कार्यकलापों ने जनता को रोज़गार उपलब्ध कराये। नए नगरों को अधिक संख्या में जनता के स्थानांतरण से इनके मकान, झोपड़ियाँ अस्त व्यस्त ढंग से बनाने से सफाई और अन्य सुविधाओं की उपलब्धि में रुकावट बन गई हैं। दुर्घटनाएँ एवं बीमारियाँ यहाँ साधरण सी बात है। बहुत सारे मज़दूरों के घर रोशनी, स्वास्थ्य एवं सफ़ाई की सुविधाओं से वंचित थे। उद्योगों और खानों के निकट झोंपड़पट्टी सर्वसाधारण हो गए हैं। इन्हीं नगरों में अमीरों के लिए विशाल सड़कें, स्वच्छ सफ़ाई की सुविधाओं से, पेयजल और अन्य सुविधाओं से युक्त आवासों(क्वार्टर) का निर्माण हुआ है। क्रमशः जनता ने नागरिक अधिकारों, मज़दूरों की स्थिति, आवासों के निर्माण के लिए संघर्ष किये। तथा कर्मचारियों के आवासों की स्थिति में भी सुधार हुआ।

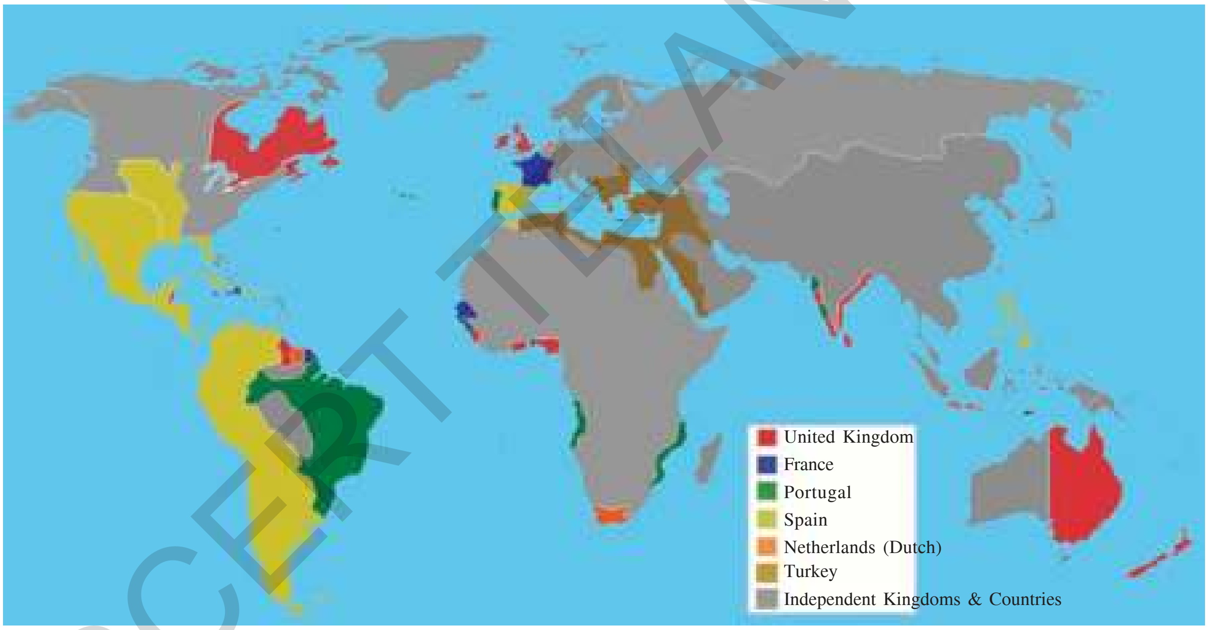

चित्र **1: 1800** *ई.के विश्व में फैले हुए यूरोपीय उपनिवेशों को दर्शाता संसार का मानचित्र*

मुख्य शब्द :

1. क्रांति
2. उत्पादन
3. कारखाना
4. संगठन
5. नाभिकीय उर्जा
6. नगरीकरण
7. बाल कर्मचारी
8. झोपड़ पट्टी

SCERT TELANGANA

हमने क्या सीखा?

1. गलत वाक्य को सही कीजिए–

   उत्पादन बनाने के अन्तर्गत

   a. धागा बनाने वाले कपास को बुनकर के पास ले जाते हैं।

   b. गिल्ड प्रणाली के विपरीत व्यापारी का इस पर नियंत्रण था कि क्या उत्पादन किया जाय।

   c. एक ही समूह के लोगों द्वारा सभी कार्य किए गये।

   गिल्ड प्रणाली के अन्तर्गत

   a. सभी छोटे किसानों को बुनाई सीखने की अनुमति होती थी।

   b. बुनकर उत्पादन के दाम और गुणों को निर्धारित करते थे।

2. कपड़े कारखानों की अपेक्षा उत्पादन के बाहरी क्षेत्र अच्छे होते हैं। क्या आप इससे सहमत हैं? अपने उत्तर के लिए कारण बताइए।

3. अगर कृतिका बहस करती है कि उपनिवेशक शासकों द्‌वारा भारत में रेल मार्ग का निर्माण केवल लोगों के लाभ के लिए किया गया था।" आप इसके विरोध में क्या कहेंगें?

4. उद्योग उत्पादन पर वेतन या भत्ते में बढ़ोतरी का क्या प्रभाव होता है?

5. कारखाने के मालिक कर्मचारियों का कम वेतन देकर अधिक समय तक काम करने के लिए क्यों विवश करते हैं?

6. आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि कारखानों की स्थिति में सुधार होना चाहिए ?

7. सरकार द्वारा कार्यो की स्थिति में सुधार लाने के लिए कानून बनाये जाने की क्यों आवश्यकता है?

8. कारखानों में बच्चों को काम क्यों नहीं करने देना चाहिए ?

9. यातायात साधन उद्योग में सहायक होते हैं– औद्योगीकरण को दृष्टि में रख कर न्यायसंगत निर्णय दीजिए?

10. विश्व के मानचित्र में निम्न स्थानों को अंकित कीजिए।

    अ) इंगलैण्ड   आ) पुर्तगाल   इ) फ्रान्स   ई) स्पेन

11. पृष्ठ 81 का अनुच्छेद नागरीकरण – झोपड़ पट्टी पढिए और टिप्पणी लिखिए।

परियोजना कार्य :

- आप 6वीं कक्षा के कृषि, व्यापार, अध्यायों के पाठ्यांश का पुनःस्मरण कर लीजिए। आन्ध्र प्रदेश के किसान और व्यपारियों के स्वभाव को इंग्लैड या यूरोप के व्यापारियों से तुलना कीजिए। आप कोई पद्धति अथवा तालिका का उपयोग कर सकते हैं ?
- क्या आप अपने अड़ोस-पड़ोस में कोई फैक्टरी या दुकान में काम कर रहे कोई बच्चे को जानते हैं? यदि आप उससे मिलेंगे तो बच्चे के प्रति आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी?

SCERT TELANGANA

अध्याय

9

कारखानों में उत्पादन–कागज मिल
(Production in a Factory – A Paper Mill)

हस्त उद्योग छोटे परिवारों द्वारा साधारण औजारों की सहायता से किये जाते हैं। इसके विपरीत अधिक कर्मचारियों तथा मशीनों की सहायता से कारखानों में अधिक उत्पादन किया जाता है। अब हम यह जानकारी प्राप्त करेंगे कि बड़े कारखानों में उत्पादन का प्रबंध किस प्रकार किया जाता है।

- क्या आप कभी किसी कारखाने में गये हैं? उसके बारे में बताइए।
- उस कारखाने का चित्र बनाइए, जहाँ आप गये थे। अनुमान लगाकर बताइए कि कारखानों में कौन–कौन से काम होते होंगे?

हमलोग कागज का उपयोग बहुत अधिक करते हैं। क्या आपको पता है कि पुस्तक, रिकार्ड, रजिस्टर, प्रगति पत्र, समाचार पत्र आदि का कागज कैसे बनाया जाता है? तेलंगाना में दो कागज की मिलें हैं। सिरपुर कागजनगर (कोमरमभीम जिला) और भद्राचलम (भद्राद्री)।

- तेलंगाना के मानचित्र में दो जिलों को अंकित कीजिए, जहाँ कागज की मिल है। आप के विचार से यहाँ क्यों स्थित है?

कच्चा माल : (Raw Material)

उपभोक्ता वस्तु बनाने के लिए जिन वस्तुओं का उपयोग किया जाता है, वह कच्चा माल कहलाता है। कारखानों में अधिक मात्रा में

चित्र 9.1 बाहर से कारखाना

SCERT TELANGANA

चित्र 9.2 बम्बू बोझ से भरी लॉरी प्रतीक्षा में

तथा निरंतर कच्चे माल के वितरण की आवश्यकता होती है। प्रति दिन एक दर्जन से अधिक लारियाँ उन्हें कच्चा माल पहुँचाती है। कागज मिल में बम्बू, नीलगिरि एवं सुबाबुल पेड़ों की लकड़ी का उपयोग होता है। आजकल सुबबुल लकड़ी का उपयोग अधिक किया जा रहा है। लकड़ी के अतिरिक्त विशाल मात्रा में रसायन जैसे साधारण नमक, कास्टीक सोड़ा का उपयोग भी कागज बनाने में विभिन्न स्तरों पर किया जाता है। खराब या पुराना कागज भी पुनर्निर्माण द्वारा कागज मिल में उपयोग में लाया जाता है।

कारखानों में विद्युत से चलने वाली बड़ी मशीनों का उपयोग किया जाता है। कागज के कारखानों में मशीने चलाने के लिए विद्युत उर्जा की आवश्यकता होती है। इस चित्र में कागज की मिल दिखाई गई है जिसमें प्रति वर्ष 25 मेगा वॉट बिजली खर्च होती है। बिजली की आवश्यकता के आधे भाग की पूर्ति कारखानों के स्वनिर्मित ऊर्जा उत्पादन यंत्रों के द्वारा ही की जाती है। बिजली के अलावा मिलों को पूरे वर्ष स्वच्छ पानी की भी आवश्यकता होती है।

कागज़ मिल और बाँस का अभाव

Paper Mills and Disappearance of Bamboo

यद्यपि कागज बनाने के लिए कच्चा माल जंगलों से प्राप्त होता है, परन्तु उत्पादन आसान नहीं है। कागज की मिल वनों के आस–पास स्थापित की जाती है, जहाँ बम्बू और दूसरी नरम लकड़ी उपलब्ध होती है।

कागज मिल वाले ठेकेदारों से संपर्क करकर बम्बू और अन्य कच्चा माल प्राप्त करते हैं। कुछ दशक पहले ठेकेदार कागज की मिल में जनजाति के लोगों (जैसे आपने छठवी कक्षा में पेनुगोलू पहाड़ी पर रहनेवाली जाति के बारे में पढ़ा था) को जंगल से बम्बू काटने के लिए काम पर लगाते थे। अधिक कटाई हो जाने के कारण आज कागज की मिल के समीप जंगलों में बम्बू ही नहीं है।

इसीलिए कागज मिल वाले अब उसके स्थान पर सुबाबुल जो गाँवों में उगती है, उसका कच्चे माल के रूप में उपयोग कर रहे हैं। इसीलिए सरकार लोगों को खेतों में सुबाबुल के वृक्ष लगाने के लिए प्रोत्साहित कर रही है। आजकल कागज मिल वाले लकड़ी दूर स्थानों से ला रहे हैं।

- कागज मिल के लिए महत्वपूर्ण कच्चा माल क्या है?
- क्या आप बिजली को भी कच्चा माल समझते हैं? कारण बताइए।
- आप अपने अध्यापक से कुछ मिल या कारखानों के बारे में चर्चा कीजिए और तालिका में भरिए।

चित्र 9.3 बम्बू को उठाया जाना

SCERT TELANGANA

क्रम.सं.	उत्पादन	मिल का नाम	कच्चा माल
1	जूते/चप्पल	जूते बनाने का कारखाना	पशुचर्म/रबड़/केनवास
2			
3			
4			

- क्या आपके विचार में ज्यादा कागज का उपयोग करने पर हमें ज्यादा जंगलों को काटना होगा या खाद्यान्न फसल के क्षेत्र को कम करना होगा? कक्षा में चर्चा कीजिए।

जब हम एक कागज की मिल पहुँचे, वहाँ हमने मिल के गेट के बाहर सुबाबुल लकड़ी से भरी तीनचार लारियाँ प्रतीक्षा में खड़ी थी। 9.30 बजे के बाद ही उन्हें मिल में जाने की अनुमति थी। वहाँ दो अलग–अलग गेट थे। एक कर्मचारियाँ तथा दूसरे बड़े गेट से वाहन आते–जाते थे। हमने कागज की मिल में जाने के लिए अधिकारियों से पूर्व अनुमति ले ली थी।

कागज बनाने की विधि (Process of Paper Making)

हमने देखा कि मिल के अन्दर प्रांगण में लारियों से सुबबुल की लकड़ी क्रेन से उतार कर चबुतरे पर रखी जा रही थी। लकड़ी ले जाने वाले दल लकड़ी को काटने के लिए मशीन तक ले जा रहे थे। वास्तविक रुप में कागज का निर्माण पाँच स्तर में होता है। कागज मिल में प्रत्येक स्तर के लिए विभिन्न विभाग थे जहाँ अलग मशीने और कच्चे माल का उपयोग किया जाता था। ये स्तर हैं -

1. छोटे टुकड़े बनाना (Chipping) – इस स्तर पर बड़े लकड़ी के लट्ठे को बड़ी मशीन की सहायता से छोटे–छोटे टुकड़ों में काटा जाता है। इन मशीनो से एक लारी लोड की लकड़ी को छोटे टुकड़ो में 30 मिनट में काटा जा सकता है। इस विभाग में 15 से 20 कर्मचारी थे। आकार के अनुसार उन गोल लकड़ी के टुकड़ों को अलग किया जाता है। बड़े टुकड़ों को फिर से छोटे आकार में काटा जाता है। पूरे दिन इसी प्रकार कार्य चलता रहता है। एक दिन कागज की मिल को चलाने के लिए कल्पना कीजिए कि कितने वृक्ष काटे जाते होंगे?

2. लकड़ी की लुगदी बनाना (Making of Wood Pulp) : ये लकड़ी के छोटे टुकड़ों को तंतु रेशे विभाग में भेजा जाता है। इस विभाग में लकड़ी के टुकड़ों को बड़े बर्तनों में कुछ रसायन मिला कर उबाला जाता है। इस विधि के द्वारा

चित्र 9.4. चिप्पिंग मशीन पर मज़दूर

चित्र 9.5 मशीनों को लगाते हुए मज़दूर

SCERT TELANGANA

चित्र 9.6 पल्पिंग मशीन (फाइबर लाइन)

लकड़ी के टुकड़ों को बारिक रेशे में परिवर्तित करते है। (जैसे कपास के तार)। उसके बाद उस लुगदी को रसायन की सहायता से सफेद बनाया जाता है। यह मलायी जैसा बन जाता है। यह लुगदी बिना धूल के सफेद तरल पदार्थ में बदल जाती है।

3. लुगदी को फैलाना (Spreading the Pulp) :– इस तरह लुगदी को सिलेण्डर पर पतली परत में फैला दिया जाता है। यह एक महत्वपूर्ण विधि होती है, जिसमें कागज बनाते समय कागज की मोटाई, लम्बाई और चौड़ाई का ध्यान रखा जाता है। गरमी से पानी को सूखाया जाता है जिससे लुगदी जल्दी सूख जाती है। एक बार यह हो जाने पर लुगदी को लोगों के दल को सौंप दिया जाता है।

4. दबाना, सूखाना और रोल बनाना (Pressing, drying and rolling)

रोलर की सहायता से सूखी लुगदी को नरम बनाने के लिए दबाया जाता है। जब यह लुगदी पूरी तरह सूख जाती है तो कागज की परत तैयार हो जाती है, जिसे रोल किया जाता है।

5. काटना (Cutting) :– कागज को कटिंग मशीन से आवश्यकतानुसार नाप में काटा जाता है। कागज की शीट को रोल कर गोदाम में भेज दिया जाता है। एक ही समय में सभी विभागों में उत्पादन का काम चालू रहता है।

दल में कार्य (Work in Batches):– गोदाम में कागज को रोल या शीट के रूप में सुरक्षित रखा जाता है। प्रत्येक रोल पर बैच/लॉट नम्बर, वजन आदि की परची लगाई जाती है। यह कौन–सा बैच है? कब कारखाने में भरी हुई लॉरी आती है, पूरी लकड़ी को भी बैच नम्बर दिया जाता है। इस बैच को फिर एक के बाद एक विभिन्न विभागों को भेजा जाता है। एक बैच को कच्चे माल को प्रत्येक स्तर पर विधिपूर्वक उपयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए जब बैच नम्बर 201 छोटे टुकड़ों में काटा जाता है। इसे समय बैच नम्बर 200 लुगदी बनाने वाले भाग में होगा और बैच नम्बर 199 लुगदी फैलाने वाले विभाग में होगा, आदि। जैसे ही 201 बैच नम्बर की लकड़ी टुकड़ों में कट जाती है उसे दूसरे विभाग में भेज दिया जाता है तो बैच नम्बर 202 को टुकड़े बनाने के लिए भेज दिया जाता है।

सभी प्रकार के कागज के लिए एक ही प्रकार का कच्चा माल और विधि एक जैसी होने के कारण गुणवत्ता भी समान होती है। बैच प्रणाली कारखाने को निरंतर उत्पादन में मदद करती है। इससे किस बैच द्वारा गल्ती हुई है, उसे जानने में प्रबन्धक को आसानी होती है।

कार्य का समय और सत्र (Working hours and Shifts)

कागज की मिल में 24 घण्टे कार्य होता है। कर्मचारी 8 घण्टे के लिए तीन समूह में काम करते हैं। वे 'ए', 'बी', 'सी' शिफ्ट कहलाते हैं। प्रत्येक शिफ्ट में 800 से 900 कर्मचारी काम करते है।

A. शिफ्ट – 6 A.M. से 2 P.M.

B. शिफ्ट – 2 P.M से 10 P.M.

C. शिफ्ट – 10 P.M. से 6 A.M. (रात्रि शिफ्ट)

रात्रि शिफ्ट में काम करने वाले को अधिक भत्ता दिया जाता है। चक्र के अनुसार कर्मचारी

SCERT TELANGANA

अपनी शिफ्ट को बदलते हैं। प्रत्येक सप्ताह A शिफ्ट वाले B शिफ्ट में, B शिफ्ट वाले शिफ्ट C में तथा C शिफ्ट वाले A शिफ्ट में बदलते रहते हैं। प्रशासन कर्मचारी के लिए साधारण शिफ्ट 9. 30 A.M. से 5. P.M. तक होता है। प्रशासन कर्मचारी व्यवस्था अकाउंट व्यापार और माल के विक्रय कर्मचारी कल्याण क्रिया कलाप आदि को देखभाल करते हैं।

कागज का बेचना (Selling of Paper)

कागज मिल वालों के अलग-अलग शहरों में डीपो होतें हैं। ये लोग श्रीलंका, बांग्लादेश, नेपाल, मलेशिया, सिंगापुर, नाइजीरिया और दक्षिण अफ्रीका में भी माल बेचते हैं। इन डिपो द्वारा कागज आसानी से बेचा जाता है। सड़क यातायात और रेलवे के विकास के कारण लकड़ी और कागज मिल से और मिल को आसानी से यातायात किया जा सकता है।

- कागज रोल पर लेबल बैच नंबर की पर्ची लगाना क्यों आवश्यक है?
- आप ऐसा क्यों सोचते हैं कि कागज मिल में दिन रात काम चलता रहता है? इसकी तुलना कृषि क्षेत्र के कार्यों से कीजिए।

- गेट के पास सुरक्षाकर्मी क्यों होना चाहिए? चौकीदार किसे अंदर आने देता है किसे नहीं।

कागज मिल में कार्य(Working in Paper Mill)

कारखाने विभिन्न प्रकार के लोगों को रोजगार देते हैं। जैसे-कुछ मशीन पर तो कुछ सहायक के रूप में, कुछ बिजली संबंधी देखभाल के लिए, कुछ मजदूर होते हैं। शिक्षित इंजीनियर जो कि आई.आई.टी. तथा पोलिटेक्निस आदि से शिक्षित होते हैं कुछ इसमें से अनपढ़ भी होते हैं जो सफाई जैसे कार्य करते है। कारखाने में लोगों को अलग-अलग शर्तों और नियमों पर भी रखा जाता है।

कुछ लोग हमेशा के लिए स्थाई रूप से कारखाने में कार्य करते हैं। कुछ आवश्यकता होने पर बुलाये जाते हैं तो कुछ ठेके पर काम पर रखे जाते है। आइए विस्तार से इसकी जानकारी प्राप्त करें।

सूरज कागज मिल में स्थाई कर्मचारी है। आप उसे विशेष वस्त्रों में देख सकते है – नीला शर्ट और खाकी पेंट में देख सकते हैं।

नीचे के भाग को पढ़िए और अपने वाक्यों द्वारा रिक्त स्थान भरिए :

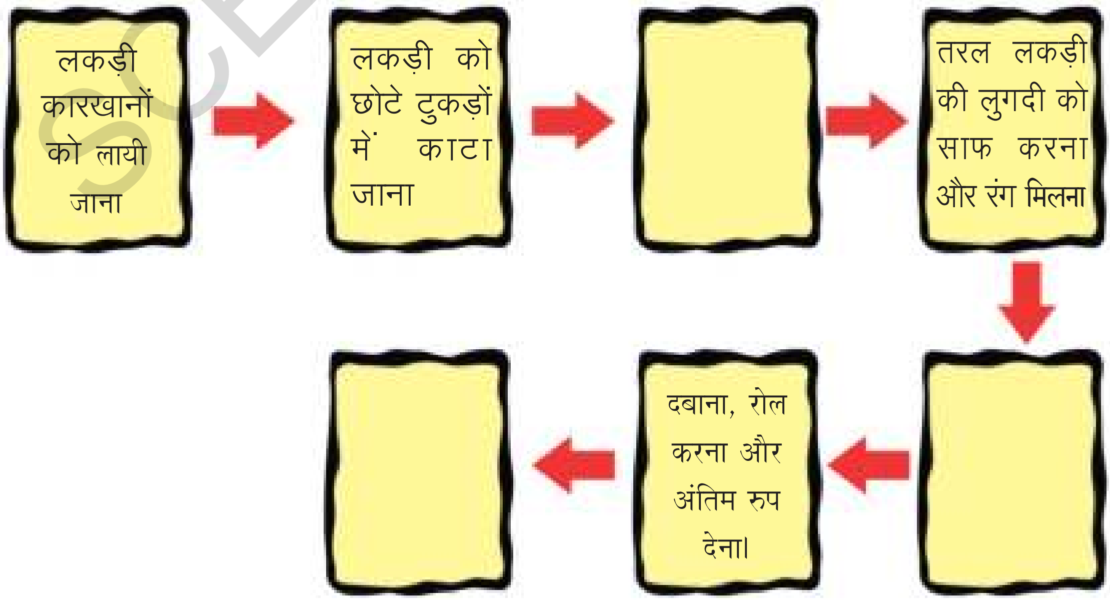

SCERT TELANGANA

वह इस मिल में दस वर्ष से कार्य कर रहा है तथा उसे 15000 रू. प्रति माह वेतन मिलता है। स्थाई कर्मचारी होने के कारण उसे कई अन्य लाभ भी मिलते है जैसे प्राविडेन्ट फण्ड (सेवा निवृत्त होने के समय मिलने वाला धन)। मेडिकल इन्शोरेन्स आदि अगर किसी कारण वश उसे काम से निकाल दिया जाता है या किसी दुर्घटनावश काम बन्द कर दिया जाए, तो उस व्यक्ति को कारखाने के द्वारा हरजाना दिया जाता है। प्रति वर्ष उसके वेतन में वृद्धि भी होती है। अगर वह या उसके परिवार का कोई सदस्य बीमार हो जाता है, तो वह पास के सरकारी चिकित्सालय (ESI - EMPLOYEES STATE INSURANCE) में मुफ्त दवा प्राप्त कर सकता है। इस सुविधा के लिए वह कर्मचारी थोड़ा भुगतान करता है तथा बाकी कारखाने द्वारा भुगतान किया जाता है। सूरज को सप्ताह में एक दिन अवकाश, त्योहार तथा अन्य छुट्टियाँ भी मिलती है। उसे वर्दी खरीदने तथा उसे धुलवाने के लिए भी पैसा दिया जाता है। कुछ वर्षों बाद सूरज को बोनस तथा मिल को लाभ होने पर उसे और अतिरिक्त धन भी मिलता है। इस मिल में लगभग इस प्रकार के 1800 कर्मचारी कार्यरत है।

चंदु स्थायी कर्मचारी नहीं है परंतु प्रतिदिन वह कारखाने में काम करने आता है वह ठेके पर काम करता है। वह अक्सर सामान उतारने या कागज पैक करने और गाड़ी में चढ़ाने करने का काम करता है। पिछले वर्ष पहले उसकी मुलाकात महाराष्ट्र में गाँव के ठेकेदार से हुई जिससे इस मिल में काम दिलाने का आश्वासन दिया। चंदु जैसे कर्मचारियों को स्थाई कर्मचारियों से कम वेतन (लगभग 8000 रू. प्रति माह) मिलता है और कोई भत्ता या मेडिकल सहायता या बोनस भी नहीं मिलता। उन्हें छुट्टी के लिए वेतन नहीं मिलता। मगर इन्हें वर्ष भर कार्य मिलता है और दो या तीन वर्षों बाद वह स्थाई कर्मचारी भी बनाया जाता है।

कारखाने में काम करने वाली महिलाएँ अक्सर जमीन की सफाई और पेकेट पर परची चिपकाने का काम करती है। तारा इस कारखाने में कभी–कभार काम करती है जो कर्मचारी कभी काम पर बुलाये जाते है या कभी नहीं उन्हें सामायिक (Causal) कर्मचारी' कहते है। तारा प्रति दिन सुबह कारखाने काम है या नहीं यह जानने आती है। ज्यादातर वे उसे सप्ताह में तीन चार दिन पोंछा लगाने के लिए काम पर रखते है। जिस विभाग में लकड़ी के टुकड़े काटे जाते है, वहाँ चारों ओर लकड़ी और धूल फैली रहती है। इस स्थान की सफाई और मशीनों की सफाई आवश्यक होती है। उसे प्रति दिन की मजदूरी पर वेतन मिलता था, प्रतिदिन उसे 100 से 150 रू. मिलते है। वह तीन वर्षों से कार्य कर रही है परन्तु फिर भी केवल 2500 प्रति माह कमाती है। सूरज जैसे स्थाई कर्मचारी के समान उसे किसी प्रकार की कोई सुविधा नहीं मिलती।

चित्र 9.7 कागज कटिंग मशीन

मिल मालिक अक्सर रोज के काम के लिए सामयिक (केजुअल कर्मचारी

SCERT TELANGANA

को काम पर रखते है। जिससे खर्चे में कटौती होती है। कभी–कभी वे नई मशीनें भी लाते हैं जिससे कम कर्मचारियों की आवश्यकता पडती है। ऐसी स्थितियों में कर्मचारी एवं उनके संगठन प्रबन्धक के सामने मजदूरी बढ़ाने की माँगे प्रस्तुत करते हैं।

चित्र 9.8 कारखाने के भीतर का चित्र

कर्मचारियों के अतिरिक्त मिल में अन्य कई लेखाकार, क्लर्क्स और प्रबंधकों को भी रोजगार दिया जाता है, जिसे उन्हें अच्छा वेतन मिलता है। प्रौढ़ प्रबन्धक अधिकतर कारखाने के मालिक के रिश्तेदार होते हैं, जिन्हें अच्छा वेतन मिलता है, कई प्रकार के भत्ते, मुफ्त में घर, बच्चों के लिए शिक्षा की सुविधा भी मिलती है।

कागज मिल का मालिक कौन होता है? (Who owns the Paper Mill?)

इस मिल का कोई एक मालिक नहीं होता। कुछ लोग मिलकर कम्पनी बनाते हैं जो इसके मालिक होते हैं। ये लोग अधिक मात्रा में

- सूरज, चंदु व तारा की तुलना करते हुए एक तालिका बनाइए।

क्र.सं.	नाम	काम	अनुभव	आय	अन्य लाभ
1.	सूरज				
2.	चंदु				
3.	तारा				

पूँजी नियोजन भी करते हैं तथा मिल चलाने के लिए बैंक से ऋण भी लेते हैं। वे लोग प्रबन्धक, प्रशासनिक अधिकारी एवं स्थाई कर्मचारियों को नियुक्त करते है। श्रमिक, प्रबंधक और प्रशासनिक अधिकारी वेतन पाते हैं। वेतन और अन्य खर्चे निकलने के बाद जो बचता है वह मिल के मालिक का लाभ होता है। फैक्टरी को होने वाले पूरा लाभ उन्हें मिलता है। कभी–कभी उन्हें हानि भी सहन करनी पड़ती है।

- आपके विचार में कारखाने में विभिन्न स्तरों पर कर्मचारियों को कार्य दिया जाना चाहिए? (स्थाई, अस्थाई और सामाजिक मजदूर?)
- अस्थाई सामयिक कर्मचारी को किन समस्याओं को सामना करना पड़ता है?
- आपके विचार में तेलंगालाणा में कागज मिल में काम करने के लिए लोग दूर–दूर से क्यों आते हैं?

SCERT TELANGANA

क्या आप इन बिन्दुओं का प्रयोग करते हुए फैक्ट्री के उत्पादन की मुख्य विशेषताएँ बता सकते हैं?

1. मशीन
2. कच्चा माल
3. उर्जा और जल
4. उत्पादन
5. कर्मचारी
6. प्रबन्धक
7. बाजार
8. मालिक

कुछ कारखाने किसी एक व्यक्ति या मालिक के समूह द्वारा नहीं चलाए जाते हैं, लेकिन सरकार द्वारा संचालित होते हैं। ये लोगों की भलाई के लिए सरकार द्वारा चलाये जाते है।

कुछ कारखानों में कच्चे माल की इतनी अधिक मात्रा में आवश्यकता होती है, जिसके कारण प्राकृतिक स्रोत जैसे वन, नदियाँ और खदाने तेजी से नष्ट हो रहे हैं। इनसे धुआँ, नदी का पानी दूषित होने और आस–पास की भूमि का प्रदूषित होने की भी समस्या होती है। इसीलिए वातावरण को प्रदूषित होने से बचाने के लिए उपाय ढूँढ़े जाने चाहिए।

कारखानों में अधिक लोगों को काम दिया जाता है। इन कारखानों में काम करने वाले कर्मचारी के लिए यहाँ काम थकान वाला होता है तथा कई लोग धूल एवं रासायनिक तत्वों से बीमार भी हो जाते हैं। उन्हें बहुत ही कम वेतन दिया जाता है। उन्हें झोपड़पट्टी में अस्वस्थ वातावरण में रहने पर विवश किया जाता है।

एक और बड़ी चुनौती हमारे सामने यह है कि हम कैसे अपनी आवश्यकताओं को संतुलित करे तथा कारखाने प्रणाली के हानिकारक प्रभाव से कैसे बचे और कर्मचारियों के जीवन को सुख–सुविधा जनक एवं सम्मानजनक कैसे बनाए।

प्रदूषण :–

जब हम कागज मिल के दूसरे हिस्से में गए तो एक प्रकार की दुर्गंध का अनुभव किया। इसका कारण रसायन का उपयोग है। कागज मिल से बाहर निकल कर हम आस–पास के घरों में गए। उन्होंने कहा कि वे इस दुर्गंध के आदी हो गए हैं और कारखाने से निकलने वाली धूल खेतों, बगिचों और आस-पास के पेड़–पौधों के पत्तों पर जम जाती है। कारखाने में नदी का शुद्ध जल उपयोग में लाया जाता है और गन्दा तथा रसायन युक्त जहरीला जल नदी में छोड़दिया जाता है।

पिछले वर्ष ही मिल ने धारा प्रवाह उपचार योजना के द्वारा रसायनयुक्त बेकार पानी भेजा। ये मशीनें बचे हुए पदार्थ अलग करती है (बची हुई चीजें जो हवा, पानी, भूमि और भोजन के लिए हानिकारक होती हैं।) पर्यावरण सुरक्षित जल का उत्पादन करती है। शुद्ध जल तथा ठोस व्यर्थ पदार्थ को नष्ट करना या खाद के लिए उपयोग में लाना आदि करती हैं। इसके अलावा मिल बगीचों को भी साफ पानी (Treated effluent) भेजने लगी हैं। इसके अतिरिक्त कागज मिला इस साफ पानी का उपयोग अपने बगीचे में सिंचाई के लिए करती हैं। कुछ किसान भी सिंचाई के लिए इसका उपयोग करते हैं।

हमारे देश और प्रदेश में अधिक संख्या में कारखाने हैं जो उपयोग के लिए विभिन्न वस्तुएँ उत्पादित करते हैं। कम समय में अधिक मात्रा में उनका उत्पादन करते हैं।

चित्र 9.9. कागज के रोल

SCERT TELANGANA

मुख्य शब्द (Key words) :

1. उत्पादन प्रक्रिया
2. कन्वेयर बेल्ट
3. तंतु रेशा
4. परची
5. भत्ता
6. बोनस
7. प्रदूषण
8. कार्य के घण्टे
9. कच्चामाल

हमने क्या सीखा ?

1. कल्पना कीजिए कि आप चमड़े या कपड़े का कारखाना लगाना चाहते हैं। आपको किन–किन विषयों का ध्यान रखना होगा? जब आप कारखाना लगाएगे ?
2. अपने शब्दों में कागज बनाने की विधि बताइए।
3. आपके विचार में यदि कागज मिल एक दिन के लिए काम बन्द कर दे तो मजदूर के जीवन पर इसका क्या प्रभाव होगा?
4. बिना कागज के विश्व की कल्पना कीजिए। कागज के स्थान पर आप क्या उपयोग करेंगे?
5. कारखानों द्वारा प्रदूषण को रोकने के लिए क्या किया जा सकता है?
6. कागज की मिल पर कक्षा में पक्ष और विपक्ष पर वाद–विवाद आयोजित कीजिए।
7. कागज की मिल के स्थाई कर्मचारी के लाभों की सूची बनाइए। उसकी तुलना अस्थाई तथा सामयिक कर्मचारी से कीजिए।
8. कलाकार द्वारा निर्मित बास्केट और कागज उत्पादन की तुलना निम्न बिंदुओं के आधार पर कीजिए (1) कार्य स्थल (2) औजार/मशीन (3) कच्चा माल (4) कर्मचारी (5) बाजार (6) मालिक
9. कोमुरमभीम जिले के सिरपूर कागजनगर में कागज मिल हैं। इसे जिले के मुख्यालय में क्यों स्थापित नहीं किया गया? चर्चा कीजिए।
10. विश्व मानचित्र में निम्न स्थानों को दर्शाइए।

अ) श्रीलंका आ) सिंगापूर इ) नाइजीरिया ई) दक्षिण आफ्रिका उ) नेपाल

11. पृष्ठ 91 के तीसरे अनुच्छेद को पढ़िए। क्या आप सोचते है कि कम्पनी के मालिक कर्मचारियों में रूचि दिखाते हैं ? क्यों ?

परियोजना कार्य :–

आपने गौर किया होगा कि आपके मुहल्ले के कारखाने भी प्रदूषण का कारण बन रहे है। कल्पना कीजिए कि आपके क्षेत्र में एक कारखाना प्रदूषण का कारण बन रहा है। स्थानीय समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए और इस विषय पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

SCERT TELANGANA

अध्याय 10

यातायात प्रणाली का महत्व (Importance of Transport System)

हमारे दैनिक जीवन में हम एक स्थान से दूसरे स्थान जाने के लिए अनेक प्रकार के परिवहन साधनों का उपयोग करते हैं। हम भी एक स्थान से दूसरे स्थान जाते हैं। लोग किस प्रकार यातायात साधनों सड़क, जलमार्ग और वायुमार्ग का उपयोग करते हैं। लोगों द्वारा वाहनों में चयन की रुचि पर हमने इस अध्यय में चर्चा की है। इसके अलावा लोग कैसे और क्यों आय के सृति के लिए यातायात पर निर्भर करते हैं तथा बाजार यातायात का उपयोग कैसे करते हैं, आदि विषय पर भी इस अध्याय में चर्चा की गई है। आप ऊँची कक्षाओं में अन्य यातायात साधनों जैसे रेलमार्ग, जलमार्ग और हवाई मार्ग के बारे में पढ़ेगे।

आप यातायात प्रणाली के बारे में बहुत कुछ जानते हैं।

- uhps fn, x, 'kCnksa }kjk rkfydk Hkfj,A dqN 'kCn ,d LFkku ls vf/kd LFkkuksa ij Hkh fy[ks tk ldrs gSaA vkius ml 'kCn dk pquko ml LFkku ds fy, D;ksa fd;k gS] dkj.k crkb,A

तीर्थयात्री] eksVjdkj] eNyh] i'kq] vukt] cSyxkM+h] isV^ªksfy;e] deZpkjh] tgkt] gsyhdkIVj] VSadj] ykWjh] lkbZdy] ;k=h] dPpk yksgk] ekyxkM+h] vkeA

यातायात का प्रकार	वाहनों का उपयोग	कुछ उत्पादन/लोगों का समूह जो इनका उपयोग करते है।
सड़कें		
रेलमार्ग		
जलमार्ग		
वायु मार्ग		

तेलंगाना में यातायात प्रणाली (Tranport System in Telangana)

अगर हम विस्तार रुप में राज्य में यातायात प्रबन्ध को देखेंगे तो हम निम्न बातें पाएँगे–

सड़कें (Roads) :– भारत में अधिकांश सड़कों का निर्माण और रख–रखाव सरकार के अधीन होता है। सड़के अनेक प्रकार की होती है। कुछ सड़कें राष्ट्रीय राजमार्ग कहलाती है जो देश के विभिन्न राज्यों के बीच वनायी जाती है। उदाहरण के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग 7 (या 44) का सड़क जाल उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडू है। जबकि सरकार छोटे शहर और जिले को जोड़ने वाली सड़कों का प्रबंध देखती है। गाँव की सड़के जो अधिकतर कंकड़ से बनाई जाती है उनका प्रबन्ध पंचायत के हाथ में होता है। नगरनिगम और पालिकाएँ शहरों की सड़कों का रख रखाव के लिए उत्तरदायी है। जो सड़कें अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं

SCERT TELANGANA

पर बनाई जाती हैं वे सीमावर्ती सड़कें कहलाती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के लोगो को प्रमुख शहरों से जोड़ने में सड़कें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

चित्र 10.1: 1932 में निज़ाम के समय परिवहन वाहन प्रचलित किया। यातायात कम्पनी के चिह्न को आप देख सकते है।

रेलमार्ग (Railways) :– भारत में1/5 यात्री रेल का उपयोग करते हैं। रेलमार्ग मुख्यत: माल लाने–ले जाने के लिए उपयोगी है, जैसे – कोयला, कच्चा लोहा, खाद, सिमेन्ट, खाद्य पदार्थ आदि। तेलंगाना में सभी जिलों को रेलमार्ग का जाल विभिन्न जिलों को जोड़ता है। कारखानों से बन्दरगाहों तक उत्पादन रेलमार्ग द्वारा पहुँचाया जाता है।

वायुमार्ग (Airways): तेलंगाणा में एक अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है। अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा हैदराबाद, (शमशाबाद) तेलंगाना और पड़ोसी राज्यों से विदेशों को जाने के लिए होता है। यह हवाई अड्डा हैदराबाद को अन्य शहरों और भारत के राज्यों से जोड़ता है।

जलमार्ग (Waterways) :– जलवायुमार्ग बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि हमारा अधिकांश विदेशी व्यापार इसी के द्वारा होता है। अधिकांश भारतीय व्यापारियों द्वारा माल जलमार्ग द्वारा अन्य देशों को भेजा जाता है। बन्दरगाह शहर या नगर इसीलिए बड़े व्यावसायिक केन्द्र बन गए। तेलंगाणा में कोई तटीय रेखा या बन्दरगाह नहीं है। आन्ध्र प्रदेश में 15 बन्दरगाह हैं, जिसमें से विशाखापट्टनम सबसे बड़ा है। गोदावरी, कृष्णा, पैन्नार नदियों तथा उनकी नहरों का उपयोग जलमार्ग के लिए किया जाता है। समुद्री बन्दरगाह की स्थिति भी संकटमयी बन गई क्योंकि इससे अधिक मात्रा में विदेशी व्यापार किया जाता था।

- भारत के मानचित्र पर हवाई अड्डे और बन्दरगाह शहर अंकित कीजिए।

उत्पादन एवं माल विक्रय में सड़कों का उपयोग (Use of Roads for Production and safe of goods)

तेलंगाणा में यात्रा के लिए अधिक लोग सड़कों पर निर्भर करते हैं। तेलंगाणा के गाँवों में उपलब्ध यातायात सुविधाएँ परिवर्तित हैं। 2001 वर्ष तक तीन चौथाई गाँवों में यह सुविधाएँ उपलब्ध करवाई गई।

पिछले अध्यायों में आपने जाना कि किसान, मछुआरे और कारखाने किस प्रकार यातायात पर विभिन्न कारणों से निर्भर करते हैं। किसान अपने उत्पादन को रयतु बाजार तक ले जाना चाहता है, मछुआरे मछली खराब होने से पहले जल्दी खरीददारों तक पहुंचाना चाहते है। कागज मिल वाले कच्चा माल लाने के लिए लॉरी का उपयोग करते हैं। माल का उत्पादन करने वाले कारखाने भी उपभोक्ता तक पहुँचने के लिए यातायात प्रणाली पर निर्भर रहती है। चलिए हम कपास का उदाहरण लेते हैं। किसानों द्वारा उत्पादित कपास खेतों से कारखानों तक पहुँचाया जाता है। कपड़ा बनाने के लिए कई प्रक्रियाएँ अपनायी जाती हैं, इसीलिए इसे एक स्थान से दूसरे स्थान भेजना पड़ता है, जहाँ तक यह अन्तिम रूप से कपड़ा बनता है। इसीलिए अधिकतर बाजार यातायात सुविधाओं पर निर्भर होते हैं।

SCERT TELANGANA

गद्यांश पढ़कर दी गयी समस्या का उपाय निकालिए

सत्यमपल्ली के किसान उत्पादित धान मुख्यत: पास के गाँव नायापेट जो 7 कि.मी. दूर है, में बेचते हैं। बैलगाड़ी वाला एक समय में 100 धान के थैले ले जा सकता है और प्रति थैले के लिए रू.50 लेता है। ट्रैक्टरवाला प्रति थैले के 20 रु लेता है। प्रत्येक ट्रैक्टर का मालिक 30 से 40 थैले ले जा सकता है। लॉरी वाला प्रति थैले का 10 रू. लेता है जो कि एक बार में 150 से 170 थैले ढो सकता है। दूरस्थ स्थलों के लिए ट्रैक्टर अधिक दाम लेता है। उदाहरण के लिए नायापेट का थोक व्यापारी धान जिला मुख्यालय ले जाता है जो कि 100 से 120 कि.मी. दूर है। ट्रैक्टर चालक रू.50 प्रति थैला लेता है। वे लोग 800 से 1000 प्रति टन 500 कि.मी. के लिए लेते हैं।

एक गाँव में तीन किसान हैं। उन्होंने धान की फसल बोई और क्रमश: 25 थैले, 50 थैले और 75 थैले उत्पादन किया। वे लोग धान को समीप के शहर के कृषि क्षेत्र जो 25 कि.मी. दूरी पर था, वहाँ बेचना चाहते थे। आप उनके लिए कौन–सा यातायात साधन उपयुक्त समझते हैं और क्यों?

- निम्न प्रकार की बसों में यात्रा करने के लिए किराये का पता लगाइए। और विभिन्न प्रकार की बसों से दो स्थानों के बीच यात्रा करने में कितना समय लगता है पता कीजिए।

चित्र 10.2 पशु निर्यात का चित्र

यातायात क्रियाकलापों में रोजगार (Employment in Transport Activities)

प्रत्येक बस में दो लोग काम करते है – ड्राइवर और कन्डक्टर/एक राज्य में संपूर्ण। यातायात के रख–रखाव के लिए सैकड़ो और हजारों लोगों की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए तेलंगाणा राज्य सड़क यातायात निगम 64,000 लोगों को 10,000 बसें चलाने के लिए रोजगार देती है। ये कर्मचारी विभिन्न कार्य करते हैं जैसे – हिसाब देखना, बसों की मरम्मत या बस डीपो में काम करना आदि। कुछ कर्मचारी बस पास बनाना, बस स्टैण्ड स्टेशन पर टिकट देना या निरीक्षक का काम करते हैं।

तेलंगाणा की सड़कों पर लगभग अत्यधिक वाहन चलते हैं, जिसमें से 3/4 दो पहिया वाहन होते हैं। उनके लिए कई सहायक क्रियाएँ भी आवश्यक हैं – पेट्रोल/डीजल पम्प स्टेशन, मरम्मत की दुकानें, वाहन और उनके पुर्जों को बेचने के लिए दुकानें।

बस का प्रकार	किराया	समय
पल्लेवेलुगु/ग्रामीण		
एक्सप्रेस		
डिलक्स		

SCERT TELANGANA

- आपके विचार में किरायों में जो अन्तर है, क्या वह उचित है, कारण बताइए।
- किराए में अन्तर के साथ–साथ उपलब्ध सुविधाओं में भी अन्तर है। निर्धारित स्थान तक पहुँचने में लगने वाले समय में भी अन्तर है। आपकी नजर में अधिक लोग किससे यात्रा करना चाहेगें? मान लीजिए कि आप सुविधाओं में वृद्धि करने वाले है तो आप कैसी बस को अधिक महत्व देंगे?

यातायात सेवाएँ और विकल्प (Transport services and choices)

लोग उन वाहनों का चुनाव करते है जो उपलब्ध है तथा उनके सामर्थ्य में हो। कभी–कभी विभिन्न प्रकार के वाहनों में चुनाव सम्भव होता है। उदाहरण के लिए बंगलूरू जाने के लिए रेल, बस या हवाई जहाज का उपयोग किया जा सकता है। शताब्दियों पहले दूरस्थ स्थानों की यात्रा एवं सामान ले जाने के लिए जहाजों का उपयोग किया जाता था।। परन्तु आज बहुत कम लोग जहाजों से यात्रा करते है, केवल माल भेजने में ही इसका उपयोग होता है।

यह सम्भव है कि आपमें से कुछ लोग बस से विद्यालय आते हैं। जो लोग कारखाने, कार्यालय, घरेलू कार्यों, दुकानों, आदि में काम करते हैं, वे भी यातायात पर निर्भर करते है। सभी शहरों में सार्वजनिक यातायात जैसे बसे नहीं होती, और लोग अपने स्वयं के वाहनों पर निर्भर करते हैं या किराए के वाहन जैसे आटो–रिक्शा या टैक्सी पर निर्भर रहते हैं।

चित्र 10.4 रेल्वे कर्मचारी

चित्र 10.3 पुराने और नये परिवहन के साधन

अगर किराया अधिक हो तो यातायात साधन से साधारण लोग एक स्थान से दूसरे स्थान नहीं जा सकते। उदाहरण के लिए अगर एक स्थान से दूसरे स्थान पर वेतन अधिक हो तो कम वेतन पाने वाला व्यक्ति अधिक वेतन मिलने वाले स्थान को जाना चाहेगा। अगर किराया अधिक होगा तो वे उस स्थान पर जाने में रुचि नहीं दिखाएगे।

यात्रा की दर, विशेषतः कम आय वाले लोगों के लिए, अधिक होगी तो उनकी आय का अधिक भाग उसी में खर्च हो जाएगा। दूर के स्थानों के लिए साईकिल या पैदल जाना भी आसान नहीं होता। बड़े शहरों में, लोगों को साईकिल चलाने और पैदल चलने के लिए पर्याप्त स्थान की आवश्यकता होती है। फुटपाथ बने होने पर भी आपने देखा होगा कि दुकानदार उन पर अधिकार जमा लेते हैं। कभी–कभी फुटपाथ और सड़क की ऊँचाई में इतना अन्तर होता है कि व्हीलचेयरवालों को भी तीव्र वाहनों के साथ ही चलने का खतरा उठाना पड़ता है।

- उमर और इब्राहिम एक ही कक्षा में पढ़ते हैं। वे दोनों अलग–अलग जगह रहते हैं जिसकी दूरी 3 कि.मी. है। इब्राहिम शहर की बस से विद्यालय आता है जबकि उमर विद्यालय की बस से यात्रा करता है। क्या कारण हो सकता है कि ये दोनों अलग बस सेवा का उपयोग करते हैं?

चक्का जाम् और प्रदूषण (Congstion and Pollution)

आज देश के अधिकतर शहर चक्का जाम और प्रदूषण और भीड़ जमा हो जाने का अनुभव कर रहे है। यदि सार्वजनिक यातायात सुविधा पर्याप्त न हो तो लोग अधिक से अधिक अपने वाहन खरीदने लगेंगे, जिससे शहरों में यातायात भीड़ हो जाएगी, क्योंकि सड़के अधिक चौड़ी नहीं होती, जिस पर सभी वाहन चलाए जा सके। आइए एक उदाहरण की सहायता से इसे समझेंगे। असंख्य लोग छः बड़े शहरों में रहने वालों की संख्या 1981 से 2001 में दुगुनी होगी और वाहनों की संख्या 8 गुणा बढ़ गई है।

मोटर साइकिल और कार का उपयोग अधिक हो रहा है। इसके कारण पेट्रोल और डीजल का अधिक उपयोग होता है जिससे वायु प्रदूषण होता है। प्रदूषण को रोकने के लिए हमे इन पेट्रोलियम पदार्थों का उपयोग कम करना चाहिए। सार्वजनिक यातायात इसमें अधिक उपयुक्त हो सकते हैं क्योंकि वे न्यूनतम कीमत में अधिक लोगों को ले जाते हैं।

सुरक्षित यात्रा (Travelling Safety)

सड़क से यात्रा करना खतरनाक हो गया है। सड़क दुर्घटनाएँ एवं मृत्यु, तथा क्षति अधिकतर न्यून आय वाले परिवार जैसे साइकल सवार, पैदल यात्री या फुटपाथ निवासियों को प्रभावित करती हैं। दुर्घटनाएँ केवल सड़कों पर ही नहीं होंती, बल्कि अन्य साधनों से भी होती हैं। वह स्थान जहाँ सड़कें और रेल्वे लाइन एक दूसरे को पार करते हैं वहाँ सामान्यतः वाहनों को रोकने के लिए गेट होते हैं। जब रेल वहाँ से

चित्र 10.5 ऊटी में पहाड़ पर चढ़ती हुई रेल

गुजरती है। इन्हें रेल्वे गेट कहते हैं। अगर इन स्थानों पर ये गेट नहीं होते जहाँ सड़के और रेल्वे–लाइन एक दूसरे को करती तो लोगों और वाहनों के लिए आवश्यक हो जाता कि वे रूक कर दोनों दिशाओं में देखकर पार करें।

सड़क सुरक्षा सप्ताह (Road Safety Week)

प्रत्येक वर्ष का प्रथम सप्ताह सड़क व्यवस्था विभाग द्वारा सारे देश में सड़क सुरक्षा सप्ताह के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर वे लोगों को यातायात नियम पर मार्ग दर्शन देते हैं सरकार ऐसी कम्पनियाँ चलाती है जैसे तेलंगाना स्टेट रोड़ ट्रांसपोर्ट कार्पोरेशन तथा ड्राइवर के लिए जगरुकता प्रचार करते हैं और उन्हें सुरक्षित रूप से चलाने का प्रशिक्षण भी देते हैं। वे विद्यालयों

SCERT TELANGANA

में जाकर निबंध लेखन, वाद–विवाद तथा अन्य प्रतियोगिताएँ भी विद्यार्थियों के लिए आयोजित करते हैं और सुरक्षित सफर के लिए यातायात नियमों के पालन के लिए प्रोत्साहित भी करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति जो यातायात प्रणाली जो – सड़कें, रेल्वे जलमार्ग या हवाई मार्ग अका उपयोग करता है और जो इनमें कार्य करते हैं उनके लिए सुरक्षा नियम का पालन करना अनिवार्य है। यह यातायात से होने वाली मृत्यु, क्षति तथा अन्य हानियों को कम कर सकता है।

चित्र 10.6 विशाखापट्टनम बन्दरगाह

- आपके मुहल्ले में स्थित पास के यातायात पुलिस या ड्राइविंग स्कूल या वह व्यक्ति जिसके पास ड्राइविंग लाइसेन्स है, उससे संपर्क कीजिए। ड्राइवर को कैसे प्रशिक्षित किया जाता है, विषय की जानकारी प्राप्त कीजिए। ड्राइविंग स्कूल प्रांगण में प्रदर्शित वस्तुओं चीजों की जानकारी लीजिए।
- सड़क उपयोग के मूलभूत नियम और कानून और किस प्रकार सड़क पर सुरक्षित सफर किया जा सकता है। इस बात पर चर्चा कीजिए। अपनी कक्षा में यातायात संबंधी नियमों और संकेतों की सूची लगाइए।

मुख्य शब्द

1. सुरक्षित यात्रा
2. सड़क मार्ग
3. वायु मार्ग
4. जलमार्ग
5. रेलमार्ग
6. राष्ट्रीय राजमार्ग
7. प्रादेशिक राजमार्ग
8. गाँव/ग्रामीण सड़क
9. शहरी सड़कें
10. सीमावर्ती सड़कें
11. T.S.R.T.C.
12. चक्का जाम

हमने क्या सीखा?

1. कृषि उत्पादन में यातायात प्रणाली किस प्रकार आवश्यक है? उदाहरण के साथ समझाइए।
2. बस का उपयोग रेल से भिन्न कैसे है?
3. गाँवों के लिए यातायात सुविधाएँ उपलब्ध कराना क्यों आवश्यक हैं?
4. देश के लिए जलमार्ग क्यों महत्वपूर्ण है?
5. कैसे यातायात प्रणाली जीविका का साधन बन गया है?
6. क्या होगा यदि कारखानों में उत्पादित माल के यातायात खर्च में बढ़ोतरी हो जाए? उदाहरण के साथ समझाइए।
7. सड़क/रेल दुर्घटनाओं में रोक पर कुछ नारे लिखिए।
8. वाहनों का उपयोग लोगों का जमघट तथा चक्का जाम का कारण है। इसे रोकने के लिए आप क्या उपाय सुझाएगे?
9. तेलंगाणा राज्य का मानचित्र खींचकर उसमें हैदराबाद कहाँ है? दर्शाएँ।

चर्चा : पोलिस इंसपेक्टर/कान्स्टेबल के साथ विद्यार्थियों का वाद विवाद सड़क दुर्घटनाएँ रोकथाम के उपाय शीर्षक पर वाद विवाद/चर्चा आयोजित कीजिए।

परियोजना : ड्राइवर के साथ वार्तालाप कर यह पता कीजिए कि उसके कार्य में पाए जाने वाले खतरे की जानकारी प्राप्त कीजिए।

SCERT TELANGANA

अध्याय 11

नये राजा और साम्राज्य
(New Kings and Kingdoms)

भाग– I

सातवीं शताब्दी के बाद कई नए राजवंशों का उदय हुआ। मानचित्र 1 उपमहाद्वीप के अलग-अलग भागों में शासन करने वाले सातवीं और बारहवीं शताब्दी के शासकों को दर्शाया है।

* गुर्जर-प्रतिहारा, राष्ट्रकूट, पाला, चोला और चहामान(चौहान) को अंकित कीजिए।

* क्या आप वर्तमान राज्यों को पहचान सकते हैं, जिनपर उनका नियंत्रण था?

Map 1: Major Dynasties of Northern, Central and Eastern India, c.700-1100 CE

SCERT TELANGANA

नये राजवंशों का उदय (The Emergence of New Dynasties)

सातवीं शताब्दी तक उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों में प्रभावी जमींदार या योद्धा हुआ करते थे। तत्कालीन राजा उन्हें अपने अधीनस्थ या सामंत के रूप में मान्यता देते थे। उनसे यह उम्मीद की जाती थी कि वे अपने राजा या मालिकों के लिए तोहफे लाए, दरबार में हाजिर रहे और उन्हें सैनिक सहायता पहुंचाएँ। जैसे ही सामंतों को शक्ति और धन हासिल होती थी वे स्वयं को महा-सामंत, महा मंडलेश्वर (एक इलाके या भू-भाग के मालिक) घोषित कर देते थे। कभी-कभी तो वे स्वयं को अपने अधिपतियों से स्वतंत्र मान लेते थे।

इसी तरह की एक घटना दक्कन के राष्ट्रकूट में सामने आई। आरम्भ में वे कर्नाटक के चालुक्य के अधीनस्थ थे।

चित्र 11.1 विष्णु भगवान के नरसिंग रूप को दिखाते हुए एलोरा की 15वीं गुफा के भीतर एक चित्र। यह राष्ट्रकूट के समय की कला है।

आठवीं शताब्दी के मध्य में दंतिदुर्गा राष्ट्रकूट मुखिया ने अपने चालुक्य राजा को हराकर एक अनुष्ठान पूरा किया, जिसे हिरण्य-गरभा (अर्थात सुवर्ण गर्भ) कहते थे। जिसमें यह माना जाता है कि बलिदान करने वाले का पुनर्जन्म क्षत्रिय के रुप में होगा, भले ही वह जन्म से क्षत्रिय न हो।

> * क्या आपको लगता है कि उस समय राजा बनने के लिए किसी एक वर्ण में जन्म लेना ज़रूरी था?

दूसरे मामलों में उद्यमी परिवार के साहसी व्यक्तियों ने सैनिक क्षमता के प्रयोग से अलग राज्य तैयार कर लिया। उदाहरण के तौर पर कदम्बा, मयूरशर्मन और गुर्जर-प्रतिहार, हरि चंद्र ब्राह्मण थे, जिन्होंने अपनी परंपरा को त्यागकर हथियार उठाते हुए कर्नाटक और राजस्थान में अपना साम्राज्य स्थापित किया।

प्रशस्ति और भूमि अनुदान (Prashasti and Land Grants)

शिलालेखों में स्तुति को प्रशस्ति कहते थे, जिसमें राजकीय परिवार जैसे, उनके पूर्वज और शासन काल की जानकारी होती है। इसमें शासक की उपलब्धियों का भी उल्लेख होता है। पर यह सब कुछ यह बताता है कि राजा अपना विवरण किस प्रकार करना चाहता था, उदाहरणतः शूरवीर, पराक्रमी योद्धा। इनकी रचना उन पढ़े-लिखे ब्राह्मणों की सहायता से होती थी, जो प्रशासन में सहायक होते थे।

CGG TELANGANA

नागभट्ट की उपलब्धियाँ (The Achievements of Nagabhata)

कई शासकों ने प्रशस्ति में अपनी उलब्धियों का वर्णन किया है।

संस्कृत में लिखी एक प्रशस्ति मध्य प्रदेश के ग्वालियर में पायी गयी, जिसमें प्रतिहार के राजा नागभट्ट के शोषण के बारे में निम्न प्रकर से वर्णन किया गया है:

आंध्र सैन्धावा (सिंध), विदर्भ (महाराष्ट्र) और कलिंग (उड़ीसा का हिस्सा) के राजा उसके सामने झुक गये, जब वे सिर्फ राजकुमार ही थे।

उन्होंने चक्रयुद्ध (कन्नौज के शासक) पर विजय प्राप्त की। उन्होंने वेंगा के राजा (बंगाल का हिस्सा), आनार्ता (गुजरात का हिस्सा), माल्वा (मध्य प्रदेश का हिस्सा), किरात (वन्य लोग), तुरुष्का (तुर्क) वात्सा मत्स्या (उत्तर भारत के दो राज्य) को हराया।

इनमें से कुछ क्षेत्रों को मानचित्र - *1* में पहचानिए।

चित्र 11.2 - 9 वीं शताब्दी के द्वारा किए गए कार्यों को ताम्रपत्रों पर लिखा गया जो संस्कृत से थे। इन तामपत्रों को एक साथ रखने वाला रिंग रायल सील कहलाता था, जो दर्शाता था कि यह एक विश्वसनीय दस्तावेज है।

राजा अक्सर ब्राह्मणों व अन्य को पुरस्कार के रूप में भूमि दान दिया करते थे। भूमि का विवरण ताम्रपत्र पर लिखकर दान प्राप्त करने वाले को दिया जाता था।

बारहवीं शताब्दी में कल्हण नामक एक लेखक द्वारा संस्कृत की एक लंबी कविता की रचना की गयी, जिसमें कश्मीर पर शासन करने वाले राजा का इतिहास लिखा है, उन्होंने विभिन्न प्रकार के स्त्रोतों, लेखों, शिलालेखों साक्ष्यों तथा प्राचीन इतिहास का उपयोग किया। प्रशस्ति लेखको के समान इसमें शासकों और उनकी नीतियों की आलोचना भी किया करता था।

भूमि के साथ क्या-क्या दिया जाता था

यह तमिल वर्ग का एक भाग है, जिसमें चोलों द्वारा भूमि अनुदान दिया गया।

हमने जमीन पर निशान बनाकर तथा काँटेदार झाड़ों से सीमा निर्धारित की।

भूमि पर यह सब होते हैं - फलदार पेड़, पानी, जमीन, बगीचा, बाग, पेड़, कुँए, खुली जगह, चरवाह भूमि, गाँव, ऊंची ज़मीन, समतल भूमि, नहर, नदी, गड्ढे, भू-भाग, तालाब, प्लेकार्य भंडार, मछली मधुमक्खी के छत्ते और गहरी झील।

जिसे यह भूमि अनुदान में मिलती है वह इस पर कर भी वसूल सकता है। वह सैनिक अधिकारियों द्वारा लगाया कर वसूल सकता है। वह तम्बाकू, हथकरघे के कपड़े और वाहन पर भी कर वसूल सकता है।

वह बड़े कमरे बना सकता, पक्की ईंट से ऊपरी इमारत, छोटे कुँए और ज़रूरत पड़ने पर पेड़ और केटीली झाड़ियाँ लगा सकता है । काँटेदार झड़ियाँ लगवा सकता है। वह सिंचाई के लिए नहर बनवा सकता है। इस बात का ध्यान रखना जरूरी था कि पानी व्यर्थ न हो इसके लिए ऊँची दीवार बनायी जाती थी।

SCERT TELANGANA

* ऊपर बताये गये सभी शिलालेखों में दी गई सिंचाई स्रोतों की सूची बनायें और चर्चा करें कि इसका उपयोग कैसे हो सकता था?

राज्यों मेें प्रशासन (Administration in the Kingdom)

इनमें से कई नये राजाओं ने बड़ी-बड़ी खिताबों पदवियों जैसे महाराजा -अधिराज (महान राजा, राजाओं के राजाधिराज) त्रिभुवन-चक्रवर्ती (तीनों लोक के राजा) आदि को अपनाया था। इन उपाधियों के बावज़ूद भी वे सामंत, ब्राह्मण, कृषक और व्यापारियों के साथ भी अपनी अधिकार बाँटते थे।

प्रत्येक राज्य में, संसाधनों के उत्पादक- जैसे कि कृषक, चरवाहे, कलाकारों और व्यापारी आदि पर दबाव डालकर अपने उत्पाद के हिस्से को बेचने के लिए कहा जाता था। कभी-कभी इन उत्पादों को किराये के रूप में अधीराज को देना पड़ता था, जो उस भूमि के अधिपति थे। व्यापारियों से भी कर वसूल करते थे।

इस साधनों का उपयोग राजा के भवनों, मंदिरों तथा किलों को बनाने के लिए किया जाता था। वे युद्ध भी किया करते थे। जिससे परिणाम स्वरुप श्रद्धांजलि के रूप में धन और व्यापार मार्ग के लिए भूमि का अर्जन किया जाता था।

साधारणतः आय वसूली के लिए सत्तारूढ़ परिवार के लोगों को नियुक्त किया जाता था, जैसे यह पद अक्सर प्रभावी परिवार और वंशानुक्रम में आते थे। यह बात सेना के लिए भी लागू होती थी। कई संदर्भों में यह पद राजा के रिश्तेदारों के पास ही होते थे।

* इस प्रकार की शासन व्यवस्था आज की प्रशासन व्यवस्था से किस प्रकार भिन्न थी?

सम्पति के लिए युद्ध (Warfare for wealth)

आपने यह देखा होगा कि इनमें से प्रत्येक राजवंश का एक विशिष्ट क्षेत्र था। उसी समय वे दूसरे क्षेत्रों को भी नियंत्रित करने का प्रयास करते थे। ऐसा ही एक क्षेत्र गंगा घाटी का कन्नौज था। कई वर्षों तक कन्नौज पर नियंत्रण पाने के लिए गुर्जर-प्रतिहार, राष्ट्रकूट और पाला राजवंश के शासकों ने लड़ाइयाँ लड़ीं। चूंकि नियंत्रण की इस लड़ाई में तीन शासक दल थे, इसीलिए इस लंबे युद्ध को इतिहासकार "तिहरा संघर्ष" भी कहते थे।

मानचित्र 1 देखकर कारण बतायें कि क्यों कन्नौज और गंगा घाटी पर शासक नियंत्रण करना चाहते थे?

महमूद गज़नी (Mahmud Gazani)

अफ़गानिस्तान के गज़नी के शासक सुल्तान महमूद ने 997 CE से 1030 CE तक शासन किया और मध्य एशिया, ईरान और उपमहाद्वीप के उत्तर-पश्चिमी हिस्से पर अपने नियंत्रण का विस्तार किया। वह हर वर्ष उपमहाद्वीप पर धावा बोलता था - उसके निशाने पर हिंदू मंदिर रहते थे, जिसमें गुजरात का सोमनाथ मंदिर भी शामिल था। महमूद द्वारा लूटे गए धन का प्रयोग अधिकतर गज़नी में एक भव्य राजधानी बनाने के लिए किया।

सुल्तान महमूद उन लोगों के बारे में भी अधिक जानकारी प्राप्त करने में रुचि रखता था, जिनपर उसने युद्ध में जीत प्राप्त की थी और अल-बिरुनी नामक एक विद्वान को उपमहाद्वीप का विवरण लिखने की जिम्मेदारी लाद दी। अरबी भाषा में किये गये इस कार्य को किताब अल-हिंद नाम से जाना जाता है, जो इतिहासकारों के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है। अल-बिरुनी ने इस लेख को तैयार करने में संस्कृत विद्वान की सहायता ली।

चाहमन (चौहान) (Chahamanas)

चाहमनों, जिनको बाद में चौहान नाम से भी पहचाना जाने लगा, ने दिल्ली और अज़मेर क्षेत्र पर शासन किया। उन्होंने अपने नियंत्रण का विस्तार पश्चिम और पूर्व में करने का प्रयास किया, जहाँ उन्हें गुजरात के

SCERT TELANGANA

चालुक्य और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के गढ़वालों के विरोध का सामना करना पड़ा।

चाहमनों के प्रमुख शासकों में पृथ्वीराज III (1168 ई.–1192 ई.), प्रसिद्ध थे। जिन्होंने एक अफ़गान शासक सुल्तान महमूद गौरी को 1191 ई. में हराया, लेकिन अगले वर्ष 1192 ई. में वे उससे हार गये।

मानचित्र पर फिर से निगाह डालें और चर्चा करें क्यों चाहमन अपनी सीमाएँ बढ़ाना चाहते थे?

भाग–II

चोल

अब हम दक्षिणी भारत पर एक निगाह डालेंगे।

चोल शासन दक्षिण का सबसे व्यवस्थित इतिहास रहा है। आइए देखते हैं वे कैसे सफल शासक बने।

उरियार से तन्जावुर तक

चोल एक शक्ति के रूप में कैसे उभरे? मुतिय्यार नाम के एक छोटे से सैनिक परिवार ने कावेरी डेल्टा क्षेत्र में अपना नियंत्रण रखा। वे कांचिपुरम के पल्लव राजा के आधीन थे। विजयालय, जो उरियार के प्राचीन चोल सैनिक परिवार से थे, ने नौवीं सदी के मध्य में मुतियार के डेल्टा पर कब्जा किया। उसने तन्जावुर कस्बा बनाया और वहाँ निशुम्भासुदिनी माता का मंदिर बनवाया।

विजयालय के उत्तराधिकारियों ने पड़ोस के क्षेत्रों पर जीत हासिल की और राज्य के आकार और शक्ति में वृद्धि हुई। दक्षिण और उत्तर में पाड्यन तथा पल्लवों की सीमाओं को इस सम्राज्य का हिस्सा बनाया गया। राजराजा –1 सबसे शक्तिशाली चोल शासक माना जाता है। वह 985 ई. में राजा बना और उसने इनमेंह्से अधिकतर क्षेत्रों में

मानचित्र 2 चोल साम्राज्य एवं इसके पड़ोसी राज्य

SCERT TELANGANA

चित्र 11.3 गंगईकोंडा-चोलापुरम का मंदिर। ध्यान दें कि किस तरह छत निर्मित की गई है। बाहरी दीवार को सजाने के लिए उपयोग किए गए पत्थर को देखिए।.

अपने आधिपत्य का विस्तार किया। उसने अपने सम्राज्य के प्रशासन को पुनः व्यवस्थित किया। राजराज के पुत्र राजेंद्र-1 ने उनकी नीतियों को जारी रखा और यहां तक गंगा घाटी, श्रीलंका और दक्षिणपूर्वी एशिया के देशों पर भी आक्रमण किया। इस तरह के आक्रमणों के लिए उन्होंने जल सेना विकसित की।

भव्य मंदिर और कांस्य मूर्तियाँ

तंजावुर और गंगईकोण्डा-चोलापुरम के राजराजा और राजेंद्र द्वारा बनाए गए मंदिरों में अद्भुत शिल्पकला और मूर्तिकला देखी जा सकती है।

चोल के मंदिर अकसर अपने चारों ओर के निर्णयों का केंद्र थे। यह कला के उत्पाद के केंद्र थे। इन मंदिरों को भूमि अनुदान के रूप में शासकों और अन्य लोगों से मिलती थी। इस भूमि से हुई पैदावार से मंदिर में कार्य करने वाले सभी लोग और कभी-कभी पास रहने वाले - पुजारी, फूलमाला बनाने वाले, रसोइए, सफाई करने वाले, संगीतकार, नर्तक इत्यादि, का भरण-पोषण किया जाता था। मंदिर न केवल पूजा-अर्चना का स्थान था, बल्कि आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का केंद्र भी था।

चित्र 11.4 चोल कालीन कंस्य मूर्ति जिसका अलंकरण बड़ी सावधानी के साथ किया है।

मंदिर के साथ जुड़ी कलाओं में कांसे की मूर्ति तैयार करना सबसे विशिष्ट कार्य था। चोलों की कांसे की मूर्तियाँ विश्व की बेहतरीन मूर्तियाँ मानी जाती हैं। अधिकतर मूर्तियाँ भगवान की बनाई जाती थीं लेकिन कभी-कभी भक्तों की मूर्तियाँ भी बनाई जाती थीं।

कृषि और सिंचाई (Agriculture and Irrigation)

चोल की अधिक उलपब्धियाँ कृषि में नई उन्नति के कारण संभव हो सकी। मानचित्र -2 को फिर से देखें। ध्यान दें कि बंगाल की खाड़ी में मिलने से पहले कावेरी नदी कई छोटी-छोटी धाराओं के रूप में बँट जाती है। इनमें अधिकतर बाढ़ आती है और उपजाऊ मिट्टी इनके किनारों पर इकट्ठा होती है। इनका पानी खेती के लिए आवश्यक नमी भी उलपब्ध कराता था, विशेषतौर पर धान की खेती के लिए।

SCERT TELANGANA

चित्र 11.5 तमिलनाडु में नवीं शताब्दी जलनिकासी फाटक यह एक तालाब के पानी को नियमित कर चैनल (Channel) को भेजता था। जिसके खेत की सिंचाई हीती थी।

हालाँकि कृषि तमिलनाडु के दूसरे हिस्सों में पहले ही विकसित हो चुकी थी, केवल छठी या सातवीं सदी में यह क्षेत्र बड़े पैमाने पर खेती के लिए खुला। कुछ क्षेत्रों में जंगलों की कटाई करनी पड़ी, कुछ जगहों पर भूमि को समतल करना पड़ा। डेल्टा क्षेत्र में बाढ़ से बचने के लिए ऊंची दीवार बनाई गई और खेतों तक पानी पहुँचाने के लिए नहरों का निर्माण किया गया। कई क्षेत्रों में एक वर्ष में दो फसलें उगाई जाती थीं।

कई मामलों में खेतों में फसलों के लिए कृत्रिम तरीके से पानी पहुंचाया जाता था। सिंचाई के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग किया जाता था। कई जगहों पर कुएँ खोदे गये थे। अन्य स्थानों पर बारिश का पानी एकत्र करने के लिए विशाल टैंकों का निर्माण किया गया था। यह याद रखना जरूरी है कि सिंचाई के काम में योजना – मज़दूरों और संसाधनों को व्यवस्थित करना, इन कार्यों का रखरखाव करना और पानी कैसे बाँटा जाये, इस बारे में फैसला करना आवश्यक होता है। अधिकतर नए शासक एवं गाँव में रहने वाले लोगों ने इन कार्यों में सक्रिय रुचि लेते थे।

साम्राज्य का प्रशासन

(The administration of the Empire)

प्रशासन को कैसे व्यवस्थित किया जाता था? राजा के पास सहायता के लिए मंत्री परिषद होती थी। उसके पास ताकतवर सेना और नौसैना थी। साम्राज्य को मंडल तथा तालुकों में और फिर इन्हें वालानाडुओं और नाडुओं में विभाजित किया गया।

किसानों की समस्या के निबटारे को ऊरू कहा जाता है, जो कृषि सिंचाई के विस्तार के साथ उन्नत बन गये। इस तरह गांव के समूह की विशाल इकाई बनी, जिसे नाडु कहा जाता था। ग्राम परिषद् और नाडु ने कई प्रशासनिक कार्य किये, जिसमें न्याय करना और कर प्राप्त करना शामिल था।

वेल्लाला जाति के धनी किसानों का नाडु पर अच्छा नियंत्रण था, जिसे वे केंद्रीय चोल सरकार की निगरानी में करते थे। चोल राजाओं ने छोटे अमीर जमीनदारों को मुवेंदावेलन (वेलन या तीन राजाओं की

सेवा करने वाला किसान), अरैय्यार (मुखिया), इत्यादि उपाधिया दे रखी थी और उन्हें केंद्र की ओर से राज्य में मुख्य कार्यालय सौंपा गया था।

भूमि के प्रकार (Types of Land)

चोल शिलालेखों में भूमि के कई प्रकारों का वर्णन किया गया है।

वालांवगाई – गैर ब्राह्मण किसानों की भूमि

ब्रह्मदेया – ब्राह्मणों को अनुदान में दी गई भूमि

बालाभोग– स्कूल को बनाए रखने की भूमि

देवदाना, तिरुनामाट्टुक्कानी– मंदिरों को भेंट की गई भूमि

पाल्लिच्छान्दम– जैन संस्थाओं को दान में दी गई भूमि।

हमने यह देखा कि ब्राह्मण अक्सर भूमि अनुदान या ब्रहादेय प्राप्त करते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि कावेरी की घाटी में ब्राह्मणों का प्रवासन बढ़ने लगे विशेष कर भारत के दक्षिण में।

प्रत्येक ब्रह्मदेय देखभाल एक विशिष्ट ब्राह्मण जमींदार की सभा करता था। वे सभाएँ बड़ी कुशलता के साथ जमींदारी का कार्य संभालने लगे। उनके निर्णय शिलालेखों व मंदिरों की दीवारों पर लिखे हुए देखे जा सकते हैं। नगरम नाम से ये व्यापारिक संस्थाएँ कस्बों में प्रशासनिक कार्य भी करती थी।।

सभा किस प्रकार आयोजित की जाती थी, इसका विवरण तमिलनाडु के चंगलपट्टु जिले में उत्तरमेरुर शिलालेख में है। सभा में सिंचाई, कार्य, चमन मंदिरों की सुरक्षा हेतु विशेष समितियाँ थीं। इन समितियों के सदस्यों के नाम ताड़ के पत्तों पर लिखे जाते थे। सभी पत्ते घड़े में डालकर एक छोटे बालक से एक–एक पत्ता निकलवाकर समितियाँ बनाई जाती थीं।

शिलालेख और लेख

सभा के सदस्य कौन होते थे, उत्तरा मेरूर शिला निम्न विषयों की जानकारी देता है।

सभा का सदस्य बनने के लिए कर युक्त भूमि का मालिक होना आवश्यक था। उसका अपना मकान भी होना आवश्यक था।

उनकी आयु 35 से70 वर्ष के बीच होनी चाहिए।

उन्हे वेदों का ज्ञान होना भी आवश्यक था ।

साथ ही शासन की जानकारी और ईमानदार पड़ता था।

यदि कोई सदस्य पिछले तीन वर्षो से किसी समिति में सदस्य रह चुका हो तो वह अन्य समिति का सदस्य नहीं बन सकता।

पिछला लेखा–जोखा और उनके सगे संबंधियों की विस्तृत जानकारी न बताने वाले और उनके सगे संबंधी चुनाव में भाग नहीं ले सकते

- क्या इन सभाओं में महिलाएँ भाग लेती थीं? इन समितियों के सदस्यों को लॉटरी के द्वारा चुना जाना कहाँ तक उपयोगी होगा? शिलालेख हमें राजाओं और शक्तिशाली व्यक्तियों के बारे में बताते हैं। यहाँ बारहवीं शताब्दी के तमिल भाषा में लिखित पेरियपुराणम शिलालेख के द्वारा यह पता चलता है कि राजा एवं शक्तिशाली योद्धाओं के साथ साथ सामान्य जनता का रहन सहन कैसा था।

SCERT TELANGANA

आदनुर गाँव के बाहरी क्षेत्र में **'पुलयास'** का एक छोटा उपग्राम था, जहाँ घास की छत के नीचे छोटी झोपड़ियों में कृषि श्रमिक रहते थे जो उनके मकानों के सामने मुर्गी के बच्चे झुंड में घूमते थे तथा लोहे के काले कड़े धारण किये हुए काले बच्चे छोटे शवाक से खेलते थे। एक महिला मजदूर अपने बच्चों को मरेड़ू (अर्जुन) पेड़ों की छाया के चमड़े के टुकड़ों पर सुलाती थी। वहाँ आम के वृक्ष भी थे जिनकी शाखाओं से डपलियाँ लटकते थे तथा नारियल के पेड़ों की छाया में जमीन के खोखल में कुतिया पिल्ले को जन्म देती थी। लाल कलगी वाले मुर्गे भोर होने से पहले हट्टे-कट्टे पुलैयार (Pulaiyar) को उनके काम के लिए पुकारते थे। और दिन में धान से भूखा निकालते समय कंजी पेड़ के नीचे घुँघराले बालों वाली पुलैय्या महिलाएँ गाना गाती थीं।

* गांवों में आयोजित सभी कार्यक्रमों का विवरण दीजिए

मुख्य शब्द :

1. सामंत　2. मंदिर　3.नाडु
4. सभा　5. राज्य　6. सुल्तान

हमने क्या सीखा?

1. त्रिपक्ष युद्ध में किस-किस ने भाग लिया?
2. चोल साम्राज्य में सभा समिति के सदस्य बनने के लिए कौन सी योग्यताएँ होनी चाहिए?
3. चाहमन शासकों के अधीन दो मुख्य नगर कौन से थे?
4. राष्ट्रकुट शक्तिशाली कैसे बने ?
5. जनता की स्वीकृति के लिए नए राज्यों ने क्या किया?
6. तमिल प्रांत में सिंचाई के विकास के लिए किस तरह के कार्य किये गये?
7. चोल राजाओं के मंदिरों से संबंधित कार्यक्रम कौन से थे?
8. उत्तरमेरूर के चुनाव एवं आज के पंचायत राज चुनाव में क्या अंतर है?
9. प्राचीन मंदिरों के चित्र एकत्रित कर अलबम बनाइे।
10. कृषि और सिंचाई शीर्षक के पहले दो अनुच्छेद पढ़िए और उस पर टिप्पणी कीजिए।

परियोजना कार्य:

1. मानचित्र 1 को देखकर यह बताइए क्या तेलंगाणा में कोई **साम्राज्य था**?
2. इस पाठ में **बताये गये** मंदिर तथा आपके प्रांतों में स्थित आज के मंदिरों की तुलना करके उसमें **समानता** और अंतर को बताइए
3. वर्तमान में वसूल किए जाने वाले करों का विवरण दीजिए क्या ये नगद अथवा वस्तु या **श्रम सेवा** के रूप में वसूल किए जाते है ?

SCERT TELANGANA

अध्याय 12

काकतीय-स्थानीय साम्राज्य का उद्भव
(The Kakatiyas - Emergence of a Regional)

शायद आपने ब्रह्मनायुडु, बालचंदुडु और 66 नायकों की बहादुरी की कथाएँ एवं काव्यकथाएँ सुनी होगी। आपने सम्मक्का और सारक्का जातरा में भी भाग लिया होगा। उन्होंने जनजाति के लोगों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए राजाओं से युद्ध किया था। आपने काटम राजु से संबंधित उस चर्चित कहानी का भी आनंद उठाया होगा, जिसमें उन्होंने चरवाहों के अधिकारों के लिए नेल्लूर राजाओं से युद्ध किया था।

- अपने माता-पिता और बड़े-बुढ़ों से पलनाटी योद्धाओं, सम्मक्का, सारक्का तथा काटम राजु के बारे में कथाओं को जानिए। इन कहानियों को कक्षा से जोड़िए।

ये सभी कहानियाँ 1000 ई. से 1350 ई. कालीन है। यह हमारे इतिहास का अत्यंत महत्वपूर्ण काल था। इससे पूर्व के अध्याय में हमने पढ़ा कि किस तरह भारत में शासन करने वाले नये परिवारों का उद्भव हुआ। ये शासक कृषि गाँवों के छोटे साम्राज्यों की स्थापना करने और अपने अनुयायी समूहों को कृषकर्ता के रूप में स्थापित करते। ये महत्वाकांक्षी योद्धा और सम्राट हमेशा एक-दूसरे से निरंतर युद्ध करते थे। इस तरह की मध्यावस्था में वरंगल में काकतीय साम्राज्य का उद्भव हुआ।

यह वही समय था जब तेलुगु की प्रथम पुस्तकें लिखी गयी थी। पारंपरिक तौर पर श्रीमद्-आंध्र महाभारत तेलुगु का प्रथम काव्यमय कार्य था। जो 1000 ई.और 1400 ई.के बीच कवित्रयमु कवियों की त्रिमूर्ति-नन्नया, तिक्कना और एर्रा प्रगड़ा के द्वारा रची गयी थी।

हमारे पास कई शिलालेख (बायम्मा, हजारा स्थम्ब मंदिर, नगुलापाडु, पिलालमारी, पालमपेट, कोण्डापर्ती, भूतपूर्व) जो हमें राजाओं, रानियों, प्रमुखों,कृषकों, अनुयायियों तथा व्यापरियों के बारे में बताते हैं। हमारे पास तेलुगु और संस्कृत में लिखी पुस्तकें भी हैं। काकतीय शासन के समय विद्यानाथ ने 'प्रतापरुद्र यशोभूषणम' नामक ग्रंथ लिखा। कुछ लिखित कार्य उनके शासनोपरांत लिखे गये।(बिनुकोंड वल्लभाचार्य कृत कीधाभीराममु, एकारनत कृत प्रताप रुद्र चरितम)।

चित्र 12.1 कीर्ति तोरण- वरंगल के काकतीय शासकों द्वारा निर्मित स्वयंभू शिव मंदिर का प्रवेश द्वार

SCERT TELANGANA

- उक्त अनुच्छेद पढ़ने के उपरांत क्या आप बता सकते हैं कि काकतीय शासकों की जानकारी देनेवाले दो मुख्य स्रोत क्या हैं?

शिलालेखो और साहित्य से पता चलता है कि काकतीय दुर्जय वंश से संबद्ध थे। उन्होंने तेलुगु को दरबारी भाषा के रूप में स्वीकार किया। अधिकांशतः उनके शिलालेख तेलुगु में हैं और उन्होंने स्वयं को आंध्र राजा बताया है। वे तीनों प्रांतों जहाँ तेलुगु बोली जाती है-तटीय प्रांत, तेलंगाणा प्रांत और रायलसीमा प्रांतों को समीप लाने का काम किया था। इस तरह वे तेलुगु प्रांत को समीप लाना चाहते थे और कुछ सीमा तक वे सफल भी हुए इसलिए आज भी इस प्रांत में उन्हें याद किया जाता है।

महत्वपूर्ण काकतीय शासक

प्रोला II	(1116 - 1157ई.)
रुद्रदेव	(1158 - 1195ई.)
गणपितदेव	(1199 - 1262ई.)
रुद्रमादेवी	(1262 - 1289ई.)
प्रतापरुद्र	(1289 - 1323ई.)

वंश के प्रारंभिक सदस्यों ने अपना पेशा कर्नाटक प्रांत में शासन करनेवाले राष्ट्रकूट और चालुक्य राजाओं के यहां योद्धाओं और सामंतों के रूप में हुआ। वे गाँव के मुखिया के रूप में आरंभ किया। पद पर आसीन थे और अपने सैन्य कौशल के कारण सैन्य प्रमुख तथा सामंत आदि बने और उन्होंने तेलंगाना प्रांत के अनमकोंडा पर पूरी तरह से नियंत्रण पा लिया। पश्चिमी चालुक्यों के पतन के बाद काकतीय शासक स्वतंत्र शासकों के रूप में प्रकट हुए।

रुद्रदेव के शासन के समय (1158 ई.-1195 ई.) अनमकोंडा से राजधानी बदलकर ओरुगल्लु (वरंगल) कर दी गई। नया शहर बनाने का उद्देश्य अधिक मात्रा में जनसंख्या के लिए आवास की व्यवस्था तथा शाही राजधानी की आवश्यकताओं की पूर्ति करना था । रुद्रदेव ने एक बड़ा किला,एक तालाब, एक मंदिर जिसका नाम हज़ार खंभा मंदिर का निर्माण हनमकोण्डा में किया।

ओरुगल्लु किले का मानचित्र देखिए। आप देख सकते हैं कि किले की बाहरी दीवार चार गेटों के साथ निर्मित है। ये किले के भीतर कृषि और पानी के टैंक की सुरक्षा के लिए होती है, इस क्षेत्र कई कलाकारों के कुटिया थी। जिनमें टोकरी बनाने वाले कारीगर रहते थे। इन्हें पार करने के बाद ठीक बीच में जब पहुँचते हैं, जहाँ एक खंदक और मिट्टी से बनी किले की दीवार थी।

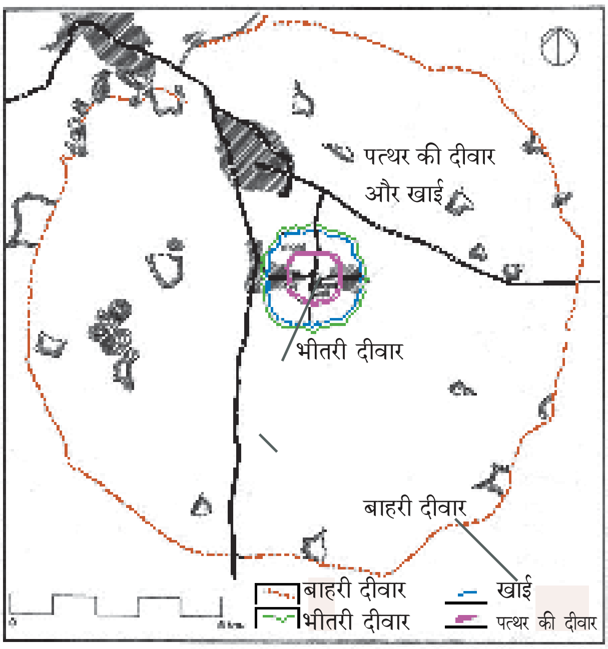

मानचित्र 1 . ओरुगल्लु का किला

SCERT TELANGANA

यदि आप मध्य की ओर आगे बढ़ें तो एक और खंदक और पत्थर की बनी दीवार पाएँगे। नगर के भवन और महल इसी पत्थर की दीवार के भीतर थे। इसके चार द्वार थे। जो पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में खुलते हैं। हर द्वार से मुख्य सड़क शहर के बीचों बीच तक जाती थी। जहाँ स्वयंभू शिवजी का मंदिर था। इस मंदिर के भी चार द्वार थे, जो चार दिशाओं में खुलते थे।

शहर अपने आप में कई हिस्सों या वादास में विभाजित था। व्यवसाय विशेष के लोग अपने विशेष हिस्सों या वड़े में रहते थे।

- क्या तुम अपने गांव या शहर का मानचित्र उतार कर उसकी तुलना ओरुगल्लु के मानचित्र से कर सकते हो?
- तुम्हें आज के गांवों और शहरों की तुलना पुराने समय के ओरुगल्लु से करने पर क्या अंतर दिखाई दिया?
- स्केल की सहायता से पूर्व से पश्चिम तक शहर की बाहरी दीवार की चौड़ाई का पता करो।
- उसी तरह भीतरी पत्थर से बनी दीवार को मापते हुए उत्तर से दक्षिण तक आन्तरिक शहर की चौड़ाई पता करो।
- अगर तुमने वरंगल शहर देखा है तो अपने सहपाठियों चर्चा बताओ।
- स्वयंभू शिव काकतीयों के कुल देवता थे । शहर के बीचों बीच महल या बाज़ार की जगह मंदिर क्यों बनवाया गया होगा?

जैसे-जैसे काकतीय शक्तिशाली बनते गये वे कई मुखिया पर उन्हें राजा स्वीकार करने के लिए दबाव डालने लगे। काकतीय अपने अनुयायियों को सामंतों, योद्धाओं और मुखिया से बचाते थे। किसी नगर पर आक्रमण करना हो तो उन्हें भी साथ ले जाते थे। कई सामंत उनसे स्वतंत्र भी होना चाहते थे किंतु काकतीय सेना भेज कर उन्हें बंदी बना लेते थे।

रुद्रमा देवी

क्या कभी तुमने वीरांगना रुद्रमा देवी का नाम सुना है? उसने अपनी योग्यताओं के बल पर शक्तिशाली व सफल शासक के रूप में सभी को प्रभावित किया। रुद्रमा देवी ने ओरुगल्लु (आधुनिक वरंगल) पर शासन किया। वह काकतीय वंशज थी। उन्होंने 1262 ई. से 1289 ई. तक लगभग 27 वर्षों तक शासन किया। हमारे देश में बहुत ही कम वीरांगनाएँ हुई हैं। बहुत पहले दिल्ली में भी नारी शासक रज़िया सुलताना ने कुछ वर्षों तक शासन किया था। किंतु वहाँ के सरदार एक स्त्री को शासिका के रूप में पसंद नहीं करते थे इसलिए उन्होंने उसकी हत्या कर दी। इटली के प्रसिद्ध यात्री

चित्र 12.2 रुद्रमा देवी – घुड़सवारी करते हुए (हैदराबाद में आधुनिक प्रतिनिधित्व)

SCERT TELANGANA

मार्कोपोलो ने रुद्रमा देवी के साम्राज्य का भ्रमण किया। उसने बताया कि वह निर्भय, पुरुष के समान परिधान पहनने तथा सहजता से घुड़सवारी करने वाली थी। वास्तव में उनके शिलालेखों में रूद्रमा देवी स्वयं को रुद्रदेव महाराज बतलाती है। रजिया सुलताना के समान उन्हें भी अपने पिता के अधीन कार्य करने वाले प्रधानों का विरोध झेलना पड़ा, किंतु रुद्रमा देवी उन्हें नियंत्रित करने में सफल हुई। रुद्रमा और उनके पौत्र प्रतापरुद्र ने कई विद्रोहों का सामना किया और इन प्रधानों को नियंत्रित करने के लिए कई कदम उठाए। लेकिन उनका एक सहायक अधिकारी कायस्थ अम्बादेव ने उनके विरुद्ध आन्दोलन किया। नलगोण्डा जिले के चदूपट्ला में यह युद्ध हुआ, उसमें रुद्रमादेवी ने अपने प्राण गाँव दिए।

चित्र 12.3 मिट्टी की दीवार का भीतरी हिस्सा (सूखा) दायीं और बायीं ओर खंदक के साथ

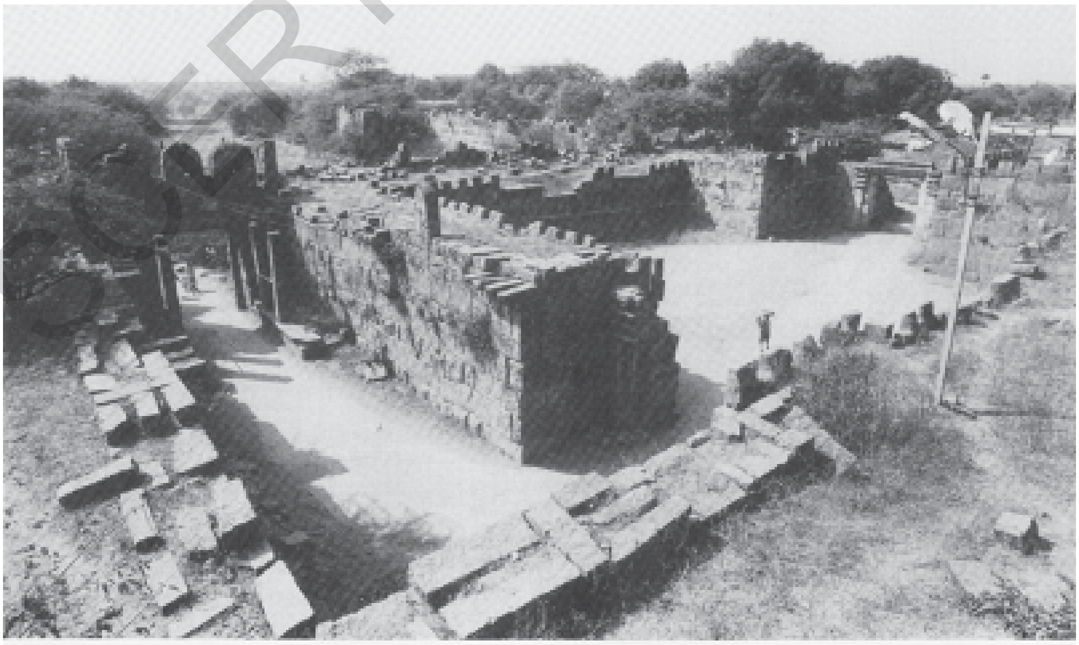

चित्र 12.4 पत्थर से बनी दिवार का आकाशी दृश्य जिसमें पूर्वी द्वार (benttetrace) तथा खुला आंगन दिखाई दे रहा है। (वेंकादर) महान नगर द्वार का प्रवेश द्वार जो दाई ओर है (महान शहर द्वार) राज्य मार्ग की ओर बढ़ता है। (राजा मार्गम्बु)

SCERT TELANGANA

नयंकर व्यवस्था (Nayankara System)

रुद्रमादेवी और प्रतापरुद्र ने ऐसे कई कुशल योद्धाओं को प्रोत्साहित किया जो शक्तिशाली परिवार से नहीं थे किंतु महारानी और महाराज के विश्वास पात्री थे। उन्होंने उन्हें कुछ पद एवं नायक उपाधि देकर सम्मानित किया। उन्हें कई गाँव भी दिये गये जहाँ से वे कर वसूल कर। इन गांवों को उनके नयंकर कहते थे। हर नायक का यह दायित्व होता था कि वे अपने राजा की सेवा के लिए नयंकर सबसे वसूल कर उसमें निर्धारित सेना की व्यवस्था करे। किंतु ये गांव हमेशा उनके अधीन में नहीं होते थे, बल्कि राजा की इच्छा पर नायकों का स्थानांतरण, नई जगह पर कर दिया जाता था। ये नायक राजा या रानी पर निर्भर रहते थे। उनके विश्वासपात्र होते थे। इनका इस्तेमाल कभी-कभी विद्रोह करने वाले प्रधानों के दमन के लिए किया जाता था। इस व्यवस्था को नयंकर व्यवस्था कहते थे।

रुद्रमादेवी के एक नायक द्वारा लिखवाये गये शिलालेख का यह अंश पढ़िए :

"वर्ष *(1270 ई.)* के संक्रांति के अवसर पर बोल्लीनायक जो एक काकतीय रुद्रदेव महाराज के लिए द्वार का संरक्षक, अपने ही नयंकर में दस माप ज़मीन क्रंजा गाँव के भगवान कल्याण केशव के मंदिर के नौकरों को अपने राजा रुद्रदेव महाराज की तरक्की के लिए दी।

- बोल्लीनायक ने रुद्रमादेवी को क्यों रुद्रदेव कहा होगा?

चित्र 12.5 शिव को समर्पित महान मंदिर के अवशेष

कृषि तथा मंदिरों को प्रोत्साहन

(Encouragement to Agriculture and Temples)

काकतीयों ने जमीन के बहुत बड़े क्षेत्र में सिंचाई के उद्देश्यों से तालाबों का निर्माण करवाया तथा कुंओं की खुदाई करवायी। राज परिवारों तथा जागीरदार परिवारों के अलावा समाज के अन्य अमीर वर्ग के व्यवसायों के लिए तालाबों का निर्माण करवा कर कृषि का विस्तार किया। इससे तेलंगाना और रायलसीमा आदि क्षेत्रों में सिंचाई होने लगी।

काकतीय राजा बड़ी मात्रा में दान करके मंदिरों के प्रति अपनी श्रद्धा दर्शाते थे। राजपरिवार की स्त्रियाँ जैसे मुप्पामबा और मैलम्मा ने भी भूमि दान दी। अन्य धनी वर्ग की स्त्रियों ने मंदिरों और ब्राह्मणों को ज़मीन,

चित्र 12.6 रामप्पा मंदिर

SCERT TELANGANA

तालाब, नकदी, पशु, आभूषण आदि दान में दिये। कृषि को बढ़ावा देकर वे आय के स्त्रोतो के रूप में उनसे कर और कृषि उत्पादन वसूलते थे।

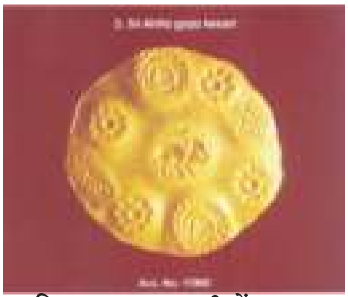

चित्र *12.7* काकतीयों द्वारा प्रचलित सोने का सिक्का

व्यापार (Trade)

सैनिक, प्रधान और राजा अपनी आय के स्रोतों से उन व्यापारियों से कर वसूलते थे जो मुख्यतः बन्दरगाहों से समुद्री व्यापार करते थे। काकतीय राजा गणपति देव के द्वारा मोटुपल्ली नामक गांव में लिखवाये गये शिलालेख का एक भाग पढ़िए।

" यह अभय शासन जो गणपति देव ने उन व्यापारियों को प्रदान किया जो विदेशी व्यापार के लिए एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीपों, देशों और नगरों को जाते हैं। प्राचीन काल में जो जहाज तूफ़ान में फंस जाते हैं और क्षतिग्रस्त होकर किनारे तक पहुँचते उन जहाजों के व्यापारियों की संपत्ति (सोना, घोड़े, हाथी, आभूषण आदि) बलपूर्वक लूट ली जाती थी। किंतु अब हम अपनी प्रतिष्ठा और पुण्य और उन लोगों के लिए जो अपने जीवन को जोखिम में डालने वाले यात्रियों पर दया करते हैं, उपभोगी कर को छोड़कर सभी कर हटा दिये गये।

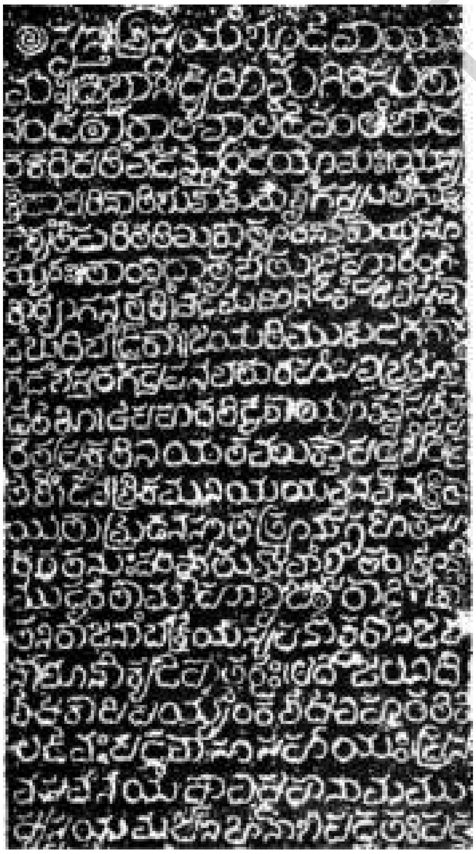

चित्र 12.8 **मोटुपल्ली स्तंभ पर शिला लेख**

शिलालेखों में उन करों का उल्लेख है जो व्यापारियों पर अलग-अलग वस्तुओं के व्यापार के लिए लगाया जाता था।

- प्राचीन काल में राजा व्यापारियों के साथ कैसा व्यवहार करते थे?
- गणपति देव ने व्यापारियों को क्या आश्वासन दिया था?
- राजा गणपति देव विदेशी व्यापारियों को सुरक्षा क्यों प्रदान करते थे?

मार्कोपोलो जो इनमें से एक बंदरगाह गया था कहता है कि यहाँ हीरे और दिखाई देनेवाले सर्वश्रेष्ठ मकड़ी के जाले की तरह महीन कपड़े का निर्यात होता था। उसने यह भी कहा – "शायद ही विश्व में कोई ऐसा राजा या रानी होंगे जो इस कपड़े को पहनकर प्रसन्न न होते हों"।

काकतीयों का पतन

1190 ई. के आस पास दिल्ली में नए साम्राज्य की स्थापना हुई। नए राजाओं को सुल्तान कहा जाता था। ये मूलरूप से तुर्किस्तान से आए थे। उनके पास ऐसी शक्तिशाली सेना थी कि उत्तर और दक्कन के अधिकतर राजाओं को पराजित करने की क्षमता रखते थे। 1323 ई. में सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक ने काकतीय राजा प्रतापरुद्र देव को पराजित किया। इस तरह काकतीय साम्राज्य का अंत हुआ।

TELANGANA

कुछ वर्षों बाद कर्नाटक में दो नये राज्य स्थापित हुए। जिन्हें बहमनी और विजयनगर साम्राज्यों के नाम से जाना जाता है। इनके बारे में हम अगले अध्याय में अध्ययन करेंगे।

पलनाटी वीर – वह नायक जिसने जाति-प्रथा समाप्त की।

1350 ई में श्रीनाथ द्वारा रचित पलनाटी वीरुला कथा से यह समझने में सहायता मिलती है कि कैसे कई योद्धाओं में एकता स्थापित हुई, इसका मुख्य पात्र बालचंद्रुडु के पास समर्पित साथियों और विभिन्न वर्गों की सेना की टुकड़ी थी। इसमें एक ब्राह्मण था जबकि अन्य, एक लोहार, एक सुनार, एक धोबी, एक कुम्हार और एक नाई था। जो उनके सेवक और कलाकार वर्ग में से थे। बालचंद्रुडु और उनके साथी आपस में इतने समर्पित थे कि वे एक दूसरे को सोदरुलु (भाई) कहते थे। युद्ध में जाने से पहले बालचंद्रुडु की मां ने सभी भाईयों के लिए अपने हाथों से भोजन बनाया। सभी को अलग-अलग थाली (मिट्टी, कास्यं, पत्ता आदि) में परोसा। तब इस भेद पर उसके बेटे ने कहा कि युद्ध में जाने वालों में वर्ग भेद नहीं करना चाहिए। इसके बाद सभी भाई वर्ग भेद मिटाने के लिए एक-दूसरे के थाली में से खाते थे। इस व्यवहार ने प्रचलित परंपरा को तोड़कर इनकी पहचान को आपसी भाग्य से जोड़ दिया।

मुख्य शब्द :

1. योद्धा
2. नयंकर व्यवस्था
3. सामन्त
4. कलाकार

हमने क्या सिखा?

1. आधुनिक युग की सेना के बारे में आप क्या जानते हैं, इनकी तुलना प्राचीनकाल के योद्धाओं से कीजिए। दोनों में क्या अंतर दिखाई पड़ता है?
2. काकतीय समय के राजाओं और मंत्रियों ने कृषि की उन्नति के लिए जलाशय का निर्माण करवाया। यदि वे आज शामन करते तो उन जलाशयों का क्या उपयोग है?
3. आपके विचार में काकतीय राजाओं ने सरदारों पर कैसे नियंत्रण किया?
4. काकतीयों ने शक्तिशाली नायकों को सरदार के रूप में क्यों नियुक्त नहीं किया?
5. उन दिनों महिलाओं का शासन करना क्यों मुश्किल था? क्या आज स्थिति अलग है? कैसे?
6. उन दिनों शक्तिशाली व्यक्तियों की अपनी खुद की ज़मीन होती थी, वे दूसरे किसानों व्यापारियों और कालाकारों से कर वसूल करते थे। क्या शक्तिशाली लोग आज ऐसा कर सकते हैं? कारण बताइए।
7. नयंकर पद्धति अनुच्छेद पढ़िए और टिप्पणी कीजिए।
8. महिलाएँ भी प्रशासन अच्छी प्रकार संभाल सकती है। क्या आप इससे सहमत है? क्यों?

परियोजना कार्य :

1. तीन में से किसी एक कहानी पर संक्षिप्त नाटक का प्रस्तुतीतकरण तैयार करें।
2. अपने गांव या शहर में उद्भव हुए तथ्यों एवं घटनाओं को एक तालिका के रूप में प्रस्तुत करें।
3. अपने इलाके के किसी पुराने मंदिर को जाएँ और पता लगायें कि उसे किसने और कब बनवाया और शिलालेख हो तो उसे देखने का प्रयास करें।

SCERT TELANGANA

अध्याय

13 विजयनगर साम्राज्य के शासक
The Kings of (Vijayanagara)

पिछले अध्याय में हमने योद्धाओं व सामंत राजाओं ने किस तरह गाँवों को अपने अधीन कर लिया था और उनको काकतीय़ राजाओं ने कैसे अपने अधीन कर एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की, यह जाना। दिल्ली सुलतानों के द्वारा वरंगल पर विजय पाते ही काकतीय साम्राज्य का पतन हो गया। बाद में नये योद्धा परिवारों ने एक नए विशाल साम्राज्य की स्थापना की वही विजयनगर साम्राज्य या कर्नाटक साम्राज्य कहलाया।

विजयनगर का अर्थ है- 'विजय का नगर'। यह नगर तुंगभद्रा नदी के किनारे स्थित था। इतिहास के अनुसार इसकी स्थापना दो भाईयो हरिहरराय एवं बुक्काराय ने 1336CE में की। वे विद्यारण्य स्वामी के अनुयायी थे। विजयनगर के राजा विरुपाक्ष (शिव) की आराधना करते थे। विजयनगर के राजाओं ने लगभग 300 वर्षों तक शासन किया। लेकिन किसी एक ही परिवार के राजा द्वारा यह शासन नहीं चला। संगम, सलुवा, तुलवा एवं अर्वती वंश के परिवारों ने एक के बाद एक शासन किया। इनमें कुछ राजा कन्नड भाषा का उपयोग करते थे। लेकिन कृष्णदेवराय ने तेलुगु को समुचित महत्व प्रदान दिया।

तुंगभद्रा नदी के उत्तरी भाग में कुछ नये राज्य उत्पन्न हुए जो बहमनी राज्य कहलाये। आरंभ में यह एक बड़े राज्य की तरह स्थापित हुआ जिसकी राजधानी गुलबर्गा थी। बाद में 1489CE और 1520 यह राज्य में पाँच छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित हुआ। जिनमें बीजापुर, गोलकोंडा दो बड़े राज्यों के रूप में उभरे। जिसका अधिकतर भाग आज कर्नाटक, तेलंगाना एवं आंध्रप्रदेश राज्य में हैं। इन राज्यों पर बहुत से सुलतानों एवं योद्धाओं ने शासन किया जिनमें ईरान व अरब के अधिक थे। इन सभी राज्यों ने एक-दूसरे से निरंतर युद्ध करते हुए अपने राज्य का विस्तार करने का प्रयास किया। इन्होंने स्थानीय योद्धाओं और सरदारों को नियुक्त किया जिनके बारे में हम पिछले अध्याय में पढ़ चुके हैं। इन्हीं अधिकारियों के द्वारा गाँवों में किसान, व्यापारियों से कर वसूल कर उन पर नियंत्रण स्थापित किया जाता था।

विजयनगर साम्राज्य के कुछ महत्वपूर्ण राजा

हरिहरराय	(1336-1357CE)
बुक्काराय - I	(1357-1377CE)
हरिहरराय - II	(1377-1404CE)
देवराय - II	(1426-1446CE)
सलुआ नरसिंहराय	(1486-1491CE)
श्रीकृष्णदेवराय	(1509-1529CE)
अच्युतराय	(1529-1542CE)
अलिय रामराय	(1543-1565CE)
वेंकटपति राय	(1585-1614CE)

SCERT TELANGANA

हमने कैसे जाना?

हमें विजयनगर साम्राज्य के शासनकाल की जानकारी शिलालेखों, समकालीन ग्रंथों, लिखित प्रतिलिपियों, तत्कालीन भवनों के अवशेषों आदि से मिली। इन्हें सूक्ष्म दृष्टि से देखने से उनके रहन-सहन, प्रबंध एवं सामाजिक संगठनों के बारे में जाना जा सकता है। विविध देशों से आये यात्रियों जैसे- इटली के निकोलो कोंटी 1420CE में विजयनागर आया। ईरान के शासक अब्दुल रजाक ने 1443CE में यहाँ की यात्रा की। पूर्तगाली यात्री डोमिगों पेइज़ क्रमशः 1520CE में आया तथा 1537CE में न्यूनीज ने लिखा।

विजयनगर शहर

विजयनगर शहर तुंगभद्रा नदी के किनारे बनाया गया था। जो प्राचीन मंदिर वीरुपाक्ष, पम्पादेवी आदि के पास में ही है। अब्दुल रज़ाक ने बताया है कि शहर सात घुमावदार चक्रों (रिंग्स) में सुरक्षित है। इनमे से कुछ की खोज पुरातत्व विशेषज्ञों ने की।

पुर्तगाली यात्री पेस के द्वारा किया गया शहर का वर्णन पढ़िए-

राजा ने दीवारों और मीनारों से घिरे एक बहुत ही मज़बूत शहर का निर्माण किया। ये दीवारें अन्य शहरों की दीवारों की तरह नहीं है, बल्कि सुंदर कारीगरी से बनी हुई है। आपको चौड़ी और सुंदर गलियाँ दिखाई देंगी। जहाँ सुंदर घर हैं। ये सुंदर भवन व्यापारियों के थे। यहाँ आपको रत्न, हीरे-जवाहरत, आदि का प्रयोग हुआ था, विश्व के सभी प्रकार के वस्त्र यहाँ थे। शाम में घोड़ों, सब्जियों, फलों, सागवान की वस्तुओं का मेला लगता था जहाँ इन्हें बेचा जाता था।

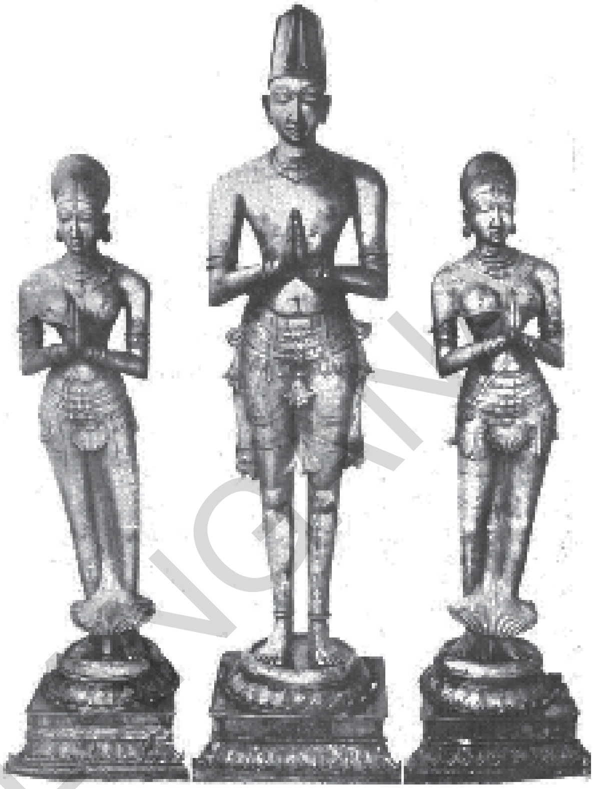

चित्र 13.1 तिरुमला मंदिर में प्रतिष्ठित श्रीकृष्ण देवराय और उनकी दोनों पत्नियों की काँस्य की मूर्तियाँ

- सब्जी, फल, घोड़ों को शाम में ही क्यों बेचा जाता था?

पुरातत्व विभाग के विशेषज्ञों के अनुसार नगर को चार भागों में विभाजित किया गया था। पहले भाग में पहाडों पर बनाए गए मंदिर। दूसरे भाग में तराई जहाँ नहरो के द्वारा भूमि की सिंचाई होती थी और तीसरे भाग में भव्य भवन , राज भवन एवं मुख्य नायकों के निवास, चौथे भाग में सामान्य जनता रहती थी। चित्र में दिखाये अनुसार प्रत्येक क्षेत्र को दूसरे से अलग किया गया था।

- विजयनगर, वरंगल शहरों के बीच अंतर और समानता को पहचानिए।

SCERT TELANGANA

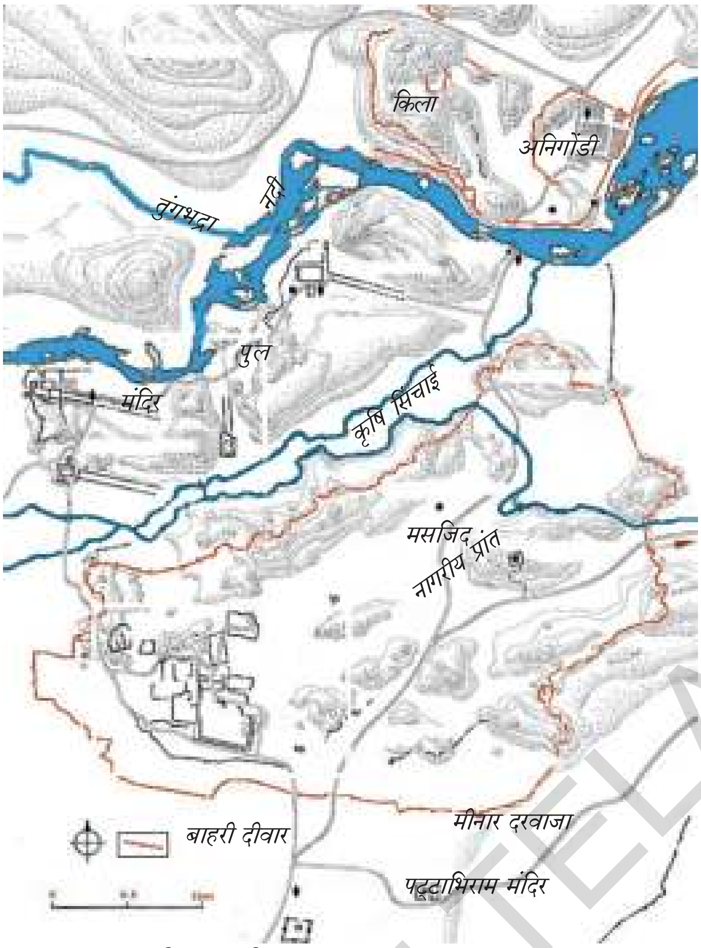

मानचित्र 1: विजयनगर शहर

- आधुनिक नगरों में इस तरह की किलो की दिवारे क्यों नहीं बनायी जा रही हैं?

सेना-सैनिक अधिकारी

(Armies and Military Leaders)

आज महा युद्ध कैसे होते हैं और शक्ति शाली सेना के बारे में भी आपने सुना और पढ़ा होगा।

- देश की सेना कैसे शक्तिशाली बन सकती है?
- आधुनिक सैनिकों द्वारा उपयोगी युद्ध सामग्री कौनसी है?

अब हम विजयनगर के राजाओं ने तत्कालीन समय में युद्ध के लिए किस सामग्री का उपयोग किया था इसे जानेंगे।

विजयनगर के राजाओं ने सैनिक शक्ति को सुदृढ़ बनाने हेतु बहुत धन खर्च किया था। वे अरब और ईरान से विशेष घोड़ों को जहाजों से पश्चिमी तट पर मँगवाते थे। उन्होंने विशाल सैनिकों की नियुक्ति की और कई मजबूत किले बनवाए। विजयनगर के देवराय II ने मुस्लिम योद्धाओं की नियुक्ति करना और अपनी सेना को नयी युद्ध नीति का प्रशिक्षण देना आरंभ । उनके लिए राजधानी में सैनिक शिविरों में मस्जिद भी बनाने की अनुमति दी थी। उन दिनों बंदूकों, तोपो का उपयोग नया था। विजयनगर शासकों ने अपनी सेना में बंदूकों और तोप का उपयोग करना आरंभ किया। भारत में आधुनिक अश्वदल, सैनिकदल दोनों को मिलाकर एक शक्तिशाली सेना तैयार की गई थी।

- उन दिनों युद्ध में तेज गति के लिए अश्वों का उपयोग किया जाता था, आज किसका उपयोग किया जा रहा है?
- हाथी धीरे-धीरे चलते है पर आक्रमण करने में कुशल होते है आज उनकी जगह किनका उपयोग हो रहा है?

('Captains of the Troops' – the Amarnayakas)

सैनिक दल के नेता-अमरनायक

पूरे राज्य पर वास्तव में इन सैनिकों का नियंत्रण एवं प्रशासन था। वे कौन थे और क्या काम करते थे आइए अब हम इसकी जानकारी प्राप्त करेंगे कि डोमिंगों पेईज़ के द्वारा लिखे गए विवरण को पढ़े जो श्रीकृष्ण देवराय के समय विजयनगर के संदर्भ में था। राजा के पास लाखों सैनिकों के अलावा *35,000* अश्वदल, किसी भी समय, कहीं पर भी युद्ध के लिए तैयार रहा करते थे। यह भय दूसरे राजाओं को हमेशा रहता था।

SCERT TELANGANA

सैनिक दल के अधिकारी उसमें कुलीनवर्गों के थे। इन्हें राज्य में ज़मीन, नगरों, गांवों पर पूरा अधिकार सौंपा गया था। इनमें कुछ अधिकारी लाखों स्वर्ण सिक्कों को कर के रूप में वसूल करते थे और कुछ दो, तीन, पांच सौ हजार सिक्के वसूल करते थे। राजा कर वसुली के अनुसार सैनिक दल के नेता को (पैदल, अश्वदल, गजदल) सेना रखने का अधिकार देता था। इन्हें कार्य के लिए हमेशा तैयार रखा जाता था। राजा इनके राजस्व कर के आधार पर सेना की सख्या निश्चित करता था। यही नहीं राजा को वार्षिक भुगतान भी देते थे। दल के नेता के द्वारा भेजी गई सेना के अतिरिक्त राजा की सेना भी रहती थी जिसका वेतन राजा ही देता था।

चित्र 13.2 हजारा रामालय का शिलारथ.

उपरोक्त अनुच्छेद ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा निम्न प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

- श्रीकृष्ण देवराय से अन्य राजा क्यों भयभीत रहते थे ?
- विजयनगर साम्राज्य के गाँव एवं नगरों पर कौन नियंत्रण करता था ?
- क्या सभी को समान आय मिलती थी?
- नेता को गांवों के बदले में राजा के लिए क्या करना पड़ता था?
- क्या राजा नेता की सेना पर ही आधारित रहते थे ?

सेनापति को नायक के रूप में भी नियुक्त किया जाता था इन्हें ही 'अमरनायक' कहा जाता था। इन नायकों पर 'अमरा' राजस्व वसूलने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी अमरा का अर्थ है- निर्धारित प्रांत में राजस्व कर वसूल का अधिकार। अर्थात, इन्हें दिए गए गांव, नगरों से राजस्व वसूलकर उसके उपयोग का अधिकार दिया गया। इतना ही नहीं बल्कि इसी आय से सैनिक दलों के भरण-पोषण का भार भी इन पर था। इनके अधीन प्रांतों पर इन्हें शासन का अधिकार भी प्राप्त था। उन्हें न्याय संबंधी अधिकार भी प्राप्त था। अपराधियों को कठोर दण्ड देने का अधिकार भी इन्हें था। यह पद्धति दिल्ली सुलतानों के समान थी। इन्होंने भी कुलीन एवं अमीरों को 'इक्ता' नामक राजस्व कर वसूलने का अधिकार दिया था।

अधिकतर अमरनायक तेलुगु योद्धा थे। ये सैनिकों को अपने गांवों या सगोत्री लोगों में से ही नियुक्त करते थे और उन्हें प्रशिक्षण देते थे। ये सेनाएँ राजा से भी अधिक मान नायकों को ही देती थी। कई शक्तिशाली नायक जैसी सालुवा नरसिंहा या नरसा नायक जो शक्तिशाली नायक थे वे विशाल भू-भाग पर अपना अधिपत्य स्थापित कर कुछ संदर्भो में विजयनगर राजाओं

SCERT TELANGANA

को ही चुनौती दे देते थे। वास्तव मे ये इतने शक्तिशाली थे कि राजा की मृत्यु के उपरांत राज्यभार संभालकर स्वयं को राजा घोषित कर लिया।

आइए तुलना करें

आपने पढ़ा है कि चोल साम्राज्य में जमींदारों की परिषद के द्वारा गाँवों का प्रशासन किस प्रकार किया जाता था। किस प्रकार राजा इस परिषद की सहायता से राजस्व (रेवेन्यु) वसूलते थे। सेना और नायक की शक्ति बढ़ने के साथ-साथ विजयनगर साम्राज्य में भी परिवर्तन आए। आपने देखा है कि गाँवों और नगरों पर नियंत्रण का अधिकार इन नायकों को ही दिया गया था।

- 'अमरनायक' व्यवस्था के कारण गाँवों पर इसका क्या प्रभाव पड़ा? अपनी कक्षा में चर्चा कीजिए।
- छठी कक्षा में आपने पढ़ा की भारत में गांव, नगर का शासन कैसे चलाया जाता था। क्या आप इसकी तुलना विजयनगर साम्राज्य से कर अंतर बता पाओगे?

श्री कृष्णदेवराय एक महान शासक

श्री कृष्णदेवराय का शासन समय 1509 ई. से 1529 ई. तक था। वह एक शक्तिशाली सेनापति था जिसने बहमनी राजा गजपतियों के विरोध में विजयनगर सेना का संचालन और सफलता पूर्वक किया। इसने कर्नाटक, आंध्र, तमिलनाडु क्षेत्र के कई विरोधी नायकों का दमन किया। इस प्रकार सम्पूर्ण प्रान्त पर उन्होंने अपना आधिपत्य स्थापित किया। इन्होंने विशेषरूप से कृष्णा नदी के दक्षिण में और पूर्वी तट के बंदरगाहों पर नियंत्रण पाया।

इसी समय पश्चिमी तट के कुछ बंदरगाह जैसे गोवा पर पुर्तगालियों ने अधिकार किया। श्री कृष्णदेवराय ने प्रकार के घोड़े, विस्फोटक सामग्री आदि को प्राप्त करने के लिए पुर्तगालियों से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किये। इसने पुर्तगाली सेना को भी युद्ध में शामिल किया।

प्रति वर्ष विजयदशमी के दिन धूमधाम से त्योहार बनाया जाता था। साथ ही सैनिक दलों की प्रदर्शनी आयोजित की जाती थी। उस प्रदर्शनी में बहुत भारी संख्या में भाग लेकर सभी सैनिक दलों के सेनापति तथा अमरनायकों (Amarnayakas) द्वारा राजा को धन राशि समर्पित की जाती थी। श्री कृष्णदेवराय अपने दक्षिण साम्राज्य में स्थित मंदिरों पर विशेष ध्यान रखते थे। उन्होंने स्वयं तिरुपति, श्रीशैलम, अहोबिलम् आदि पुण्य क्षेत्रों के दर्शन कर अधिक मात्रा में दान-दक्षिणा अर्पित की।

श्री कृष्णदेवराय के शिलालेखों से यह मालूम होता है कि उन्होंने कई युद्धों में विजय हासिल कर प्राप्त धन राशि

चित्र 13.3 हजार रामालय का एक इसकी कहानी लिखिए झलक। क्या इन चित्रों पर आधारित लिख सकते है?

SCERT TELANGANA

चित्र 13.4 कांचीपुरम के एकांबेश्वर मंदिर का मुखद्वार

को भारत के बड़े-बड़े मंदिरों में बाँट दिया । इन देवालयों में इनकी गौरव स्मृति के लिए "रायगोपुरम्" नामक मुखद्वारों का निर्माण किया गया था। अपनी दानशीलता के कारण ये दक्षिण भारतीयों के हृदय में अंकित रह गए। इनके द्वारा विजयनगर में भी सुंदर मंदिरों का निर्माण किया गया।

श्री कृष्णदेवराय स्वयं तेलुगु साहित्य के प्रसिद्ध कवि थे। इन्होंने "अंडाल" नामक तमिल भक्त कवयित्री की जीवनी पर आधारित "आमुक्त मालयदा" नामक ग्रंथ लिखा। इनके दरबार में आठ कवि थे, जिन्हें 'अष्ट दिग्गज' कहा जाता था। धूरजटी, अल्लसानी पेदन्ना, तेनाली रामकृष्णा, नन्दी तिम्मणा, पिंगली सूरन्ना, रामराजाभूषण, माद्य्यागारी मल्लना, अय्यलाराजू, रामभद्र नामक इन आठ कवियों ने अपना स्थान अलंकृत किया था।

श्री कृष्णदेवराय के वंशज अच्युतदेवराय एवं अलियरामाराय के काल में विजयनगर राजाओं के महत्व एवं बल में बढ़ोतरी हुई। इन्होंने बहुमनी राजाओं के राज्य व्यवहार में हस्तक्षेप किया। बहमनी अकेले विजयनगर से लड़ने में असमर्थ थे। इनके निरंतर हस्तक्षेप के परिणाम स्वरूप बहुमनी पांच राजाओं ने 1565 ई. में एकजुट होकर रक्कासी तंगडी या तल्लीकोटा युद्ध में रामराय को पराजित कर विजयनगर साम्राज्य को लूटकर इसका विनाश किया। इनके वंशज ने तिरुपति के समीप चंद्रगिरि को राजधानी बनाया। लेकिन वे पूर्ववैभव को प्राप्त करने में असफल रहे। कुछ प्रांतों पर सुलतानों के आक्रमण के बाद बचे भू-भाग पर वहां के नायकों ने अपने आपको स्वतंत्र राजा घोषित कर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया।

गोलकोण्डा के कुतुबशाही (1512-1687)

कुतुबशाही कार्य	का काल
कुली कुतुबशाह	(1512-1543)
जमशेद कुली	(1543-1550)
इब्राहिम कुतुबशाह	(1551-1580)
मोहम्मद कुली कुतुबशाह	(1580-1612)
मोहम्मद कुतुबशाह	(1612-1626)
अबदुल्ला कुतुबशाह	(1626-1672)
अबदुल हसन तानशाह	(1672-1687)

पिछले अध्याय ने हमने तेलंगाणा क्षेत्र के काकतीय साम्राज्य के बारे में पढ़ा था। काकतीय साम्राज्य के समाप्ति के पश्चात उनके उप नायकों ने स्वतंत्र साम्राज्य की स्थापना की। इनमें से रचकोण्डा और देवरकोण्ड़ा अधिक बलशाली थे और उन्होंने विजयनगर साम्राज्य एवं बहमनी साम्राज्य को चुनौती दी। 1512 में तेलंगाणा क्षेत्र के बहमनी साम्राज्य के गवर्नर कुली कुतुबशाह ने स्वयं का स्वतंत्र घोषित किया और गोलकोण्डा में कुली कुतुबशाह साम्राज्य की स्थापना की। कुली कुतुबशाह ने वरंगल, कोण्ड़ापल्ली, एलुरू और राजमहेन्द्री के किलों पर विजय प्राप्त कर-कर शासन का विस्तार किया। गोलकोण्डा तेलंगाना का प्रमुख भाग था। उनके उत्तराधिकारियों ने 1687 तक शासन किया।

SCERT TELANGANA

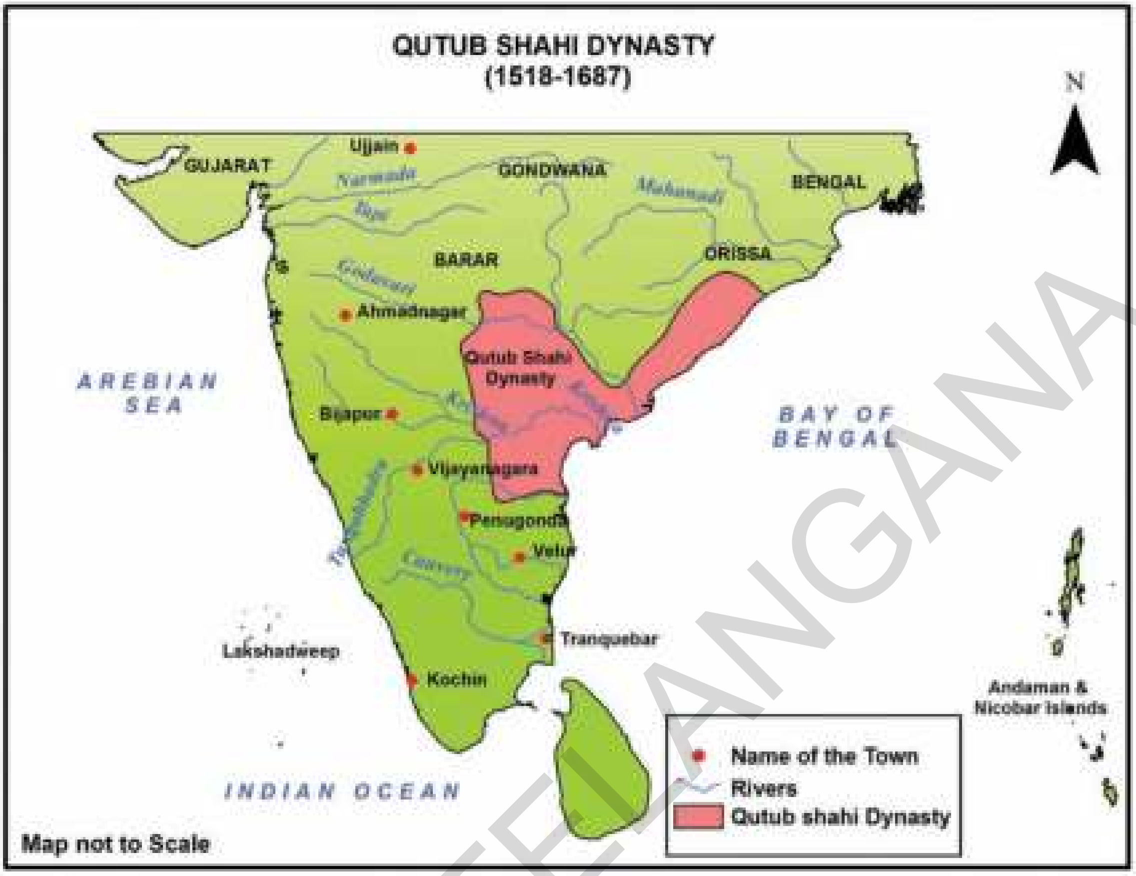

चित्र 2: कुतुबशाही साम्राज्य

काकतीय राजाओं के समान ही इब्राहीम कुली कुतुबशाह (1550-80) ने तेलुगु साहित्य को बढ़ावा दिया, ब्राह्मणों एवं मन्दिरों को सहायता दी, तथा विशाल सिंचाई कार्य में संलग्न रहा। इब्राहिम कुली कुतुबशाह के काल में प्रसिद्ध तेलुगु कवि सिंगानाचार्युडु, अंदकी गंगाधारूडु, कन्दुकुरू रुद्रकवि और पोन्नमंटी तेलागानारय्या, इब्राहिम कुली कुतुबशाही द्वारा सम्मानित किये गये। कवियों ने द्वारा इब्राहिम कुली कुतुबशाह की प्रशंसा मालकीभा–रामा के रूप में की। उन्होंने अपनी सेवा में कई नायकों को नियुक्त किया। काकतीय के प्रताप रूद्रा से विशेष रूप से योद्धा समर्थको ने सम्मान दिया। इब्राहिम ने उन्हें अग्रिम क्षेत्र में सुविधाजनक अधिकार दिया तथा बड़े किलों का नियंत्रण भी दिया।

तेलंगाना के केन्द्रीय क्षेत्र में कुली कुतुबशाह ने काकतीयों के समान सिंचाई पद्धति को अपनाना चाहा क्योंकि वह क्षेत्रीय परिस्थिति से अवगत हो चुके थे। इब्राहीम कुतुबशाह के काल में जब वे राजधानी गोलकोंडा में रहते थे उस समय उन्होंने 1562 में हुसैनसागर झील का निर्माण करवाया। उन्होंने इसका नाम हजरत हुसैन शाह वाली सूफी संत के नाम पर रखा, जिन्होंने उसे आकार देने में सहायता की। इसे कृत्रिम रूप से विकसित किया गया जिसमें वर्ष भर मूसी नदी से जल भरा रहता था। हैदराबाद के लिए यह शुद्ध पेय जल का एक मुख्य स्त्रोत बन गया। इब्राहीमपटनम का टैंक इसके द्वारा बनाया गया। यह भी समझा जाता है कि मूसी नदी पर पुराना पुल भी बनाया गया।

इब्राहिम के पुत्र मोहम्मद कुली एक अच्छे निरीक्षक थे और हैदराबाद शहर की योजनाओं एवं इमारतों को बनाने के लिए उत्तरदायी थे। इनके समय में मीर मोमीन अस्त्तरबादी हैदराबाद शहर के प्रसिद्ध शिल्पकार (वास्तु आकार देने वाला) कलाकार थे। कुली कुतुबशाह के प्रधान मंत्री के रूप में इन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

SCERT TELANGANA

इन्होंने चारमीनार के लिए नई योजनाएँ नए हैदराबाद शहर के अनुरूप तैयार की। मोहम्मद कुली कुतुबशाह ने मक्का मस्जिद और जामामस्जिद का निर्माण किया। इसका निर्माण मक्का की बड़ी मस्जिद के आकार में किया। कुली कुतुबशाह ने मक्का से लाई गई मिट्टी से ईंटे तैयार करवा कर उससे केन्द्रीय वृत खण्ड (आर्क) बनवाया और उसे मस्जिद का नाम दिया। मस्जिद के एक कमरे में हजरत मोहम्मद के बाल भी थे। कुली कुतुबशाह ने चारमिनार भी बनवाया जो हैदराबाद की जानी मानी पहचान का चिह्न है। वह स्वयं भी परशियन एवं उर्दू भाषा का कवि था। उन्हीं के योगदान के कारण दक्षिणी उर्दू को साहित्यिक भाषा का स्तर प्राप्त हुआ।

चित्र 13.5 चारमीनार

मोहम्मद कुली कुतुबशाह की पुत्री हयात बक्शी बेगम थी। उन्होंने हैदराबाद के पास हयातनगर में हयात बक्शी मस्जिद बनवायी। उन्हें माँ साहेबा भी कहते थे। मसब टैंक, माँ साहेबा टैंक का अपभ्रंश शब्द है।

अब्दुल्ला कुतुब शाह कविता एवं संगीत का प्रेमी था। उन्होंने प्रसिद्ध पदम लेखक क्षेत्रय्या को अपने दरबार में आमंत्रित कर सम्मानित किया। कुतुबशाही साम्राज्य के अब्दुल-हसन-शाह अन्तिम व सबसे प्रसिद्ध शासक थे। उन्होंने पालंचा देशा में कंचाराल गोप्पन्ना (इन्हें रामदास भी कहते थे) को तहसीलदार (कर विभाग में प्रमुख) के रूप में नियुक्त किया। रामदास ने भद्राचलम के राम मंदिर बनाने के लिए जनता से वसूल किये चंदे का उपयोग किया जिससे भगवान राम, लक्ष्मण एवं सीता की मूर्तियाँ के लिए आभूषण भी खरीदे। जनता के पैसों का इस प्रकार उपयोग किए जाने पर ताना शाह ने उन्हें जेल में डाल दिया तथा सच्चाई जानने के बाद उन्हें आजाद किया।

कुली कुतुबशाह के समय गोलकोण्डा अपने हीरे के कारण विश्व प्रसिद्ध था। उस समय मछलीपट्टनम प्रसिद्ध बन्दरगाह था जहाँ से दक्षिण पूर्वी एशिया, चीन पर्शिया, अरब और यूरोप के साथ व्यापार किया जाता था। बड़े-बड़े कारवाँ हीरे-जवाहरात, सोना, चाँदी लेकर तटीय क्षेत्र से गोलकोंडा जाते थे।

प्रसिद्ध सात कुतुब शाही शासकों की समाधियाँ हैदराबाद में गोलकोण्डा किले के पास स्थित इब्राहिम बाग में है। इनकी शैली ईरानी एवं भारतीय शैली का अद्‌भुत मिश्रित रूप है। कुली कुतुब शाह के बुर्ज (मिनार) की वास्तुकला से मुगल शासक शाहजहाँ प्रभावित हुए और सफेद संगमरमर से ताजमहल का निर्माण किया। ये पत्थरों में जटिल नक्शाकारी से बने हुए हैं तथा चारों और सुंदर बगीचों से घिरे हुए हैं।

मुगल, इब्राहिम कुतुबशाह के समय से ही उस संपन्न साम्राज्य पर जीत प्राप्त की तक में थे तथा 1687 में औरंगजेब के नेतृत्व में गोलकोण्डा पर विजय प्राप्त की।

मुगलों ने कुतुबशाहियों की समावेशी नीति (इन्क्लुसिव पॉलिसी) को नहीं अपनाया और स्थानीय लोगों को अधिकार से हटा कर बाहर से लोगों को लाकर नियुक्त किया उन्होंने अधिक कर प्राप्त करने का प्रयत्न किया। कर ठेकेदारी प्रणाली को अपनाया। इस व्यवस्था के

SCERT TELANGANA

अन्तर्गत सरकार ने कर जमा करने के लिए नीलामी पद्धति को अपनाया जिसमें उस क्षेत्र के कर को जमा करने का अधिकार ऊँची बोली बोलने वाले को अधिकार दिया जाता था। ये अधिकतर उस क्षेत्र के शक्तिशाली लोग या साहूकार होते थे तथा किसानों और कलाकारों के अधिक आय प्राप्त करने के विरोधी थे। यह व्यापक असंतोष, अकाल, स्थानांतरण तथा जनसंख्या में पतन का कारण बना।

चित्र 13.6 गोलकोण्डा किला

- कुतुबशाही साम्राज्य के मानचित्र को देखिए तथा गोलकोण्डा, मछलीपट्टनम, भद्राचलम आदि को अंकित कीजिए।
- आपके विचार से गोलकोण्डा साम्राज्य की आर्थिक स्थिति कुतुबशाह के काल में संपन्न थी जबकि आरम्भिक मुगल शासन के समय इसका पतन क्यों हुआ?

मुख्य शब्द :

1. अमरनायक
2. अमीर
3. इक्ता
4. पुरातत्व विशेषज्ञ
5. रायगोपुरम्

हमने क्या सीखा?

1. ओरुगल्लु नरेशों की तरह विजयनगर के नरेशों ने नगर के बीचोबीच अपना निवास स्थान न चुनकर एक विशेष स्थान का चयन क्यों किया होगा?
2. अमरनायक शक्तिशाली क्यों थे?
3. अमरनायकों एवं काकतीयों के नयंकरों की तुलना कीजिए? किस रूप में उनमें मतभेद एवं समानताएँ थी?
4. विजयनगर सेना पश्चिमी तटीय आयात पर क्यों निर्भर थी?
5. श्री कृष्णदेवराय ने अपने राज्य को सुदृढ़ बनाने के लिए जिन शत्रुओं से युद्ध किया, उनकी तालिका बनाइए।
6. विजयनगर राजाओं द्वारा तेलुगु साहित्य में क्या सेवाएँ दी गई?
7. भारत के मानचित्र में निम्न स्थान दर्शाइए।
   अ) हम्पी आ) बीजापूर इ) तिरूपति ई) श्रीशैलम उ) कांची ऊ) तुंगभद्रा नदी
8. तेलुगु साहित्य को समर्थन देने वाले विभिन्न साम्राज्यों की चर्चा कीजिए।
9. कुतुबशाही शासकों के कला एवं स्थापत्य का वर्णन कीजिए।

SCERT TELANGANA

अध्याय 14

मुगल साम्राज्य (Mughal Empire)

1526 CE में बाबर के आक्रमण से भारत में एक नयेयुग मुगल का आरंभ होता है। मुगलो ने1550 और 1700 ई के बीच, दिल्ली के आस पास से लेकर लगभग समूचे उपमहाद्वीप में अपने साम्राज्य की स्थापना की। उनके राज्य के पतन होने के बाद भी परवर्ती शासकों को उनकी प्रशासन व्यवस्था, शासन विचार और स्थापत्यकला प्रभावित करती रही है। आज भारत के प्रधान मंत्री द्वारा स्वतंत्रता दिवस के दिन जिस लाल किले की दुर्ग-प्राचीर से राष्ट्र को संबोधित किया जाता है वह मुगल शासकों का आवास था।

जहाँगीर को दर्शाता सिक्का

मुगल कौन थे?

मुगल मध्य एशिया के देश उज़बेकिस्तान और मंगोलिया के शासक परिवार के लोग थे। प्रथम मुगल बादशाह बाबर (1526 - 1530 ई), को अपने पूर्वजों से प्राप्त साम्राज्य को दूसरे राजाओं के आक्रमण के कारण छोड़ना पड़ा। उसके बाद कई साल घूमने के बाद उसने सन 1504 ई में काबूल को हस्तगत कर लिया 1526 ई में दिल्ली के सुल्तान,इब्राहीम लोदी को हराकर दिल्ली और आगरा पर अधिकार कर लिया।

चित्र 14.1 लाल किला

CERT TELANGANA

प्रमुख मुगल सम्राट–मुख्य अभियान और घटनाएँ (Important Mughal Emperors – Major compaigns and events)

बाबर 1526-1530 ई. (बाएँ)

सन् 1526 ई.– में इब्राहिम लोदी को हराकर आगरा और दिल्ली को अपने अधीन कर लिया।

हुमायूँ- 1530-1556 ई.(दाएँ)

शेरखान ने हुमायूँ को हराकर, ईरान तक खदेड़ दिया। ईरान में हुमायूँ ने सफाविद शाह से सहायता प्राप्त की। फिर उसने 1555 ई. में दिल्ली पर पुनः अधिकार कर लिया लेकिन उसी वर्ष ही एक दुर्घटना में उसकी मृत्यु हुई।

अकबर – 1556-1605ई. (बाएँ)

जब अकबर बादशाह बना तब उसकी आयु तेरह वर्ष थी। बहुत ही शीघ्र उसने बंगाल, मध्यभारत, राजस्थान और गुजरात को जीत लिया। उसके बाद इसने अफगानिस्तान,कश्मीर और दक्कन के कुछ प्रांतों पर विजय प्राप्त की। उसके साम्राज्य को मानचित्र 1 में देखिए।

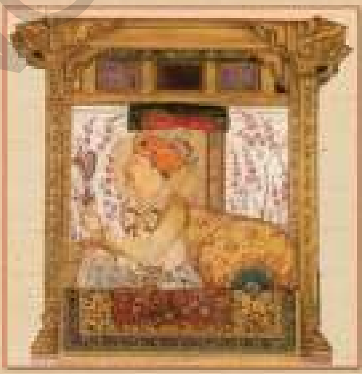

जहाँगीर 1605-1627 ई. (ऊपर)

अकबर के द्वारा प्रारंभ किये गए सैनिक अभियान को इसने जारी रखा। कोई महत्वपूर्व विजय प्राप्त नहीं की।

शाहजहाँ- 1627-1658 ई.(नीचे बाएँ)

दक्षिण में मुगलों के अभियान को जारी रखा। उसने अपने साम्राज्य के कुलीन और सरदारों के विद्रोह का सामना किया। सन्1657-1658 ई. में उत्तराधिकार के लिए शाहजहां के पुत्रों के बीच संघर्ष हुआ। औरंगजेब की विजय हुई और उसके तीनों भाई मारे गये। शाहजहाँ को कैद कर दिया गया जिसके कारण उसे अपना शेष जीवन आगरा की जेल में गुज़ारना पड़ा।

(दाएँ) औरंगजेब 1658-1707 ई.

इन्होंने असम को जीतने का प्रयास किया लेकिन उन्हें अपने साम्राज्य के अफगानिस्तान, असम, राजस्थान, पंजाब, दक्षिण आदि प्रांतों से अनेक विद्रोहों का सामना करना पड़ा। गुरु तेग बहादुर, गोविंद सिंह, शिवाजी और स्वयं उसके पुत्र अकबर ने उनके विरुद्ध विद्रोह कर दिया था। अकबर ने उनका विरोध किया। स्वतंत्र मराठा साम्राज्य की स्थापना में शिवाजी विजयी हुए। औरंगजेब ने सन् 1685 में बीजापुर को, सन् 1687 में गोलकोंडा को जीत लिया। उसकी मृत्यु के बाद उसके पुत्रों के बीच उत्तराधिकारी के लिए संघर्ष हुआ।

SCERT TELANGANA

दूसरे शासकों के साथ मुगलों के संबंध

उस समय भारत के विभिन्न प्रांतों में अनेक राजाओं और सरदारों का शासन था। मुगलों ने इनको अपने अधीन कर लिया था। उन्होंने पुराने राजाओं और सरदारों को अपने पुराने राज्यों पर शासन करने की अनुमति दी और उनसे राजस्व वसूल किया। परन्तु ये राजा आपस में युद्ध नहीं कर सकते थे और उन्हें बादशाहों के लिए हमेशा सेना तैयार रखनी होती थी।

मुगल शासकों ने उन राजाओं से जो इनके अधिकार को स्वीकार नहीं करते थे, निरंतर युद्ध करके उनको अपने नियंत्रण में कर लिया। जब मुगल शक्तिशाली बन गये, अनेक राजाओं ने अपने आप उनकी समर्पित किया। अपनी पुत्रियों का विवाह मुगल परिवार में किया। लेकिन कुछ लोगों ने इसका विरोध भी किया। चित्तौड़ के सिसोदिया राजपूतों ने लंबे समय तक मुगलों के अधिकार को स्वीकार नहीं किया। जब वे पराजित हो जाते थे तो संधि के अनुसार उनका भूभाग उन्हें सुपुर्द कर दिया जाता। अपने विरोधियों को केवल हराना उनका निष्कासन न करना। इससे अनेक राजा और सरदार मुगलों से प्रभावित हुए। मित्रता के, प्रतीक रूप में अनेक स्थानीय राजाओं की राजकुमारियों से मुगलों ने विवाह किया। जहाँगीर की माता अंबर (आधुनिक जयपुर) के राजपूत राजा की पुत्री थी। शाहजहाँ की माता जोधपुर के राजपूत राजा की पुत्री थी।

मनसबदार और जागीरदार (Mansabdas and Jagirdars)

विभिन्न प्रांतों तक साम्राज्य का विस्तार होने के कारण मुगलों ने विभिन्न प्रकार के लोगों की नियुक्ति की। जिसमें तुर्की अमीरों के साथ साथ ईरानी, भारतीय मुसलमान, अफगान, राजपूत, मराठा और अन्य वर्ग के थे। जो मुगल सेवा में भर्ती होते थे उनको मनसबदार (Mansabdar)

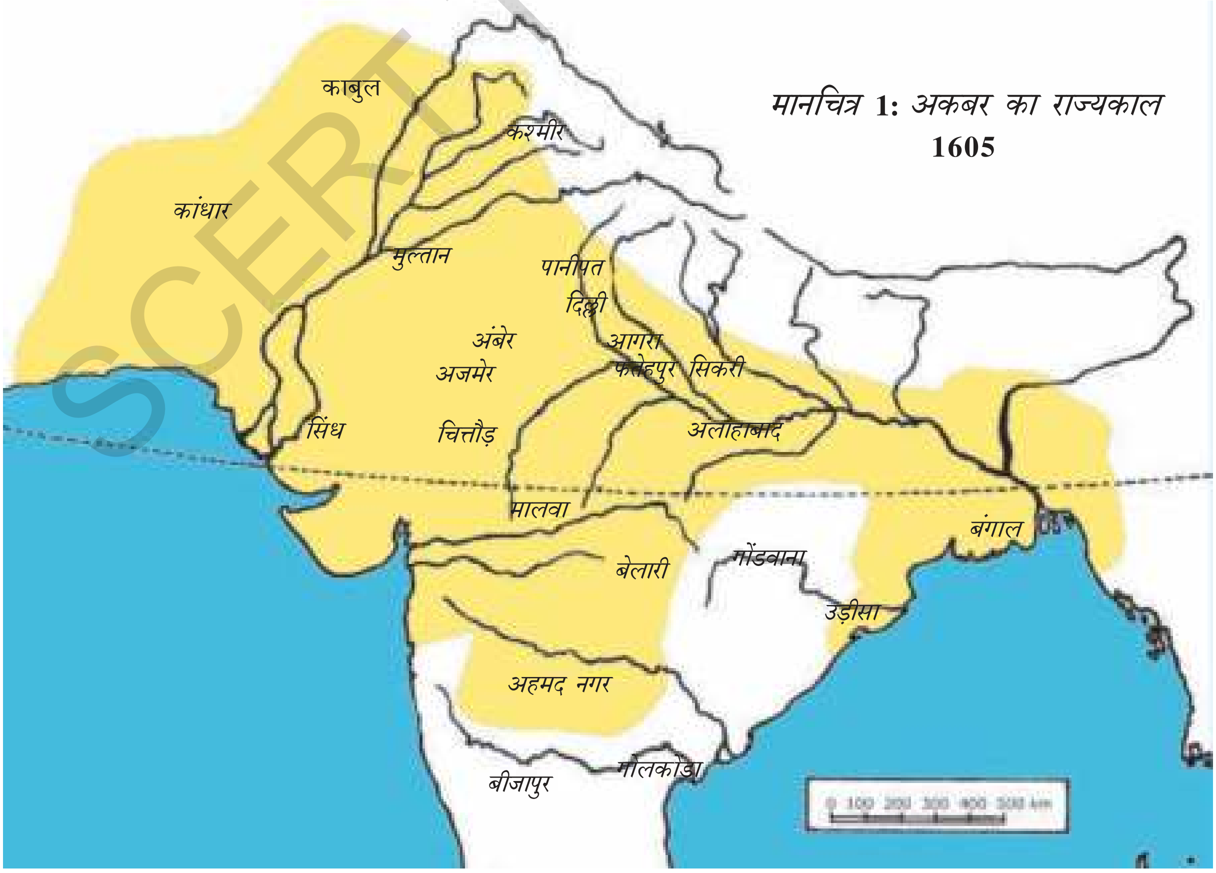

मानचित्र 1: अकबर का राज्यकाल 1605

SCERT TELANGANA

चित्र 14.2 अपने सवारों के साथ सैनिक यात्रा पर मनसबदार .

कहा जाता और उनको सैनिक पद दिया जाता । ये सब प्रत्यक्ष रूप से सम्राट के अधीन होते थे। इनको राज महल की रक्षा, किसी प्रांत का प्रशासन करने, नये राज्य को जीतने या विद्रोह को दबाने के काम सौंपे जाते थे।

मुगलों ने एक राजनैतिक व्यवस्था का विकास किया, जिसमें बादशाह की इच्छा के बिना मनसबदार स्वतंत्र रूप से कार्य नहीं कर सकते थे। आपको याद होगा कि विजयनगर साम्राज्य में नायक स्वतंत्र होकर इतने शक्तिशाली बने कि खुद को सम्राट घोषित कर दिया था। ऐसी स्थिति पैदा न हों, इसके लिए मुगल शासक मनसबदारों का दो-तीन वर्ष में एक स्थान से दूसरे स्थान पर तबादला किया करते थे ताकि वे स्थाई रूप से एक स्थान पर रहकर शक्तिशाली बनें।

मनसबदारों के सैन्य उत्तरदायित्व के लिए यह आवश्यक था कि वे एक निश्चित संख्य में घुड़ सवारों अथवा अश्वारोही की व्यवस्था करे। मनसबदार अश्वारोहियों का निरीक्षण करवाने, उनके घोड़ो का पंजीकरण कराकर उनके घोड़ों पर निशान लगाने के लिए अधिकारियों के पास लाते थे तब वेतन देने के लिए धन प्राप्त करते थे।

मनसबदार का बेटा स्वतः मनसबदार नहीं बन सकता था क्योंकि यह पद पैतृक नहीं था। मनसबदार के बेटे को नियुक्त करना या नहीं करना बादशाह के निर्णय पर निर्भर था। वास्तविकता में वह मनसबदार के निधन के बाद उसकी सारी सम्पत्ति ले लेता था।

विजयनगर के नायकों की तरह मुगल मनसबदार भी अपना वेतन राजस्व कर द्वारा प्राप्त करते थे जो जागीर कहलाता था। जो नयंकर की तरह ही था किंतु नायकों की तरह नहीं। अधिकतर मनसबदार अपने जागीर या प्रशासन क्षेत्र में निवास नहीं करते थे। वे जागीर के अंतर्गत गांवों से कर वसूल करते और बादशाह के पास भेजते थे। मनसबदार देश के किसी भी भाग में व्यस्त रहने पर उनके कर्मचारी जागीर के क्षेत्र से कर वसूल करते। जागीर का प्रशासन बादशाह के निरीक्षण में अन्य अधिकारी किया करते थे अधिकारी यह सुनिश्चित करते थे कि जागीदार के कर्मचारी निर्धारित कर से अधिक न वसूल करे। जागीरदारों का भी प्रति दो या तीन वर्ष में एक बार

SCERT TELANGANA

स्थानांतरण कर दिया जाता था।

अकबर के युग में जागीरों का ध्यानपूर्वक मूल्य निधारण किया गया ताकि जो कर वसूल हो वह मनसबदार के वेतन के बराबर हो। औरंगजेब के युग तक मनसबदारों की संख्या में काफी वृद्धि हुई, इस कारण जागीर प्राप्त करने वालों को लम्बी प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। ये और अतिरिक्त अन्य कारणों से जागीरों की संख्या का अभाव हो गया। इसका परिणाम यह हुआ कि जागीदार अपनी जागीर से जितनी अधिक सम्भावना हो उतना कर प्राप्त करने का प्रयत्न करने लगे। औरंगजेब शासन के अंतिम दिनों में इन परिस्थितियों को वश में करने में असमर्थ हो गया जिसके कारण किसान को विपत्तियों का सामना करना पड़ा।

चित्र 14.3 शाहजहाँ के समय शिलालेख पर चित्र जिसमें उनके पिता के शासनकाल में भ्रष्टाचार दर्शाया गया है। 1. एक भ्रष्ट अधिकारी रिश्वत लेता हुआ और 2. एक कर वसूल करनेवाला गरीब आदमी को सजा देते हुए

जब्त और जमींदार (Zabt and Zamindars)

मुगल शासकों की आय का मुख्य स्त्रोत कृषि उत्पादन पर कर था। अकबर के वित्त मंत्री टोडरमल ने1570-1580ई में दस वर्ष के लिए फसल की पैदावार, उसका मूल्य और खेती योग्य भूमि का सर्वेक्षण किया। इस सर्वेक्षण के आधार पर अपने प्रत्येक फसल पर नकद कर निर्धारित किया। प्रत्येक प्रांत को वैयक्तिगत फसलों के लिए उसकी राजस्व कर की अपनी सूची के साथ राजस्व चक्रों में बाँटा गया। इस कर व्यवस्था को जब्त कहते थे। इसका प्रचलन उन क्षेत्रों में था जहाँ मुगल शासन के प्रबंधकों ने भूमि का सर्वेक्षण कर ध्यानपूर्वक कर का निर्धारण किया। गुजरात और बंगाल के प्रांतों में यह सम्भव नहीं हुआ था।

ज्यादातर क्षेत्रों में कर का भुगतान देहातों का अभिजात वर्ग- जैसे क्षेत्रीय मुखिया या सरदार के द्वारा किया जाता था। मुगलों द्वारा जमींदार का अर्थ उन प्रतिनिधियों से था, जो क्षेत्रीय गाँव का मुखिया हो या शक्तिशाली सरदार। मुगल बादशाह जमीनदारों की नियुक्ति नहीं करते थे किंतु ये एक पैतृक पद्धति थी। अर्थात पिता के निधन के बाद बेटा जमीनदार बन जाता था। वे सेना का नेतृत्व भी करते थे। जागीरदार द्वारा प्राप्त किए गए कर में से उसे कुछ भाग मिलता था और क्षेत्रीय किसानों की ओर से भी कुछ न कुछ मिल जाता था। प्रायः वह क्षेत्रीय जनता के प्रतिनिधि के रूप में मुगल अधिकारियों के संपर्क में रहता था।

कुछ क्षेत्रों में जमीदारों के पास काफी शक्ति हुआ करती थी। मुगल अधिकारियों के शोषण पर वे विद्रोह कर देते थे। कभी कभी जमींनदार और किसान मिलकर मुगल अधिकारियों का विद्रोह करते थे। सत्रहवीं शताब्दी में जमींनदार और किसानों ने मिलकर मुगल साम्राज्य के स्थायित्व को चुनौती दी थी।

- मनसबदार और जमीनदार के बीच में क्या अंतर था?
- बादशाह के अत्यधिक नियंत्रण में कौन था ?

SCERT TELANGANA

- नायक और मनसबदार की स्थिति की तुलना कीजिए।

अकबर की नीतियों पर एक गहरी दृष्टि

अकबर अपने मित्र, दरबारी से प्रशासन की व्यापक विशेषताओं पर गंभीर रूप से चर्चा किया करता था। यह बात अबुल फजल ने अपनी पुस्तक अकबर नामा में बताई है।

1570ई.के दशक में आगरा के समीप फतेपुर सीकरी में आवास के समय मुस्लिम, हिन्दु, ईसाई और यहूदी विद्वानों से अकबर धर्म के संबंध में व्यापक चर्चा की। उसे धर्म और लोगों के विभिन्न सामाजिक रीति-रिवाज़ो में विशेष रुचि थी। वह विभिन्न धर्मावलंबियों का एक साथ लाना चाहता था। अकबर को इसी विचार धारा से सुलह-ए-कुल या सार्वभौमिक शांति का सिद्धान्त मिला। इस प्रकार की भेद-भाव रहित विचार धारा ने जनता में मदभेद की भावना को मिटाया। इस के अतिरिक्त इस प्रकार की नीति के कारण ईमानदारी, न्याय तथा शांति को सार्वभौमिक रूप से लागू किया। अबुल फजल ने शासन का ढाँचा बनाने में अकबर की सहायता की जो सुलह-ए-कुल विचारधारा से संबंधित थी। धर्म या सामाजिक प्रतिष्ठा के बिना ही बादशाह को अपनी जनता के हित के लिए कार्य करना होता है। इस शासन नीति का पालन जहाँगीर एवं शाहजहाँ ने भी किया। लेकिन इस नीति के विपरीत औरगज़ेब ने सुन्नी मुस्लिम वर्ग को महत्व दिया। अन्य मतावलंबी औरगज़ेब की इस नीति से दुखी हुए।

चित्र 14.4 इबादत खाने में विभिन्न मतावलबियों के वरिष्ठों से चर्चा करते हुए अकबर.

सुलह-ए-कुल (Sulh-i-kul)

अकबर के पुत्र जहाँगीर ने अपने पिता की नीति सुलह-ए-कुल का वर्णन इस प्रकार किया है।

इस विशाल विश्व में सभी जीवों पर ईश्वर की समान दया रहती है। इस देश की सभी दिशाओं में सभी समान हैं और यह चारों ओर से केवल समुद्र से सीमित है। आस्तिक ,नास्तिक और सभी धर्मावलंबियों का यहाँ निवास होता है। सांप्रदायिक मतभेदों का कोई स्थान नहीं है। सुन्नी, शिया लोग प्रार्थना के लिए एक ही मस्जिद में मिलते हैं तो ईसाई एवं यहूदी प्रार्थना के लिए गिरिजाघरों में सम्मिलित होते हैं। अकबर ने विश्व शांति (Sulh-i-kul) की नीति को अपनाया था।

CBTELANGANA

17 वीं शताब्दी व उसके पश्चात में मुगल साम्राज्य

मुगल बादशाहों के प्रबंध एवं सेना क्षमता उनकी आर्थिक और व्यापारिक समर्थता दर्शाती है। विदेशी यात्रियों के कथनों से पता चलता है कि मुगल साम्राज्य एक समृद्ध राज्य था। पर इन्हीं यात्रियों ने इनकी बुरी दशा के बारे में भी बताया। असमानताएँ सुस्पष्ट थीं। शाहजहाँ के बारे में विदेशी यात्रियों ने यह कहा है कि मुगल साम्राज्य प्रसिद्ध एवं संपन्न साम्राज्य है। शाहजहाँ के शासनकाल के बीसवें वर्ष के ऐतिहासिक दस्तावेज बताते हैं कि शाहजहाँ के शासित क्षेत्रों मंसबदारों को सबसे उच्च स्थान प्राप्त था। बीसवीं शताब्दी के 8000 मनसबदारों में 445 शाहजहाँ के क्षेत्र में ही थे। यह कुल मनसबदारों का केवल 5.6 प्रतिशत था। इनको शासकों द्वारा प्राप्त अनुमानित कर का 61.5 प्रतिशत इनके व उनके सैनिकों के वेतन के लिए प्राप्त होता था।

सरदार सर्वाइ पापना

सरदार सर्वाइ पापना जो वरंगल जिले का था, उसने तेलंगाना में मुगलों का विरोध किया। यह औरंगजेब के समय का था। उसने कई गरीबों, पिछड़ी जाति एवं पद्दलितों के जीवन को सहायता प्रदान की।

1687CE से 1724CE में पापन्ना ने मुगल शासकों से तेलंगाना प्राप्त किया, कैलाशपूर में जो वरंगल जिले की राजधानी मानी जाती है वहाँ किला बनवाया।

उस समय के मुगलो द्वारा किए गए उत्पीड़न एवं अत्याचारों को देखकर उन्होंने एक छोटी सेना बनायी और उन्हें गुरिल्ला पद्धति में प्रशिक्षित किया।

पापना ने भुवनगिरि, नलगोंडा के कोलनपाक, थातीकोण्डा, वरंगल के चेरियाला, हुजुराबाद, करीमनगर के हुसनाबाद किलों पर अधिपत्य जमाया। उन्होंने राज्य के विस्तार के उद्देश्य से अपना पहला किला सर्वेपेटा में बनाया। उसने थाटीकोण्डा, वेमुलाकोण्डा और शाहपुरम में भी किलो का निर्माण किया। पापन्ना के काल में थाटीकोण्डा में चेक ड़ेम भी बनवाया गया। जिससे यह पता चलता है कि वह विकास प्रिय शासक है। जो अपने नियंत्रण के क्षेत्र को विकसित करता है।

पापन्ना ने सुबेदार पर गुरिल्ला आक्रमण के द्वारा युद्ध और सेना के लिए धन जमा किया। पापन्ना की प्रसिद्धि को सुनकर औरंगजेब ने रूस्तम-दिल-खान को पापन्ना को दबाने की राय दी। रूस्तम-दिल-खान ने कासिम खान को पहले पापन्ना के पास भेजा और बाद में शहपूर किले को जीतने भेजा। पापन्ना ने कासिम खान को पराजित कर मार ड़ाला। रूस्तम-दिल-खान स्वयं युद्ध करने पहुँचा और यह लगभग तीन महीने तक चला। अन्त में रूस्तम-दिल-खान युद्ध से भाग गया और पापन्ना ने अपने करीबी मित्र सर्वन्ना को युद्ध में खो दिया।

1707CE में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात, दक्कन के सुबेदार कमबख्श खान अपना नियंत्रण खोने लगे। दक्कन के कमजोर प्रशासन को देखकर पापन्ना ने 1 अप्रैल 1708CE में वरंगल किले को जीत लिया। हालंकि थाटीकोंडा, कैलाशपूर में लंबे समय की लड़ाई में वह बच गया था। लेकिन वह 1712CE में पकडा गया और उसका सिरच्छेद हुआ।

SCERT TELANGANA

मुगल सम्राट और उनके मनसबदार अपनी आय का अधिकतर हिस्सा वेतन और सामान पर खर्च किया करते थे। इस कारण प्रथम उत्पादकों, किसान व कलाकार आदि के पास निवेश के लिए बहुत कम पूँजी थी। गरीबों के पास तो खाने से अधिक न बचता था। वह अपने औजारों को भी नहीं खरीद पाता था। इस कारण इस काल के संपन्न व्यापारी, महाजन आदि बहुत लाभ कमाते थे क्योंकि लोग उनसे कर्ज लेने को मजबूर थे।

मुगल साम्राज्य का धन संपन्न वर्ग के अधीन रहता था, जिस कारण सत्रहवीं शताब्दी के अंत में यही समूह सशक्त अस्तित्व में उभर आये। जैसे-जैसे मुगल साम्राज्य का पतन होता गया, उनके अधीन राज्यों जैसे- हैदराबाद, अवध आदि, पर उनका नियंत्रण नहीं रह गया। अठारहवीं शताब्दी तक इनके अधीन राजा स्वयं को स्वतंत्र मानने लगे।

हैदराबाद के असफ जाही 1724-1948

असफ जाहों का समूह क्रम

निजाम-उल-मुल्क	(1724-1748)
नासर जंग	(1748-1751)
मुज़फ्फर जंग	(1751-1751)
सलाबत जंग	(1751-1762)
निजाम अली खान	(1762-1803)
सिकन्दर जा	(1803-1829)
नासिर-उद-दौला	(1829-1857)
अफजल-उद-दौला	(1857-1869)
मीर महबूब अली खान-6वें निजाम	(1869-1911)
मीर उसमान अली खान-7वें निजाम	(1911-1948)

1720 में मुगलों के कमजोर होने के पश्चात, मुगलो के राज्यपालों ने स्वतन्त्रता पा ली। उनमें से एक दक्कन का सुबेदार, चीन कुलीच खान, जिसे निजाम-उल-मुल्क भी कहते थे। उन्होंने ही 1724 में हैदराबाद राज्य में असफ जाही साम्राज्य की स्थापना उन्होंने ही की। निजाम-उल-मुल्क ने 24 वर्षों (1724-1748) तक शासन किया। असफ-जाही शासन में दस शासक हुए जिन्होंने 1724 से 1948 तक शासन किया। उनमें से सात मुगलों से निजाम की उपाधि प्राप्त की। नाजरजंग, मुजफ्फरजंग और सिलाबतजंग की निजाम की उपाधि नहीं मिली। हैदराबाद राज्य को पाने के लिए निजाम हमेशा मराठा और मैसूर के शासकों से युद्ध करते रहते थे। इन्हीं कारणों से वे अंग्रेजों पर निर्भर हो गए और अपनी स्वतन्त्रता खो दी।

ब्रिटिश अधिकारियों के प्रभाव में इन उपनिवेशों का आधुनिकीकरण किया। अंग्रेज हैदराबाद की संस्कृति को पसन्द करते थे। 19वीं शताब्दी के अंत में हैदराबाद का विकास आरंभ हुआ। 1853 और 1883 में सालर जंग निज़ाम के प्रधान मंत्री थे, उन्होंने उपनिवेशों विकास की योजनाएँ बनाई। (इनके बारे में आप अगले अध्याय में विस्तार से जानकारी प्राप्त करेंगे।)

सालर जंग

छठवें निज़ाम, मीर महबूब अली खान का काल अनेक सुधारों के लिए प्रसिद्ध है। आसफिया पुस्तकालय, विक्टोरिया मेमोरियल, अनाथालय, महबूबिया गर्ल्स स्कूल की स्थापना की गयी। 1908 के मूसी नदी में बाढ़ के समय उन्होंने वैयक्तिक रूप से राहत कार्यों, ईश्वर की प्रार्थनाएँ और हताहत (हादसे का शिकार) को शरण प्रदान की। किंतु VII निजाम ने प्रसिद्ध उदारवादी प्रशासनिक सुधार आन्दोलन के बावजूद सांतशाही संरचनाएँ की सुरक्षा का दृढ़ निश्चय किया। (आठवीं कक्षा में आपको उनकी उपलब्धियों के बारे में अधिक जानकारी मिलेगी।)

SCERT TELANGANA

मुख्य शब्द

1. मनसबदार
2. जागीरदार
3. ज़ब्त
4. प्रकाशित
5. जमींदार
6. सुलह-ए-कुल

हमने क्या सीखा?

1. मनसबदार और उसकी जागीर के बीच क्या संबंध रहता था?
2. मुगल शासन में जमींदारों की क्या भूमिका थी?
3. धार्मिक विद्वानों से किये गये शास्त्रार्थों का अकबर के प्रशासनिक निर्णयों पर क्या प्रभाव दिखाई देता है?
4. मुगलों ने राजाओं को अपने पुराने राज्यों पर पहले के समान ही शासन चलाने की अनुमति क्यों दी होगी?
5. मुगल शासकों के विस्तृत शासन क्षेत्र को नियंत्रित करने में सुल्ह-ए-कुल नीति क्यों महत्व रखती है?
6. जब्त और जमींदार का पहला अनुच्छेद पढ़िए और उस पर टिप्पणी कीजिए।
7. मुगल शासकों की विशेषताएँ एकत्रित कर-कर तालिका में भरिए।

क्र.सं.	शासक का नाम	शासन का समय	महत्वपूर्ण विशेषताएँ
1			
2			
3			
4			

SCERT TELANGANA

अध्याय 15

भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की स्थापना

(Establishment of British Empire in India)

शक्तिशाली मुगल शासकों में औरंगजेब अन्तिम शासक थे। उसने विशाल भू–भाग पर अधिकार स्थापित किया था, जिसे आज भारत कहते है। 1707 ई. में उसकी मृत्यु के पश्चात अनेक मुगल राज्यपाल (सुबेदार) और बड़े जमींदारों ने भू–भागों पर अधिकार कर क्षेत्रीय साम्राज्य की स्थापना करना आरंभ किया। भारत में अनेक भागों में इस प्रकार के स्थानीय साम्राज्यों की स्थापना हो जाने के कारण दिल्ली अधिक प्रभावशाली केन्द्र नहीं रहा।

18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राजनैतिक क्षितिज पर एक नई शक्ति उभरी – अंग्रेज। क्या आप जानते हैं कि वास्तव में अंग्रेज छोटी व्यापारी कंपनी के रूप में भारत आए थे? फिर कैसे वे इतने बड़े साम्राज्य के अधिकारी बन गए?

ईस्ट इण्डिया कम्पनी का पूर्व में आना

1600 ई. में इग्लैण्ड की महारानी एलिजाबेथ-1 द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी को एक चार्टर प्रस्तुत किया गया – ''मैं इसे पूर्व के साथ व्यापार करने का पूर्ण अधिकार देती हूँ। इसका अर्थ हुआ कि यूरोप की अन्य कोई दूसरी कम्पनी ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ प्रतियोगी नहीं बन सकती। इसी आदेश के साथ कम्पनी समुद्र पार नई भूमि की तलाश करने लगी जहाँ से कम कीमत पर माल खरीद कर यूरोप ले जाकर उच्च दामों में बेच सके।

वणिकवाद (Mercantalism)

वाणिज्यिक/व्यापारिक एक ऐसी प्रणाली है जिसमें व्यापार द्वारा प्राथमिक लाभ कमाया जाता है। उन दिनों व्यापारी कम्पनियाँ बिना प्रतियोगिता के कम कीमत पर माल खरीद कर अधिक दाम में बेचकर लाभ कमाती थी।

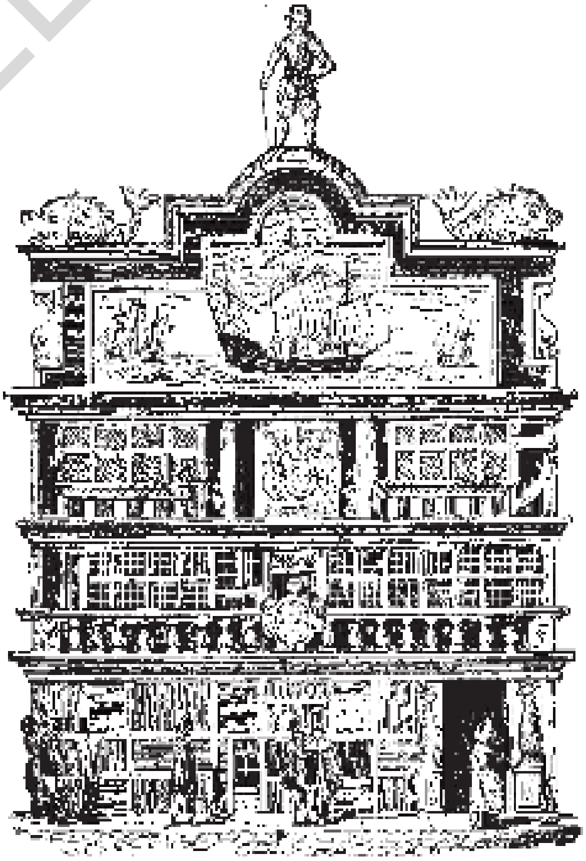

चित्र 15.1 लन्दन में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का मुख्यालय

SCERT TELANGANA

चित्र 15.2 वास्को डिगामा

महारानी का चार्टर अन्य यूरोपीय कम्पनियों को पूर्वी बाजार में व्यापार के लिए आने से रोक नहीं पाया। जब अंग्रेजों का पहला जहाज आफ्रिका के पश्चिमी दिशा से होते हुए कैप आफ गुड होप का चक्कर लगाकर हिंद महासागर को पार कर भारत आया, तब तक पुर्तगाली भारत के पश्चिमी तट में स्थापित हो गए तथा गोवा में अपना केंद्र बना लिया था। 1498 में (पुर्तगाली अन्वेषक) वास्को डिगामा ने भारत के समुद्री मार्ग की खोज की। 17वीं शताब्दी के आरम्भ में डच (हालेण्ड) की भी हिन्द महासागर में व्यापार की सम्भावना खोज रहे थे। जल्दी ही फ्रांसीसी व्यापारी भी आ गये।

समस्या यह थी कि सभी कम्पनियाँ एक ही माल खरीदना चाहती थीं। यूरोप में भारत में उत्पादित सूती और रेशमी कपड़े की अत्यधिक माँग थी। गरम मसाले जैसे काली मिर्च, लौंग, इलायची और दालचीनी की भी अधिक माँग थी। यूरोपीय कम्पनियों में प्रतियोगिता के कारण खरीदी जाने वाली वस्तुओं के दाम बढ़ने लगे। हथियारों से व्यापार किया जाने लगा तथा व्यापारिक केन्द्रों की सुरक्षा किले बनाकर की जाने लगी। किले की व्यवस्था का प्रयास तथा अधिक लाभकारी व्यापार के कारण स्थानीय शासकों से मन मुटाव होने लगा।

हथियारबंद व्यापारी (Armed Traders)

भारत में व्यापार करने के लिए यूरोपियों ने अपनी कम्पनियाँ स्थापित कर ली। अंग्रेजी व्यापारियों ने इंग्लिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी, फ्रान्स ने फ्रेंच ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना की। इन दोनों कम्पनियों ने कई वर्षों तक भारत में व्यापार स्थापित करने के लिए युद्ध किया। प्रत्येक एक-दूसरे को भगाने के लिए प्रयास करने लगे। उन्होंने इग्लैंण्ड और फ्रान्स से युद्ध में मदद के लिए सेना बुलाई। इंग्लैण्ड एवं फ्रान्स के राजाओं ने भी पीछे से उनकी मदद कई तरह से की। कम्पनियों ने भारत की भूमि पर अधिकार कर किले बनाए ताकि वे वहाँ से एक दूसरे से युद्ध कर सके।

चित्र 15.3 1676 में मछलीपटनम का चित्र

SCERT TELANGANA

इस प्रकार संपत्ति के संग्रह ने भी विश्व में इंग्लैण्ड द्वारा कारखानों को विकसित कर अपनी सत्ता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इसी समय इंग्लैंड तथा अन्य यूरोपीय देश जैसे स्पेन, पुर्तगाल, फ्रान्स, हॉलेण्ड और जर्मनी ने उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका, आफ्रिका और एशिया में उपनिवेश स्थापित किए। इन यूरोपीय देशों को उपनिवेशों से शक्ति और धन मिला।

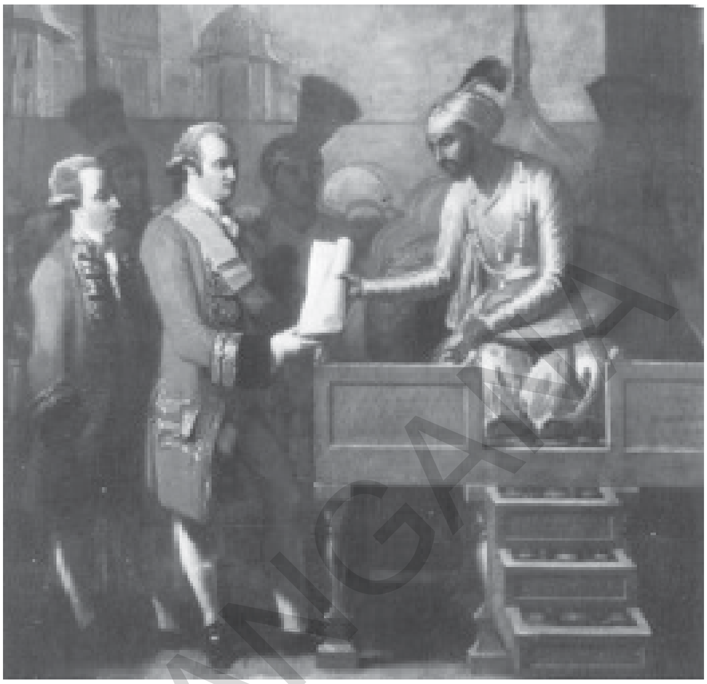

चित्र 15.4 शाहआलम ने रार्बट क्लाइव को बंगाल पर शासन करने का अधिकार दिया

मुगल सम्राट एवं अन्य राजा तथा नवाब को यह अनुभव होने लगा कि इन व्यापारियों की सेना का प्रबन्ध, किले बनाना, युद्ध करना और सैनिक बल की सहायता से आर्थिक शक्ति को अपने साम्राज्य में स्थापित करना, कितना खतरनाक है।

जब तक मुगल शासन शक्तिशाली रहा, किसी यूरोपीय कम्पनी का साहस नहीं हुआ कि वे भारत में सैनिक शक्ति को स्थापित कर सके। कई अवसरों पर शाहजहाँ और औरंगजेब ने यूरोपीय कम्पनियों को युद्ध में हराया। औरंगजेब की मृत्यु के बाद कई राज्य स्वतंत्र हो गए तथा राज्यपाल शासन करने लगे। इस प्रकार बंगाल, अवध (लखनऊ) और हैदराबाद स्वतन्त्र राज्य बन गए तथा उन पर मुगलों का अधिकार नाममात्र के लिए हो गया।

जैसे ही मुगल साम्राज्य छोटे–छोटे राज्यों में विभक्त हो गया, कम्पनियों को शक्ति स्थापित करने का अवसर मिल गया। राजा और नवाब व्यापार में वृद्धि चाहते थे फिर भी उन्होंने कम्पनियों की सैनिक शक्ति की जाँच करने का प्रयास किया।

उदाहरण के लिए 1764 CE ई. में अकार्ट के नवाब अनवरूद्दीन खान ने फ्रान्सिसी कम्पनी के साथ युद्ध करने के लिए सेना भेजी। सभी को आश्चर्यचकित करनेवाली बात यह हुई कि नवाब की विशाल सेना को फ्रान्सिसी कम्पनी की छोटी सेना ने परास्त कर दिया। इसके पश्चात यूरोपीय व्यापारियों का हौंसला और बढ़ गया और वे समझने लगे कि भारत में जो वे मनमानी कर सकते है क्योंकि उनके पास शक्तिशाली सेना है।

फिर भी 1700 ई. के समय यूरोपीय सेना भारतीय शासकों की सेना से भिन्न थी? यूरोपीय सैनिक श्रेष्ठ रूप से प्रशिक्षित थे और निरंतर ऊँचा वेतन पाते थे। उनके पास अच्छी बन्दूके और तोपे थी। यूरोपीय सैनिक प्रतिदिन परेड और ड्रिल भी करते थे। इस प्रकार की नित्य कसरत आदि के कारण कई भारतीय सैनिक अंग्रेजी सेना में मिलकर युद्ध में कुशल बन गए।

SCERT TELANGANA

भारतीय साम्राज्यों में यूरोपीय हस्तक्षेप में वृद्धि (Growing European interference Kingdom of India)

यूरोपीय कम्पनियों ने अपनी सैन्य विशेषता द्वारा व्यापार में अधिक लाभ कमाया। जब किसी अवसर पर उन्होंने देखा कि कोई दो राजा आपस में लड़ रहे तो वे उनकी तरफदारी कर युद्ध में भाग लेते थे। वे एक राजा को सैन्य सहायता देकर शत्रु से लड़वाते थे। इसके बदले में राजा से कई प्रकार की व्यापार में छूट की माँग करते थे। सैन्य सहायता के बदले में शासक भी बड़ी धन राशि और उपहार कम्पनी को देते थे। कम्पनी के लिए यह धन व्यापार में विकास के लिए उपयोगी रहा।

उदाहरण के लिए डुप्ले फ्रेन्च ईस्ट इण्डिया कम्पनी के गवर्नर ने दक्षिण का नवाब बनने में मुजफ्फर जंग की मदद की। उसके बदले में मुजफ्फर जंग ने फ्रान्सिसियों को पाण्डीचेरी के पास कुछ भूमि तथा मछलीपटनम नगर दे दिया। उसने कंपनी को 50,000 रू., 50,000 रू. फ्रान्सिसी सेना तथा 20,00,000 और 1,00,000 कीमत की जागीर डुप्ले को दी।

स्थानीय राजाओं से कम्पनी ने उपहार के रूप में राज्य में भूमि का छोटा भाग भी लेना आरम्भ किया। इस क्षेत्र के गाँव और शहरों से उन्होंने भूमि कर लेना आरम्भ किया और उसी भू कर द्वारा वे व्यापार करने लगे। वे अपनी सेना के रख–रखाव एवं विकास के लिए भी इस धन का उपयोग करते थे।

धीरे–धीरे अंग्रेजी कम्पनी ने फ्रेंच कम्पनी पर जीत प्राप्त कर भारत में एकल अधिकार प्राप्त किया।

कम्पनी के अधिकारों का दुरुपयोग (Mis-use of Company's Power)

जल्दी ही भारतीय राजाओं को कम्पनी को उपहार देना तथा अंग्रेजी सेना का खर्चे उठाना बोझ लगने लगा। वे कम्पनी के कई अन्य कार्यों से भी संकट में पड़ने लगे।

कुछ भारतीय राजाओं ने कंपनी को अपने राज्य से खरीदी जाने वाली कई वस्तुओं पर कर की छूट दे दी। लोग इस छूट से फायदा उठाने लगे। उदाहरण के लिए कम्पनी में काम करने वाले निजी व्यापार कर सकते थे। परन्तु वे लोग अपनी वस्तुओं को कम्पनी की बताते थे ताकि वे कर देने से छूट सके।

इस प्रकार कम्पनी के अमीर होने के साथ–साथ कर्मचारी और अधिकारियों ने भी भारत में खूब धन कमाया। और धनी व्यक्ति बन कर अपने घर लौटे। कई भारतीय व्यापा. रियों और सेठों ने कम्पनी की व्यापार में सहायता की। उन्होंने भी अपने माल को कम्पनी का बनाया और कर देने से बचने लगे।

चित्र. 15.5 1867 में मद्रास में स्थापित नौकाएँ जहाज से वस्तुएँ लाते हुए द्वारा ली गई विलियम सिमसन

SCERT TELANGANA

इस तरह कम्पनी के अधीन साम्राज्य में लूट–मार, छल कपट आदि बढ़ने लगा। कम्पनी को अपनी सेना पर गर्व था कि वह बड़ी निर्लज्जता से काम कर रही थी। वे हस्त उद्योग कर्ता को अपनी वस्तुएँ कम कीमत पर बेचने पर विवश करते थे। कम्पनी ने अपने अधिकृत क्षेत्र के किसानों पर अधिक कर लगाना प्रारंभ किया जो उनके सामर्थ्य के बाहर था। ऐसे कार्यों का राजा जब विरोध करने लगे तो उन्होंने उनसे युद्ध किया। कभी–कभी राजा को गद्दी से उतार कर वे उसके उत्तराधिकारी को गद्दी पर बिठाते जो उनके व्यापार के रास्ते में आने वाली रुकावटों को दूर करने के इच्छुक थे।

- व्यापारियों को वस्तुएँ खरीदने के लिए पैसे की आवश्यकता थी अंग्रेजों को भारत से वस्तुएँ खरीदने के लिए प्राप्त होने वाले धन के तीन स्त्रोत बताइए।
- अंग्रेजों से भारतीय राजाओं ने क्या लाभ उठाया?

अंग्रेजों द्वारा शासन लागू करना

अंग्रेजों को लगने लगा कि वे व्यापार में अधिक लाभ तभी प्राप्त कर सकते थे जब वे स्वयं भारत पर अधिकार प्राप्त कर ले। इसलिए उन्होंने नवाब और राजा को हटाना आरंभ किया और स्वयं शासक बनने लगे।

1757 ई. में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला को प्लासी के पास पराजित किया तथा बंगाल पर अधिकार प्राप्त कर लिया। भारतीय इतिहास में प्लासी का युद्ध महत्वपूर्ण घटना है। उसके बाद अंग्रेजों ने भारत के छोटे–बड़े कई राज्यों पर विजय प्राप्त की।

1765–1786 के बीच में इंग्लिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने हैदराबाद के नवाब को तटीय आन्ध्र प्रदेश के जिले (कृष्णा, पूर्वी गोदावरी, पश्चिमी गोदावरी, श्रीकाकुलम, विजयनगरम, प्रकाशम, विशाखापट्टणम और गुन्टूर) देने पर विवश किया। वे भाग कम्पनी के मद्रास क्षेत्र में उत्तरी सरकार के नाम से जाने जाते थे। इसके बदले में अंग्रेजों ने निजाम को सैन्य सहायता देने का वादा किया। वास्तव में यह सेना निजाम की मदद करने के स्थान पर निजाम पर अधिक अधिकार जमाने लगी।

कई राजाओं और नवाबों ने अंग्रेजों की चाल समझ में आ गयी और उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध किए। इनमें मैसूर के हैदर अली और टीपू सुल्तान, मराठा सरदार महादजी शिंद, नाना फड़नवीस और अन्य थे। परन्तु उनके राज्य छोटे थे। एक के बाद वे एक अंग्रेजों के अधीन होने लगे।

अंग्रेजों की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका राबर्ट क्लाईव, वारेन हेस्टिंग और लार्ड वेलेस्ली की थी। धीरे–धीरे भारत का बड़ा भाग सीधे अंग्रेजी शासन के अधीन हो गया। कई स्थानों में राजा और नवाब शासन कर रहे थे, परन्तु वे अंग्रेजी सत्ता के अन्तर्गत कर रहे थे। एक अंग्रेज अधिकारी (जो रेसिडेन्ट कहा जाता था) वह राजाओं और नवाब के दरबार में रहता था, जिससे अंग्रेज सरकार राजाओं पर तथा शासन विधि पर नजर रख सके।

- भारत के साथ व्यापार करते समय अंग्रेजी ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने देश पर शासन की बात क्यों सोची?

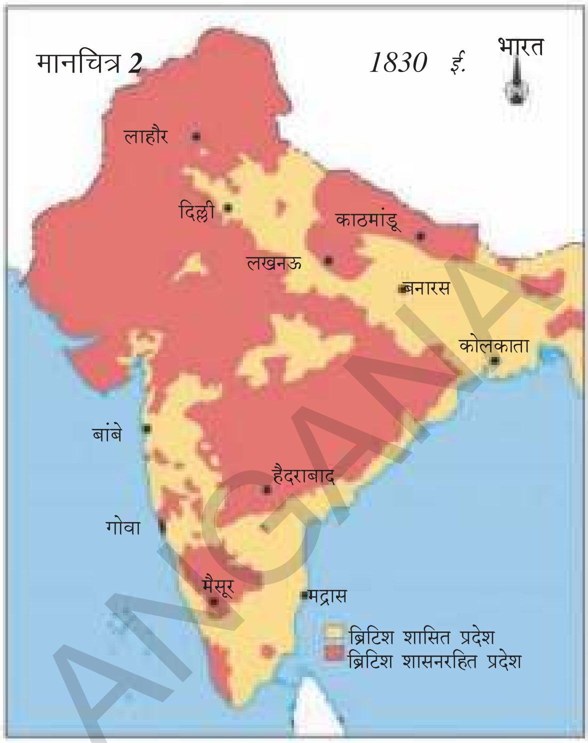

SCERT TELANGANA

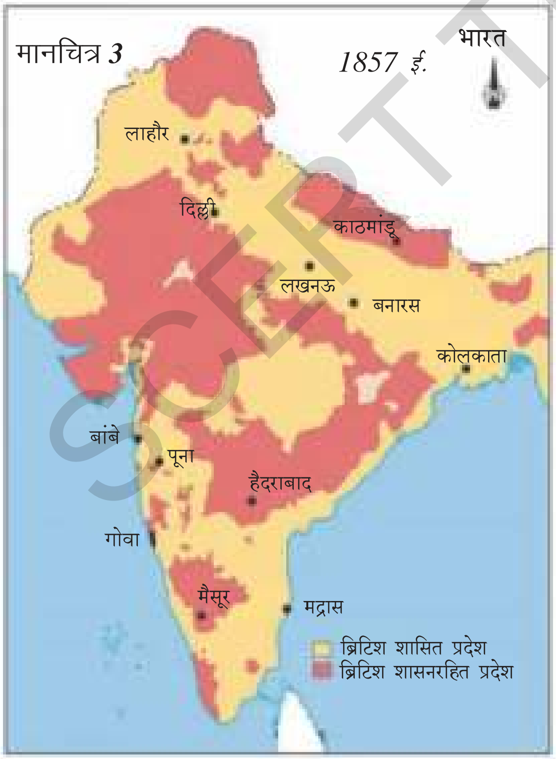

मानचित्रों में अंग्रेजों द्वारा भारत के क्षेत्रों पर शासन के विस्तार को दर्शाया है।

- आज के भारत के राजनैतिक मानचित्र के साथ इस मानचित्र को देखिए। प्रत्येक मानचित्र में पता लगाने की कोशिश कीजिए कि भारत के कौन–से भाग अंग्रेजों के अधीन नहीं थे।
- 1857 तक अंग्रेजों के शासन का विस्तार कहाँ तक हुआ ? उन क्षेत्रों की सूची बनाइए जहाँ 1857 के बाद भी भारतीय राज शासन कर रहे थे।

अंग्रेजी शासन से असंतुष्ट (Discontent with English Rule)

अंग्रेजों को अपना शासन स्थापित करने के लिए कई राजाओं और नवाबों से लड़ना पड़ा। बाद के वर्षों में आप इनकी योजनाओं और प्रशासन के बारे में जानेंगे। भारतीय लोगों के साथ उनका सामना निरन्तर होता रहा।

ऊँचे घराने के परिवार अंग्रेजों से नाराज थे क्योंकि अपने मतलब के लिए अंग्रेज राज्याभिषेक करना या शासक को निकालने के काम करते थे।

किसान और जमींदारों ने भी विरोध किया क्योंकि अंग्रेजों ने उन पर भारी कर लगाए और कठोरता से वसूल किए। इसी कारण वे कर न दे सकने पर लगातार भयभीत रहने लगे और अपनी भूमि खोने लगे।

जनजातियों ने भी उनका विरोध किया, क्योंकि नए कानून उनके क्षेत्र में लागू किए गए। इसका परिणाम यह हुआ कि कई जनजाति लोगों को जंगल और भूमि से हाथ धोना पड़ा। बाद में आप इसके बारे में अधिक पढ़ेंगे।

कई हिन्दू और मुसलमान सोचते थे अंग्रेज उनके विश्वास को समाप्त कर उन्हें इसाई बनाना चाहते है।

1857 में जब उत्तर भारत में अंग्रेजों के शासन की जड़े मजबूत हो गई, तब उन्हें कठिनतम युद्ध करना पड़ा। यह विद्रोह भारतीय सैनिकों द्वारा आरम्भ किया गया तथा उच्च परिवार, जमींदार, किसान, जनजाति और हस्तकलाकार द्वारा भी किया गया। ऊँचे घराने के लोग जैसे नाना साहब, पेशवा का गोद लिया पुत्र, ताँत्या तोपे, अवध की बेगम और झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई शामिल थे। हिन्दू और मुसलमानों ने मिलकर अपने शत्रु के साथ युद्ध किया।

1857 का विद्रोह (The Revold of 1857)

स्थान :– मेरठ का सैन्य प्रांगण, जहाँ अंग्रेजी सेना का कैम्प था।

दिनांक : 10 मई 1857 रविवार

भारतीय सैनिकों ने जब अंग्रेजी अधिकारियों पर बन्दूके तानी तब सूर्यास्त होने वाला था। ये वहीं सिपाही थे जिन्होंने भारत में राज्यों को जीतने में अंग्रेजों की मदद की। वे अब अंग्रेजों के व्यवहार से उकता गए थे। उन्हें समय पर वेतन नहीं मिलता था तथा अंग्रेजी सेना में उचित सम्मान नहीं मिलता था। इन सबसे ऊपर यह बात थी कि भारतीय सिपाही को शक था कि नई कारतूसों पर गाय और सूअर की चर्बी चढ़ाई जाती है। उन्हें लगने लगा कि यह उनके धार्मिक विश्वास के लिए चोट थी। इसी सन्देह के आधार पर 1857 में कोलकत्ता के पास बैरकपूर में विद्रोह आरम्भ किया गया। मेरठ से यह सारे देश में फैल गया। इस दिन सैनिकों ने अंग्रेजी अधिकारियों पर बन्दूके तान दी। विद्रोही सैनिक रातों रात दिल्ली पहुँचे।

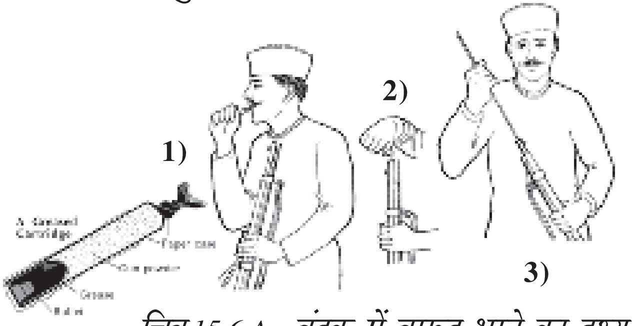

चित्र 15.6 A - बंदूक में बारूद भरने का दृश्य

1. दाँतों से कारतूस पर लगे कागज को निकालना पड़ता था।

2. बन्दूक में बारूद को भरना

3. कारतूस को कागज में लपेट कर बन्दूक में डालना।

SCERT TELANGANA

स्थान– मेरठ शहर
दिनांक– रविवार
रात –सोमवार– मई – 10–11–1857

सिपाही विद्रोह का समाचार सारे मेरठ में फैल गया। सारा शहर उत्तेजित हो गया। यह तरंग बाजार से आई और अंग्रेजी बंगलों तक पहुँच गई। भीड़ में पुलिस भी मिल गई और सबसे पहले कार्यालय और अंग्रेजों के बंगलों में आग लगाई गई। कई अंग्रेज मारे गए।

चित्र 15.7 : 1857 में मेरठ में सिपाही विद्रोह का दृश्य

मेरठ के सिपाही दिन के आरम्भ होते ही यमुना को पार कर दिल्ली पहुँचे। वे लाल किला पहुँचे, जहाँ अंग्रेजों द्वारा मुगल शासक बादशाह बहादूर शाह जफर को बंदी बनाया गया था। उन्होंने उन्हें अपना बादशाह घोषित किया और अंग्रेजी शासन को मानने से इन्कार किया। उत्तेजित लोगों का नारा था "अंग्रेजों को भगाओ और मुगल शासन को वापस लाओ।"

स्थान – दिल्ली – लाल किला
दिनांक – सोमवार, 11 मई 1857

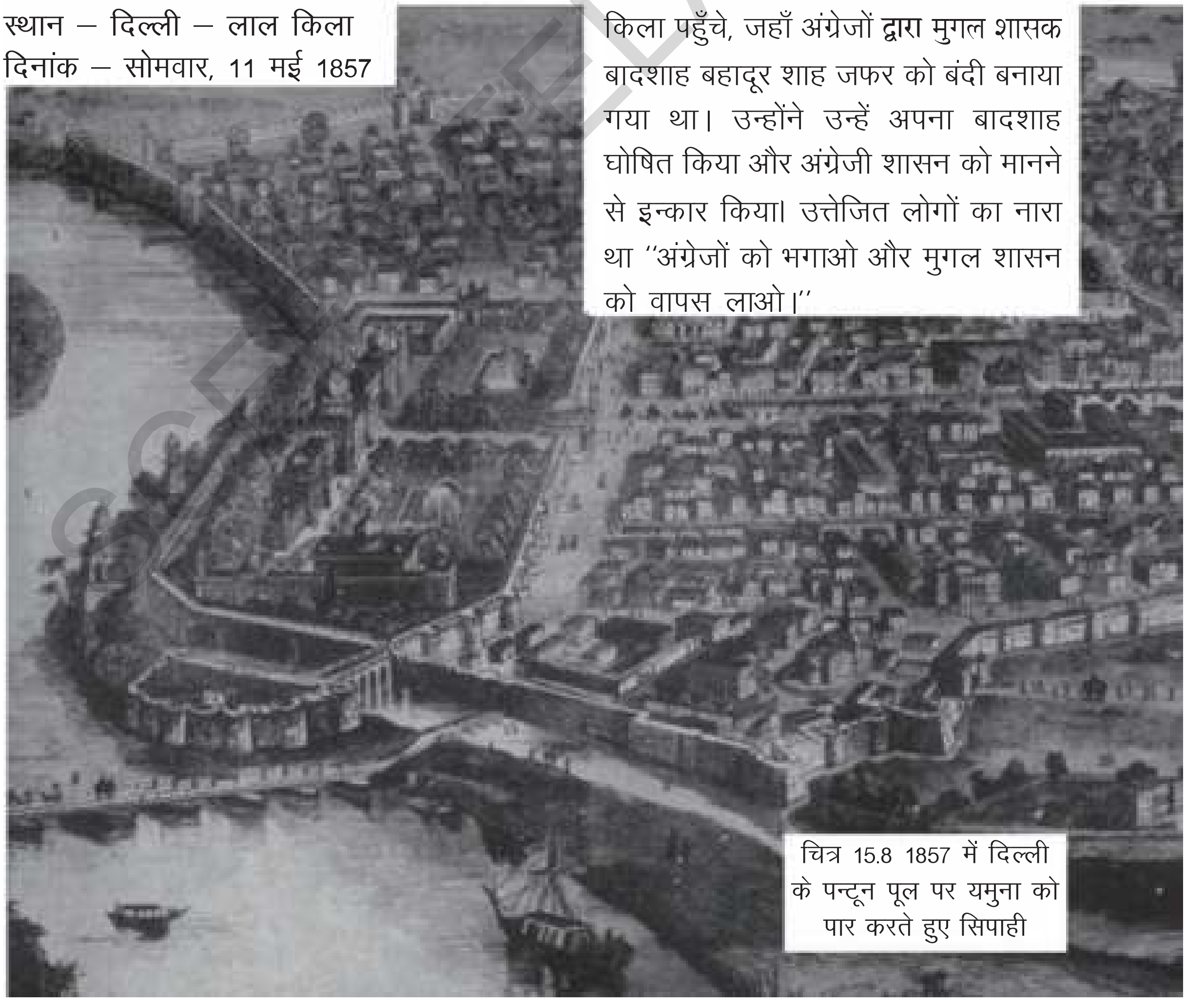

चित्र 15.8 1857 में दिल्ली के पन्टून पूल पर यमुना को पार करते हुए सिपाही

विद्रोह का विस्तार

(The Revold Spread)

चित्र 15.9 रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेजों के साथ युद्ध करते हुए।

जैसे ही विद्रोह की बात फैली अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह अनेक स्थानों पर फैल गया। सिपाही छिपते–छिपाते अलीगढ़, मेनपूरी, बुलन्दशहर, अटोक और मथुरा की छावनियों में पहुँच गए। अंग्रेज बुरी तरह से घबरा गए। उनकी स्थिति नाजुक हो गई।

भारत में अंग्रेज अधिकारी एवं सैनिकों की संख्या 45,000 तक थी। इसके विपरीत अंग्रेज सेना में भारतीय सैनिकों की संख्या 2 लाख 30 हजार थी। इसीलिए अनेक सिपाहियों ने इनका विरोध किया। अब अंग्रेजों की सम्पत्ति और घरों की रक्षा शहरों में कौन करेगा? उनकी सेना में भारतीय विभाग नहीं रहा। कई अंग्रेजी सैनिकों को अंग्रेज परिवारों की सुरक्षा के लिए रखा गया। इसका परिणाम यह हुआ कि विरोध तुरन्त नहीं दबाया जा सका और यह एक स्थान से दूसरे स्थान पर फैल गया।

चित्र 15.10 तांतिया तोपे

कई ऊँचे घराने के परिवार जिनके राज्य अंग्रेजों द्वारा छीन लिए गए थे, विद्रोह में शामिल हो गए। उनमें अवध के पूर्वकालीन नवाब, और मराठा पेशवा नाना साहेब थे। उत्तेजित सिपाहियों की सेना और देश के विभिन्न कोने के शासकों ने दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। आशा थी कि अंग्रेजों को भगा देंगे तथा मुगल शासन और आरम्भिक ह्लउृ फिर से लागू किए जा सकेंगे।

हैदराबाद उपनिवेशी के अंतर्गत योजनाओं के शोषण के विरूद्ध मौन नहीं था। १८५७ के विद्रोह में अन्य सभी क्रान्तिकारियों में से तुरेबाज खान ने हैदराबाद के अंग्रोजों के विरुद्ध विद्रोह किया। उसने मौलवी अल्लाउद्दीन की सहायता से ६,००० लोगो की सेना तैयार की और ब्रिटिश निवास पर धावा बोला जो आज कोठी का वुमेन्स कॉलेज है। उसमें उस समय विद्रोह किया जब निजाम ने अंग्रोजों की सहायता की। अन्त में आन्दोलन दबा दिया गया और तुरेबाज खान को फाँसी दे दी गई।

- क्यों मुगल साम्राज्य का विचार उत्तेजित भारतीयों को एकत्रित कर पाया, चर्चा कीजिए।
- जब आप किसी चीज का विरोध करते है तो आप उसके स्थान पर कुछ दूसरा चाहते हैं। आपके अनुभव के आधार पर एक उदाहरण सोचिए जो परिवर्तन की आवश्यकता बताता है।

SCERT TELANGANA

प्रत्येक गाँव में विद्रोह (Every Village in Revolt)

उत्तर प्रदेश और बिहार के कस्बे से कस्बे तथा गाँव से गाँव में विद्रोह की आग फैलने लगी। किसानों और जमींदारों ने अपनी सेना बनाई और अंग्रेज अधिकारियों को भगाया। उन्होंने अंग्रेज सरकार को कर देना बन्द कर दिया। उन्होंने रेल लाईने तोड़ दी, पुलिस स्टेशन जला दिए, अदालते, डाक और तार विभाग के कार्यालय और टेलीफोन के तार उखाड़ दिए। भारत में अंग्रेजों ने ये नई सेवाएँ आरम्भ की थी। जैसे–जैसे अंग्रेजों की हार होने लगी, वैसे–वैसे भारतीय का साहस बुलन्द होने लगा।

उत्तेजित जनता ने जमींदारों के घरों और मुख्य खातों को जला दिया। ये जमींदार अंग्रेजी कानून के कारण गाँवों में बहुत शक्तिशाली बन गए थे।

विद्रोह का दमन (The Revolt in Suppressed)

विशाल स्तर पर फैले हुए विद्रोह के बावजूद भी अंग्रेजों ने धीरे–धीरे स्थिति पर नियंत्रण प्राप्त किया।

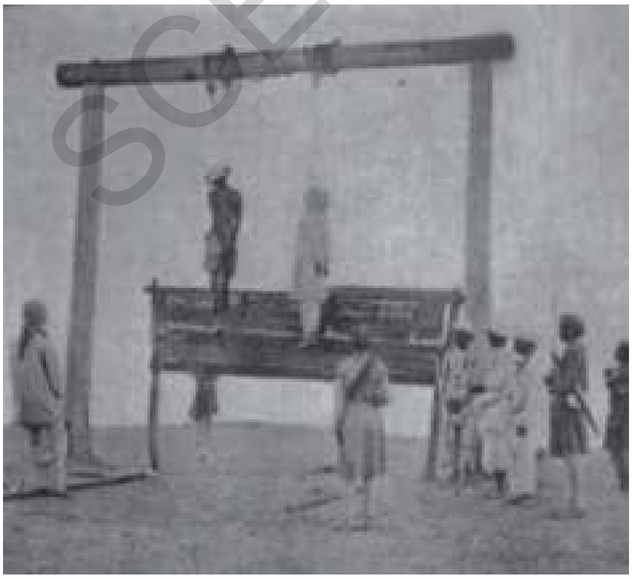

चित्र 15.11 चित्र 17.10 विरोध करने वालों को फाँसी पर लटकाना

तीव्रवादियों ने वीरता पूर्वक युद्ध किया। परन्तु उनमें दो बड़ी कमजोरयाँ थी। प्रत्येक क्षेत्र और शहर से लोग अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने लगे। उन्होंने मिल कर लड़ाई नहीं की थी। इनकी कोई सामूहिक और अच्छी योजना नहीं की थी। इसीलिए अंग्रेजों के लिए एक के बाद एक को दबाना आसान हो गया।

तीव्रवादियों के पास आधुनिक हथियार की कमी थी। बन्दूके, तोप, गिलिया और बन्दूक पाउडर, जिनकी उन्हें आवश्यकता थी वह भारत के बाहर से लाया जाता था। उन्हें पुरानी बन्दूके, तीर कमान, बरछे और तलवार से लड़ना पड़ा। आधुनिक हथियार के सामने कितनी देर तक ये पुराने हथियार टिक सकते थे?

फिर भी जिस तेजी से विद्रोह फैला, अंग्रेज उससे भयभीत हो गए। उन्होंने तीव्रवादियों के दल को निर्दयता पूर्वक दबाया। अमानवता द्वारा उन्होंने तीव्रवादियों को मार डाला और गाँवों में पेड़ों पर उनके शवों को लटका दिया ताकि गाँव की जनता को विद्रोह के परिणाम की जानकारी हो जाए।

वे तीव्रवादियों को कारतूसों पर बाँध देते थे और उन्हें उड़ा कर टुकड़े बना देते थे। कई तीव्रवादी अंग्रेजों की पकड़ से बचने के लिए छिपने तथा स्थान–स्थान पर भागने लगे। कुछ लोग नेपाल जैसे देश में जाकर छिपने लगे।

अंग्रेजों ने बहादूर शाह जफर को रंगून भेज दिया और वहाँ अन्तिम शासक की मृत्यु हुई। अंग्रेजों के लिए 1857 का विद्रोह बड़ी चुनौती बन गया। इसके दमन के बाद अगले 90 वर्षों तक उन्होंने दृढ़ता के साथ भारत में शासन किया।

सही शब्द का चयन कीजिए :–

(ए) 1857 के तीव्रवादी मुगल शासन (रखना / हटाना) .... चाहते थे।

SCERT TELANGANA

(बी) अंग्रेजी सेना की कमजोरी थी कि उनके अधिक सैनिक (यूरोपीय / भारतीय) .... थे।

■ तीव्रवादी भारतीय सेना की क्या कमजोरी क्या थी?

विद्रोह के पश्चात (After the Revold)

अंग्रेजों को 1857 के विद्रोह को दबाने में एक वर्ष से अधिक लगा। इस काल में उन्होंने अपनी कई योजनाएँ बदल दी और नई को अपना लिया। 1858 में इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया ने एक महत्वपूर्ण घोषणा की। उन्होंने कहा भारतीय राजा बिना किसी घबराहट के अपने साम्राज्य पर शासन कर सकते हैं अंग्रेज उन्हें अब गद्दी से नहीं उतारेंगे।

इस प्रकार उन्होंने अमीर परिवारों से निकट के संबंध स्थापित कर लिए। उसी प्रकार जमींदारों को भी कई प्रकार की छूट दी गई और उन्हें आश्वासन दिया गया कि उनकी सम्पत्ति सुरक्षित रहेगी।

पण्डित और मौलवियों को भी यह आश्वासन दिया गया कि भारतीय धार्मिक मामलों में कोई हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा और पारम्परिक पद्धति ही चलेगी। यह भी वादा किया गया कि भारतीयों को सरकार में शामिल किया जाएगा। परन्तु सच्चाई यह थी कि अंग्रेजों की दृष्टि 1857 के विद्रोह में छीने गए क्षेत्रों पर टिकी थी। अब वे लोग प्रसिद्ध नामी व्यक्तियों को कई प्रकार की छूट देने लगे ताकि उन्हें शान्त कर सके और लगातार वे अंग्रेजों की मदद करे।

हैदराबाद राज्य एवं अंग्रेज

उस समय के अन्य राज्यों के साथ-साथ हैदराबाद भी इंग्लिश ईस्ट इण्ड़िया कम्पनी से प्रभावित हो गया। अन्त में अंग्रेज़ों ने हैदराबाद में अपने आवास बनाए जहाँ से सारे राज्य के प्रशासन नजर रख सके। निजाम को अपने प्रधानमंत्री या दीवान की नियुक्ति इन आवासियों और ब्रिटिश गवर्नर जनरल की

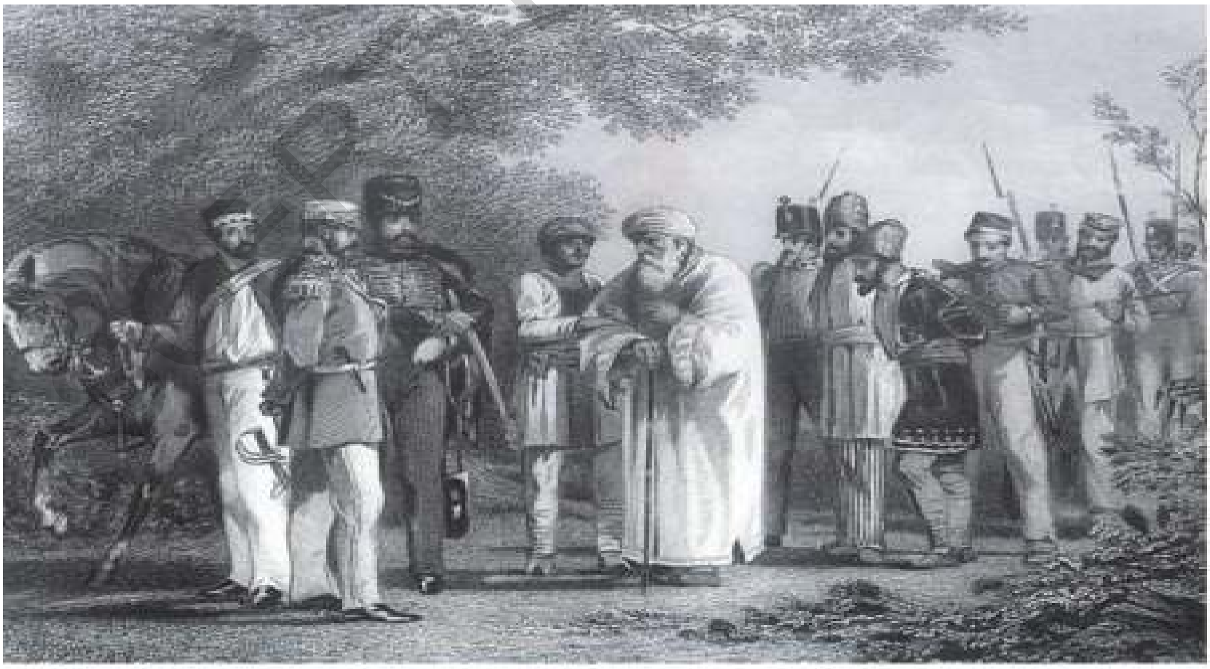

चित्र 15.12 कैप्टन हैड़सन द्वारा बहादूर शाह जफर और उनके पुत्रों को बंदी बनाया गया। औरंगजेब के बाद कोई शक्तिशाही मुगल शासक नहीं हुआ, परन्तु मुगल सम्राट महत्वपूर्ण थे। 1857 में तीव्रवादियों ने अंग्रेजी शासन का विरोध किया। बहादूर शाह जफर मुगल शासक उसी समय नेता बने। एक बार जब कम्पनी द्वारा विद्रोह को दवा दिया गया, उन्हें साम्राज्य को छोड़ने के लिए विवश किया गया, उनके पुत्रों की हत्या कर दी गयी।

अनुमति से करना पड़ता था। सभी विभागों में अंग्रेजों द्वारा चयित ICS (भारतीय नागरिक सेवाएँ) अधिकारियों की भर्ती की गई। इस प्रकार निजाम राज्य पर अंग्रेजों ने पूर्ण अधिकार जमा लिया। वे पूरी तरह से अन्य ब्रिटिश राज्यों में लागू व्यवस्थाओं और योजनाओं को अपनाने के लिए बाध्य करते थे।

यदि आप हैदराबाद जाएगे तो आप सालारजंग म्यूजियम देखेगे जहाँ हैदराबाद के दिवान सालारजंग की विभिन्न वस्तुएँ संग्रहित की गई ही। उसने कई सुधारों को लागू किया और हैदराबाद राज्य के आर्थिक विकास के लिए योगदान दिया। उसने प्राचीन देशमुखों को हटा कर साम्राज्य को सुबो और जिलों में विभाजित किया।उसने कृषि पद्धति पर लगान को समाप्त किया और उसके स्थान पर किसानों से सीधे जिला अधिकारियों को कर वसूल करने का अधिकार दिया। सर्वोच्च न्यायालय, उच्च नायायालय और जिला अदालतों द्वारा न्यायपालिका में सुधार लाया। दिवानी और फैजदारी अदालतों को अलग स्थापित किया गया। यतायात विकास के लिए सालारजग ने सड़क एवं रेल मार्ग का विकास किया। महत्वपूर्ण रेलमार्ग हैदराबाद से वाड़ी, मद्रास से सोलापूर और मद्रास से मुम्बई थे। १८५५ में चादरघाट में दर-उल-उल्म अंग्रेजी माध्यम का विद्यालय, सिटी कालेज, १८७० में दक्कन इंजीनीयरिंग कालेज और मदरसा-आई-आलिया भी स्थापित किए। इन सभी सुधारों के कारण ही हैदराबाद देश के अन्य राज्यों के साथ आधुनिक कतार में आ सका।

मुख्य शब्द

1. रॉयल आदेश
2. सुबेदार
3. पूर्ण
4. माँग
5. जागीर
6. उपमण्ड़ल
7. उपनिवेश
8. मौलवी

हमने क्या सीखा?

1. यूरोपीय व्यापारी कम्पनियों ने भारत में सेना क्यों रखी? कम्पनी के व्यापार में इन सेनाओं ने कौन–सी भूमिका निभाई?
2. 1700 और 1800 में यूरोपीय सेना ने भारतीय सेना को किस प्रकार हराया?
3. 1857 में विद्रोह की जानकारी प्राप्त कीजिए और तालिका में भरिए।

क्र.सं.	विद्रोह में भाग लेने वाले व्यक्ति	विद्रोह से अलग रहनेवाले व्यक्ति

4. 1857 के विद्रोह में किन सिपाहियों ने अनुभव किया कि उनके धार्मिक विचारों को ठेस पहुँची है और क्यों?
5. 1857 में लोगों ने अंग्रेजों का विरोध कैसे किया?
6. 1857 में विद्रोह करने वाले लोग क्या चाहते थे।
7. 1858 के घोषणा पत्र में रानी विक्टोरिया क्रान्तिकारियों की कौनसी शिकायते रखती है – उसे समझाइए।
8. भारत में आने वाले मुगल एवं अंग्रेजी के शक्तियाँ को बीच क्या समानताएँ एवं भिन्नताएँ थी?
9. मानचित्र में वास्कोड़िगामा के पुर्तगाल से भारत तक के समुद्री मार्ग का बताइए।
10. विदेशी अन्वेषकों को एक जुट होकर कैसे निकाल सकते है? संक्षिप्त टिप्पणा लिखिए।
11. अंग्रेजों के शासन के विरुद्ध अपने असंतोषजनक विचारों को प्रकट कीजिए।

SCERT TELANGANA

अध्याय 16

विधानसभा में कानून निर्माण
(Making of Laws in State Assembly)

हमने अब तक इस बारे में पढ़ा है कि जनता किस प्रकार अपना सार्वजनिक कार्य करती थी, कैसे उन्होंने शासन किया या उन पर कैसे शासन किया गया। हमने पढ़ा कि कम जनसंख्या वाले जन जाति समाज सभाओं में एक दूसरे की राय से सार्वजनिक मामले हल करते थे और उनका एक प्रधान होता था जो निर्णय लेता था। राज्य और साम्राज्य में हमने देखा कि राजा और उसके अधिकारी सभी मामलों में निर्णय लेते थे, अधिक भूमि और जनता पर अधिकार पाने के लिए किस प्रकार आपस में लड़ते थे। हमने यह भी देखा कि किस प्रकार प्रमुख और योद्धा लोगो के जीवन पर अधिकार रखते थे, इच्छानुसार उन पर भारी कर लगाते थे और उस धन का उपयोग स्वयं के लिए बड़े महल बनवाने, युद्ध करने और कुछ जन उपयोगी साधन जैसे तालाब, नहर और मन्दिर या मस्जिद बनवाने में खर्च करते थे। हमने यह भी देखा कि किस प्रकार अंग्रेजो ने अपना शासन स्थापित कर हमारे देश के प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट किया और उसका विद्रोह हमारे लोगों ने कैसे किया।

आज हम पर शासन करने के लिए कोई राजा या योद्धा नहीं है। हम लगभग 70 वर्ष पहले अंग्रेज़ी शासन से मुक्त हो चुके हैं। तो अब हम कैसे स्वयं पर शासन कैसे करेंगे? आप जानते ही होंगे की सांसद(MPs) विधायक (MLA),मंत्री, मुख्यमंत्री और उच्च अधिकारी होते हैं। क्या वे पुराने जमाने के राजाओं के समान है?क्या वे इच्छा से काम कर सकते है? नहीं। आधुनिक सरकार कानून के आधार पर कार्य करती है। कोई भी कानून से बड़ा नहीं है और सभी मंत्रियों और अधिकारियों को कानून के अनुसार काम करना पड़ता है। परन्तु कानून कौन बनाता है? कैसे कानून बनते हैं? क्या वे शासकों की मर्जी से बनाए जाते हैं? नहीं। कानून विधान सभाओं और संसद द्वारा बनाए जाते है। संविधान में कानून बनाने की जानकारी दी गई है। उसी तरीके से वे कानून बनाते है। इस अध्याय में हम विधान सभा में कानून का निर्माण किस प्रकार किया जाता है इसके बारे में विस्तार से जानेंगे।

चित्र *16.1* तेलंगाणा विधानसभा

SCERT TELANGANA

यहाँ एक समाचार है-उसे समझने की कोशिश करेंगे इसमें आन्ध्र प्रदेश के बारे में क्या कहा गया है, यह समझने का प्रयास करेंगे। धूम्रपान और सुरक्षा अधिनियम-२००२

सार्वजनिक ध्रुमपान प्रतिबंध के लिए पारित बिल

(Bill for Ban on Public Smoking Passed)

हमारे विशेष संवाददाता

हैद्राबाद मार्च 27.

बुधवार के दिन आन्ध्र प्रदेश की विधान में सार्वजनिक स्थलों पर या जनता द्वारा उपयोगी स्थलों पर और सार्वजनिक सेवा वाहन द्वारा धुएँ पर प्रतिबन्ध का प्रस्ताव पारित किया गया। इसमें यह भी बताया गया कि जो भी इस व्यवस्था का भंग करेगा उस पर बिना किसी हस्तक्षेप के 100 रु से1000रु तक का जुर्माना लगाया जाएगा।

कुछ विपक्षी सदस्यों ने इस संदर्भ में यह प्रस्तुत किया कि शिक्षण संस्थाओं से100कि.मी.की दूरी के आस-पास सिगरेट बेचने पर रोक लगा दी जाए। जहाँ 18वर्ष से कम उम्र के बच्चे पढ़ते है और सिगरेट के विज्ञापन पर रोक लगा दें। कुछ लोगों ने तम्बाकू से किसानों और पान के दुकानदारों की जीविका पर भी होने वाले प्रभाव के बारे में कहा। मंत्रियों ने उनके विचारों को शान्त किया।

मंत्रियों ने कहा कि ध्रुमपान से जनता के स्वास्थ्य पर होने वाले दुष्प्रभाव के लिए कानून बनाना आवश्यक है तथा सर्वोच्च न्यायालय ने भी 2नवम्बर2001को इस बारे मे अपनी अनुमति दे दी है। प्रतिबन्ध के मामले में विभाग5, 6और10 के अनुसार सार्वजनिक स्थलों और जन सेवा वाहनों और No smoking के बोर्ड लगाने पर 100रु से अधिक जुर्माना लगाया जा सकता है तथा दूसरी बार या लगातार गलती दोहराई जाने पर 200रु जुर्माना जो 500रु तक भी बढ़ाया जा सकता है का आदेश निकाला।

दि हिन्दू मार्च ***27-02*** से लिया गया अंश।

- अक्सर यह सोचा जाता है कि समाचार पत्र केवल व्यस्क व्यक्तियों द्वारा ही पढ़े जाते हैं। इसीलिए सबसे पहले हम इन शब्द का अर्थ पता करेंगें-हस्तक्षेप, दमन करना, विचार और निष्पादन, उल्लंघन, लागू।
- उपरोक्त समाचार विषय के अधार पर रिक्त स्थान भरिए :

1) सार्वजनिक स्थलों पर ध्रुमपान के रोक के लिए _______ पारित किया गया।

(प्रस्ताव, रिवाज, कानून, नियम).

2) ध्रुमपान पर प्रतिबन्ध_________ स्थल पर लगाया नहीं गया।(कार्यस्थल, सार्वजनिक वाहन, निजी बगीचे, बस स्टैण्ड)

3) सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश ___________ करने के लिए कानून था। (मौन, दंडित, अनुसरण, भंग).

4) प्रस्ताव _______ में पारित किया गया।(सर्वोच्च न्यायालय, मंत्रालय, जिलाधीश कार्यालय, सभा).

- क्या समाचार पत्र के लेख यह सुझाते हैं कि इस प्रस्ताव पर सभी के विचार एक जैसे हैं ?
- समाचार पत्र में किस प्रकार के जुर्माने की प्रणाली के बारे में बताया गया?

संविधान प्रत्येक राज्य के लिए एक विधान मंडल उपलब्ध कराता है। प्रत्येक प्रदेश में विधान मंडल में राज्यपाल तथा एक या दो सदन होते हैं। प्रदेश में यह विधान मंडल द्विसदनी(दो सदन का एक होना),

SCERT TELANGANA

या एक सदनी(एक सदन) होती है। निचला सदन विधान सभा और उच्च सदन विधान परिषद कहलाता है। वर्तमान में बहुत ही कम प्रदेशों में द्विसदनी विधानमण्डल है।

विधान सभा (Legislative Assembly)

प्रदेश में कानून बनाने के लिए यह महत्वपूर्ण सदन है। राज्य की सरकार कानून बनाने तथा लागू करने के लिए उत्तरदायी होती है और प्रदेश के लिए कल्याण कारी योजनाएँ तैयार करती है, उस सभा में अनेक सदस्यों का समावेश होता है। हमारे प्रदेश की सभा में 119 सदस्य(विधायक)होते हैं जो कि जनता द्वारा चुने जाते है ठीक वैसे ही जैसे पंचायत के सदस्य चुने जाते है।.

साधारणतः प्रत्येक विधान सभा का कार्यकाल ५ वर्ष का होता है, लेकिन कभी-कभी राज्यपाल द्वारा इसे समय से पूर्व भी भंग कर दिया जा सकता है। इसी प्रकार जब कभी देश में आपातकालीन स्थिति होती है तो संसद द्वारा इसके कार्यकाल में एक वर्ष बढ़ाया भी जा सकता है।

प्रदेश में विधान मण्डल वर्ष में दो बार बैठके बुलाता है और दोनों बैठको के बीच में छः महीने से अधिक का समय नहीं होना चाहिए।

SCERT TELANGANA

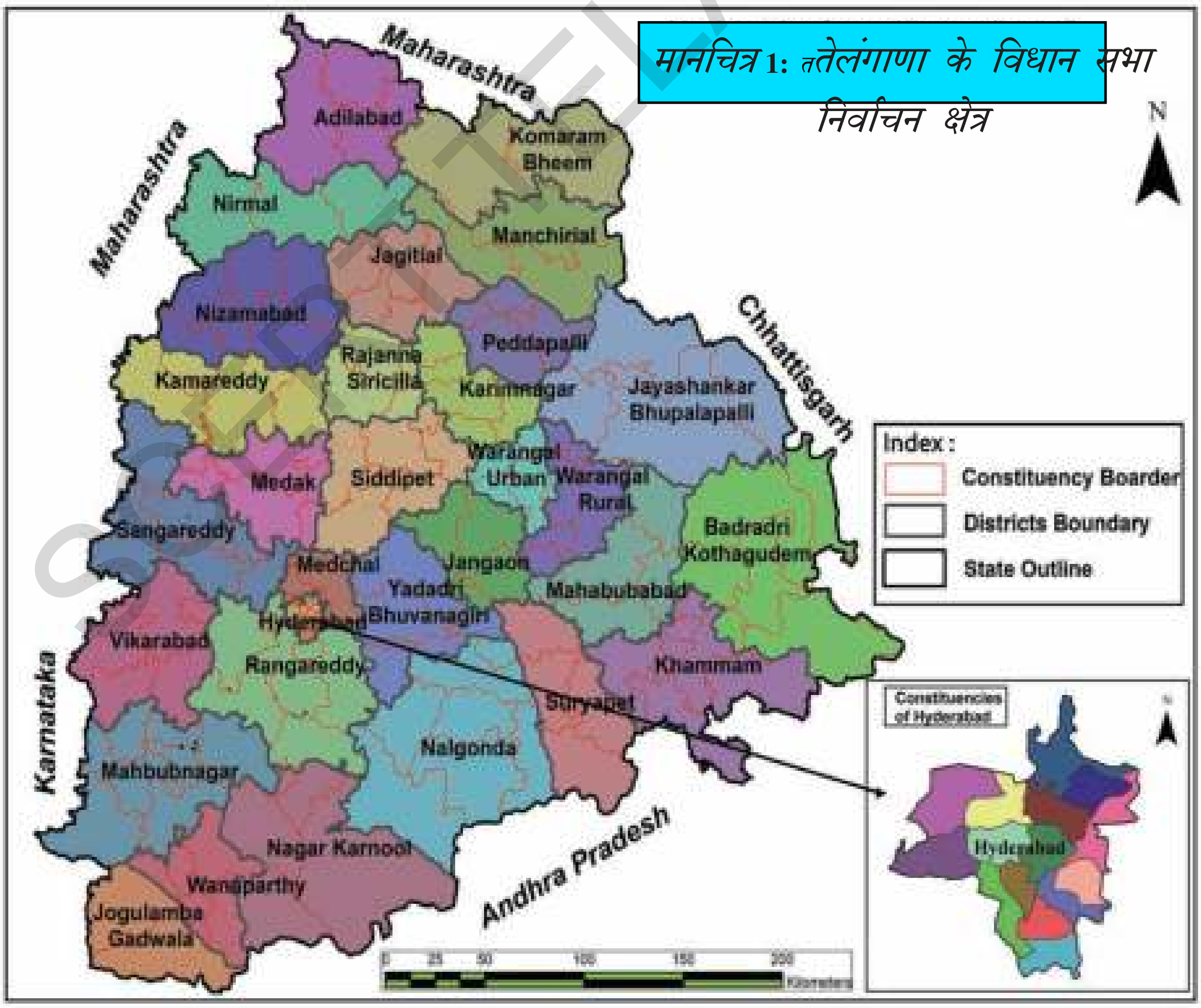

मानचित्र 1: ततेलंगाणा के विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र

तेलंगाना में विधान मंड़ल द्वारा कानून बनाया जाता है जिसके दो सदन है।		
सदन	सदस्य	संक्षिप्त रूप
विधान सभा	विधान सभा के सदस्य	MLA
विधान परिषद	विधान परिषद के सदस्य	MLC

विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र में

119 सदस्य में से हर सदस्य निर्वाचन क्षेत्र से चुनी जाता है। प्रदेश में चुनावी क्षेत्र की संख्या उसकी जनसंख्या पर आधारित होती है। इस प्रकार प्रदेश में 119 चुनावी क्षेत्र है। तेलंगाना के निर्वाचन क्षेत्र में लगभग 1,70,000 मतदाता है। आपको याद होगा 18वर्ष या उससे अधिक उम्र के स्त्री या पुरुष दोनों को मत देने का अधिकार है। उन्हें अपना नाम अपने क्षेत्र में मतदाता के रूप में लिखवाना पड़ता है, जहाँ वे रहते है। एक निर्वाचन क्षेत्र से सभी मतदाता एक सदस्य को सभा के लिए चुनते हैं।

प्रत्येक चुनावी क्षेत्र में कई गाँव, शहर और नगर होते हैं। बड़े शहर जैसे हैदरबाद को तेरह चुनावी क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। तेलंगाना के मानचित्र को देखिए। आप देख सकते हैं कि वे जिले जहाँ अधिक जनसंख्या होती हैं, वहाँ अधिक निर्वाचन क्षेत्र होते हैं और कम जनसंख्या वाले क्षेत्र में कम निर्वाचन क्षेत्र होते हैं।

MLA(विधायक) का चुनाव

सामान्यत: चुनाव आयोग प्रादेशिक विधान मंड़ल में चुनाव का आयोजन पाँच वर्ष में एक बार करता है। जो व्यक्ति विधायक बनना चाहता है चुनाव में खड़ा होता है। विभिन्न राजनैतिक दल अपने उम्मीदवारों के नाम लिखवाते हैं। कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं, जो चुनाव लड़ते हैं किंतु किसी राजनैतिक दल से संबंधित नहीं होते। वे "स्वतंत्र उम्मीदवार". कहलाते हैं। चुनाव लड़ने के लिए व्यक्ति को भारतीय नागरिक होना चाहिए और जो 25 वर्ष की आयु पूरी कर चुका हो। वह प्रदेश से या केन्द्रीय सरकार से कोई लाभ प्राप्ति नहीं करता हो और कानून द्वारा निर्धारित अन्य योग्यताओं का भी अर्जन कर चुका हो।

चुनाव में राजनैतिक दल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सभी राजनैतिक दल और उम्मीदवार चुनावी घोषणा पत्र के साथ बाहर आते हैं। इन पत्रों में वे अपने द्वारा किए जाने वाले कार्यक्रम की जानकारी देते हैं जो स्थानीय संदर्भ से संबंधित होती है। उम्मीदवार और उनके सहायक सभा का आयोजन कर और मतदाताओं के घरों पर जाकर चुनाव का प्रचार करते हैं।

- आपके क्षेत्र के सक्रिय राजनैतिक दलों के नाम की सूची बनाइए और उनके चुनाव चिह्न बताइए।
- अगर आप जिले से चुनाव लड़ना चाहे हैं तो चुनावी घोषणा पत्र तैयार कीजिए। चुनावी क्षेत्र के लोगों से अपने वायदे बताइए।
- कुछ लोग समझते हैं कि चुनाव में अधिक धन खर्च होता है और वह केवल धनी लोगों के सामर्थ्य में है। क्या आप इससे सहमत हैं ?
- अगर केवल अमीर लोग ही चुनाव लड़ सकते तो सभा में लिये जाने वाले निर्णयों पर इसका असर कैसे होता ?

SCERT TELANGANA

Fig 16.2

- चुनाव आयोग द्वारा प्रकाशित कैलेंडर से कुछ चित्र (16.2) में प्रस्तुत किये गये हैं। ये विभिन्न समय में हमारे देश में होने वाले चुनाव की विभिन्न छवियों और समय को दर्शा रहे हैं। इन चित्र एवंआकृतियों के आधार पर अपने अध्यापक और बुजुर्गों से इस पर चर्चा कीजिए कि पिछले कुछ वर्षों में क्या परिवर्तन देख गए हैं।

मतदान के दिन लोग एक के बाद एक मत देते है। मतदान केन्द्र पर उपसथित अधिकारी मतदाता की पहचान करने के उत्तरदायी होता है। अधिकतर मामलों में चुनाव आयोग सभी मतदाताओं को चुनाव पहचान काड़ देता है। इस कार्ड को अधिकारी को दिखाना पड़ता है। मतदाता अपने द्वारा दिए गए मत को गुप्त रखते है। चुनाव आयोग मतदान की प्रक्रिया में बैलेट बॉक्स या इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन का उपयोग करता है।

चित्र 16.3

- आपको ऐसा क्यों लगता है कि इसे गुप्त रखा जाना चाहिए ?
- अपने अभिभावकों के फोटो पहचान कार्ड का परीक्षण कीजिए और अपने लिए सभी जानकारियों काल्पनिक पहचान कार्ड के साथ बनाइए।

SCERT TELANGANA

मतदान के बाद सभी मतों की गिनती निर्धारित दिनांक को की जाती है और जिस उम्मीदार को अधिक मत मिलते हैं वह विजयी घोषित किया जाता है।

- मान लीजिए एक चुनावी क्षेत्र में 1,50,000 मतदाता है, नीचे विभिन्न उम्मीदवारों को प्राप्त मतों की संख्या है। इनमें से आप के विचार से कौन निर्वाचित घोषित किया गया होगा?

एलम्मा	45,000
राघवुलु	44,000
नरसिम्हा	16,000
गुलाम मुहम्मद	20,000
बद्देय्या	15,000
पूजा	10,000

- आपके विचार में विजयी उम्मीदवार अपने निर्वाचन क्षेत्र के लोगों के विचारों और आवश्यकताओं का वास्तविक प्रतिनिधित्व किस स्तर तक करेंगे ?

आपके अध्यापक की मदद से पता कीजिए:-

- आपके चुनावी क्षेत्र का नाम_____________
- आपके जिले के तीन अन्य निर्वाचन क्षेत्रों को पहचानिए __________ ______________________
- MLAका नाम____________ ______________________
- आपके जिले के आरक्षित निर्वाचन क्षेत्र पहचानिए ________________
- आपके परिवार के सदस्यों के नाम लिखिए जिन्होंने पिछले चुनाव में वोट दिया था।

सरकार का गठनः- (Formation of Government)

तालिका 1को देखिए। ये विधासभा के चुनाव के बाद के परिणाम दिखाती हैं।.

हमने देखा कि राजनैतिक दल A के 75 उम्मीदवार विजयी रहे। जिस दल ने आधे से अधिक स्थानों को प्राप्त किया है वह बहुमत वाला दल कहलाता है। अगर कोई कानून बनाना हो तो वे सरलता से इसे पारित किया जा सकता है क्योंकि आधे से अधिक सदस्य उसे समर्थन देते है।

बहुमत प्राप्त दल में से वे एक व्यक्ति का चुनते हैं और उसे नेता बनाते हैं। महिला या पुरूष को राज्यपाल द्वारा प्रदेश के लिए मुख्यमंत्री बनाया जाता है। मुख्यमंत्री उनमें से मंत्रियों के रूप में MLA को चुनते हैं। सभी को मिलाकर वह कैबिनेट(मंत्रालय) कहलाता है। प्रसिद्ध शब्दों में कैबिनेट को 'सरकार' भी कहते है। विकासशील योजनाओं को लागू करने और ऩए कानून बनाने तथा पारित करने और सभा के लिए कल्याणकारी योजनाएँ बनाने के लिए कैबिनेट उत्तरदायी होती है।

तालिका 1	राजनीतिक दल	चुने हुए उम्मीदवारों की संख्या
1	राजनीतिक दल - A	75
2	राजनीतिक दल - B	17
3	राजनीतिक दल - C	10
4	राजनीतिक दल - D	7
5	राजनीतिक दल - E	6
6	राजनीतिक दल - F	4
	कुल	**119**

SCERT TELANGANA

◆ तालकि 1 देखिए जो 119 निर्वाचित क्षेत्रों वाले अन्य राज्य के विधान सभा चुनाव के परिणाम दर्शाती है, किस दल ने सरकार का निर्माण किया होगा?

तालिका 2	राजनीतिक दल	निर्वाचन उम्मीदवारों की संख्या
1	राजनीतिक दल- P	202
2	राजनीतिक दल - Q	50
3	राजनीतिक दल - R	11
4	राजनीतिक दल- S	11
5	राजनीतिक दल - T	8
6	राजनीतिक दल - U	6
7	राजनीतिक दल - V	2
	कुल	**290**

◆ तालकि 3 में बनाये अनुसार यदि चुनाव में सीटों का बंटवारा विभिन्न दलों में किया जाता है तो अपने समूह में चर्चा कीजिए और पता लगाइए कि नई सरकार की स्थापना कैसे की जाएगी?

तालिका 3	राजनैतिक दल	निर्वाचन उम्मीदवारों की संख्या
1	राजनीतिक दल - Abcd	45
2	राजनैतिक दल - Mnop	33
3	राजनैतिक दल - Wxyz	26
4	राजनैतिक दल - Stuv	15
	कुल	**119**

अगर किसी भी एक दल को आधे से अधिक मत नहीं मिलते हैं, तो दो या उससे अधिक राजनैतिक दल एक साथ मिल जाते हैं और सरकार की स्थापना करते हैं। इसे संयक्त सरकार (Coalition Governemnt) कहते हैं।

मंत्रियों की परिषद (Council of Ministers)

मुख्य मंत्री कैबिनेट के मंत्रियों को विभिन्न मंत्रालय सौंपते हैं। वह किसी को वित्त मंत्री, शिक्षा मंत्री या गृह मंत्री या अन्य मंत्री बनाता है। मंत्री अपने विभाग की योजना का निर्देश देते हैं। विभाग के अधिकारियों द्वारा इन योजनाओ को कानून के अनुसार लागू किया जाता है। इन पद्धतियों और योजनाओं को सभा में सहमति के लिए प्रस्तुत करने का उत्तरदायित्व मंत्रालय का होता है। सभा की सहमति के पश्चात मंत्रालय इसे लागू करने के लिए कानून और पद्धतियाँ बनाते हैं।

प्रत्येक मंत्रालय स्वतंत्र रूप से कार्य करता है, बड़ी पद्धतियों आदि पर पूरे कैबिनेट के द्वारा निर्णय लिया जाता है। इसीलिए यदि कोई चीज गलत हो जाए तो सारा कैबिनेट और मुख्य मंत्री इसके लिए उत्तरदायी होता हैं। अच्छे काम के लिए सारे कैबिनेट को श्रेय भी मिलता है।

राज्य विधान सभा (The State Assembly)

सभी विधायक मिल कर एक अध्यक्ष (Speaker) को चुनते हैं। अध्यक्ष सभाओं का आयोजन करते हैं, निर्णय लेते हैं कि किन विषयों पर चर्चा की जाए, कब और कौन किस तरीके से बोलेगा आदि। अगर कोई इसका उल्लंघन करता है तो, अध्यक्ष को उसे दंडित करने का अधिकार होता है।

उपरोक्त कथन के अनुसार सभा को सभी कानूनों को स्वीकृति, नीतियों को और सरकार द्वारा लगाये जाने वाले कर लगाने का अधिकार होता है । सहमति देने के पहले सदस्य ध्यानपूर्वक उस पर चर्चा करते है और विभिन्न दृष्टियों से विचारों को प्रस्तुत करते हैं। इसलिए इसके अच्छे और बुरे परिणाम पर गहराई से विचार किया जाता है। इसीलिए इन मापदंडों के लाभों और कुप्रभावों की विस्तारपूर्वक चर्चा की जाती है। समाचार

SCERT TELANGANA

पत्रों और दूरदर्शन द्वारा इसे जनता के सामने प्रस्तुत किया जाता है।

MLA भी अपने निर्वाचन क्षेत्र में विकास कार्य करते हैं और समय-समय पर सभा में लोगों की समस्याओं को प्रस्तुत करते है। उस विभाग के मंत्रियों को इसका पता लगाना होता है और सभी प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं। मंत्री व्यक्तिगत रूप से और मुख्यमंत्री के साथ संपूर्ण कैबिनेट सभा के लिए उत्तरदायी होते है। इसीलिए किसी भी मंत्री को सदस्यों द्वारा पूछे जाने वाले किसी भी प्रश्न के उत्तर देने के लिए तैयार रहना पड़ता है। अगर उत्तर सन्तोषजनक न हो तो सदस्य उसे त्याग पत्र देने पर विवश कर सकते हैं।

कानून निर्माणः- (The Making of Laws)

सभा में कानून कैसे बनते हैं ? अधिकतर कानून का प्रारूप सत्ता दल करता है क्योंकि उसका अकेले का सहयोग सभा में कानून पारित करने में अधिक होता है। किन्ही विशेष विषयों पर सदस्य कानून का प्रस्ताव भी रख सकते है और बहुमत द्वारा इसे अपनाया भी जा सकता है। विस्तार से कानून बनाने की विधि को देखिए।

कानून पारित होने के पहले, प्रस्तावित कानून बिल कहलाता है। दोनों सदनों द्वारा पारित होने पर और राज्यपाल के समर्थन के बाद यह कानून बनता है और राज्य विधानमण्डल का अधिनियम कहलाता हैं।

तेलंगाना की विधान परिषद (Legislative Council of Telangana)

2014 तक तेलंगाना और आन्ध्रप्रदेश एक राज्य थे। आन्ध्रप्रदेश में दो सदन है। दूसरे सदन को विधान परिषद कहते है। इसका आरम्भ दो सत्रों में हुआ 1958-1985 और 2007 से अब तक। यह स्थाई सदन है। तेलंगाना विधान परिषद में 40 सदस्य है। ये सदस्य MLCs कहलाते है जो 6 वर्ष के लिए चुने जाते है। प्रति दो वर्ष के पश्चात इसके 1/3 सदस्य सेवानिवृत्त हो जाते है। इसके चुनाव में लड़ने के लिए व्यक्ति को भारतीय नागरिक होना पड़ेगा और 30 वर्ष से अधिक आयु वाला हो। उसे प्रादेशिक या केन्द्रीय सरकारी आय प्राप्त ना हो और संसद द्वारा निर्धारित सभी योग्यताओं से युक्त हो। इसकी संरचना इस प्रकार है।

संरचना (Composition) :-

- 14 सदस्य (1/3) MLA's के द्वारा निर्वाचन।
- 34 सदस्य (1/3) स्थानीय संस्थाओं जैसे पंचायत और नगरपालिकाओं द्वारा निर्वाचित
- 3 सदस्य (1/12) स्नातकों द्वारा निर्वाचित
- 3 सदस्य (1/12) अध्यापको द्वारा निर्वाचित
- 6 सदस्य(1/6) राज्यपाल द्वारा मनोनीत

प्रदेश में कानून बनाने के लिए, दोनों सदनों का समर्थन आवश्यक है।

राज्यपालः- भारत के राष्ट्रपति द्वारा राज्यपाल की नियुक्ति होती है। उनका कार्य यह होता है कि वे इस बात का ध्यान रखे कि भारतीय संविधान द्वारा प्रादेशिक सरकार कार्य करे। राज्यपाल मुख्यमंत्री और अन्य परिषदों के अन्य **मंत्रियों की नियुक्ति करते हैं। प्रादेशिक सरकार में संविधान के राज्यपाल को सभी विधान मण्डलीय अधिकार दिए गये है।**

तेलंगाना के राज्यपाल कौन हैं? पता लगाइए।

SCERT TELANGANA

आरक्षण की प्रणाली

चुनाव में लड़ना और जीतना दलित या आदिवासी जैसे कमजोर वर्ग, के लिए बड़ा कठिन कार्य है। इसलिए उनमें से बहुत ही कम विधानसभा के लिए चुने जाते हैं। इसीलिए भारतीय संविधान ने सभाओं में अनिवार्य रूप से उन्हें लाने के लिए अनुसूचित जाति और जन जाति लोगों के लिए स्थान आरक्षित किए हैं।

तेलंगाना प्रदेश में प्रादेशिक विधान सभा में आरक्षित निर्वाचन क्षेत्र:

कुल निर्वाचन क्षेत्र	119
अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित क्षेत्र	19
जनजाति के लिए आरक्षित क्षेत्र	12
एंग्लो इण्ड़ियन समुदाय	01

- कई लोग सोचते हैं कि इसी प्रकार महिलाओं के लिए भी सीटें आरक्षित होनी चाहिए आप क्या अनुभव करते हैं ?

जो मंत्री बिल लाता है, उसे नए कानून को सभा में प्रस्तुत करने के पहले विस्तार से उसके विषय में कारण बताने पड़ते हैं उस पर बहुत अधिक चर्चा की जाती है और विभिन्न MLAs के द्वारा इसका विरोध भी किया जाता है। बिल में विकास के लिए सुझाव भी प्रस्तुत किए जाते हैं। एक छोटी समिति जिसमें सत्ता दल और विरोधी सदस्य दोनों मिल कर सुझाव पर चर्चा करते हैं। इन सभी विधियों के बाद तथा आवश्यक परिवर्तन के बाद इसे पहले कैबिनेट में समर्थन के लिए प्रस्तुत किया जाता है। फिर इसे सभा में मत के लिए प्रस्तुत किया जाता है। अगर विधान सभा के आधे से अधिक सदस्यों का बहुमत बिल को मिल जाता है तो उसके बाद उसे विधान परिषद में प्रस्तुत करते है। अगर विधान परिषद में यह पारित हो जाता है तो राज्यपाल के पास सहमति के लिए भेजा जाता है। उनके समर्थन के पश्चात बिल को अधिनियम कहा जाता है और इसे सरकारी समाचार पत्र (Gazettee) में छापा जाता है।

विधानसभा में चर्चाएँः- (Disussion in the Assembly)

चलिए विधान सभा में होने वाली चर्चा का काल्पनिक उदाहरण पढ़ेंगे।

MLA (1) : माननीय अध्यक्ष, पिछले तीन वर्षों से वर्षा की कमी के कारण मेरे निर्वाचित क्षेत्र में भूमिगत जल का स्तर बहुत नीचे चला गया है । इस सम्बन्ध में सरकार ने कोई कदम नहीं उठाया है। यहाँ बोरवेल की मात्रा में वृद्धि हुई है। मैं जानना चाहूँगा कि माननीय मंत्री ने भूमिगत जल और जल संरक्षण के संदर्भ में क्या कदम उठाया है।

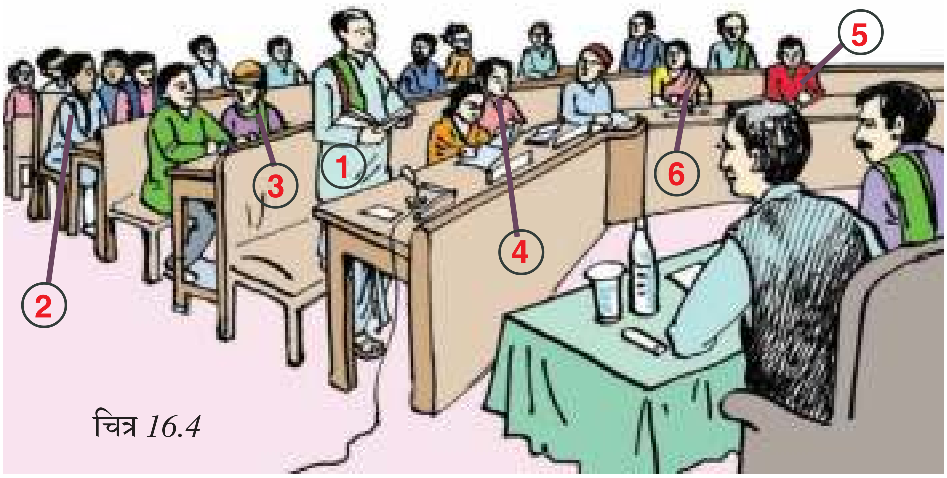

चित्र *16.4*

SCERT TELANGANA

MLA (2): माननीय अध्यक्ष, यह सच है। मेरे निर्वाचन क्षेत्र की स्थिति भी अच्छी नहीं है। अधिकारियों का काम सन्तोष जनक नहीं है। लोगों को पीने के पानी लाने के लिए बहुत दूर जाना पड़ता है ।

MLA (3): माननीय अध्यक्ष, सरकार द्वारा तालाब बनाने के लिए पैसा देना चाहिए, जमी हुई मिट्टी को निकालने और वर्षा के पानी को संचित करने के लिए वर्षा ऋतु में अनुरूप कदम उठाए जाने चाहिए। तालाब के किनारे ज्यादा-से -ज्यादा वृक्ष लगाए जाने चाहिए।

MLA (4): माननीय अध्यक्ष, सरकार इस स्थिति से अवगत है। इस हानि को रोकने के लिए आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं। भूमिगत जल के अभाव से ग्रसित मण्डलों को पहचाना गया है।

MLA (5) : माननीय अध्यक्ष, विपक्षी दलों को उठाए गए कदम की प्रशंसा करनी चाहिए और रचनात्मक सुझाव देना चाहिए । उन्हें व्यर्थ में सरकार की निन्दा नहीं करनी चाहिए। मेरे निर्वाचन क्षेत्र में पहाड़ी ढलाऊ क्षेत्र में जलाशय का निर्माण किया गया है और इसका परिणाम यह हुआ है कि भूमिगत जल के स्तर में विकास आया है। सरकारी अधिकारी जनता की पहुँच में है।

MLA (6): माननीय अध्यक्ष, क्षेत्र के औद्योगिक संघ प्रदूषित जल को नदियों में प्रवाहित कर रहे हैं और इसका बुरा असर लोगों के स्वास्थ्य पर हो रहा है। मैं यह जानना चाहूँगा कि सरकार इस विषय में क्या कदम उठा रही है। मेरे निर्वाचन क्षेत्र में पीने के पानी की गम्भीर समस्या है।

मंत्री: माननीय अध्यक्ष, सरकार लोगों के स्वास्थ्य के प्रति जागरूक है। इसने सभी प्रकार के आवश्यक सुरक्षित उपाय मण्डल के सूखा अधिकृत भाग के लिए उठाए हैं, जैसे तालाबों का विकास, पेड़ लगाना और रेत की खदानें बनाना, आदि। सरकार सभी मानवीय सदस्यों के सुझावों पर ध्यान देगी और कार्यक्रम को सफलता पूर्वक लागू करने के लिए सहायता करेगी।

- अगर आप MLA होते तो आप उपरोक्त विषय पर आपकी क्या प्रतिक्रिया होती ?
- सत्ता दल MLA और विरोधी दल के MLAकी पात्रता में क्या अन्तर है ?

मुख्य शब्द :

1. चुनावी घोषणा पत्र
2. कैबिनेट
3. अध्यक्ष

मेरी सुरक्षा :

लैंगिक अपराधों से बच्चों की सुरक्षा (अधिनियम)

बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सरकार ने एक विशेष क़ानून बनाया है। इस क़ानून को 'लैंगिक अपराधों से बच्चों की सुरक्षा का अधिनियम-२०१२ () ' कहते हैं। बच्चों की सुरक्षा भंग होने पर यह क़ानून उनके अभिभावकों को क़ानूनन विशेष अदालतों के द्वारा सुरक्षा प्राप्त करने का अक्सर प्रदान करता है। बच्चों की सुरक्षा भंग करने वाले क़ानून की दृष्टि में दोषी समझे जाएंगे। विशेष अदालत के जज बच्चों के बयान को ही मान्य मानकर किसी गवाह और प्रमाण के बिना भी सजा सुनाएंगे। यह क़ानून बाल मित्र है और बच्चों को सुविधा एवं सुरक्षा प्रदान करेगा।

SCERT TELANGANA

हमने क्या सीखा ?

1. सामान्य लोगों के जीवन से संबंधित उन क्षेत्रों के नाम बताइए जिन पर कानून बनाये गये हैं ?
2. आपका विद्यालय स्कूल शिक्षा विभाग से सम्बन्धित है। कुछ कानूनों का पता लगाइये जो आपके विद्यालय पर लागू होते हैं(विद्यार्थी, अध्यापक,मास्टर, प्रिंसिपल)
3. यह कानून है कि 6-14 वर्ष की आयु के कोई भी बच्चे विद्यालय से अछूते न रहें, इस कानून को लागू करने के लिए कौनसे कदम उठाए जाने चाहिए? आपके अध्यापक की सहायता से आपस में चर्चा कीजिए।
4. कानून निर्माण अनुच्छेद को पढ़िए और निम्न प्रश्न का उत्तर दीजिए।

   यदि आप तेलंगाना विधान सभा के सदस्य हैं, आप कानून बनाने के लिए किस विषय को उठाएगे और क्यों? उदाहरण के साथ समझाइए।
5. मान लीजिए 368 MLA की सीटों के साथ पूरबगढ़ एक प्रदेश का चित्र है। चुनाव के बाद विभिन्न राजनैतिक दल को इतनी सीटें मिली है:-

दल A	=	89
दल B	=	91
दल C	=	70
दल D	=	84
अन्य	=	34
कुल	=	368

उपरोक्त तालिका को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए

a) प्रदेश में सरकार बनाने के लिए 368सीटों में से कितनी सीटों पर जीत प्राप्त करना होगा?

b) इस चुनाव के बाद कौनसा दल बड़ा है?

c) क्या एक अकेला बड़ा दल सरकार बना सकता है ? यदि नहीं तो इसका दूसरा क्या उपाय है?

d) एक दलीय सरकार से संयुक्त दल की सरकार किस प्रकार भिन्न है?

6. वर्तमान काल में हमारे देश में द्विसदनी सभा बहुत ही कम प्रदेशों में है। क्या आप नाम बता सकते हैं?
7. आपके जिलों के मानचित्र में विधानसभा चुनावी क्षेत्र को अंकित कीजिए। (मानचित्र 1 की सहायता लिजिए।)

SCERT TELANGANA

अध्याय 17

जिला स्तर पर कानून का कार्यान्वयन
(Implementation of Laws in the District)

आपने पिछले अध्याय में कानून किस तरह बनते हैं, कल्याणकारी कार्य एवं प्रगति की योजनाएँ किस तरह बनती हैं उसकी जानकारी प्राप्त की है। ये कानून किस तरह लागू किए जाते हैं ? क्या आप सोचते हैं कि जो ये कानून बनाता है वह भी निर्वाचित होता है ? क्या कानून बनते ही लोग अपने आप उन्हें लागू करने लगते हैं। इस अध्याय द्वारा आप जानेंगे कि यह सब किस तरह से होता है।

i. बाँध एवं नहरों का निर्माण

ii. घरों तक बिजली पहुँचाना

iii. राशन की दुकानें चलाना

iv. रेल की व्यवस्था करना

v. नोट छापना

vi. जनता से कर प्राप्त करना

vii. बाल-मजदूरी को रोकना एवं सभी बच्चों को शिक्षा

viii. देश की सीमाओं की रक्षा करना

ix. गरीबी रेखा से नीचे के लोगों की पहचाना करना और उनके लिए लाभदायक योजनाओं को लागू करना।

x. लोगों को दूसरों के घरों से चोरी करने से रोकना।

- आपने कई सरकारी कार्यों के विषय में सुना होगा। क्या आप उनमें से कुछ नाम बता सकते हैं और चर्चा कर सकते हैं कि वे क्या कार्य करते है ?

हमने पिछले अध्याय में देखा है विभिन्न कार्यो के लिए सरकार के कई सारे विभाग होते है । ये विभाग मंत्रियों के नियंत्रण में होते हैं। लेकिन इसमें कई अफसर सरकारी आदेश का पालन करते हैं। इन में से कुछ अधिकारी राज्य की राजधानी हैदराबाद में नियुक्त हैं जहाँ से वे राज्य के हर भाग में कानून लागू (implementation) करते हैं। साथ ही राज्य को कई जिलों में बाँटा जाता है और अधिकतर विभागों के कार्यालय उन्ही जिलों में होते है ताकि सरकारी कानून एवं योजना को लागू किया जा सके। तेलंगाना में 31 जिले है।

- आपके जिले का नाम क्या है और उसका मुख्यालय कहाँ पर है ?

SCERT TELANGANA

हर जिले में एक जिलाधीश एवं मजिस्ट्रेट होते है जो जिले के सभी विभागों का कार्य देखते हैं। उनके कार्य के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करेंगे।

नल्लावरम के जिलाधीश एवं मजिस्ट्रेट (The District Collector of Megistrate of Nallavaram)

यहाँ पर एक काल्पनिक जिला नल्लवरम है। इस जिले के मण्डल इस प्रकार हैः-गारिपल्ली, मल्लेपल्ली, नरसापेट,गुरुथुर। नल्लावरम के जिला मेजिस्ट्रेट का कार्यालय, नल्लावरम शहर में हैं।

चित्र 17.1 नल्लारम जिला

जिला मजिस्ट्रेट मनीषा नागले प्रति दिन सवेरे 10:30 तक अपने कार्यालय पहुँच जाती है। आज 11:30 बजे विभागों के अफसरों की एक सभा है। सभी विभागों के मुख्य इस में पधारे हैं। जिलाधीश इन सभी से पिछले महीने उनके विभाग में क्या प्रगति हुई है उसके विषय में जानकारी प्राप्त करती हैं। वह अपने कार्यालय में किन समस्याओं का सामना कर रहे हैं इसकी जानकारी भी प्राप्त करती हैं। यह सभा दोपहर के लगभग 2 बजे तक चलती रही।

सभा समाप्त होने के बाद मनीषा नागले सभी फाइलों की जाँच करती है। फाइलों का ढेर लगा है । हर फाइल में अलग-अलग विभाग के कार्यो की जानकारी है। वह सभी फाइलें पढ़ती हैं और उन पर अपनी टिप्पणी या आदेश लिखती है। दोपहर 3.00 बजे तक वह ये कार्य पूरा कर लेती है। 3.00 बजे से 4.30 बजे तक वह जिले के लोगों से मिलती हैं । जिले के हर मण्डल से लोग अपनी समस्याएँ लेकर उनके पास आते हैं।

मल्लेपल्ली गाँव के कुछ किसान उनके गाँव में सिंचाई की कमी के विषय में उनसे बात करते हैं। उनके गाँव में लगभग 2 वर्ष से तालाब सूखे पड़े हैं। इस वर्ष फसलें भी नहीं हुई है। वे जानना चाहते है कि क्या उनका ऋण माफ कर दिया जाएगा, या फिर तालाबों के तट पर कुछ मरम्मत की जा सकती है। पड़ोस के गाँवों में जलाशय के बांधो की मरम्मत हुई हैं। वे चाहते है कि ऐसा कार्य उनके गाँव में भी हो।

मनीषा नागले ने उन्हें बताया है कि चूँकि उनका गाँव राज्य के सूखाग्रस्त क्षेत्र में नहीं आता, इसीलिए उनके ऋण माफ नहीं किए जा सकते । जिलाधीश ने उन्हें राय दी है कि वे अपने गाँव के MLA से मिले और अपनी समस्या उन्हें बताएँ। उन्होंने गाँव के लोगों को वचन दिया है कि वे सिंचाई विभाग से उनके जलाशय की समस्या को निपटाने के लिए कहेंगी।

अगले दिन सवेरे5.00 बजे जिलाधीश को नरसापेट मण्डल से फोन आता है कि वहाँ के कपास मिल में कल रात आग लग गई है। आग बुझाने वाले वहाँ पहुँच चुके हैं। यह आवश्यक था कि आग पड़ोसी स्थानों में न फैले। नागले तुरन्त ही नरसापेट के लिए निकल पड़ती है। उन्होंने पुलिस अधिकारी तथा डॉक्टर से भी फोन पर वहाँ पहुंचने के लिए कहा।

जिलाधीश 7.00 बजे तक नरसापेट पहुँच गई। वे सीधे कपास की मिल में गई। बहुत सारी कपास जल कर बरबाद हो चुकी है । लेकिन आग पर काबू कर लिया गया था। पुलिस अफसर एवं नगर निगम के अध्यक्ष भी

SCERT TELANGANA

चित्र 17.2 कपास की मिल में जिलाध्यक्ष

वहाँ पहुँच चुके हैं। जिलाधीश ने उनसे नुकसान की जानकारी प्राप्त की। नगर निगम अध्यक्ष ने उनसे कहा है कि दो श्रमिक काफी जल गए हैं और इन्हें पास के अस्पताल में भर्ती किया गया है। पास के कुछ घर भी जल गए हैं।

नागले ने उन परिवारों को दस हजार रूपए देने की घोषणा की और आग किस तरह फैली इसके विषय में भी जाँच के आदेश दिये। उसके बाद वह आग में जले श्रमिकों को देखने अस्पताल पहुँची। उन्होंने वहाँ पर इन श्रमिकों को 20 हजार रु प्रति व्यक्ति देने की घोषणा की।

वापसी में वे नगर निगम के कार्यालय पहुँची। वहाँ उन्हें पता चला कि शहर के कई स्थानों में अतिक्रमण के कारण फायर इंजन देर से पहुँचा। सड़क के दोनों ओर दुकान वालों ने कब्जा कर लिया। कई बिल्डिंगों।और घरों ने भी गैरकानूनी तरीके से सीमा से आगे अपनी घर की दीवारें बाँध ली हैं। इससे शहर के कई स्थानों में ट्राफिक जाम हो रहा है। मनीषा नागले ने नगर निगम के अफसरों से बात की और उन्हें आदेश दिया कि वह इसके विरोध में कुछ कठोर कदम उठाए और अगली सभा में उसकी जानकारी दे। नागले अंधेरा होने के बाद ही गाँव पहुँच सकी।

नल्लावरम एक काल्पनिक गाँव है। लेकिन यहाँ पर आपने जिलाध्यक्ष को जो कार्य करते देखा है ऐसा ही हर जिलाध्यक्ष को हर जिले में करना चाहिए।

- जिलाध्यक्ष ने ऋण न माफ करने का किसानों को क्या कारण बताया?
- आग दुर्घटना में और किन अधिकारियों के नाम हैं?
- इस दुर्घटना में और किन व्यक्तियों के विषयों में बताया गया है?

तहसीलदार(MRO) एवं ग्राम राजस्व अधिकारी
(Tahasildar (MRO) and Village Revenue Officer)

आपने देखा है कि नल्लावरम जिले को मण्डलों में बाँटा गया है। हर मण्डल में अनेक गाँव हैं। नीचे दिए गए मान चित्र में आप देख सकते हैं कि नल्लावरम को कई मण्डलों में विभाजित किया गया है। कई गाँवों को मिलकर एक मण्डल बनता है। जिला मुख्यालय की तरह ही मण्डल में भी कई विभाग होते हैं। यह विकास मण्डल अधिकारी, राजस्व, शिक्षा, कृषि और अन्य अधिकारी होते है।

- जिला मानचित्र में अपने मण्डल का नाम पता कीजिए।
- अपने जिले के मानचित्र में कुछ मण्डलों के नाम ज्ञात कीजिए।

SCERT TELANGANA

चित्र 17.3 गाँव के लोग सी सेवा केन्द्र से भूमि लेखा जोखा की जानकारी प्राप्त करते हुए।

रेवन्यू आफिसर अपने पास भूमि का लेखा-जोखा भी रखते हैं। अगर आप गाँव में, या अपनी भूमि पर रहते है, तो आपकों पता होगा कि आपने माता-पिता के पास उनके पास जितनी भी भूमि है उसका विवरण होता है। पूरे देश की भूमि को नापा जाता है और इसकी जानकारी इन कार्यालयों में रखी जाती है। इनके पास विभिन्न लोगों के पास की भूमि, कृषि, जलाशय, निकास, कुएँ, पडोस की भूमि, सड़क, पहाड़ इत्यादि के मानचित्र भी होते हैं। यह सभी पत्र अत्यन्त उपयोगी होते हैं। अगर किन्हीं दो गुटों में भूमि की सीमा को लेकर विवाद हो तो यह प्रमाण-पत्र एवं मानचित्र समस्या को निपटाने में काफी सहायक होते हैं। यदि कोई भूमि खरीदता है या बेचता है तब इस सूचना को इस कार्यालय में लिखवाना आवश्यक होता है। इन मानचित्रों में चरवाह वन या गैर उपजाऊ भूमि की भी सूचना होती है इसीलिए अगर कोई इस ज़मीन का अतिक्रमण करे तो उसे खाली किया जा सकता है।

गाँव के राजस्व शाखा अधिकारी एवं मण्डल राजस्व शाखा अधिकारी की यह जिम्मेदारी है कि वे इस का लेखा-जोखा रखे। उनकी यह भी जिम्मेदारी है कि वो सभी को राशन कार्ड भी उपलब्ध कराएँ। और उसका नवीनीकरण करे इसके लिए ***मी सेवा केन्द्र*** का उपयोग किया जा रहा है और इन केन्द्रों से विभिन्न प्रकार के प्रमाण पत्र का दिए जाते है।

कानून किस तरह लागू किए जाते हैंः (How Laws are implemented)

इसे समझने के लिए, हमें पहले यह पता करना चाहिए कि असल में कानून क्या होता है? पिछले अध्याय में आप पढ़ चुके हैं कि भू-गर्भ जल का क्या महत्व है? और किस तरह ये ऐतिहासिक रूप से कृषि की प्रगति में महत्वपूर्ण है। हमारे पास बारह-मासी नदियाँ भी हैं और वन आच्छादित क्षेत्र भी हैं। फिर भी हम देखते हैं कि तेलंगाना के कई स्थानों में लगभग 1,500 फीट की गहराई तक बोर-वेल खोदे जाते हैं। इस तरह हम आगे भविष्य में सिंचाई नहीं कर पाएगें और पेयजल की भी कमी हो जाएगी।

आन्ध्र प्रदेश जल भूमि एवं पेड़ सुरक्षा आधिनियम-2002

आने वाली पीढ़ी के लाभ एवं उनके जीवित रहने के लिए इन साधनों की सुरक्षा करना महत्वपूर्ण है। इस के लिए आन्ध्र प्रदेश सरकार ने जल, भूमि और वृक्षों की सुरक्षा के लिए अधिनियम - 2002 को लागू किया है। इसे19-04-2002 से लागू किया गया है। इस अधिनियम की विशेषताएँ कुछ इस प्रकार हैः

a. बोर-वेल खुदवाने के लिए मण्डल रेवेन्यू आफिसर की अनुमति आवश्यक है।

b. कुओं के बीच की दूरी एवं गहराई नियम के अनुसार होनी चाहिए जिससे कोई मतभेद न हो।

SCERT TELANGANA

c. वर्षा के जल को व्यर्थ न होने दे।

d. उद्योगों में व्यर्थ जल को उपयोगी बनाने की व्यवस्था हो।

e. पेय-जल की सुरक्षा।

f. उन क्षेत्रों में जहाँ पर भू-गर्भ जल कम हो. नदी के किनारों से रेत खोदने पर निषेध लगा दिया जाए।

g. सामाजिक वन व्यवस्था का विस्तार किया जाए।

h. बिना आज्ञा के पेड़ नहीं काटे जाए। अगर कोई पेड़ काटा जाए तो उस स्थान पर दो पेड़ लगाए जाए।

इस कानून को पारित करने के बाद सरकार ने एक अधिकारी संस्था बनाई। जो इस कानून को लागू कर सके। इसे जल,भूमि एवं पेड़ सुरक्षा संस्था WALTA के नाम से जाना गया। अगर आप ध्यान से देखेंगे तो पता चलता है कि किसी कानून को लागू करने के लिए यह आवश्यक है कि विभिन्न सरकारी विभाग मिलजुलकर काम करें। आप ध्यान दे कि वन विभाग को इसमें रखा गया है क्योंकि वन जल की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। और औद्योगिक सरकारी संस्था भी ताकि वह यह देखे कि फैक्टरी जल प्रदूषण न फैलाएँ।

अब हम एक तालिका बना सकते हैं यह दर्शाने के लिए कि कैसे विभिन्न सरकारी व्यक्ति इस कानून को लागू करने के लिए उत्तरदायी हैः

विभाग	**विषय**
भू-गर्भ जल विभाग	बोर-वेल एवं नदी किनारे से रेत खोदने के लिए आज्ञा लेना, जल के विभिन्न स्त्रोतों का विभाजन आदि।
नगर निगम प्रशासन एवं शहरी विकास विभाग	वर्षा द्वार प्राप्त जल को संग्रह करके उपयोगी बनाना, पेड़ लगाना, नई इमारत बनाने के लिए अनुमति लेना।
खान एवं भू-गर्भ शास्त्र विभाग	जल-विभागों के पास रेत की खुदाई पर नज़र रखना।
वन-विभाग	उच्च प्रदेश में पेड़ लगाने की अनुमति देना।

अब अगर कानून ठीक ढंग से लागू किया जाए तो इसका क्या अर्थ है? अगर ऐसा हो जाए तो इन समस्याओं को देखकर क्या आप बता सकते हैं कि कौन-सा विभाग अपनी उत्तरदायित्व किस तरह निभाएगा ? यदि इसका मूल्यांकन करे तो क्या एक से अधिक विभाग ये कार्य देखते हैं?

- सत्यवती एक किसान है जो एक नया बोर-वेल खुदवाना चाहती है। उसके पडोस की भूमि में एक और बोर-वेल है। उसे कौन से नियम अपनाने चाहिए ?
- पद्मानाभम अपना नया घर बनवाना चाहता है और नदी की सतह से रेत इकठ्ठा करना चाहता है। इसके लिए उसे किससे अनुमति लेनी होगी?
- आप्पराव एक कान्ट्रेक्टर है जो वन के समीप, पत्थरों की खुदवाई करवाना चाहता है। उसे किस विभाग से अनुमति लेनी होगी?

SCERT TELANGANA

भारत जैसे प्रजातांत्रिक राज्य में जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि एवं दूसरे सरकारी अफसर विभिन्न पात्र निभाते हैं। यह प्राचीन समय में राजाओं द्वारा एक पुजारियों द्वारा किए गए शासन से काफी भिन्न है। इसका अर्थ यह नहीं हम यह नहीं बता सकते है कि समाज से असमानताएँ और भेदभाव पूरी तरह से मिट चुका है। लेकिन हम इसे प्राप्त करने के प्रयत्न कर सकते हैं।

मुख्य शब्द :-

1. मेजिस्ट्रेट
2. तहसीलदार
3. कानून को लागू करना
4. वी आर ओ (VRO)
5. गिनिंग (कपास से बिनौला निकालने की मशीन)

हमने क्या सीखा?

1. जिलाध्यक्ष द्वारा किए गए कार्यक्रम की एक सूची बनाइए।
2. नीचे दिए वाक्यों को सुधार कर लिखिए :
   a. कानून निर्वाचित सदस्यों द्वारा लागू किया जाता है।
   b. कलेक्टर मण्डल के इन्चार्ज होते हैं। जिलाधीश होते है।
   c. लोग पूरे जिले की समस्याओं को निपटाने के लिए मण्डल अफिसर से मिलते हैं।
   d. भूमि राजस्व का रिकार्ड तहसीलदार (MRO) रखते हैं।
3. पृ. १६० के पहले दो अनुच्छेद पढ़िए तहसीलदार और ग्राम राजस्व अधिकारी पढ़िए और निम्म प्रश्न का उत्तर दीजिए।

   आप ऐसा क्यों सोचते है कि भूमि का लेखा जोखा गाँव एवं मण्डल स्तर पर रखा जाना चाहिए।
4. पिछले दो अध्यायों में कानून कैसे बनता है और उसे कौन लागू करता है इस विषय में हम पढ़ चुके हैं। नीचे दी गई तालिका में उनके पात्रों की तुलना कीजिए:

   a) चुनाव लड़ना पड़ता है
   b) विभिन्न सरकारी विभागों के अंश हैं।
   c) कानून बनाने के जिम्मेदार
   d) कानून लागू करने के जिम्मेदार
   e) 5 वर्ष के लिए चुने जाते हैं
   f) उद्योगों में नियुक्ति की जाती है

विधान सभा के सदस्य	शासन कार्य के सदस्य

SCERT TELANGANA

5. यहाँ पर मनीषा नागले का एक और संक्षिप्त विवरण है। इसे ध्यान से पढ़िए और इसकी तुलना अध्याय 14 में दिए गए "मनसबदार" और "जागीरदार" एवं 13 वे अध्याय में दिए गए केप्टेन आफ द ट्रूप्स-द अमरनायकास से कीजिए और नीचे दी गई सारिणी में भरिए।

मनीषा नागले पिछले 5 महिनो से नल्लावरम की जिलाध्यक्ष रह चुकी है। जिलाध्यक्ष बनने से पूर्व वह जन स्वास्थ्य विभाग मंत्रालय में उप -सचिव के रूप में राज्य की राजधानी में कार्य कर चुकी है। यह सम्भव है कि उनकी बदली किसी और जिले के जिलाध्यक्ष के रूप में हो सकती है या वह वापस सचिवालय जा सकती है। वह भारतीय सरकार की एक कर्मचारी है। कई बार इन लोगों को दिल्ली जाकर केन्द्र-सरकार के लिए कार्य करना पड़ता हैं। इन सभी की नियुक्ति सरकार द्वारा निर्वाहित परीक्षा में चुने जाने के बाद होती है।

विषय-वस्तु	सरकारी सेवक	अमर नायक	मनसबदार
चुनाव की प्रक्रिया			
इनके द्वारा वेतन प्राप्त होता है।			

6. आपके जिला मानचित्र में आपके मण्डल के आस-पास के क्षेत्र में रंग भरिए।

चर्चा :

विद्यार्थी के साथ राजस्व अधिकारी (तहसीलदार/मण्डल राजस्व इन्सपेक्टर/ग्राम राजस्व कार्यालय) वार्तालाप कार्यक्रम आयोजित कीजिए। कानून का निष्पादन।

परियोजना कार्य :

1. अपने अध्यापक या अन्य सरकारी विद्यालय के अधिकारी का साक्षात्कार कीजिए और निम्न संदर्भ में जानकारी प्राप्त कीजिए :

   उनकी नियुक्ति कैसे हुई?

   उन्हें किस विभाग में रिपोर्ट करना पड़ता है?

   क्या अध्यापक को स्थानान्तरित किया जाता है?

   उन्हें कैसे प्रोत्साहित या दण्डित किया जाता है? उनके वेतन के जिम्मेदार कौन होते है?

   यदि उन्हें अपनी कार्य परिस्थिति में कोई शिकायत हो तो किसे रिपोर्ट करें?

2. नए कार्यक्रम लागू करने जैसे बच्चे का दाखिला, मध्यान्ह भोजन या अन्य कार्यक्रम पर उनका क्या अनुभव होता है? अपनी प्राप्त जानकारी को कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।

SCERT TELANGANA

अध्याय 18

जातिगत भेदभाव और समानता के लिए संघर्ष (Caste Discrimination and the stuggle for equalities)

हमारे देश में असमानता के मुख्य कारणों में से एक जाति प्रथा भी है। सदियों से मानव इस कुरीति के प्रति लडता आया है और हमारा संविधान भी इसे खत्म करने के प्रयास (संघर्ष) करता रहा है। जातिगत भेदभाव को समाप्त करना ही हमारी सरकार का मुख्य उद्देश्य रहा है। आइए पढ़ते हैं कि जाति प्रथा कैसे काम करती है और जातीय असमानता को समाप्त करने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं।

SCERT TELANGANA

हमारे देश में बड़ी संख्या में लोग किसी न किसी जाति से संबंधित है। वे अपने नाम के साथ-साथ जाति का नाम भी जोड़ लेते हैं। सामान्यतः एक जाति के लोग कुछ समान्य रिवाज, किसी विशेष देवता की पूजा इत्यादि को मानते हैं। अधिकतर लोग जो जाति के नियमों का पालन करते हैं, वे अपनी जाति के भीतर ही विवाह करते हैं। पुराने समय में एक जाति के लोग एक समान पेशा या काम भी किया करते थे, हालांकि आज के दौर में यह परंपरा तेज़ी से बदल रही है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जातिप्रथा लोगों के विशेष समूहों में कुछ बंधनों को उत्पन्न करती हैं और उन्हें दूसरे समूह के लोगों से अलग करती हैं।

- क्या आप अपनी कक्षा में इस विषय पर चर्चा कर सकते हैं,कि आपके इलाके में यह कथन किस हद तक सही रहा है और किस हद तक इनमें बदलाव आया है।

फिर भी जाति प्रथा ने हमारे समाज में काफी असमानता और भेदभाव भी उत्पन्न कर रखा है। आइए देखते हैं ये कैसे होता है?

लोग जीवनव्यापन के लिए शिक्षण, बढ़ईगीरी, मिट्टी के बर्तनों का काम, सिलाई, मछली पकड़ना जैसे विभिन्न व्यवसायों में संलग्न हैं। हालांकि कुछ कामों को दूसरे कामों से ज्यादा महत्व दिया जाता है। सफाई, धुलाई, बाल काटना, गंदगी ढ़ोना, जैसे कामों को कम महत्व वाला माना जाता है और जो इस काम को करते हैं उन्हें हीन भाव से देखा जाता है। यह मान्यता जाति प्रथा का महत्वपूर्ण पहेलू है। जाति प्रथा में विभिन्न लोगों के समुदाय/समूह को सामाजिक क्रम में रखा गया है, जहाँ हर जाति एक दूसरे से ऊपर है या नीचे। जो स्वयं को इस सीढ़ी का ऊपरी हिस्से मानते थे वे स्वयं को उच्च जाति का कहते थे और स्वयं को श्रेष्ठ रूप में देखते थे। वह वर्ग जो इस सीढ़ी के सबसे नीचे होता था, उन्हें अयोग्य ओर अस्पृ श्य माना जाता था। जाति नियम इस तरह से बनाए गए थे कि अस्पृश्य कहे जाने वाले लोगों को उनकी जाति वाला काम छोड़कर दूसरा काम करने की अनुमति नहीं दी जाती थी। उदाहरण के लिए, कुछ समूहों को केवल कचड़ा या गंदगी उठाने और मृत पशुओं को गाँव से बाहर ले जाने की अनुमति होती थी, लेकिन उन्हें उच्च जाति के लोगों के घरों में प्रवेश करने या गाँव के कुंए से पानी भरने या मंदिर में प्रवेश की अनुमति नहीं होती थी। उनके बच्चे विद्यालय में

अन्य जाति के बच्चों के साथ नहीं बैठ सकते थे। उच्च जाति के लोग 'अस्पृश्यों' को वे अधिकार नहीं देते थे, जिनका वे इस प्रकार कार्य करते थे जो उपयोग करते थे।

- आपके विचार से किन मायनों में जाति प्रथा लोगों में असमानता को बढ़ावा देती है?

जब कुछ लोगों को उनकी इच्छा के मुताबिक काम करने नहीं दिया जाता –जैसे शिक्षा हासिल करना या अपनी पसंद की नौकरी करना, इत्यादि, तब ये कहा जा सकता है कि वे जातीय असमानता का सामना कर रहे हैं। भारत के महान नेता डॉ.भीम राव अम्बेडकर ने1901 में मात्र 9 वर्ष की आयु में जाति आधारित असमानता का पहली बार अनुभव किया था। वे अपने भाई के साथ पिताजी से मिलने के लिए कोरेगाँव गए, जो अब महाराष्ट्र में है।

डॉ. भीम राव अंबेडकर
(1891- 1956)
भारत के संविधान का प्रारूप तैयार करने वाली समिति के अध्यक्ष और भारत के प्रथम केंद्रीय विधि मंत्री।

"हमने काफी लम्बा इंतजार किया, लेकिन कोई भी नहीं आया। एक घंटा गुज़र गया और स्टेशन मास्टर पूछताछ के लिए आया। उसने हमसे हमारे टिकट के बारे में पूछा। हमने उसे टिकट दिखाया। उसने हमसे पूछा कि हम रुके हुए क्यों हैं। हमने उसे बताया कि हमें कोरेगाँव जाना है और हम अपने पिता या नौकर के लिए इंतजार कर रहे हैं, लेकिन कोई भी नहीं आया और हमें पता नहीं है कि कोरेगाँव तक कैसे पहुंचा जाय। हम अच्छे कपड़े पहने हुए थे हमारी पोशाक और बातों से कोई भी नहीं कह सकता था कि हम अछूत के बच्चे हैं। दरसअल स्टेशन मास्टर को यकीन था कि हम ब्राह्मण के बच्चे हैं और उसने हमें छुआ भी। सामान्य हिंदुओं की तरह स्टेशन मास्टर ने हम से पूछा कि हम कौन हैं? एक क्षण सोचे बिना ही मैंने कह दिया कि हम महार हैं (महार को मुंबई प्रेसीडेंसी में एक अछूत समुदाय माना जाता है)। वह दंग रह गया। उसके चेहरे में अचानक परिवर्तन आया। हम देख सकते थे कि उसके भीतर प्रतिकर्षण का एक अजीब एहसास उत्पन्न हो गया था। जैसे ही उसने मेरा जवाब सुना, वह दूर अपने कमरे में चला गया और हम वहीं खड़े रहे।

पंद्रह से 20 मिनट गुज़र गए। सूर्य लगभग अस्त हो रहा था। न ही हमारे पिता आए और न ही उन्होंने अपने नौकर को भेजा और अब स्टेशन मास्टर भी हमें छोड़कर जा चुका था। हम काफी घबराए हुए थे और यात्रा की शुरूआत में जो खुशी और आनंद हमने अनुभव किया था वह गहरी उदासी में बदल गया।

आधे घंटे के बाद स्टेशनमास्टर फिर लौटा और हमसे पूछा कि हम क्या करना चाहते हैं। हमने कहा कि अगर हमें भाड़े पर बैलगाड़ी मिलती है तो हम कोरेगाँव जा सकते हैं, और अगर वह दूर नहीं है तो हम फौरन निकल जाना चाहेंगे। वहाँ बहुत सी बैलगाड़ियाँ भाड़े पर जाने के लिए तैयार थीं, लेकिन स्टेशन

SCERT TELANGANA

मास्टर को दिया गया मेरा जवाब, कि हम महार हैं, सभी बैलगाड़ी चालकों के पास पहुँच चुका था और उनमें से कोई भी नहीं चाहता था कि उसका सफर गंदा हो और उसे अछूत यात्रियों के साथ जाने का अपमान सहना पड़े। हम दुगना किराया देने के लिए तैयार थे, लेकिन हमने पाया कि पैसे से कुछ नहीं होने वाला। हमारी ओर से बातचीत करने वाला स्टेशन मास्टर चुप खड़ा हो गया, उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें।

स्रोत: डॉ.बी.आर.अम्बेडकर, लेखन और भाषण, वॉल्यूम- 12, संपादित बसंत मून, मुंबई शिक्षा विभाग, महाराष्ट्र सरकार।

- बच्चों द्वारा पैसे देने की पेशकश के बावजूद बैलगाड़ी वालों ने मना कर दिया। क्यों?
- स्टेशन पर डॉ.अम्बेडकर और उसके भाइयों के प्रति लोगों ने भेदभाव का कैसा व्यवहार किया ?
- आपके विचार में एक बच्चे के रूप में डॉ.अम्बेडकर पर क्या बीती होगी, जब उसने अपनी जाति महार बताने पर स्टेशनमास्टर की प्रतिक्रिया देखी होगी ?
- क्या आपने कभी इस प्रकार के प्रतिकूल प्रभाव का अनुभव किया है या भेदभाव की घटना देखी है?
- इससे आप कैसा अनुभव करते हैं?

कल्पना कीजिए कितना कठिन होता होगा, जब लोग आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान तक नहीं जा पाते होंगे, लोगों को ले जाने, उनको छूने या जिस स्रोत से वे पानी पीते हैं उसी पानी को पीने से मना करने पर कितना दुखद और अपमानजनक लगता होगा।

यह छोटी सी घटना दर्शाती है कि बैलगाड़ी में एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने का आसान काम पैसे देने पर भी बच्चों के लिए उपलब्ध नहीं था। स्टेशन पर सभी बैलगाड़ी चालकों ने बच्चों को ले जाने से इन्कार कर दिया। उन्होंने भेदभाव का बर्ताव किया। तो यह कहानी हमें स्पष्ट बताती है कि सिर्फ जाति पर आधारित भेदभाव दलितों को कुछ आर्थिक क्रियाकलापों से रोकने तक सीमित नहीं है, बल्कि ये उन्हें अन्यों को दिए जाने वाले सम्मान और गरिमा से भी वंचित रखता है।

स्कूलों में भेदभाव का एक उदाहरण

ओमप्रकाश वाल्मिकी एक प्रसिद्ध दलित लेखक हैं। अपनी आत्मकथा, 'जूठन', में उन्होंने लिखा है, "मुझे कक्षा में दूसरों से अलग बैठना पड़ता था, और वह भी ज़मीन पर। दरी मेरे बैठने के स्थान से पहले ही खत्म हो जाती थी। कभी-कभी मुझे सभी से बहुत दूर दरवाज़े के पास बैठना पड़ता था। कभी-कभी वे बिना किसी कारण के मेरी पिटाई करते थे।" जब वह चौथी कक्षा में था, तब प्रधानाध्यापक ने उन्हें स्कूल और मैदान को झाड़ू से साफ करने के लिए कहा। वे लिखते हैं, खेल मैदान बहुत विशाल था मैं बहुत छोटा था इसीलिए सफाई करने में मेरी पीठ में दर्द शुरू हो गया । मेरा चेहरा धूल से भर गया था। मेरे मुँह में धुल गई। मेरी कक्षा के अन्य विद्यार्थी पढ़ाई कर रहे थे और मैं मैदान सफाई कर रहा था। हेडमास्टर अपने कमरे में बैठकर मुझे देख रहे थे। मुझे पानी पीने तक की अनुमति नहीं थी। मैंने पूरे दिन झाड़ू लगाया....स्कूल के कमरों के दरवाज़ों और खिडकियों से अध्यापकों और लड़कों ने यह नज़ारा देखा।" ओमप्रकाश को अगले कुछ दिनों तक भी स्कूल और मैदान की सफाई करनी पड़ी और यह सिलसिला तब रुका, जब उसके पिता, जो स्कूल के पास से गुजर रहे थे, ने अपने

SCERT TELANGANA

पुत्र को झाड़ू लगाते हुए देखा। वे अध्यापक के सम्मुख गए और फिर ओमप्रकाश का हाथ पकड़कर सभी को ये सुनाते हुए स्कूल से चले गए, "आप एक अध्यापक हैं...इसीलिए मैं अभी जा रहा हूँ, लेकिन मास्टर इतना याद रखना..(वह) यहीं पढ़ाई करेगा, इसी स्कूल में... और ये ही नहीं इसके बाद और भी यहाँ आएंगे।"

- आपके विचार में ओमप्रकाश वाल्मिकी के साथ उसके अध्यापक और सहपाठी भेदभाव क्यों करते थे ?
- यदि आप ओमप्रकाश वाल्मिकी के स्थान पर होते तो आप कैसा महसूस करते? इसके बारे में चार पंक्तियाँ लिखें।

जब किसी व्यक्ति के साथ भेद-भाव किया जाता है तो उसकी गरिमा पर गहरा आघात लगता है। जिस तरह का व्यवहार ओमप्रकाश वाल्मिकी के साथ किया गया उससे उनकी गरिमा को नुकसान पहुँचा। उनकी जाति की वजह से उन्हें उठाया स्कूल में झाड़ू लगाने पर मजबूर किया गया ओमप्रकाश वाल्मिकी के सहपाठी और अध्यापक ने उसकी गरिमा को बुरी तरह से आघात पहुँचाया और उन्हें यह अनुभव करने पर बाध्य किया कि वह स्कूल के अन्य विद्यार्थियों से कम है। एक बच्चा होने के कारण वह इस परिस्थिति कुछ नहीं कर सकता था। वह तो उसके पिता ने अपने बेटे को झाड़ू लगाते देख लिया था और उन्हें भेदभाव के वजह से उन्हें गुस्सा आया और उन्होंने अध्यापकों का सामना किया।

आज कई अध्यापक पाठशालाओं में छात्रों में समानता को सुनिश्चित करने के लिए विशेष प्रयास कर रहे हैं। वे दलित छात्रों को केवल प्रोत्साहित ही नहीं करते बल्कि महत्वपूर्ण उत्सवों में अतिथियों का स्वागत करने, प्रार्थना का नेतृत्व करने और भाषण देने जैसे विद्यालयीन क्रियाकलापों में उनकी सहभागिता को भी सुनिश्चित करते हैं। ऐसे अध्यापक यह भी सुनिश्चित करते हैं कि सभी बच्चे मध्याह्न भोजन के समय साथ में बैठे और खायें तथा एक-दूसरे को भोजन और पानी परोसे।

- क्या आपने ऐसे प्रयास आपकी पाठशाला या पास-पड़ोस की पाठशालाओं में देखे हैं? ऐसे अनुभव पूरी कक्षा के साथ साझा कीजिए।

क्या जाति-प्रथा हमेशा से ही थी?

नहीं । एक समय था, जब कोई जाति-प्रथा नहीं थी। हमने शिकारी और कबीले के लोगों का जीवन देखा है। उनके पास कोई जाति-प्रथा नहीं थी। वर्ण-प्रथा उत्तर वैदिक काल में शुरू हुई, जहाँ चार मुख्य वर्ण समूह - ब्राह्मण, क्षत्रिय,वैश्य और शूद्र का वर्णन किया जाता है। बाद में अस्पृश्यता और विवाह, साथ में भोजन करने पर प्रतिबन्ध आदि कई नये पहलू सामने आए। कहा जाता था कि निचली जाति वालों को ऊँची जाति के लोगों की सेवा करनी और आज्ञा माननी चाहिए। यह विचार रजवाड़ों के समय, जो आप अध्याय13 और 14 में पढ़ चुके हैं, तेलंगाना सहित सारे देश में फैल गया। जैसे-जैसे यह विचार फैलने लगा, कई लोगों ने इसकी आलोचना की। बुद्ध, महावीर, रामानुज, बासवा, कबीर, वेमना आदि जैसे चिंतको ने कुछ लोगों के जन्म से उच्च होने की बात की आलोचना की और उन्होंने अनुभव किया कि सभी लोग उनके निम्न जन्म या व्यवसाय के होते हुए भी अच्छे कर्म कर सकते हैं और मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। आप इस विषय में विस्तार से अगले अध्यायों में पढ़ेंगे।

समानता के लिए संघर्ष

आपने अंग्रेज़ी राज की स्थापना और उसके विरुद्ध संघर्ष के बारे में पढ़ा होगा। अंग्रेज़ी साम्राज्य के खिलाफ आज़ादी की लड़ाई में ऐसे समूहों का संघर्ष भी शामिल है, जिन्होंने न सिर्फ ब्रिटिश शासन के खिलाफ, बल्कि समानता की लड़ाई भी लड़ी। दलितों, महिलाओं, आदिवासियों और किसानों ने अपने जीवन में अनुभव किए गये भेद-भाव के खिलाफ लड़ाई लड़ी।

SCERT TELANGANA

उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में कई समाज सुधारकों ने आज़ादी, समानता, भाईचारा, मानवीय गरिमा और आर्थिक न्याय के आधार पर नयी सामाजिक प्रणाली लाने के लिए संघर्ष किया। इनमें, ज्योतिराव गोविंदराव फूले, सावित्री बाई फूले,पेरियार, ई.वी.रामसामी नाईकर, श्री नारायण गुरू और अयंकाली शामिल हैं। इनके बारे में हम आठवीं कक्षा में पढ़ेंगे।

उपनिवेशी काल में तेलंगाना में भी सामाजिक लामबंदी का आरंभ हुआ। इसमें जुड़ने वाले कुछ महान व्यक्ति थे - पी.वेंकटस्वामी, ईश्वरी बाई, टी.एन.सदालक्ष्मी, सी.एस. एथीराजन, अरीगे रामस्वामी, एम.वेंकट स्वामी, बी.एस. वेकंटराव आदि। इनमें से किसी एक द्वारा किए गए संघर्ष को देखेंगे।

बी.एस.वेंकटराव (१८९६-१९५३)

बाथुल्ला वेंकटराव का जन्म हैदराबाद की घॉसमण्डी में हुआ। वह राव साहेब के नाम से प्रसिद्ध थे। उनके पिताजी बाथुल्ला सत्यना यूरोपीयों के घरेलु नौकर थे। वेंकटराव ने नवीं कक्षा तक पढ़ाई की। वे तेलुगु के साथ-साथ, अंग्रेजी, उर्दू, फ़ारसी और मराठी भाषा भी जानते थे। निजाम सरकार के जन कार्य विभाग में कार्य करने के पहले उन्होंने पूना में शिल्पी का काम किया। स्वतंत्रता के पहले उन्होंने निजाम सरकार में उच्च पद प्राप्त कर लिया था।

उन्होंने अस्पृश्यता का प्रभाव जब दलित वर्ग पर देखा तो इसे मिटाने का दृढ़ निश्चय किया। एम.गोविंदराजुलु और एम. वेंकटस्वामी जैसे व्यक्तियों के साथ मिलकर १९२२ में इसी लक्ष्य में आदि द्राविड़ संगम की स्थापना की गई। इसका प्रमुख उद्देश्य था देवदासी प्रथा को समाप्त करना और दलितों में एकता लाना था। बाद में अप्रैल १९२७ में आदि - हिन्दु महासभा का गठन किया।

दस वर्षों पश्चात पूना में प्रभावकारी चर्चा के पश्चात उन्होंने अम्बेदकरी युवा संघ की स्थापना की गई। इसका मुख्य उद्देश्य था उन्हें शिक्षित करना और जाति के आधार पर किए गए शोषण के प्रति उन्हें जागृत करना। बाद में इसका दूसरा नाम हैदराबाद स्टेट डिप्रेसड क्लासेस एसोसिएशन रखा गया।

इस संस्था के नेताओं ने एक स्थान से दूसरे स्थान जाकर सभाओं का आयोजन किया ताकि लोगों को जाति भेद के, सारे देश में इनके लिए चलने वाले मुक्ति आंदोलनों और अपने आप को बचाने व संगठित करने की आवश्यकता के प्रति जागृत किया जा सके। इनमें में से कुछ ने धार्मिक सुधार को भी आगे बढ़ाया ताकि दलित जातिवादी अंधविश्वासों से मुक्त हो सके।

उन्होंने घासमण्डी में घर एवं पुस्तकालय बनाए जिसका नाम औदी नगर रखा गया। हैदराबाद के बाहर उन्होंने दलितों के लिए 18 मन्दिर भी बनवाए। दलितों के सुधार के लिए बी.एस.वेकंटराव के योगदान की जानकारी डॉ.बाबासाहब अम्बेड्कर को हुई। उन्होंने उन्हें 1936 में मुम्बई प्रेसीड़ेन्सी महार कान्फ्रेंस का नेतृत्व करने के लिए आमंत्रित किया। इस सभा में 10,000 लोग आए और डॉ.बी.आर.अम्बेड़कर द्वारा चलाए गए आन्दोलन का समर्थन दिया।

1 अप्रैल 1947 को हैदराबाद में पलयम पिल्लै द्वारा पारित प्रस्ताव जिसमें राज्य के दलित वर्ग को उठाने के लिए बीस लाख रूपये की माँग प्रेसिडेन्ट-इन-कौंसिल में रखीं थी। श्री वेंकटराव ने इस प्रस्ताव में संशोधन कर एक करोड़ रू. की माँग की। सभा ने प्रधान मंत्रीसे सिफारिश कर १ करोड़ दिलाने की स्वीकृति दी। इसी प्रकार निजाम ने दलित वर्ग कल्याणकारी फंड का निर्माण किया और उसके लिए एक करोड़ रू की राशिप्रदान की। निजाम ने उन्हें खुसरू-ए-दक्कन की उपाधि से सम्मानित किया।

1952 के पश्चात वे राज्य विधानसभा के सदस्य चयनित हुए।

स्वतन्त्रता के पश्चात समानता

1947 में जब भारत स्वतंत्र देश बना हमारे नेता भी विभिन्न प्रकार की असमानता को लेकर चिंतित थे। जिन लोगों ने भारत का संविधान लिखा था, (संविधान एक दस्तावेज़ जो ऐसे नियमों को दर्शाता है जिसके द्वारा राष्ट्र कार्य करेगा।) जानते थे कि हमारे समाज में किस तरह से भेदभाव किया जाता था और किस प्रकार से लोग इससे जूझते रहे हैं। इनमें से कई नेताओं ने संघर्ष किया, जैसे डॉ.अंबेडकर ने दलितों के अधिकारों के लिए भी लडाई लड़ी।

SCERT TELANGANA

तो इन नेताओं ने संविधान में एक दृष्टिकोण और लक्ष्य निर्धारित किया ताकि सभी लोगों को समान नज़रिए से देखा जाए। सभी लोगों में यह समानता हमें एकजुट रखने के लिए महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखी जाने लगी। सभी को समान अधिकार और अवसर प्राप्त हैं। अस्पृश्यता को एक अपराध के रूप में देखा जाने लगा और कानूनी तौर पर इसे समाप्त कर दिया गया। लोगों को उनकी इच्छानुसार काम चुनने की स्वतंत्रता मिली। सरकारी नौकरियाँ सभी लोगों के लिए खुल गईं । इसके अलावा संविधान में सरकार पर गरीबों और इस प्रकार के सीमांत समुदायों के लिए समानता के अधिकारों की जिम्मेदारी रखी।

संविधान में सुनिश्चित समानता को सरकार द्वारा दो तरीकों से लागू करने का प्रयास किया गया पहला कानून के माध्यम से और दूसरा सरकारी कार्यक्रम और योजनाओं के माध्यम से वंचित समुदायों की सहायता करना। भारत में कई कानून हैं, जो समानता पाने वाले हर व्यक्ति के समानता के अधिकारों की रक्षा करते हैं। कानून के अतिरिक्त सदियों से असमानता का शिकार होते आए व्यक्तियों और समुदायों के जीवन में सुधार लाने के लिए सरकार ने कई योजनाएँ बनाई हैं। इन योजनाओं के द्वारा लोगों को ऐसे अवसर मिलने लगे, जिनसे पहले वे वंचित रह जाते थे।

सरकार द्वारा उठाए गए ऐसे कदमों में से एक है मध्याह्न भोजन (मिड डे मील) योजना। बच्चों को दोपहर में बना हुआ भोजन उपलब्ध करने के लिए यह कार्यक्रम प्रत्येक सरकारी प्राथमिक विद्यालय में आरम्भ किया गया। तमिलनाडु इस योजनाको लागू करने वाला पहला राज्य था और 2001 में सर्वोच्च न्यायलय ने सभी राज्य सरकारों को इस योजना को उनके राज्यों में छह महीने के भीतर लागू करने का आदेश दिया। इस क्रार्यक्रम के कई सकारात्मक प्रभाव पड़े। इसका प्रभाव यह पड़ा कि गरीब घरों के कई बच्चे विद्यालय आने लगे। अध्यापक का कहना था कि बच्चे अधिकतर दोपहर के भोजन के लिए घर चले जाते थे और वापस नहीं लौटते थे, लेकिन अब मिड डे मील स्कूल में मिलने के कारण उनकी उपस्थिति में विकास आया है । उनकी माताएँ, जिन्हें दोपहर को अपना सारा काम छोड़कर बच्चों को खाना खिलाने आना पड़ता था, अब उन्हें ऐसा करने की आवश्यकता नहीं थी। इस कार्यक्रम ने जातिगत भेद-भाव को भी काफी कम किया, क्योंकि निचले और उच्च दोनों वर्गों के बच्चे इस भोजन को विद्यालय में एक साथ बैठकर खाते थे। तेलंगाना में सभी ग्रामीण स्कूलों में मिड-डे मील स्वयं सेवक समूह की महिलाओं द्वारा बनाया जाता है, जो निरपवाद रूप से वंचित वर्गों से होती हैं कई स्थानों पर तो दलित महिलाओं को भोजन बनाने के लिए रखा जाता है। मिड-डे मील उन विद्यार्थियों के लिए मददगार होता है जो भोजन के अभाव में स्कूल तो आते हैं पर भूखे रहने के कारण पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पाते।

- क्या आप मध्याह्न भोजन कार्यक्रम के तीन लाभ बता सकते हैं ?
- आप के विचार में यह कार्यक्रम किस तरह से समानता को बढ़ावा दे सकता है?

जबकि सरकारी कार्यक्रम अवसर की समानता को बढ़ाने में एक मुख्य भूमिका निभा कर रहे हैं, अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। मिड-डे मील कार्यक्रम ने स्कूलों में गरीब बच्चों का नामांकन और उपस्थिति बढ़ाई है, फिर भी देश में ऐसे स्कूल, जिसमें अमीर जाते हैं और ऐसे स्कूल, जिसमें गरीब बच्चे जाते हैं, में काफी अंतर है। आज भी देश में ऐसे कई स्कूल हैं, जहाँ ओमप्रकाश वाल्मिकी जैसे दलित बच्चों के साथ असमानता और हीनता का व्यवहार देखा जाता है। इन बच्चों को असमानता की परिस्थिति में ले जाया जाता है, जिसमें उनकी गरिमा को सम्मान नहीं मिलता। यह इसीलिए होता है कि क्योंकि लोग उनके समान उन्हें मानने से मना करते हैं, जबकि कानून के अनुसार इसकी आवश्यकता है।

SCERT TELANGANA

इसका एक मुख्य कारण यह भी है कि व्यवहार में परिवर्तन बहुत धीरे-धीरे हो रहा है। भले ही प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि भेदभाव करना कानून के विरुद्ध है, फिर भी वे जाति,धर्म,अक्षमता, आर्थिक पक्ष और लिंग भेद के आधार पर लोगों को असमान रूप से देखते हैं। ये व्यवहार तभी बदल सकता है, जब प्रत्येक सोचने लगे कि कोई भी हीन नहीं है और प्रत्येक व्यक्ति के साथ गरिमापूर्ण व्यवहार किया जाय। लोकतांत्रिक समाज में समानता को स्थापित करना एक निरंतर चलने वाला संघर्ष है और इसमें प्रत्येक व्यक्ति तथा विभिन्न समुदायों को अपना योगदान देना होगा।

मुख्य शब्द :

1. अस्पृश्यता
2. योजना
3. संविधान
4. आत्मकथा

हमने क्या सीखा ?

1. गलती के लिए दी जाने वाली सज़ा और भेदभाव किये जाने में क्या अंतर है ? बाल अम्बेडकर को दंडित किया जा रहा था या भेदभाव किया जा रहा था ?
2. समाज में अनेक वर्ण होते हुए भी उनके बीच समानता की भावना आप कब देख सकते है?
3. हमारे संविधान में अस्पृश्यता को समाप्त कर दिया गया है और इसे अपराध घोषित कर दिया है। क्या आप विचार में यह पूरी तरह से समाप्त हो गया है ?
4. आपका विद्यालय किस प्रकार से जाति पर आधारित असमानता को समाप्त करने में सहयोगी हो सकता है ?
5. संविधान में सरकार द्वारा ....(पृष्ठ 170 के) संबंधित अनुच्छेद को पढ़िए और उस पर टिप्पणी लिखिए।

परियोजना कार्य :

1. अपने क्षेत्र में सरकारी योजना के बारे में पता लगाइए। ये योजना क्या करती है ? यह योजना किसे लाभ पहुँचाने के लिए बनाई गई हैं ?
2. अपने माता-पिता और दादा-दादी के साथ चर्चा कीजिए कि किस तरह उनके समय में जाति-प्रथा कार्य करती थी तथा पता कीजिए कि क्या बदलाव आए और क्या नहीं। एक रिपोर्ट बनाइए और अपनी कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

SCERT TELANGANA

अध्याय 19

शहरी मज़दूरों का जीवन और संघर्ष (Livelihood and struggles of urban workers)

9 वें अध्याय में हमने कागज मिल श्रमिकों के बारे में बढ़ा है। अधिकतर कागज मिल श्रमिक आनंद की तरह थे– उन्हें ऊँचा वेतन, बोनस(कंपनी के लाभ में हिस्सा) भविष्य निधि(भविष्य के लिए बचत) और अन्य भत्ते मिला करते हैं। उन्हें स्वस्थ और आवास सुविधा भी मिलती है। इस तरह के श्रमिकों की संख्या देश के श्रमिकों की संख्या में बहुत कम होती हैं। हमने एक ही मिल में दूसरे श्रमिकों के बारे में भी पढ़ा है –उमर और पुष्पा जिन्हें कम वेतन मिलता है और अच्छे जीवन यापन के लिए कोई अन्य भत्ता या सुविधा नहीं मिलती थी। देश में अधिकतर श्रमिक उमर और पुष्पा की तरह ही होते हैं। इस अध्याय में हम पढ़ेंगे कि श्रमिक बेहतर जीवन के लिए अपने संस्थान और कानून के माध्यम से अपने मालिक से क्यों और कैसे समझौता करता है। हम एक संस्थान के बारे में भी जानेंगे, जो अपने दम पर काम करने वाले श्रमिकों के लिए काम करता है।

SCERT TELANGANA

हमने पढ़ा है कि सरकार जनहित के लिए कानून बनाती है। इसी तरह खेतों, खानों,निजी और सरकारी कार्यालायों में काम करने वाले श्रमिकों के कल्याण की रक्षा के लिए कानून बनाए गए हैं। जो कारखाने सरकार के पास अच्छी तरह से पंजीकृत हैं उनसे कानून का पालन और श्रमिकों को अच्छे वेतन तथा अन्य सुविधाएँ उपलब्ध कराने की आशा की जाती है। सरकार के पास श्रम विभाग भी है,जिसकी जिम्मेदारी है कि कानून ठीक प्रकार से लागू किए गए हैं या नहीं। यदि कानून का पालन नहीं किया जा रहा है, तो श्रमिक न्यायालय में मुकदमा कर सकते हैं। कई बार कारखानों में श्रमिकों के एक वर्ग जिन्हें 'स्थाई श्रमिक' कहा जाता है, उनका ध्यान रखा जाता है और जो 'आकस्मिक' या 'अनुबंधित श्रमिक'कहलाते हैं, उनके कल्याण का ध्यान नहीं रखा जाता है।

हालांकि कई ऐसे कारखाने हैं जो सरकार के पास ठीक तरह से पंजीकृत नहीं हैं। आइए देखते है ऐसे कारखानों में श्रमिकों की स्थिति कैसी है?

कारखानों में 'स्थाई श्रमिक' के रूप में काम करना

नीचे दिए गए कोथूर के दो कारखानों के बारे में पढ़िए, जो हैदराबाद से 30 किलोमीटर दूर स्थित महबूबनगर जिले का एक नया औद्योगिक नगर है। यह 2002 में नामांकित किया गया है।

फाइब्रोटेक्स (इसका असली नाम नहीं है), बड़े पैमाने पर फाइबर ग्लास बनाने वाले एक कारखाने को *1976* में स्थापित किया गया। *2002* में *570* श्रमिकों में से, *140* स्थाई श्रमिक थे, *60* श्रमिक सामयिक *(casual)* आधार पर कार्यरत थे और उन्हें बदली श्रमिक कहा जाता था अर्थात् स्थाई श्रमिकों की अनुपस्थिति में वे उनके स्थान पर काम करते थे और लगभग *300* श्रमिक दैनिक अनुबंध के आधार पर काम करते थे।

(स्थाई श्रमिक को उचित प्रक्रिया और मुआवज़े के भुगतान के बिना निकाला नहीं जा सकता, जबकि अन्य श्रमिकों को आसानी से निकाला जा सकता है)

इस कारखाने में ट्रेड यूनियन यानि श्रमिक संघ है। इसे कंपनी के प्रोत्साहन पर स्थापित किया गया, जो एक ऐसा संघ चाहती थी जो उसकी नीतियों से सहमत हो। श्रमिक संघ में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे जिससे संघ जल्द ही एक शक्तिशाली श्रमिक संगठन में विकसित हो गया। यह प्रबंधक के साथ वेतन निर्धारित करने के लिये बातचीत करता था।

यूनियन के साथ समझौते के माध्यम से सभी श्रमिकों को निर्धारित वेतन और राज्य कर्मचारी बीमें (ESI) के द्वारा चिकित्सा सुविधा तथा भविष्य निधि मिलने लगी। श्रमिक संघ ने अन्य लाभ भी प्राप्त किए जैसे –बड़े अस्पताल में स्वास्थ्य जाँच, बीमार पड़ने पर श्रमिक को छुट्टी, काम करने के स्थान पर सुरक्षा, कवच, कारखाने में सुरक्षित पेय जल, श्रमिकों के बच्चों के लिए पढ़ाई भत्ता, वाहन भत्ता और छुट्टियों के लिए यात्रा भत्ता भी। उन्हें आवश्यकता होने पर कंपनी से ऋण भी मिलता है। कंपनी ने उन्हें रहने के लिए मकान भी उपलब्ध कराए। कंपनी ने लंबे समय से कारखाने में काम करने वाले श्रमिकों को प्रशिक्षण देने, उत्पादन की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए उन्हें विदेश भेजने में भी रुचि दिखाई। श्रमिक संघ ने अनुबंधित श्रमिकों को कुछ समय के बाद स्थाई करने के लिए कारखाने के मालिकों के साथ एक अनुबंध भी किया।

फाइब्रोटेक्स का श्रमिक संघ नगर में भी अच्छी तरह से सक्रिय है। इसे कई अन्य कारखानों के श्रमिक संघों को अपने मालिकों से समझौते की शक्ति पाने में सहायता मिली है।

श्रमिक संघ

श्रमिक संघ एक ऐसा संगठन है, जिसे श्रमिकों ने अपने हितों की रक्षा के लिए बनाया है। यदि प्रत्येक अकेला श्रमिक अपने मालिक से अलग-अलग मिलकर समझौता करता है तो वह इतनी मजबूत स्थिति में नहीं रहेगा, यदि सभी मिलकर समझौता करें तो उनकी स्थिति मज़बूत होगी। श्रमिक संघ श्रमिकों की ओर से सरकार और मालिकों से बातचीत करता है। वे अपने सदस्यों के लिए उचित मज़दूरी, अन्य लाभ और काम करने की अच्छी परिस्थितियाँ सुनिश्चित चाहते हैं। सामाजिक सुरक्षा लाभ, स्वास्थ्य सुविधा, मकान, भविष्य निधि और पेंशन पाने के लिए वे अपने सदस्य श्रमिकों के साथ भी काम करते हैं। यदि किसी श्रमिक को परेशान किया जाता है या उसे सहायता की आवश्यकता होती है, तो श्रमिक संघ उसका मामला अपने हाथ में ले लेता है। संघ विभिन्न प्रकार के उपाय अपनाता है, जैसे बातचीत, न्यायालय में मामला दर्ज करना और मालिकों पर दबाव बनाने के लिए यहाँ तक कि हड़ताल या काम बंद करना।

वर्षा (2002) में फाइब्रोटेक्स के श्रमिकों के वेतन ब्यौरा इस प्रकार है -

स्थाई श्रमिक	रु4500 – 10,000 प्रति माह
बदली श्रमिक	रु3000-4000प्रति माह
अनुबंधित / सामयिक श्रमिक	रु58 प्रति दिन 8 घंटे के लिए

SCERT TELANGANA

जैसे कि आपने देखा अधिकतर लाभ केवल *140* 'स्थाई श्रमिकों' को ही उपलब्ध है। जबकि बदली और अनुबंधित श्रमिक कहलाने वाले लगभग *360* अन्य श्रमिकों को कम वेतन मिलते हैं।

- स्थाई श्रमिक और बदली श्रमिक में क्या अंतर है ?
- स्थाई श्रमिक और आकास्मिक श्रमिक के मासिक वेतन में अंतर का पता लगाइए?
- अपनी कक्षा में एक-दो ऐसे श्रमिकों को बुलाइए जिन्हें ईएसआई और पीएफ सुविधा मिल रही हों और उनसे जानकारी प्राप्त कीजिए कि ये सुविधाएँ उनके लिए उपलब्ध कैसे करवाई गईं और इन्हें प्राप्त करने के लिए उन्हें क्या कदम उठाने पड़े। इस विषय पर बात करने के लिए आप अपनी कक्षा में अपने किसी सहपाठी के अभिभावक को भी बुला सकते हैं।

के.आर.एस. औषधि कारखाना

यह कंपनी (वास्तविक नाम नहीं) बड़ी कंपनियों के लिए दवाइयों को घोलती(मिक्स) और पैक करती है। इसमें *118* श्रमिक काम करते हैं, जिसमें से *104* श्रमिक दैनिक आकस्मिक श्रमिक के रूप में काम करते हैं। केवल *14* श्रमिक स्थाई हैं और इन्हें दवाई का पाउडर बनाने के लिए रसायन मिलाने के कुशल कार्य के लिए रखा गया है। इन्हें रु *1500* से रु *2500* प्रतिमाह वेतन मिलता है और इनकी नौकरी सुरक्षित है। इन्हें ईएसआई और पीएफ भी मिलता है। शेष *104* श्रमिकों, जो दैनिक आधार पर मुख्यत: पेकिंग लेबल चिपकाने का काम करते हैं इनमें *56* महिलाएँ हैं। इन दैनिक श्रमिकों को एक श्रम ठेकेदार द्वारा लगाया जाता है, जिसे मैनेजर निर्देश देता है कि कितने श्रमिकों की आवश्यकता है । ये श्रमिक अधिकतर पास के गाँव से आते हैं और आमतौर पर अनपढ़ होते हैं। इन महिला श्रमिकों को दिन में लगभग*12* घंटे काम करना पड़ता है और उन्हें केवल *30* रुपये दिये जाते हैं जबकि इतने ही घंटों के लिए पुरुष श्रमिक को *42* रुपये दिये जाते हैं। यह वेतन सरकार द्वारा इस तरह के कारखानों के लिए तय किए गए न्यूनतम वेतन से बहुत कम हैं। मैनेजर श्रमिकों को किसी तरह के श्रमिक संघ बनाने नहीं देता और उन्हें धमकाता है कि यदि यूनियन बनाई तो वे कारखाना बंद कर देंगे।

आजकल बड़ी संख्या में कंपनियाँ इसी तरह की नीतियों को अपना रही हैं। स्थाई श्रमिकों को कम करके उनके स्थान पर अनुबंधित तथा आकस्मिक(कैजुअल) श्रमिक को ले रही हैं।

के.आर.एस.

- केआरएस दवाई कारखाने में कोई श्रमिक संघ बनाने की अनुमति क्यों नहीं थी ?
- आपके विचार में स्थाई श्रमिकों के वर्ग के बजाय अनुबंधित श्रमिकों में अधिक महिलाएँ होती थी ?
- क्या आपको लगता है कि एक ही काम के लिए पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं को कम वेतन देना उचित है ?
- क्या आपको लगता है यदि श्रमिक शिक्षित और साक्षर होते तो आज की परिस्थिति भिन्न होती।

SCERT TELANGANA

निर्माण स्थल पर काम और ईंट की भट्टियाँ

चित्र 19.1 ईंट बनाते हुए मज़दूर

बिंधानी, उसका पति और दस साल की बेटी रंगारेड्डी जिले में एक ईंट की भट्टी पर काम करते हैं। वह ओडिशा(उड़ीसा) के एक गाँव से आती है, जहाँ उनका छोटा सा भूखंड (जमीन का टुकडा) है। उन्होंने बीस हज़ार रुपये उधार लिए थे, जिसे वे चुका नहीं सके और अपनी ज़मीन बेचने की कगार पर थे, तब एक ठेकेदार, जो तेलंगाना के ईंट भट्टी के लिए श्रमिकों की भर्ती कर रहा था, उनके पास आया। उसने उन्हें 10,000 हजार रुपये की पेशकश की, ताकि वे अपने उधार का आधा हिस्सा चुका सकें । उन्हें छ महीने ईंट की भट्टी में काम करना होगा और इसके लिए उन्हें अतिरिक्त मजदूरी भी मिलेगी और रहने के लिए एक झोपड़ी भी मिलेगी। काम दिसंबर में शुरू होगा और जून में समाप्त होगा, तब वे पुनः अपने घर लौट सकेंगे। इस तरह बिंधानी और उसका परिवार भट्टी में काम करने के लिए आए। वे इसमें अकेले नहीं हैं, ओडिशा से ऐसे करीब दो लाख श्रमिक तेलंगाना में इस तरह की ईंट भट्टी में काम करने के लिए आए हैं। यह आमतौर पर देखने को मिलता है कि तेलंगाना से हज़ारों श्रमिक परिवार दूसरे राज्य जैसे कर्नाटक और महाराष्ट्र की ईंट भट्टी में काम करने के लिए जाते हैं।

बिंधानी सुबह चार बजे उठ जाती और कुछ कंजी बनाती है। उसका पति रात 2 बजे तक काम करने के कारण अभी तक सो रहा है। वह अपनी बेटी को उठाती है और दोनों काम पर जाने के लिए तैयार होते हैं। उन्हें पानी लाना पड़ता है और ईंट बनाने के लिए मिट्टी तैयार करनी होती है। वे अपना काम लगभग सुबह 5 बजे शुरु करते हैं और लगातार 9 बजे तक करते हैं, तब वे चाय पीने के लिए विश्राम लेते हैं। तब तक उसका पति भी उनके साथ काम पर लग जाता है। वह मिट्टी को सांचे में डालता है,एक बार मिट्टी आकार में आ जाती है तो बेटी उसे समतल करती है और ईंटों पर ईंट कंपनी का चिह्न अंकित करती है। इन्हें फिर सूखने दिया जाता है और फिर बैलगाड़ी में रखकर सेंकने के लिए भट्टी पर ले जाया जाता है। यह काम लगातार रात के 2 बजे तक चलता रहता है। बिंधानी और उसका पति दिन में लगभग 14 से 16 घंटे काम करते हैं। वे काम नहीं रोकना चाहते क्योंकि उन्हें ईंटों की संख्या के अनुसार

SCERT TELANGANA

भुगतान किया जाता है। उन्हें *108* रुपये प्रति हजार ईंट भुगतान किया जाता है। साधारणतः वे एक दिन में हजार ईंट बना लेते हैं। यदि वे अस्वस्थ हो जाते हैं तो उनकी कमाई कुछ भी नहीं हो पाती। इस तरह से वे लगातार *6* महीने से दिन रात काम कर रहे हैं। कभी-कभी थकान या बीमारी के कारण वे काम नहीं कर पाते है। वे आमतौर पर टूटे चावल और दाल खाते हैं और कभी कुछ सब्जी। छह महीने के अंत मे वे पेशगी राशि का भुगतान ही कर पाते हैं और खाली हाथ लौटना पड़ता है। कभी-कभी वे चार-पाँच हज़ार रुपये लेकर घर वापस लौटने में सफल होते हैं।

चित्र 19.2 कपास चुनने वाले श्रमिक

- क्या आप गणना कर सकते हैं कि उन्हें सरदार(ठेकेदार) के 10,000 रुपये पेशगी चुकाने में कितने दिन लग सकते हैं ?
- इस काम में एक व्यक्ति का प्रति दिन औसत वेतन क्या है?
- ईंट भट्ठी में कोई श्रमिक संघ क्यों नहीं है ?
- क्या आपको लगता है कि सरकार को ईंट भट्ठी श्रमिकों के लिए श्रमिक संघ के गठन में सहायता करनी चाहिए ?
- सरकार किस तरह से ईंट भट्ठी में काम करने वाले मजदूरों की कार्यस्थिति में सुधार ला सकती है?

देश के लाखों ईंट भट्ठी मज़दूरों और अन्य व्यवसायों में काम करने वाले मज़दूरों की ऐसी ही कहानी है। उन्हें ठेकेदारों द्वारा पेशगी दी जाती है और वे दूर ऐसे राज्य में ले जाए जाते हैं, जहाँ की भाषा तक उन्हें नहीं आती, वे अपने परिवार और बच्चों सहित पाँच-छः महीनों तक दिन रात काम करते हैं और केवल ठेकेदार से ली गई पेशगी को ही चुकाने में सफल हो पाते हैं। कभी-कभी लोग काम से बुरी तरह थक जाते हैं, तो भी उन्हें ठेकेदारों द्वारा काम करने के लिए विवश किया जाता है। वे बंधुआ मज़दूरों की तरह रहते हैं। जब कभी ये श्रमिक सरकार को उनकी दुर्दशा के बारे में बताते हैं, सरकारी अधिकारी हस्तक्षेप करते हैं और उन्हें ईंट भट्ठी तथा ठेकेदारों से मुक्त कराकर घर भेज देते हैं। चूंकि घर पर उनके पास रोजगार का कोई साधन नहीं होता है, वे फिर से ठेकेदार से पेशगी लेने और ईंट भट्ठी पर लौटने पर विवश हो जाते हैं। इनके हितों के लिए लड़ने के लिए कोई भी श्रमिक संघ नहीं है, क्योंकि ये प्रवासी श्रमिक हैं और कई कार्य स्थलों पर फैले हुए हैं।

SCERT TELANGANA

- ईंट बनाने के लिए किस तरह की मशीन और उपकरण तथा विद्युत के स्रोत का उपयोग किया जाता है?
- इस प्रकार के काम के लिए किस तरह के कौशल की आवश्यकता है? ये किस प्रकार प्राप्त किये जाते हैं?
- आपके विचार में उनसे दूर राज्यों में काम क्यों कराया जाता है ?

मजदूरों के अधिकारों को सुनिश्चित करना–एक वैश्विक चिंतन

जब से औद्योगिक क्रांति हुई है, जिसके बारे में हमने10 वें अध्याय में पढ़ा है, दुनिया भर में श्रमिक एक सम्मानजनक जीवन और अपने उत्पाद की भागीदारी के लिए संघर्ष करते रहे हैं। उन्होंने कई प्रकार की सुरक्षा और अधिकारों की लड़ाई लड़ी है।

1. **लाभकारी और सुरक्षित रोज़गार के अधिकारः**ताकि प्रत्येक श्रमिक अपने कौशल और क्षमता के अनुसार काम कर सके तथा अपने स्वास्थ्य को जोखिम में डाले बिना सुरक्षित परिस्थिति में काम कर सकें।
2. **अवकाश और आराम करने का अधिकारः** ताकि उन्हें थकान भरे काम से आराम करने का समय मिले और सामाजिक और सांस्कृतिक कार्यो में भाग लेने के लिए भी समय मिल सके।
3. **रोज़गार सुरक्षा के अधिकारः** ताकि हर श्रमिक जान सके कि उसके पास ऐसा रोजगार है, जो उसकी अजीविका सुनिश्चित करेगा और मनमाने ढंग से नौकरी से नहीं निकाला जाएगा। यदि किसी कंपनी के लिए निकाला जाना अनिवार्य है, तो उस हानि के लिए पर्याप्त भत्ता दिया जाना चाहिए।
4. **सुरक्षित आयः** ताकि प्रत्येक श्रमिक के पास अपने परिवार की आवश्यकताओं को पूरा करने, वृद्धावस्था में सम्मानजनक जीवन बिताने के लिए बचत करने के लिए पर्याप्त और नियमित आय हो।
5. **काम की सुरक्षाः** ताकि जब वे बीमार पड़े या दुर्घटना का शिकार हो, तो उनकी अच्छी तरह से देखभाल हो और उन्हें उचित भुगतान किया जाए।
6. **कौशल सुधारः** ताकि काम के समय वे अपनी कौशल एवं योग्यता को बढ़ा सके।
7. **सामूहिक आवाज़ का अधिकार :** ताकि वे बिना डरे अपनी समस्याओं और जरूरतों को व्यक्त करने और मालिकों से व्यक्तिगत बातचीत की बजाय समूह में बातचीत करने के लिए यूनियन

चित्र 19.3 चाकू तेज़ करने वाले

विश्व भर में पिछले दो सौ वर्षों से श्रमिकों ने इन अधिकारों की मान्यता प्राप्त करने के लिए संघर्ष किया है, हालांकि ये प्रत्येक स्थान पर लागू नहीं किये जा सकते हैं। अधिकतर देशों में सरकार ने माना कि ये श्रमिकों की मूलभूत अवश्यकाएँ हैं और श्रमिकों के इन अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए कानून बनाया जाए।

पिछले अनुभाग को फिर से पढ़े और श्रमिकों को मिलने वाले अधिकारों तथा उपलब्ध लाभ को दिखाने के लिए बॉक्स (अगले पृष्ठ में) को रंग से भरें। यदि केवल श्रमिकों का एक भाग ही कवर किया जाता है, कवरेज के भाग के आधार पर बॉक्स के एक हिस्से को रंग (शेड) करें। अगर कोई अधिकार/लाभ उपलब्ध नहीं है तो बॉक्स में क्रॉस का निशान लगाएँ।

SCERT TELANGANA

क्र.सं.	अधिकार	फाइब्रोटिक्स	के.आर.एस. दवाई कारखाना	ईंट भट्टा
1.	लाभकारी और सुरक्षित रोज़गार के अधिकार			
2.	अवकाश और आराम करने का अधिकार			
3.	रोजगार सुरक्षा के अधिकार			
4.	सुरक्षितआय			
5.	काम की सुरक्षा			
6.	कौशल सुधार			
7.	सामूहिक आवाज़ के अधिकार			

शहर में अनौपचारिक कार्य और श्रमिक

तेलंगाना और भारत के अन्य राज्यों में शहर और नगर बड़े होते जा रहे हैं। लोग तेजी से गाँव छोड़कर शहर में आ रहे हैं। लेकिन इनमें से कई लोगों को यहाँ पर्याप्त रोजगार नहीं मिल पाता और अंत में विभिन्न प्रकार की नौकरियाँ करते हैं। वे सब्जियाँ और अन्य सामान बेचते हैं, नाश्ता बनाते और बेचते हैं, चाय की दुकान और छोटे कारखानों में काम करते हैं, कपड़े सिलाई, बाज़ार में माल उतारने और चढ़ाने का काम और घरेलू नौकरानी के रूप में काम करते हैं। इनमें से कई घर में ही सामान तैयार करते हैं- कपड़े सिलाई करना, पापड़, अचार कढ़ाई करना, इत्यादि काम में पारिवारिक उत्पादन प्रणाली से जुड़े होते हैं। इनमें से अधिकतम गतिविधियाँ सरकार के साथ पंजीकृत नहीं होती। इस तरह के श्रमिक अनौपचारिक श्रमिक कहलाते हैं और इस तरह के काम अनौपचारिक कार्य कहलाते हैं।

चित्र 19.4 केवल बिछाते श्रमिक

SCERT TELANGANA

रोजगार के इन सभी क्षेत्रों के बारे में समानता यह है कि इसमें बहुत कम लागत या कौशल प्रशिक्षण की आवश्यकता पड़ती है, लेकिन यह रोजगार अनियमित और बहुत कम भुगतान वाले होते हैं। ये श्रमिक बहुत दयनीय स्थिति में होते हैं। कारखानों और कार्यालयों में कार्यरत और नियमित वेतन पाने वाले कर्मचारियों के विपरीत ये श्रमिक दिन में कई काम करते हैं, प्रातः वे अखबार बाँटते हैं, दिन में चाय की दुकान पर काम करता है, रात में किसी घर में भोजन बनाते हैं। इससे ये बिना आराम के पूरे दिन व्यस्त रहते हैं। अधिकतर मामलों में बच्चों सहित इनके परिवार का हर सदस्य कमाने के लिए काम करते हैं। इसलिए बच्चे अधिकतर अशिक्षित रह जाते हैं। जब ये आर्थिक स्थिति से जूझते हैं, वे खर्चे को कम करने का प्रयास करते हैं -जैसे बच्चों को स्कूल से निकाल देना और खाने या दवाइयों के खर्चे को कटौती करना। इसके बाद भी वे अपनी आवश्यकता को पूरा नहीं कर पाते। वे अपने दोस्त या रिश्तेदार से ऋण लेने पर विवश हो जाते हैं और कभी-कभी साहूकार से। लगभग सभी इन साहूकारों के कर्जे तले दबे रहते हैं और उन्हें इसके लिए उनके पास काम भी करना पड़ता है।

चित्र 19.5 सड़क मरम्मत निर्माण

इनमें से अधिक लोगों के पास उनके हितों की रक्षा के लिए श्रमिक संघ नहीं होते, जैसा कि हमने पहले भी उल्लेख किया है, देश में ऐसे श्रमिकों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। इनकी संख्या केवल गाँव से यहाँ आने वाले लोगों के कारण नहीं बढ़ रही, बल्कि बड़े कारखानों और मिलों के बंद होने के कारण भी बढ़ रही है। इन कारखानों के श्रमिकों को यहाँ आकस्मिक श्रमिकों के समान काम करना है।

इन समस्याओं को देखते हुए गुजरात के कुछ श्रमिक संघ कर्ताओं ने जिस दुनिया के अनौपचारिक श्रमिकों का सबसे बड़ा श्रमिक संघ माना जाता है, अनौपचारिक श्रमिक संघ का गठन किया। आईए इसके बारे में और अधिक जानते हैं।

स्वरोज़गार महिला संघ (SEWA एस.ई.डब्ल्यु.ए.)

1971 में अहमदाबाद के कपड़ा बाज़ार (क्लोथ मार्केट) में गाड़ी खींचने वाली प्रवासी महिलाओं का एक छोटा सा ग्रुप अपने घर की सुविधाओं को बढ़ाने में सहायता के लिए कपड़ा श्रम संघ (टी.एल.ए.) के पास पहुँचा। यह एक प्राचीन और विशाल श्रमिक संघ है, जिससे महात्मा गांधी भी जुड़े थे। यूनियन ने 1971 में सेवा (एस.ई.डब्ल्यू.ए.) की महिलाओं की सहायती की जो 1972 में एक श्रमिक संघ बन गया।

तब से सेवा (एस.ई.डब्ल्यू.ए.) में लगातार प्रगति हुई है, जिसमें विभिन्न व्यवसायों की महिलाएँ सदस्य बन रही है। सेवा (एस.ई.डब्ल्यू.ए.) के सदस्य में कोई कर्मचारी और मालिक का निश्चित रिश्ता नहीं होता और वे अपने उत्तरजीविका के लिए स्वयं के श्रम पर निर्भर करते हैं। उनके पास मुश्किल

SCERT TELANGANA

से कोई पूंजी या संपत्ति रहती है। कोई भी स्वरोजगार महिला 5 रुपए सदस्यता फीस दे कर सदस्य बन सकती हैं। सेवा (SEWA) स्वरोजगार महिलाओं की शिकायतों के समाधान, उनके कार्य संस्कृति में सुधार और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने में सहायता करता है। फेरीवालों, सब्जी, फल, मछली, अंडे और अन्य खाद्य सामग्री तथा नए और पुराने कपड़े के विक्रेता, बुनकरों, कुम्हार, बीड़ी और अगरबत्ती श्रमिक, पापड़ रोलर्स, तैयार वस्त्र श्रमिक, चित्रकार, मज़दूर, और कृषि श्रमिक, निर्माण मज़दूर, हाथगाड़ी खींचने वाले, सिर पर सामान ढोने वाले, घरेलू श्रमिक, गोद एकत्र करने वाले इत्यादि सेवा (SEWA) के सदस्य बन सकते हैं।

अब तक 9 राज्यों के लगभग 13 लाख श्रमिक सेवा (SEWA) के सदस्य बन गए हैं। सेवा (SEWA) अपने सदस्यों के लिए एक सहकारी बैंक भी चला रही है और स्वास्थ्य बीमा सुविधाएँ भी प्रदान करती है। सेवा उनके उत्पादों के वितरण(मार्केटिंग) और उचित मज़दूरी तय करने में भी सहायता करती है। क्या आपको लगता है कि इस तरह के संस्थान तेलंगाना में सड़कों, बाज़ार और कार्यालयों में सब्जियाँ बेचने वाली स्वरोजगार महिलाओं के लिए सहायक हो सकते हैं ?

मुख्य शब्द :

1. मुआवजा
2. भविष्य निधि
3. बादली श्रमिक
4. भत्ते
5. आकस्मिक/ सामयिक श्रमिक
6. ESI
7. स्थाई श्रमिक

हमने क्या सीखा ?

1. ईंट भट्टी में काम करने वाले श्रमिक, स्थाई श्रमिक और अनुबंधित श्रमिक की स्थिति की तुलना कीजिए।
2. क्या आप अपने क्षेत्र में आकस्मिक(कैजुअल) और स्वरोजगार श्रमिकों द्वारा किए जाने वाले कार्यों की सूची बना सकते हैं?
3. अध्याय में बताए गए विभिन्न प्रकार के संघों(यूनियनों) की सूची बनाइए। तालिका में भरें।

क्र.सं.	कंपनी जिसमें संघ काम कर रहा था	श्रम के प्रकार	मुख्य समस्या	समाधान का सुझाव
1.				
2.				
3.				

4. श्रमिक संघ के सदस्य (लीडर) से बात करें और उसे कक्षा में आमंत्रित करके उसके जीवन इतिहास के बारे में जाने। विशेष रूप से पता करें कि वह संघ से क्यों जुड़े। संघ के सदस्य के रूप में उनके क्या अधिकार हैं। संघ सदस्य के रूप में उनके क्या कर्तव्य हैं ?
5. आपके स्थानीय श्रमिक अधिकारी को एक शिकायती पत्र लिखिए जिसमें आपके मुहल्ले में कार्य करने वाले श्रमिकों की स्थिति का विवेचन हो।

SCERT TELANGANA

अध्याय 20

लोक–धर्म

(Folk – Religion)

निम्नलिखित प्रश्नों के बारे में अपनी कक्षा में चर्चा कीजिए:

1. आपके क्षेत्र में किस देवता/देवी की पूजा की जाती है?
3. किस संत, पीर और बाबा को आपका परिवार सम्मान देता है?
4. लोग किस पशु और वृक्ष की पूजा करते है?
5. क्या आप जानते हैं लोग कैसे पूजा करते हैं?
6. देवताओं की पूजा कैसे की जाती है और पूजा कौन करता है?
7. भक्तों द्वारा किस भाषा में देवताओं को संबोधित किया जाता है?

आपने निम्न प्रकार के संवाद सुने ही होंगे:

लक्ष्मीः कुछ महीनों से, मेरे बच्चे लगातार बीमार पड़ रहे हैं।

सम्मक्काः मेरे पति भी पिछले एक महीने से अस्वस्थ हैं।

येल्लम्माः मेरे विचार में हमारी देवी मुत्यालम्मा हमसे क्रोधित है। हमें उनको शांत करने के लिए विशेष पूजा करनी चाहिए। चलिए हम बोनालू लेकर चलते हैं और देवी को एक मुर्गा चढ़ाते हैं।

***

रामराजूः मेरी बेटी काफी कमजोर है और कुछ नहीं खाती नहीं।

सुरेशः तुम पीर बाबा की दरगाह पर क्यों नहीं जाते और मौलवी को तावीज़ बांधने को क्यों नहीं कहते ? वह ठीक हो जाएगी।

हमारे देश में कई लोग बड़े मंदिरों, मस्जिदों या चर्च में ईश्वर की आराधना करते हैं और अपनी श्रद्धा भेंट करते हैं। दूसरी ओर लोग ग्राम देवताओं की भी पूजते हैं। ये प्रसिद्ध देवता कौन हैं और इनकी पूजा कैसे, कब और किसके द्वारा की जाती है ?

ग्राम देवता अनेक होते हैं – इनमें से कुछ तो विशेष जाति या विशेष गाँव या किसी एक परिवार के लिए होते हैं। कुछ अधिक प्रचलित देवियाँ –

पोचम्मा: तेलंगाणा में पोचम्मा सबसे लोकप्रिय देवी हैं। लगभग प्रत्येक गाँव में उनके लिए एक मंदिर समर्पित होता है। यह राम और शिव मंदिरों से अलग होता है। नीम के पेड़ के नीचे एक साधारण सा मंदिर और उसके भीतर एक पत्थर के रूप में देवी स्थापित की जाती है। आधुनिक नगर और शहरों में ये मंदिर कुछ शिल्पकला और पत्थर की मूर्ति के साथ बने होते हैं।

गाँव में विशेष अवसरों पर सभी जाति के लोग बोनालु के साथ मंदिर जाते हैं। वे मूर्ति को धोते हैं और मंदिर के प्रांगण को अच्छी तरह से साफ करते हैं। यहाँ कोई पुजारी नहीं होता और लोग अपनी भाषा में फूलों

SCERT TELANGANA

चित्र 20.1 और 20.2 पोचम्मा की दो प्रतिमाएँ

आदि के साथ अपने रिवाज़ और परंपराओं इत्यादि के अनुसार पूजा करते हैं, "माता, हमने बीज बो दिए हैं अब आपको अच्छी फसल सुनिश्चित करनी होगी।" "मेरी बेटी बीमार है आपको उसे अच्छा करना होगा।" "माता, हमारे परिवार से संक्रामक रोग और बुराइयों को दूर रखिए।" वे बोनम का एक हिस्सा भी चढ़ाते हैं और कभी-कभी मुर्गा या भेड़ चढ़ाते हैं।

मैसम्मा: ऐसा विश्वास है कि ये देवी पशुओं की रक्षा करती हैं। पशुओं के शेड के बीच एक आले को सफेदी लगाई जाती है और उसे "कुमकुम" से सजाया जाता है और इसे "मैसम्मा गुड्ड" कहा जाता है। कई स्थानों पर कट्टा -मैसम्मा को पानी की देवी के रूप में पूजा जाता है जो छोटे पत्थर के रूप में तालाब के किनारे पूजी जाती है। टैंक बंड पर पूजी जातीं हैं। लोगों की धारण है कि वें यह सुनिश्चित करेंगी कि टैंक पानी से भरी रहे। इस प्रकार उनके आशीर्वाद से फसले अच्छी होगी।

गंगम्मा: ये जल देवी हैं, जो समुद्र में जाने वाले मछुआरों की रक्षा करती हैं। यह धारणा है कि देवी गंगम्मा गरीब और अनाथों की रक्षा करती हैं।

येलम्मा: येलम्मा को पोलिमेरम्मा, 'मरिडम्मा', 'रेनुका' महांकाली, जोगम्मा, सोमालम्मा और कई अन्य नामों

चित्र 20.3 मैसम्मा

से भी बुलाया जाता है। यह मान्यता है कि देवी गाँव की सीमाओं की रक्षा करतीं हैं और संक्रामक रोग तथा बुराइयों को प्रवेश करने नहीं देतीं। लोग हमेशा उनकी आराधना हैजा जैसी घातक बीमारी से बचने के लिए करते हैं।

पोतराजू: तेलंगाणा के किसान का विश्वास है कि पोतराजू उनके खेतों और फसलों की देख-रेख करता है और फसलों को खतरनाक बीमारी, चोर और पशुओं से

SCERT TELANGANA

चित्र 20.4 येलम्मा

चित्र 20.5 पोतराज

बचाता है। किसान खेत के कोने में एक पत्थर को सफेद रंग लगाकर रखता है। पोतराजू की पूजा बहुत आसान है। जब फसल कटाई का समय होता है तो देवताओं की आराधना की जाती है। इनकी अनेक बहनें हैं जिन्हें पेद्म्मा जैसे विभिन्न नामों से जाना जाता है।

बीरप्पा और काटम राजु: इन्हें ग्वाले और गडरिए समुदाय द्वारा पूजा जाता है। इन्हें पशुओं और भेड़ों के रक्षक के रूप में माना जाता है। क्या आपने बीरप्पा और अक्कामांकाली की कहानी सुनी है –कैसे बीरप्पा एक गरीब गड़रिये ने कमाराथी से विवाह करने के लिए संघर्ष किया और किस तरह से उसकी बहन ने उसकी मदद की ? क्या आपने कातृम राजू की कहानी सुनी है, जिसने पशु चरवाहों के चराई के अधिकारों के लिए नेल्लूर के राजा के विरूद्ध लड़ाई लड़ी ?

- आपने इनमें से कई गाँव और समुदाय के देवताओं की पूजा में भाग लिया होगा और शिव तथा विष्णु के कुछ मंदिर भी गए होंगे। क्या आप तुलना कर सकते हैं कि इन स्थानों में पूजा कैसे की जाती है ? इनमें क्या समानताएँ और अंतर है ? कक्षा में इसकी चर्चा कीजिए।

पशुओं की बलि चढ़ाना लोक–उत्सव की सामान्य प्रथा है। इसके परिणामस्वरूप हज़ारों पशु मारे जाते हैं। इसे ध्यान में रखते हुए तेलंगाना में किसी भी पशु या पक्षी की बलि पर रोक लगा दी गई है।

लोक देवताओं की सामुदायिक पूजा

अधिकतर लोक देवी और देवता वास्तव में स्थानीय नायक थे, जो या तो अपने लोगों की रक्षा के लिए लड़ते हुए शहीद हो गए या तो वे स्वयं अपने समय के शक्तिशाली लोगों द्वारा अपकृत का शिकार हुए। आम लोगों की यह धारणा है कि ऐसे व्यक्ति लोगों की मदद के लिए विशेष शक्ति पा लेते है और पूजा नहीं करने पर समस्या पैदा कर सकते हैं। साराक्का और समक्का ऐसी ही दो नायिका थीं, जिन्होंने आदिवासी लोगों के लिए अपना जीवन न्यौछावर कर दिया, जिनके सम्मान में जात्रा निकाली जाती है।

समक्का, सारक्का(मेडारम) जात्रा:

वह वरंगल जिले में ताड़वाई मंडल के आदिवासी लोगों का एक उत्सव है। तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, ओडिशा, छत्तीसगढ़, झारखंड के लोग इस यात्रा में भाग लेने के लिए इकट्ठा होते हैं। करीब एक करोड़ लोग इसमें शामिल होते हैं।

SCERT TELANGANA

कहानी: 'मेदाराजू', एक आदिवासी मुखिया था, जो काकतिया राजा रुद्रदेव (प्रतापरूद्र-I) के अधीन था। उन्होंने पोलवासा राज्य जगत्याल जिले में स्थित है, पर शासन किया। उन्होंने उनकी बेटी समक्का का विवाह पागीदीदाराजु से किया, जो मेड़ारम का राजा था। उनके तीन बच्चे थे – सारलम्मा, नागुलम्मा और जमपन्ना। अपने राज्य के विस्तार के लिए रूद्रदेव ने मेड़ारम पर आक्रमण कर दिया। इस भीषण लड़ाई में मेदराजू और उसके पूरे परिवार ने अपने पागिदीदाराजु का पूरे परिवार, कबीले के स्त्री और पुरुष ने भीषण युद्ध में भाग लिया। लड़ाई में सभी लोग मारे गए। जंपन्ना ने भी काकतिया सेना को नदी पार करने से रोकने के लिए अपनी अंतिम सांस तक लड़ाई की और 'सम्पेंगा वागू' में वीरगति को प्राप्त हुआ। इसीलिए इसे 'जामपन्ना वागू' नाम दिया गया। समक्का और साराक्का ने सेना से लड़ाई की और अपने कबीले की सुरक्षा के लिए प्राणों का बलिदान दिया। इस पूरे क्षेत्र के आदिवासी लोग इन्हें इनके साहस और बलिदान के लिए पूजते हैं और उनके सम्मान में इस दिन मेडाराम जात्रा मनाते हैं।

चित्र 20.7 मेडाराम जात्रा का चित्र

चित्र 20.6 मंच पर समक्का देवी की स्थापना

मेडारम यात्रा प्रति दो वर्ष में आयोजित की जाती है। यह जात्रा तीन दिनों तक चलती है। समक्का और सारक्का निराकार देवी हैं। इनके प्रतिनिधित्व करने वाले आकर्षक रूप से सजे हुए ताबूत जंगलों से व्यापक जुलूस में लाये जाते हैं और पेड़ के नीचे मंच पर रख दिए जाते हैं। उस समय पर लोग अनुभव करते हैं कि देवी ने उनमें प्रवेश कर लिया है। लोग देवी को सोना(बंगारम), गुड़ चढ़ाते हैं।

मोहर्रम(पीर्लु) और उरस

मुसलमान भी अपने उन नायकों को याद करते हैं, जिन्होंने बुराई के खिलाफ लड़ाई की। ऐसा ही एक पवित्र दिवस मोहरम के रूप में मनाया जाता है जो ईराक के कर्बला में धर्म की लड़ाई का प्रतीक हैं, जिसमें पैगम्बर मोहम्मद के पोते को शहीद किया गया था। सजे हुए ताजीया के साथ जुलूस(पीरी) निकाला जाता है, जिसमें सभी समुदाय के लोग हिस्सा लेते हैं। पीरी एक गुंबद के आकार में बाँस की पट्टियों से तैयार किया जाता है। इसे चमकीले कपड़ों से लपेटा जाता है। पीर को थामने के लिए गुंबद के साथ बॉस के पोल को जोड़ा जाता है और धातु का शीर्ष अर्ध चंद्राकार या हथेली के आकार का इसके साथ जोड़ दिया जाता है। अंततःइसमें फूल और सूखे नारियल की माला लगाई जाती है।

SCERT TELANGANA

चित्र 20.8 अजमेर दरगाह

चित्र 20.9 जहाँगीर पीर दरगाह

इसी तरह, उर्स मुसलिम महात्मा एवं सूफी संत, जिन्हें राज्य के विभिन्न स्थानों में दफनाया गया था, की वर्षगांठ के रूप में मनाया जाने वाला उत्सव है। बड़ी संख्या में लोग दरगाहों में जाते हैं, कब्र पर फूल तथा चादर चढ़ाते हैं और कव्वालियाँ सुनते हैं। उनका मानना है कि इस तरह से उन्हें पीर बाबा या संत का आशीर्वाद या बरकत प्राप्त होगी। जो लोग बच्चे और नौकरी जैसे विशेष आशीर्वाद चाहते हैं, दरगाह में आते हैं और प्रार्थना करते हैं।

दरगाह सूफी संतों के मकबरों पर बनी होती हैं, जिन्होंने सूफी मत कशा प्रचार कियो सूफी संतों के मकबरे या दरगाह तीर्थ स्थान बन जाते है, जिसमें विभिन्न आस्थाओं वाले हजारों लोग आते हैं। अधिकतर लोग सूफी मास्टर को चमत्कारी शक्ति(करामात) वाला मानते हैं, जो दूसरों को उनकी बीमारी और मुसीबतों से राहत दिलाते हैं।

जहाँगीर पीर दरगाह – धार्मिक सहिष्णुता का प्रतीक

जहाँगीर पीर दरगाह रंगारेड्डी जिले के कोत्तुर मण्डल में स्थित है। कहा जाता है कि *15* वीं शताब्दी में ईराक से दो भाई-सय्यद गौसुद्दीन और सय्यद बुरानुद्दीन यहाँ आए थे, जब यह वन भाग था, यहाँ दैव्यशक्ति के रूप में कुछ वर्ष बिताये और यहीं उनकी मृत्यु हो गई। उनके कुछ अनुयायियों ने उनकी कब्र पर दरगाह बनाई 17 वीं शताब्दी में जब औरंगजब इस दरगाह में गए, तब उन्हें वहाँ की पवित्रता की जानकारी मिली और उन्होंने इब्राहिम को दरगाह का काज़ी नियुक्त किया। काज़ी ने इस क्षेत्र को तीर्थ स्थल के रूप में विकसित किया।

प्रतिदिन हैदराबाद के आस-पास रहने वाले कई लोग दरगाह जाते है। अन्य प्रदेशों के भक्त गुरुवार और रविवार को अधिक आते है क्योंकि इस दिन विशेष पूजा होती है। उर्स प्रतिवर्ष संक्रान्ति त्योहार के पश्चात आने वाले गुरूवार से तीन दिन के लिए मनाया जाता है। पहले दिन चन्दन (गन्धपु पूजा), दूसरे दिन दीपक पूजा (दिपार्दना) और तीसरे दिन कव्वाली का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। उर्स में भाग लेने वाले लोग केवल भारत के विभिन्न भागों से ही नहीं आते बल्कि विदेशों से भी आते है। हजारों हिन्दू और मुसलमान पुष्प, मिठाई और चादर चढ़ाते है। यह दरगाह धार्मिक सहिष्णुता का प्रतीक बन गई है।

बोनालु

बोनालु तेलंगाणा क्षेत्र का एक प्रसिद्ध लोक त्योहार है। इसमें भोजन अर्पित करते हुए देवी की पूजा की जाती है, जिसे बाद में परिवार के सदस्य बाँटकर खाते हैं।

महिलाएँ इसमें अपने सिरों पर फूलों से सुसज्जित मटके या 'घटम' लिए हुए भाग लेती हैं। श्रद्धालु महिलाएँ

SCERT TELANGANA

चित्र 22.10 बोनालु

पके हुए चावलों से भरे व नीम के पत्ते से सजे पीतल या मिट्टी के बर्तन लेकर भी जाती है। उनके साथ चलने वाले पुरुष नृतक पोतराजू कहलाते हैं, जो चाबुक चलाते हुए नीम की पत्तियाँ लेकर जलसे का नेतृत्व करते हैं।

- यदि आपने ऐसी किसी जातरा, उर्स या बोनालु में भाग लिया है, तो उसका वर्णन अपनी कक्षा में करें और उनकी मुख्य विशेषताओं के बारे में चर्चा कीजिए।
- ग्राम देवताओं की पूजा या बड़े मंदिरों में पूजा या मस्जिद में नमाज, ये त्योहार अन्य से अलग कैसे है?

लोक परंपरा की पुरातनता

कई ऐतिहासिक पुस्तकें हमें बताती हैं कि ऐसे लोक देवताओं की पूजा बहुत प्राचीन समय में भी की जाती थी। हमने 2500 वर्ष पूर्व होने वाली नाग,पेड़ों यक्ष और यक्षणियों की पूजा के बारे में जाना है। लगभग 1450 ई. में लिखी गई, श्रीनाथ द्वारा पाल्नाटी वीरुला कथा में पोथराजू की पूजा के बारे में बताया गया है। इसके बदले में वल्लभरायुडु की क्रिडाभिरामम लगभग इसी समय लिखी गई थी, जिसमें वरंगल में मैलारा और कई देवियों की पूजा के बारे में विस्तार से जानकारी है।

आपने ध्यान दिया होगा कि किस तरह लोक देवताओं की पूजा बड़े मंदिरों, मस्जिदों और चर्चों से बिल्कुल अगल होती है।

अधिकतर इन देवताओं की पूजा अधिकतर सभी लोग अपनी जाति, धर्म या आर्थिक स्तर को भुलाकर समान रूप से करते हैं। उदाहरण के लिए, मुसलमान भी यहाँ तक कि वे ग्राम देवता की कई रीतियों में भाग लेते हैं। इसी प्रकार सभी धर्म के लोग पीर की दरगाह जाते है और वे वहाँ के पेड़ों या दीवारों पर धागे बाँधते हैं और कुछ समस्याओं के समाधान होने पर फिर दर्शन के लिए लौटने का वचन देते हैं। वे अपने को बुरी शक्तियों से बचाये रखने के लिए परीजादों से तावीज़ बनाने का अनुग्रह करते हैं।

ग्राम देवताओं और उच्च धार्मिक परंपराओं का आन्तरिक मिश्रण

भारत में विभिन्न प्रकार के लोगों में बातचीत की निरंतर प्रक्रिया होती है और उनका धर्म अंतरमिश्रण की परंपरा की ओर बढ़ रहा है। लोक पूजा और लोक ज्ञान में आरंभ हुई इस धार्मिक सोच को उच्च धर्मों ने अपनाया और उच्च धर्मों के धार्मिक विश्वासो को इन लोक धर्मों ने अपनाया है।

इसीलिए उच्च धार्मिक परंपरा में भी पीपल के वृक्ष, सांप और देवी माता की पूजा की जाती है। इसी तरह वर्तमान में सांप, पेड़, पशु, और पक्षियों के एकीकरण ने वर्तमान में पौराणिक धर्म में स्थान लिया है । ग्राम देवता जैसे बुद्ध, शिव या विष्णु या दुर्गा पूजा का भाग बन गए। आप देख सकते हैं कि साँप, नदी और पेड़, उनकी आराधना के रूप में पूजे जाते हैं।

इस्लाम के मामले में यह अलग है। इस्लाम का उच्च धर्म एकेश्वर में विश्वास रखता है या सिर्फ एक भगवान–अल्लाह की आराधना करता है। हालांकि, इस्लाम के लोक अनुयायियों ने सूफी संतों को मानना शुरू कर

SCERT TELANGANA

दिया और उनका विश्वास था कि उनकी दरगाह में पूजा करने से उनकी सभी समस्याएँ दूर हो जाएंगी। इसी प्रकार दरगाह और उर्स के लिए श्रद्धालुओं की एक मजबूत परंपरा बनी और सभी धर्मों के लोगों ने इसमें भाग लिया।

लोक ज्ञान और उच्च धर्म

कई संत जैसे कबीर, योगी वेमना और कई सूफी संत, जो आम लोगों के बीच से आए थे, ने अपने गहन धार्मिक विचार रखे। उन्होंने उच्च धर्म के उपदेशों को आम लोगों के विचारों से मिलाया। योगी वेमना के निम्नलिखित विचारों को पढ़िए, जो 300 वर्ष पहले के है और जिन्होंने तेलुगु में कई ज्ञान वर्धक कविताएँ लिखीं।

"व्यक्तिगत अनुभव के बिना, शास्त्र की पुनरावृत्ति मात्र से भय दूर नहीं होगा। जिस तरह से मात्र चित्रित लौ से अंधेरे दूर नहीं किए जा सकते।"

"छह स्वाद अलग हो सकते हैं, लेकिन स्वाद एक ही रहता है, सच्चाई के बारे में विभिन्न धर्म हैं, लेकिन सच्चाई एक है, और संत आपस में अलग हो सकते हैं, लेकिन वे जिसका ध्यान करते हैं वह एक है।"

"मुंडे सिर, उलझे बाल, भद्दी राख, गायन, धार्मिक पोशाक! कोई आदमी संत नहीं है, जो दिल से साफ नहीं है।"

इस तरह के विचार और कहावतें आम लोगों के विचारों का हिस्सा बन गए हैं।

मुख्य शब्द :

1. लोक देवता 2. जातरा 3. उर्स 4. पीरी 5. बोनम

हमने क्या सीखा?

1. अधिकतर ग्राम देवताओं की पूजा में क्या समानताएँ होती हैं? बताइए।
2. जब लोग गाँव से शहर जाकर बस जाते हैं, तो क्या वे वहाँ अपने पुराने ग्राम देवताओं की पूजा जारी रखते हैं? वे इसे कैसे करते हैं?
3. क्या लोगों की ग्राम देवता की पूजा अब बदल रही है? आप किस तरह के बदलाव देखते हैं?
4. तेलंगाना मानचित्र में जात्रा और उर्स के महत्वपूर्ण स्थानों को अंकित कीजिए।
5. 186 पृष्ठ का चौथा अनुच्छेद पढ़िए और टिप्पणी लिखिए।
6. आपके क्षेत्र के विभिन्न धर्म के लोगों से मिलकर विषयों की जानकारी लिजिए।

क्र.सं.	नाम	उनके द्वारा माना जाने वाला धर्म	उनके द्वारा पूजे जाने वाले भगवान	उनके द्वारा मनाया जाने वाला त्यौहार

परियोजना कार्य :

1. अपने दादा-दादी से अपने क्षेत्र की किसी भी जात्रा के बारे में जानकारी प्राप्त करें। एक रिपोर्ट बनाएँ।
2. अपने क्षेत्र के किसी लोक देवता के बारे में कहानियाँ एकत्रित करें और इसकी एक छोटी सी किताब बनाएँ।

SCERT TELANGANA

अध्याय

21 दैवत्व की ओर आध्यात्मिक मार्ग

(Devotional Paths to the Divine)

आपने देखा कि लोग शास्त्र विधि द्वारा पूजा करते हैं, या भजन गाते हैं, कीर्तन या कव्वाली या मौन रूप से ईश्वर के नाम का जाप करते हैं, और कुछ आँसू भी बहाते हैं। तीव्र भक्ति और ईश्वर के प्रति समर्पित भावना और प्रेम ही भक्ति है और सूफी आन्दोलन जिसका विकास 8वीं शताब्दी में हुआ। आपने छठवीं कक्षा में अलवार और नयनार की कविताओं के बारे में पढ़ा था जो विष्णु और शिव के भक्त थे। राजाओं और सरदारों ने शीघ्र ही मन्दिरों का निर्माण किया और भूमि दान में दी और विभिन्न प्रकार की शास्त्रीय विधि को करने के लिए उपहार भी दिए। मंदिरों में पूजा का विस्तार कठिन और खर्चीला हो गया। विशेष प्रशिक्षित पुजारी ही पूजा पद्धतियों से परिचित थे। कुछ जाति के लोगों को मंदिर में प्रवेश भी करने नहीं दिया जाता था। जल्दी ही ऐसी पद्धतियों और असमानता के विरोध में प्रतिक्रिया की गई। ईश्वर भक्ति में नए विचार उभरने लगे– इस बारे में पढ़कर जानकरी प्राप्त कीजिए।

SCERT TELANGANA

दर्शन और भक्ति

8वीं शताब्दी में केरल में एक प्रसिद्ध भारतीय दर्शन शास्त्री शंकर का जन्म हुआ। वह अद्वैत या व्यक्तिगत आत्मा की एकात्मकता सिद्धांत और सर्वोच्च ईश्वर की अंतिम वास्तविकता के समर्थक थे। उन्होंने ब्राह्मणों को सिखाया कि केवल निराकार और निर्गुण ईश्वर ही अंतिम वास्तविकता है। उन्होंने विश्व को समझने और मुक्ति पाने के लिए संसार का त्याग और ज्ञान के मार्ग का अनुसरण करने का उपदेश दिया। ब्राह्मण का वास्तविक स्वभाव होना चाहिए।

11वीं शताब्दी में दक्षिण भारत में रामानुज का जन्म हुआ,वे अलवार से बहुत प्रभावित थे। उनके अनुसार मुक्ति पाने का सबसे अच्छा मार्ग विष्णु के प्रति संपूर्ण समर्पण भावना है। रामानुज ने भी निम्न जाति के लोगों के लिए मंदिर में प्रवेश की व्यवस्था की । उन्होंने विशिष्टाद्वैत या एकात्मकता के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया, जिसके द्वारा आत्मा परमात्मा में विलीन हो कर भी प्रथक रहेगी। रामानुज के सिद्धान्त ने नई भक्ति धारा के लोगों को प्रभावित किया जो उसी समय उत्तर भारत में विकसित हुई थी।

बसवन्ना का वीर शैवम्

हम मन्दिरों में भक्ति और भक्ति आन्दोलन के मध्य संबंध के बारे में जानते हैं । अब हम भक्ति आंदोलन का और एक रूप वीर शैवम् के बारे में जानेंगे। इसके मुख्य आरम्भ कर्ता बसवन्ना और उनके साथी आलमा प्रभु और अकामहादेवी थे। बारहवीं शताब्दी के मध्य में कर्नाटक में आन्दोलन आरम्भ हुआ। वीरशैवमत अनुयायियों ने सभी मनुष्यों में समानता और जाति के बारे में गंभीरता से विचार विमर्श किया तथा महिलाओं के साथ किए जाने वाले व्यवहार पर चिंता प्रकट की।

ये वचन बसवन्ना की विनय भावना को सूचित करते हैं:

अमीर,
शिव के लिए मंदिर बनायेंगे
मैं
एक गरीब व्यक्ति
क्या करूँ?
मेरे पैर स्तम्भ है,
मेरी देह मंदिर है।
सिर मंदिर का स्वर्ण शिखर है।
सुनो,
खड़ी चीज़े गिर सकती हैं,
किंतु गति हमेशा अटल रहती हैं।

- बसवन्ना द्वारा प्रस्तुत किए गये मुख्य विचार क्या है ?
- वह मंदिर क्या है जिसे बासवन्ना ईश्वर को भेंट देना चाह रहे हैं ?

महाराष्ट्र के सन्त

तेहरवीं शताब्दी से सत्रहवीं शताब्दी तक महाराष्ट्र में महान संत एवं कवि हुए हैं जिनके सरल मराठी के गीत लोगों को आज तक प्रभावित करते हैं। ज्ञानेश्वर, नामदेव, एकनाथ और तुकाराम के साथ-साथ महिलाएँ जैसे सक्कु बाई और चोखामेला का परिवार प्रमुख है जो अस्पृश्य महर जाति के थे। ये क्षेत्रीय पारम्परिक भक्ति पंढ़रपुर में विठ्ठल(विष्णु का स्वरूप) मंदिर पर केंद्रित थी। के नाम से प्रचलित हुई। तथा उनके अभिप्राय में सभी लोगों के दिलों में वैयक्तिक ईश्वर निवास करते हैं।

चित्र 21.1 आग के आस-पास तपस्वियों का जमा होना

SCERT TELANGANA

इन संत कवियों ने सभी धार्मिक क्रियाकर्मों का बहिष्कार किया। वास्तव में उन्होंने आत्म त्याग का भी विरोध किया तथा परिवार के साथ रहना, अन्य लोगों के समान जीविका चलाने के लिए कमाना, निर्धन लोगों की नम्रता से सेवा करना पसंद किया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि दूसरों का दुख बाँटना ही भक्ति है। इससे एक नवीन मानवीय उपाय सामने आया। प्रसिद्ध गुजराती संत नरसिंह मेहता ने कहा "वैष्णव वही है जो दूसरों के दुख को समझे।"

यह तुकाराम का एक अभंग है(मराठी में भक्ति का श्लोक)

> वह जो
> टूटा-फूटा और परास्त
> होने पर भी पहचाना जाता है। उसे संत कहो।
> ईश्वर उसके साथ है
> वह पकड़ता है
> प्रत्येक त्यागी व्यक्ति को
> उसके हृदय के समीप लेता है
> वह
> एक गुलाम के साथ
> अपने पुत्र के समान
> व्यवहार करता है।
> तुका कहते हैं
> वापस दोहराने के लिए
> मैं थक्ता नहीं
> ऐसा व्यक्ति
> व्यक्ति के रूप में
> ईश्वर है

- आप विचार में तुकाराम को गरीबों का मित्र और ईश्वर का सच्चा भक्त क्यों माना जाता था?

यहाँ चोखामेला के पुत्र के द्वारा रचित एक अभंग प्रस्तुत है:

> आपने हमें निम्न जाति का बनाया,
> आप उस सच्चाई का सामना क्यों नहीं करते है महान ईश्वर?
> हमारा पूरा जीवन -बचा हुआ भोजन खाने पर निर्भर है।
> इस पर आप लज्जित होंगे
> आपने हमारे घरों में खाया है
> आप कैसे इसे अस्वीकार कर सकते है?
> चोखा का पुत्र करमामेला पूछता है
> आपने मुझे जीवन क्यों दिया?

- इस निबंध में प्रस्तुत सामाजिक आदेशों से संबंधित विचारों पर चर्चा कीजिए।

नाथपंथी, सिद्ध और योगी

असंख्यधार्मिक समूहों का इस समय आविर्भाव हुअ जिन्होंने धार्मिक पद्धतियों और रूढिवाद और सामाजिक संस्कारों का साधारण तर्क द्वारा आलोचना की । उनमें नाथपंथी सिद्‌धाचार और योगी थे। उन्होंने संसार में विरक्ति की वकालत की। उनके लिए मोक्ष का मार्ग निराकार वास्तविकता और उसमें एकात्मकता का अनुभव करना है। इसे प्राप्त करने के लिए मस्तिष्क, एवं तन का उच्च स्तर पर प्रशिक्षण देना और योगदान, श्वास व्यायाम और ध्यान धारणा, आदि अनिवार्य है। निम्न जाति के लोगों में ये समूह अधिक प्रसिद्ध होने लगा। रूढ़िवादी धर्म की निन्दा ने उत्तर भारत में इसे प्रसिद्ध बनाने में मैदान तैयार किया।.

इस्लाम और सूफीमत

संत और सूफियों में बहुत अधिक समानताएँ थी, इसीलिए उन्होंने एक दूसरे के विचारों को अपनाया। सूफी रहस्यमयी मुसलमान थे। उन्होंने

SCERT TELANGANA

दिखावटी धार्मिकता का विरोध किया तथा ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति और सभी मानवों के प्रति दया को प्रतिपादित किया।

इस्लाम ने एक ईश्वर के समक्ष समर्पण का प्रचार किया। मूर्ति पूजा का बहिष्कार किया और सामूहिक प्रार्थनाओं द्वारा सरल उपासना अथवा इबादत अपनाने पर बल दिया। इसी समय मुसलमान विद्वानों ने एक कानून- शिरियत को विकसित किया। सूफी लोगों ने कठिन क्रियाक्रमों का बहिष्कार किया और मुसलमान धार्मिक विद्वानों ने अच्छे व्यवहार की माँग की । वे ईश्वर से मिलने के लिए ऐसे उत्सुक रहते थे जैसे एक प्रेमी सारे संसार से विमुख होकर प्रेमिका के लिए उत्सुक रहता है। संत कवियों के समान सूफियों ने भी अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कविताओं की रचनाएँ की तथा गद्य में साहित्य लिखा, जिसमें लघु कहानियाँ और कल्पित कथाएँ जोड़ी गई है। मध्य एशिया में प्रसिद्ध सूफी गज़ल, रूमानी और सादी थे। नाथपंथी, सिद्ध और योगी की तरह सूफी भी यह विश्वास करते थे कि विश्व को विभिन्न दृष्टियों से देखने के लिए हृदय को प्रशिक्षित किया जा सकता है। उन्होंने प्रशिक्षण की प्रणालियों जैसे जिक्र (नाम का जाप या पवित्र सूत्र),चिन्तन करना, (धार्मिक गीत गाना), नीतियों पर चर्चा, श्वास नियंत्रण आदि का पीर के नेतृत्व में का प्रस्तुत किया। इसी कारण सूफी महात्माओं के वंश के आधार पर निर्देशों और रीति रिवाज़ों के अभ्यासों में तनिक अंतर के साथ सिलसिला (सूफी संतों का वंशावली अध्ययन से) आरंभ हुआ।

चित्र 21.2 रहस्यमयी अति प्रसन्नता

11वी. से मध्य एशिया के कई सूफी संत हिन्दुस्तान मे बस गए। इस प्रक्रिया को दिल्ली सल्तनत की स्थापना के बाद बल मिला, सारे उपमहाद्वीप में सूफी केन्द्रों को विकसित किया गया। इन में प्रसिद्ध प्रभावकारी चिश्ती सिलसिला था। इनमें कई महात्मा जैसे अजमेर के ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती, दिल्ली के कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी, पंजाब के बाबा फरीद, दिल्ली के ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया और गुलबर्गा के बन्दा नवाज गिसुदराज़ थे।

सूफी गुरू खानखाह या सरायों में अपनी सभाएँ आयोजित करते थे। खानखाह में राजघराने, कुलीन और साधारण लोगों के समूह को भक्ति संबंधी और प्रार्थना के बारे में बताया जाता था। वे आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा करते, सांसारिक संकटों से मुक्ति पाने के लिए और संतो का आशीर्वाद लेने इन सभाओं में जाते थे।

अधिकतर लोग सूफी गुरूओं को चमत्कारिक शक्तिवाला मानने लगे जो दूसरों की बिमारियों

SCERT TELANGANA

और समस्याओं को दूर कर सकते हैं। सूफी सन्तों का गुंबद या दरगाह तीर्थ स्थल बन गए जहाँ हज़ारों लोगों की भीड़ उमड़ने लगी।

- यदि आप कभी दरगाह गए हैं तो अपनी कक्षा में अपने मित्रों के समक्ष इसका वर्णन कीजिए। लोग पीर का आदर कैसे करते हैं और किस लिए वे प्रार्थना करते हैं?

भारत में नए धार्मिक विकास

तेरहवीं शताब्दी के बाद उत्तर भारत में भक्ति आन्दोलन में नई तरंग का युग आया। यह वह समय था जब इस्लाम, हिन्दु, सूफी, नाथपंथी सिद्ध और योगी एक दूसरे से प्रभावित हुए। हमने देखा कि कई नये शहर और साम्राज्य उभरे और लोग नए व्यवसाय अपनाने लगे और स्वयं के लिए नई पात्रता ढूँढ़ने लगे। ऐसे लोग विशेषकर कलाकार, किसान, व्यपारी और श्रमिक नए संतों को सुनने के लिए समूह में जाने लगे और उनके विचारों का प्रचार करने लगे। कबीर और बाबा गुरू नानक ने पारम्परिक रिवाजों और विश्वासों को मानने से इन्कार किया।

कवि जैसे बोमरा पोतन्ना, अन्नामाचार्य, चैतन्य महा प्रभु, तुलसीदास, और सूरदास प्रचलित विश्वासों और रिवाजों को मानते थे, परंतु सभी लोग इनके पास सरलता से पहुँच सके ऐसा चाहते थे।

पोतन्ना ने जिसने वरगंल के पास बोमरा गाँव में एक किसान का जीवन बिताया, महाभागवत की रचना तेलुगु में की। पोतना को सहज या स्वाभाविक कवि कहा जाता था। स्वाभाविक भक्तिमार्गीय विचारों को प्रकट करने के लिए उन्होंने कविताएँ लिखी।

थालपका अन्नामाचार्य(1408 – 1503) आन्ध्र प्रदेश के प्रसिद्ध कविता रचनाकार थे और उन्हें 'पद कविता पितामह' से सम्मति किया गया। अनमय्या ने अपना सारा जीवन तिरूपति के भगवान वेंकटेश्वर के वैभव संबंधी गीत लिखने और गाने में बिताया। उनकी रचनाएँ मुख्तयः प्रकृत भाषा में तात्कालीन युग के विभागो के आधार पर सशुंस्कृतिक(ग्रन्थिका) पद्धति से लिखी गई। "अन्नमाचार्या चरितम" में कहा गया है कि अन्नमय्या ने बत्तीस हजार कीर्तन बालाजी भगवान पर रचे थे।

उनके कीर्तनों में नैतिकता, धर्म और वास्तविकता की जानकारी होती थी। इस युग में वे सामाजिक बुराई, जाति-प्रथा और अस्पृश्यता के विरोधी थे। उनके संकीर्तनों में "ब्राह्मण एक है परब्रह्म एक है" और "एक कुलाजुदैनानेमी इवादैनेनी, उन्होंने सुंदर और शक्तिशाली शब्दों में बताया कि ईश्वर और मानव में लिंग, जाति और आर्थिक स्तर पर समानता है।

तन्दनाना आही-तन्दनानापुरे
तन्दनाना भला-तन्दनाना

ब्रह्मवोक्कटे परब्रह्मोक्कटे पर
ब्रह्मोक्कटे पर ब्रह्मोक्कटे ...

निन्डारा राजु निद्रन्चु निद्रयु नौकट्टें
आण्डनै ओन्टु नीद्र अदियो नोकट्टें...
मैण्डने ब्राह्मनुडु-मेट्टभूमि योकट्टे
चण्डालु डुन्डेटि सरिभूमि योकट्टें...

अन्नामाचार्य कीर्तन

SCERT TELANGANA

चैतन्य महाप्रभु (1486–1534) वैष्णव संत और पूर्वी भारत के समाज सुधारक (आज वर्तमान में बंगलादेश और पश्चिम बंगाल) थे। चैतन्य का भक्ति योग(कृष्ण/ईश्वर के प्रति असीम भक्ति) के वैष्णव स्कूल के प्रस्ताव में सम्मानीय नाम है, जो भागवत पुराण और भागवत गीता के दर्शन पर आधारित है। उन्होंने सामूहिक रूप से भजन गाकर और भक्तिमयी नृत्य का प्रचार किया। उन्होंने कृष्ण के स्वरूप की पूजा की और 'हरे कृष्ण' मंत्र के जाप को प्रसिद्ध किया।

कन्चेरला गोपन्ना (1620 - 1680), भक्त रामदास के नाम से प्रसिद्ध हुए। वे 17 वीं शताब्दी के राम भक्त थे और कर्नाटक संगीतकार थे। वे प्रसिद्ध तेलुगु भाषा के वागेयाकार में से एक थे। (गीत रचने और गाने वाला एक ही व्यक्ति) वे भद्राचलम में श्रीराम के प्रसिद्ध मन्दिर के निर्माता के रूप में प्रख्यात हुए। उन्होंने श्रीराम के भक्तिमयी गीत रामदासु कीर्तनालु के नाम से प्रसिद्ध रचना लिखी। उन्होंने लगभग 108 कविताओं का संग्रह दाशरथी शतकमुं श्री राम को समर्पित किया।

एक तीरूग ननु दया चुचेदवे, इऩ वन्शोत्तमा रामा
ना तरमा भाव सागारमीदनों,नलीन दलेक्षण रामा
श्रीरघु नन्दन सीता रमणा श्रीतजन पोशाक रामा
कारूण्यलया भक्त वरद नीनु, कनदी कोनुपु रामा...

- रामदासु कीर्तन

- क्या आप कुछ वागेयकारें और उनके संकीर्तनों के नाम बता सकते है ?

श्रीराम तुलसीदास के ईश्वर थे। तुलसीदास की रचना रामचरितमानस अवधी भाषा (पूर्वी उत्तर प्रदेश में उपयोग में लाई जाने वाली भाषा) में लिखी गई, जो दो प्रकार से महत्वपूर्ण है-उनकी भक्ति के प्रस्तुतिकरण और साहित्यिक कार्य। आसाम के शंकदेव(पन्द्रहवीं शताब्दी का अन्तिम काल) उनके समकालीन थे, जिन्होंने विष्णु की भक्ति को प्रतिपादित किया, असमी भाषा में कविताएँ लिखी और नाटक की रचना भी की । उन्होंने नामघर या वे घर जहाँ कथाएँ या प्रार्थनाएँ की जाती हैं का प्रचलन आरम्भ किया जो आज तक चल रहा है।

चित्र 21.3 मीराबाई

इसी परम्परा में दादू दयाल, रविदास और मीराबाई जैसे संत हुए। मीराबाई राजपूत राजकुमारी थी। १६ वीं शताब्दी में मेवाड के राजघराने में मीराबाई का विवाह हुआ। मीराबाई रविदास की शिष्या बनी, जो कि अस्पृश्य जाति की थी वह कृष्ण की भक्त थीं और उसने कई भजन और पदों द्वारा अपनी भक्ति का प्रदर्शन किया। उनके गीतों ने उच्च वर्ग को स्पष्ट रूप से चुनौती दी और राजस्थान और गुजरात क्षेत्रों में प्रसिद्ध हए।

कई संतों की अनोखी विशेषता यह थी कि उनके कार्य स्थानीय भाषाओं में रचे गए और गाये गए। वह अधिक हुआ। और मौखिक रूप से उनका हस्तांतरण पीढ़ी से पीढ़ी प्रसिद्ध हुए। सामान्यतः गरीब, अधिक वंचित सम्प्रदाय और महिलाओं ने इन गीतों को अपनाया, अपने अनुभवों को भी जोड़ा। जो राजस्थान और गुजरात में प्रसिद्ध हुए।

SCERT TELANGANA

आज हमारे पास जो गीत हैं, संतों के द्वारा रचे गए और उन लोगों के द्वारा भी जिन लोगों ने इन्हें गाया है। वे आज हमारे जीवन की अमूल्य संस्कृति है। जो पीढ़ी-दर-पिढ़ी चले आ रहे है।

- क्या आपने मातृ भाषा में ऐसे कोई पुराने भजन सुने हैं? पता लगाइए उन्हें किसने रचा है। उनमें से कुछ को भजन लिखिए और कक्षा में उसके अर्थ पर चर्चा कीजिए।

कबीर पर एक दृष्टि

लगभग पन्द्रहवी-सोलहवीं शताब्दी में कबीर का जन्म हुआ, वे एक प्रभावकारी संत थे। इनका पालन-पोषण एक जुलाहे या बुनकर के घर में बनारस(वाराणसी) के पास एक शहर में हुआ। उनके जीवन के बारे में हमारे पास बहुत थोड़ी विश्वसनीय जानकारी है। इनके विचारों की जानकारी हमें साखी और पद से प्राप्त होती है। किसके बारे में कहा जाता है कि ये इनके द्वारा रचे गये थे किंतु ये घूमने वाले भजन गायकों द्वारा गाये जाते थे। इनमें से कुछ बाद में एकत्र किए गए और उन्हें गुरू ग्रंथ साहब और पंचवाणी और बीजक में संग्रहित किया गया।

21.4 कपड़े पर काम करते हुए कबीर का चित्र

कबीर के उपदेशों में पूरी तरह से गहराई होती है और वे कई धार्मिक परम्पराओं का विरोध करते हैं । उनकी वाणी ने हिन्दू और मुसलमान की बाह्य पूजा पद्धति, पुजारी वर्ग की व्यक्तिगत प्रसिद्धि और वर्ण व्यवस्था पर स्पष्ट व्यंग्य किया है। उनकी कविताओं की भाषा बोल चाल की हिन्दी थी जिसे साधारण व्यक्ति आसानी से समझ सकता था।

कबीर निराकार सर्वोच्च ईश्वर पर विश्वास करते थे और मोक्ष की प्राप्ति का एक ही मार्ग भक्ति का उपदेश देते थे। कबीर ने हिन्दू और मुस्लमानों दोनों में से अपने अनुयायी बनाए।

कबीर का एक रचना

ओ अल्लाह-राम प्रत्येक सजीव में रहते हैं
अपने दासो पर दया कीजिए, हे ईश्वर!
आपका सिर क्यों भूमि पर झुका हुआ है,
क्यों आपका तन जल से स्नान कर रहा है?
तुम मारते हो और स्वयं को "दयालु" कहते हो।
आपके द्वारा की गई हत्याओं को खुद छिपाते हो।
चौबीस बार ब्राह्मण एकादशी का व्रत रखते हैं।
काज़ी रमजान में रखते हैं। मुझे बताओ कि उसने ग्यारह महीने अलग क्यों रखे हैं।
ताकि बाहरवें महीने में आध्यात्मिक फल पा सके?
हरि पूर्व में रहता है, वे कहते हैं और
और अल्लाह पश्चिम में रहता है।
उसकी तलाश तुम्हारे हृदय में करो, हृदय में जो तुम्हारा हृदय है।
वहाँ रहते हैं, रहीम-राम।

गुरूनानक

हम कबीर से अधिक गुरूनानक (1469-1539 ई.) के बारे में जानते है। तलबंडी में इनका जन्म हुआ,(पाकिस्तान के नानाकाना साहिब) करतार पूर (डेरा बाबा नानक रवि नदी के पास) में केन्द्र स्थापित करने से पहले इन्होंने कई लम्बी यात्राएँ की। वंश, जाति या लिंग के भेदभाव के बिना इनके अनुयायी एक ही रसोईघर में मिलकर भोजन करते थे। गुरू नानक द्वारा स्थापित पवित्र स्थल को धर्मशाला कहते थे।

21.5 युवक गुरूनानक महात्मा के साथ वार्तालाप करते हुए

सोलहवीं शताब्दी से इनके उत्तरधिकारियों की देख-रेख में इनके अनुयायियों की संख्या बढ़ने लगी। वे अनेक जाति के थे, परन्तु व्यापारी, कृषक, कलाकार और चित्रकार प्रमुख स्थान रखते थे। गुरूनानक के बल दिए जाने पर कि उनके अनुयायी मकान मालिक हो और उत्पादिता तथा उपयोगी व्यवसाय में सलंग्न हो। वे अनुयायियों के लिए इनसे साधारण चन्दे की भी आशा करते थे।

गुरूनानक के विचारों का इस आन्दोलन पर आरम्भ से ही गहरा प्रभाव हुआ। उन्होंने एक ईश्वर की पूजा के मत को बल दिया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि जाति, वंश या लिंग मुक्ति पाने में कोई बाधा उत्पन्न नहीं करते। मुक्ति पाने के लिए आनन्दमयी स्थिति का होना अनिवार्य नहीं , परन्तु सामाजिक वचनबद्धता के साथ शक्तिशाली जीवन व्यतीत करना होता है। उन्होंने अपने उपदेश में नाम, दान और स्नान शब्दों का उपयोग किया, इसका वास्तविक अर्थ सही उपासना, दूसरों का कल्याण और चरित्र की शुद्धता है। आज उनकी शिक्षाएँ नाम जपना, कीर्तन करना और वन्द चखना, से याद की जाती है, इसके द्वारा सही विश्वास और पूजा, ईमानदारी का जीवन और दूसरों की मदद महत्वपूर्ण है। इसी कारण गुरूनानक का समानता का सिद्धान्त सामाजिक एवं राजनैतिक एकता को लागू करता है। आंशिक रूप से गुरू नानक के अनुयायियों के इतिहास और मध्य युग के अन्य धार्मिक संतों के अनुयायियों जैसे कबीर, रविदास और दादू जिनके विचार गुरू नानक के विचारों के समान हैं के बीच अंतर दर्शाता है।

SCERT TELANGANA

मुख्य शब्द :

1. अद्वैत
2. मुक्ति
3. अलवार
4. नायनार
5. भक्ति
6. योगासन
7. बीजक
8. अभंग

हमने क्या सीखा ?

1. नामपंथी, सिद्ध और योगी के विश्वास और पद्धतियों का वर्णन कीजिए।
2. कबीर के द्वारा कौनसे प्रमुख विचार वर्णित किए गये? उन्होंने इसको कैसे प्रस्तुत किया?
3. सूफियों के प्रमुख विश्वास और पद्धतियाँ क्या थीं?
4. आपके विचार में कई शिक्षकों ने प्रचलित धार्मिक विश्वासों और पद्धतियों का बहिष्कार क्यों किया है?
5. बाबा गुरु नानक की प्रमुख शिक्षाएँ क्या थीं?
6. वीराशैव या महाराष्ट्र के संतों के जाति के प्रति प्रवृत्ति पर चर्चा कीजिए।
7. साधारण मनुष्य मीराबाई को आज भी क्यों याद करते है?
8. पृष्ठ २०२ के अनुच्छेद 'कबीर पर एक दृष्टि' पढ़िए और टिप्पणी कीजिए।
9. आपके क्षेत्र में लोगों द्वारा मनाए जाने वाले त्योहारों के बारे में लिखिए।

परियोजना कार्य :

1. पता लगाए कि क्या आपके पड़ोस में भक्ति परम्परा के संतों से संबंधित दरगाह गुरूद्वारा या मन्दिर जाइए और वहाँ आपने क्या देखा और सुना उसका वर्णन कीजिए।
2. इस अध्याय में वर्णित संतों कवियों पता लगाइए कि क्या ये गायी गई हैं, कैसे गायी जाती हैं, और कवियों ने उनके बारे में क्या लिखा है।

SCERT TELANGANA

अध्याय

22

शासक एवं भवन (Rulers and Buildings)

चित्र 22.1 कुतुबमीनार की पहली मंजिल के बरामदे को दिखाता है। कुतबुद्दीन ऐबक ने 1199 ई. में इसका निर्माण करवाया था। इस बरामदे में छोटे कमानों ज्यामितीय डिज़ाइनों को देखा जा सकता है। इस बरामदे के नीचे स्थित दोनों कतारों के शिलालेखों को देखिए। वे अरबी भाषा में हैं। ये शिलालेख ऊपरी भाग में कोणाकार झुके हुए हैं। शिलालेखों को इस स्थान पर रखने के लिए अच्छी कारीगरी आवश्यक है। बहुत ही निपुण शिल्पकार ही ऐसा निर्माण कर सकता है। 800 वर्ष पूर्व कुछ ही इमारतें पत्थरों एवं ईंटों से निर्मित की गई थीं। तेरहवीं शताब्दी के पर्यटकों को कुतुबमीनार जैसी इमारतें किस प्रकार प्रभावित करती होंगी?

आठवीं से अठारहवीं ईसवी तक के राजाओं और उनके अधिकारियों ने दो प्रकार की इमारतों का निर्माण करवाया। प्रथम किले, महल और गुंबद आदि। अपनी सुरक्षा और आराम के लिए तैयार किये गयी इमारतें तथा दूसरा सामाजिक कल्याण हेतु, जैसे- मंदिर, मसजिद, तालाब, कुँए, सराय, बाजार आदि। विश्व में राजा लोग इन निर्माणों के द्वारा अपना नाम अमर बनाना चाहते थे। साथ ही साथ अपनी विचारधारा और संपत्ति की सुरक्षा बढ़ाते थे। निर्माण के कार्य अन्य लोगों जैसे व्यापारियों आदि द्वारा भी करवाये गये। उन्होंने भी मंदिर, मसजिद, तालाब, कुएँ, बाज़ार आदि का निर्माण करवाया। इनमें अद्भुत शिल्पकला के नमूने हैं-घरेलू शिल्पकला जैसे- व्यापारियों की हवेलियाँ, जिनका निर्माण अठारहवीं शताब्दी में हुआ था।

चित्र 22.1

चित्र 22.1: कुतुबमीनार पाँच मंजिला इमारत है। आप पहले बरामदे के लिखे शिलालेखों को देख सकते हैं। पहली मंजिल का निर्माण कुतबुद्दीन ऐबक द्वारा करवाया गया था। बाद के मंजिलों का निर्माण इल्तुत्मिश ने 1229 में करवाया था। कई बार इस इमारत को भूकंप व आँधियों के कारण क्षति पहुँची, जिसकी मरम्मत बाद के राजाओं द्वारा करवायी गयी।

चित्र 22.2अ दिल्ली की कुव्वत-अल-इस्लाम मसजिद

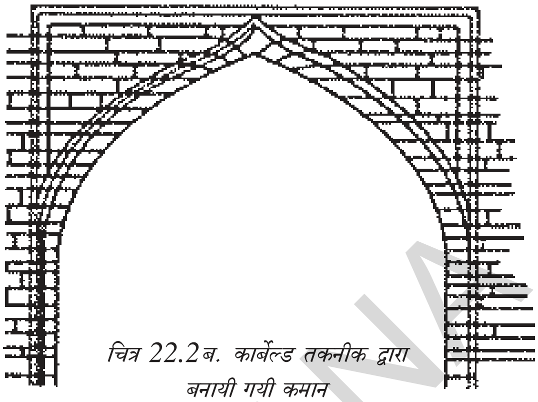

चित्र 22.2ब. कार्बेल्ड तकनीक द्वारा बनायी गयी कमान

भवन निर्माण एवं इंजीनियरी कौशल

ऐतिहासिक इमारतें उस समय की अभियांत्रिक कौशल दर्शाती हैं, साथ ही उस समय की तकनीक को भी। उदाहरण के लिए एक छत को लें। हम पत्थर एवं लकड़ी की बीम की सहायता से चारदीवारियों पर छत बना सकते हैं। किन्तु यदि छत बड़ी इमारत के लिए बनानी हो तो कठिनाई हो सकती है। इसलिए अधिक विशिष्ट तकनीक की ज़रूरत होगी।

सातवीं व दसवीं शताब्दी के मध्य भवनों में अधिक कमरे, दरवाजे, खिड़कियाँ बनाए जाने लगे। तब भी दो खड़े स्तंभों के बीच क्षैतीजिय बीम के सहारे छत का निर्माण किया जाता था। इस प्रकार से निर्मित भवनों को "ट्रैबीट" या "कार्बेलड" कहा जाता था। आठवीं से तेरहवीं सदी के मध्य इस विधि के अंतर्गत बड़ी-बड़ी सीढ़ी वाले कुँओं से जुड़े मंदिरों, मसजिदों, समाधियों, भवनों का निर्माण किया गया।

- अपने आसपास के मंदिर या मसजिद में जाइए और उसके निर्माण में ट्रैबीट विधि (वह विधि जिसमें छत का निर्माण बीम की सहायता से किया गया हो।) का उपयोग किया गया है या नहीं, पता लगाइए।

- इस विधि के द्वारा छत डालने के लिए स्तंभों को एक दूसरे के नजदीक लगाया जाता है। बड़े हॉलों के निर्माण में इस विधि का प्रयोग नहीं किया जा सकता। क्या आप बता सकते हैं क्यों?

ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारंभ में मंदिर निर्माण

999 ई. में चंदेल राजा दंगदेव ने शिव के समर्पित कंदरीय शिवमंदिर का निर्माण करवाया था। यह मध्यप्रदेश के खजुराहो में है।

चित्र 22.3ब मंदिर की रूपरेखा चंदेल साम्राज्य के समय की है, को दर्शाता है। सुंदर सजावट से बनाया गया तोरण, प्रवेश द्वार, उसके बाद विशाल महामंडप है। जहाँ नृत्य किए जाते थे। खजराओं में श्रेष्ठ मन्दिर बनाए

चित्र 22.3 अ खजराओ का कन्दरीय महादेव मन्दिर

SCERT TELANGANA

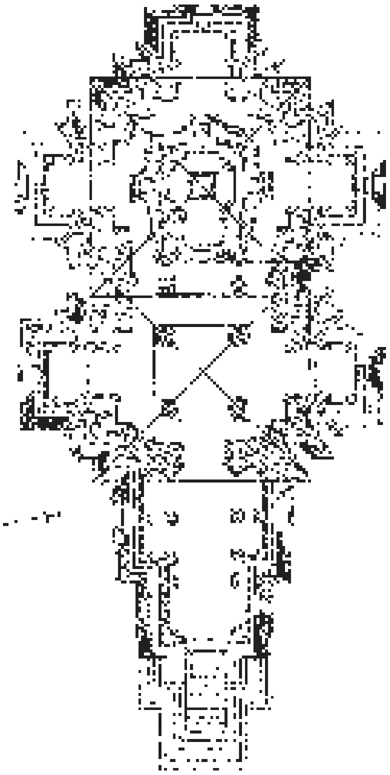

चित्र 22.3ब

गए थे, जहाँ इसके पीछे गर्भगृह में भगवान की मुख्य मूर्ति प्रतिष्ठित है। इस गृह में केवल राजा और उसके परिवार के सदस्य, सगे-संबंधी, पुजारी आदि ही प्रवेश कर पूजा कर सकते थे। जहाँ साधारण लोगों के प्रवेश की मनाही थी। नक्काशीदार मूर्तियों से सजाये गये थे।

तंजाउर का राजेश्वर मंदिर का शिखर अपने समय के मंदिरों के शिखरों में सर्वाधिक ऊँचा था। इस प्रकार का निर्माण उस समय इतना सरल नहीं था। क्योंकि उस समय क्रेन आदि यंत्र नहीं होते थे। लगभग 90 टन के पत्थर को मंदिर के शिखर तक मानव द्वारा पहुँचाना संभव न था। इसलिए पत्थर को शिखर तक पहुँचाने के लिए पहले एक मार्ग बनाया गया, तब उसपर दो पहियों की गाड़ी के सहारे इसे मंदिर के शिखर तक पहुँचाया गया। यह मार्ग चार किलोमीटर तक लंबा था। यह अधिक खड़ा मार्ग नहीं था। यदि वहाँ इस प्रकार का मार्ग नहीं बनाया जाता तो शिल्पयुक्त पत्थर वहाँ तक पहुँचाना कठिन होता। मन्दिर बनने के बाद इस मार्ग को नष्ट कर दिया गया।

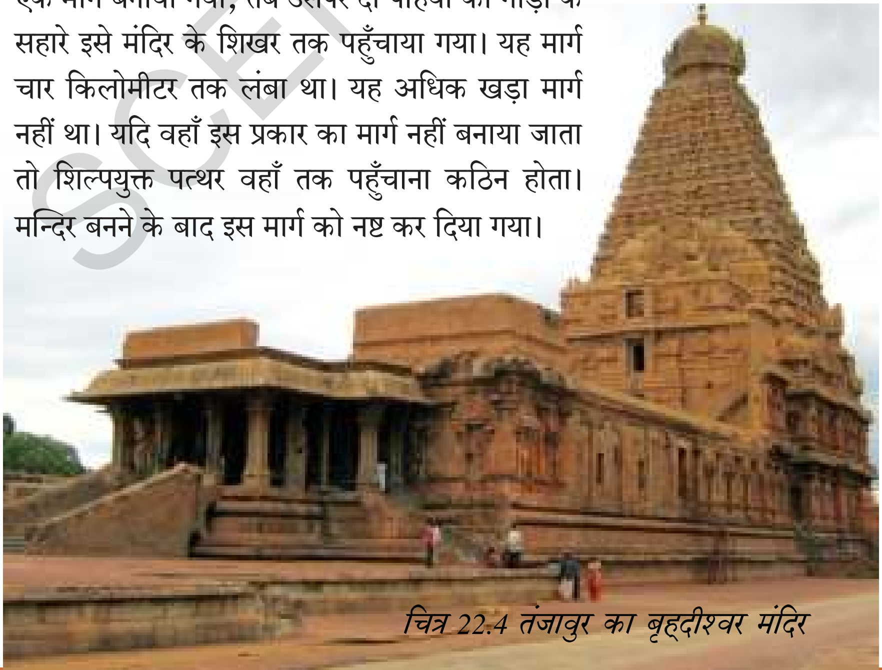

चित्र 22.4 तंजावुर का बृहदीश्वर मंदिर

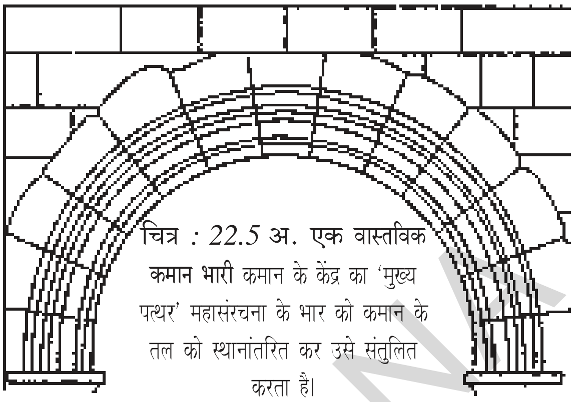

चित्र : *22.5* अ. एक वास्तविक कमान भारी कमान के केंद्र का 'मुख्य पत्थर' महासंरचना के भार को कमान के तल को स्थानांतरित कर उसे संतुलित करता है।

चित्र : *22.5* ब. एक वास्तविक कमान जिसे अलाई दरवाजे के नाम से जाना जाता है (चौदहवीं शताब्दी)। यह कुव्वत अल-इस्लाम मसजिद, दिल्ली

एक भवन निर्माण की नवीन विधि

दो तकनीकी एवं कलापूर्ण विकास की शैलियों को बारहवीं शताब्दी में देखा जा सकता है।

(1) दरवाज़े, खिड़कियों और कमानों के ऊपर का भार कभी-कभी कमान उठाता है। छत के द्वारा भी इस सिद्धांत का उपयोग किया जाता है और उसे गुंबदों और मीनारों में परिवर्तित किया जाता है। इस प्रकार के निर्माण को 'आर्कुएट' (arcuate) कहा जाता है।

SCERT TELANGANA

- चित्र 22.2अ और 22.2ब के साथ 22.5अ और 22.5ब की तुलना कीजिए। .

(2) उस समय के निर्माण में चूनायुक्त सीमेंट का उपयोग अधिक होता था। जिसमें पत्थर के चिप्स मिलाने से सख्त होकर कंक्रीट बन जाती थी। इससे बड़े-बड़े निर्माण जल्दी और आसानी से बनाये जा सकते थे। चाहे कितना भी बड़ा निर्माण कार्य क्यों न हो, इसी के द्वारा किया जाता था। चूने का मिश्रण कमान, गोलाकार छतों आदि के निर्माण के लिए होता था। 1190 ई. के बाद के भवनों के निर्माण में इसका अधिक उपयोग किया गया। आइए, इस प्रकार का निर्माण चित्र 22.6 को देखें

- चित्र में मज़दूर क्या कर रहे हैं? इसमें दिये गये औजार देखिए और पत्थर ढोने के साधन बताइए।

चित्र 22.6 अकबरनामा (1590-1595) का एक चित्र जिसमें आगरा के किले में वाटरगेट के निर्माण को दिखाया गया है ।

- ऐसे नवीन तकनीकी विधियों का उपयोग करके क्या कोई बड़े हाल या बड़े भवन बनाये गये हैं? बताइए।

मंदिर, मसजिद और तालाब निर्माण

मंदिरों और मसजिदों का निर्माण सौंदर्यपूर्ण ढंग से करवाया जाता था क्योंकि वे पवित्र स्थान माने जाते थे। वे उनकी शक्ति, समृद्धि और भक्ति के प्रतीक थे।राजराजेश्वर मंदिर इसका एक उदाहरण है। इस मंदिर का निर्माण राजराजदेव नामक राजा ने अपने कुल देवता राजराजेश्वर की पूजा करने के लिए करवाया था। ऐसा इनके शिलालेखों से पता चलता है। गौर करने वाली बात यह भी है कि यहाँ राजा एवं ईश्वर का नाम एक ही है। क्योंकि ईश्वर का नाम शुभप्रद होता है, इसलिए राजा का यह नाम रखा गया। साथ ही साथ वह ईश्वर के प्रतिरूप में भी स्वयं को देखना चाहता था। इस प्रकार वह मंदिर में (राजराजदेव)भगवान की पूजा के साथ अपनी भक्ति करवाकर वह भी (राजराजेश्वर) देव का सम्मान पाना चाहता था।

इसी प्रकार आपको याद होगा कि काकतीय राजधानी ओरुगल्लु के केन्द्र में स्वयंभू शिवालय का निर्माण करवाया गया था। वे दर्शाना चाहते थे कि काकतीय राजा एक स्वतंत्र शक्ति एवं अस्तित्व रखते हैं।

सभी विशालतम मंदिर राजाओं द्वारा बनवाए गए थे। मंदिरों में प्रतिष्ठित मुख्य व अन्य छोटी मूर्तियाँ राजपरिवार एवं सामंतों ने ही बनायी थीं। ये सभी मंदिर राजाओं और उनके सामंतों द्वारा किये गये शासन का लघुदर्शन कराते हैं। सब लोग एक साथ मिलकर जब पूजा करते थे तब ऐसा लगता था मानो ईश्वरीय सत्ता धरती पर आ रही है।

राजा और उच्च वर्ग के परिवार ईश्वर की पूजा के लिए रत्न, मणियाँ, स्वर्णाभूषण आदि दान में देते थे। ताकि ईश्वर की पूजा विशाल स्तर पर की जा सके।

SCERT TELANGANA

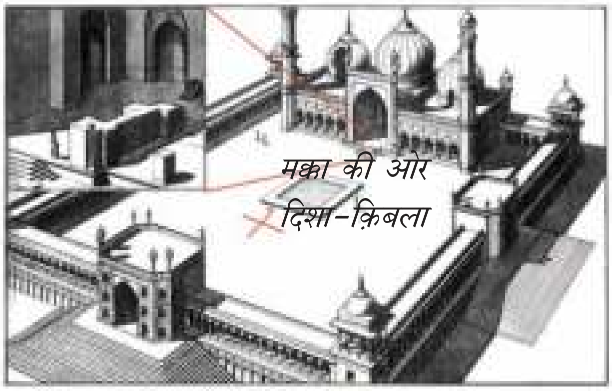

चित्र 22.7 शाहजहाँ की नयी राजधानी शाहजहानाबाद में शाहजहाँ द्वारा निर्मित जामा मसजिद का नक़्शा (1650-1656).

1200 ई. तक ये मंदिर बड़े-बड़े संस्थानों के रूप में अवतरित हुए। जिनके कारण सैकड़ों व्यावसायिक कलाकारों, नर्तकियों, संगीतज्ञों, पुजारियों, आयोजकों, सेवकों आदि को रोजगार उपलब्ध हुए। यह मंदिर कुछ संदर्भों में गाँवों में कर भी वसूल करते और व्यापारियों को वह धन ऋण के रूप में देते थे। कई मेलों, बाज़ारों व उत्सवों का आयोजन किया जाता था। यहाँ वस्तुओं का क्रय-विक्रय भी होता था। इन मंदिरों के आसपास कई शैव व वैष्णवों के मठ बनाये गये थे। ये मंदिर बाद में राजनैतिक एवं आर्थिक शक्तियों के केन्द्रों के रूप में उभरे। राजा और शासक लोग अपने-अपने नाम को मंदिर से जोड़ने के लिए राज्याभिषेक जैसे कार्यक्रमों का आयोजन मंदिरों में करवाते थे। ढेर सारा दान भी करते थे। इस प्रकार मंदिरों के निर्माण एवं विकास में वे सहायक होते थे।

मुसलमान सुलतान और बादशाह ईश्वर के अवतारवाद को नहीं मानते थे। जबकि पारसी इतिहास से पता चलता है कि कुछ सुलतान 'ईश्वर के प्रतिरूप' के रूप में माने जाते थे। दिल्ली की मसजिद के एक शिलालेख में इस प्रकार लिखा है- "ईश्वर ने ही अलाउद्दीन को राजा के रूप में नियुक्त किया, क्योंकि उनमें अतीत के महान न्यायवादी मूसा एवं सुलेमान के गुण थे। क्योंकि ईश्वर स्वयं महान न्यायकर्ता एवं निर्माता है। उन्होंने ही अव्यवस्था को मिटाते हुए एक व्यवस्थित व समरूप विश्व का निर्माण किया।"

नये राजवंश के राजा अधिकार में आते ही अपना नैतिक आधिपत्य स्थापित करने का प्रयास करते थे। नये प्रार्थना स्थलों का निर्माण कर वे यह बताना चाहते थे कि हम ईश्वर के साथ सहसंबंध रखते हैं, यदि आकस्मिक कोई राजनैतिक परिवर्तन होते तो मुख्य रूप से ऐसा कहा जाता था। शासक भी पंडितों व साधुओं को भूदान करके उनकी राजधानियों व नगरों को सांस्कृतिक केन्द्रों के रूप में स्थापित करने का प्रयास करते थे। जिससे उनको ख्याति प्राप्त होती थी।

जनता में ऐसा विश्वास था कि राजाओं के शासन व्यवस्था के प्रभाव से देश की सभी खनिज संपदाएँ समृद्ध रहती थी तथा समय पर वर्षा होती थी। उस समय तालाबों जलाशयों द्वारा शुद्ध जल की आपूर्ति को महान कार्य समझा जाता था। और देहली-इ कुहाना के पास एक बड़े जलाशय के निर्माण के कारण इल्तुत्मिश ने बहुत प्रशस्ति पायी। इसे हौज - ए -सुल्तानी या राजा के जलाशय के नाम से जाना जाता था।

शासकों ने सामान्य जनता के उपयोग हेतु छोटे-बड़े तालाब व जलाशयों का निर्माण करवाया था।

चित्र 22.8 अमृतसर में हरमदर साहिब(स्वर्ण मंदिर) साथ में पवित्र सरोवर

SCERT TELANGANA

- आप ने ग्रामदेवता व बड़े मंदिरों व मसजिदों के बारे में पढ़ा है। वे सभी आपस में अलग हैं, क्यों ?इसका क्या कारण हो सकता है ?

मंदिरों को ध्वंस क्यों किया गया ?

क्योंकि मंदिर राजाओं की भक्ति, समृद्धि, अधिकार का प्रतीक थे। इसलिए यह आश्चर्य नहीं है कि जब कोई राजा दूसरे राज्यों पर आक्रमण करते तो इन भवनों को निशाना बनाते है। नवीं सदी के आरंभ में पांड्य राजा श्रीमर श्रीवल्लभ ने श्रीलंका पर आक्रमण कर सेन-I (831-851) नामक राजा को हराया था। बौद्ध संन्यासी व इतिहासकार धम्मकिति ने इस प्रकार लिखा है-"उसने सभी मूल्यवान वस्तुएँ लूटीं......रत्न भवन में स्थित बौद्ध की स्वर्ण मूर्ति भी लूट कर ले गया।" इस प्रकार सिंहल के राजा सेन - II ने इसका बदला लेने के लिए पांड्य राजधानी मदुराई पर आक्रमण करने का आदेश दिया। यह आक्रमण केवल बौद्ध की स्वर्ण मूर्तियों को वापस लाने के लिए ही किया गया। ऐसा एक बौद्ध भिक्षु ने लिखा है।

इसी प्रकार ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारंभ में चोलराजा राजेन्द्र -I ने अपनी राजधानी में शिवालय का निर्माण करवाया और पराजित राजाओं के पास से लूटे धन और उपहारों से इसे भर दिया। इनमें चालुक्य राजाओं की सूर्यपीठिका, पूर्वी चालुक्यों से गणेश व दुर्गा की मूर्तियाँ तथा नंदी की प्रतिमा, उड़ीसा के कलिंग राजा से भैरव प्रतिमा (शिव का एक रूप), पश्चिम बंगाल के पाल शासकों से जीती गईं काली की मूर्तियाँ थीं।

गज़नी का सुलतान महमूद चोल राजा राजेन्द्र-I का समकालीन था। वह भारत पर आक्रमण कर हारे हुए राजाओं की संपत्ति व उनकी संपत्तियों को लूट कर उनकी समृद्धि व आदर्श को नष्ट करना चाहता था। उस समय तक महमूद गज़नी कोई प्रसिद्ध शासक नहीं था। लेकिन मंदिरों के विध्वंस के कारण विशेष कर सोमनाथ मंदिर को ध्वंस कर वह इस्लाम का नायक बनना चाहता था। लगभग मध्य युग की यह राजनैतिक संस्कृति थी की सभी राजा अपनी राजनैतिक शक्ति और सैन्यबल की सफलता का प्रदर्शन कर हारने वाले राजाओं के पवित्र स्थलों पर अपना अधिकार करते थे।

- किस प्रकार से राजेन्द्र -I और महमुद गज़नी की नीतियाँ उस समय का उत्पाद थी। दोनों एक-दूसरे से किस प्रकार से भिन्न थीं ?

विजयनगर साम्राज्य कालीन राजकीय शैली

संपूर्ण दक्षिण भारत में एक महत्वपूर्ण राजधानी विजयनगर शहर को विजयनगर साम्राज्य के राजाओं ने विकसित किया था। इन्होंने प्राचीन भवन निर्माण पद्धति को अपनाया था। इन्होंने विरुपक्षा, रामचंद्र, कृष्ण, विट्ठलेश्वर मंदिर का निर्माण तमिलनाडु में चोल व पांड्य राजाओं द्वारा विकसित कला को अपना कर एक कला का उपयोग किया था।

चित्र: 22.9 हम्पी में विरूपक्षा मंदिर

SCERT TELANGANA

चित्र 22.10a कमल मंदिर

चित्र 22.10b रानी का हमाम

इसमें विमान तथा गोपुरम भी निहित थे। उन राजाओं ने **गोपुरम** पर विशेष ध्यान दिया। उन्होंने इतनी ऊँचाई पर **गोपुरम** का निर्माण करवाया जो पहले कभी न किया गया था। पहली मंजिल काले ग्रेनाइट तथा अन्य मंजिले ईंट एवं चूनें से बनवायी गयी थी। राजमंदिरों के शिखर बहुत ऊँचे तथा गर्भगृह छोटे होते थे। ताकि दूर से भी मंदिर दिखाई दे सके। ये केवल उस साम्राज्य के ही प्रतीक नहीं हैं बल्कि अपने निर्माण में सहायक धन-संपदा एवं तकनीक को दर्शाते हैं। विशेष निर्माण कार्यों में मंडप एवं बरामदे व बड़े स्तंभों थे जो मंदिर परिसर के भीतर का आधार लेकर बनाया गया था। आइए विरुपक्षा मंदिर को पास से देखते हैं-

विरुपक्षा मंदिर कई शताब्दी पुराना है, वहाँ शिला लेखों पर लिखा है, इसमें पहली मूर्ति की स्थापना नवीं-दसवीं सदी में हुई, इनका विस्तार विजय नगर राजाओं के काल में हुआ। मूल मंदिर के सामने कृष्णदेवराय ने स्वयं संबोधित करने के लिए एक सभागार का निर्माण करवाया। इनकी सजावट अत्यंत बारीक शिल्पकलाकारी वाले स्तंभों से की गयी है। पूर्वी गोपुरम के निर्माण का श्रेय भी इन्हीं को जाता है। इसे मंदिर के गर्भगृह के चारों ओर मुख्य मंडपों को मिलाते हुए बनाया गया है। इससे मुख्य मूर्ति भवन के छोटे भाग को ही घेरती है।

मंदिरों के इस सभागार का उपयोग विविध प्रकार के कार्यों के लिए किया जाता था। इसके कुछ स्थानों पर देवताओं के चित्र, मूर्ति आदि को रखकर उनकी पूजा अर्चना की जाती थी या पूजा उत्सवों में संगीत, नृत्य, नाटक आदि का आयोजन किया जाता था। दूसरे सभागारों को देवताओं के विवाह आदि कार्यक्रमों के आयोजन के लिए काम में लाया जाता था। इनमें अन्य देवताओं की प्रतिमूर्तियों के छोटे गर्भगृह भी हैं, जिनमें अलग-अलग मूर्तियाँ रखी गयी हैं। जो मुख्य मंदिर में रखी गयी मूर्तियों से भिन्न हैं।

विजयनगर साम्राज्य के राजाओं द्वारा बनवाये गये ये मंदिर तमिलनाडु के मंदिरों के प्रतिरूपों पर आधारित थे। उन्होंने ऐसे भव्य भवनों का भी निर्माण करवाया जिनमें तत्कालीन आधुनिक तथा सुलतानी निर्माण शैली का भी प्रयोग किया गया था। प्रसिद्ध लोटस महल (ब्रिटिश पर्यटकों द्वारा नामांकित), रानियों के स्नानागार तथा हाथियों के रहने के स्थान इसके उदाहरण हैं। आप इन भवनों में उपयोग किये गये कमानों एवं गुंबदों को भी देख सकते हैं। ये चूने से पलस्तर करके उभारे गये हैं। इनकी सजावट पुष्पों व पक्षियों के चित्र बनाकर की गयी है। इन भवनों से तत्कालीन राजाओं के वैभव का पता चलता है। जो उनके उच्च व शानदार रहन-सहन और

SCERT TELANGANA

उनकी सुख-समृद्धि संबंधी रुचि को दर्शाता है। फिर भी ऐसा भी नहीं कहा जा सकता कि ये भवन सल्तनती इमारतों की हुबहू नकल हैं। इनमें दक्षिण के मंदिरों की कमानें, गुंबद व सल्तनती शिल्पकारी का मिश्रण है। इसे भली-भाँति लोटस महल में देखा जा सकता है, जहाँ राजा अक्सर सभाएँ आयोजित किया करते थे।

चित्र 22.10c हाथियों का अस्तबल

विजयनगर राजाओं का सबसे प्रभावी निर्माण महानवमी डिब्बा नामक एक बहुत ऊँचा चबूतरा है, जो 55 फीट ऊँचे पाँच मंजिला भवन के बराबर है और 11000 फीट क्षेत्रफल घेरे हुए है। इसकी ऊँचाई दो सौ वर्षों में कम से कम तीन बार बढ़ायी गयी। इस चबूतरे की परत विविध प्रकार के मूर्तियों से ढकी गयी है। इसके ऊपर पूर्ण भवन नहीं है। इस चबूतरे को कपड़े के शामियाने द्वारा लकड़ी के खंभों का उपयोग करके ढका गया था। इस चबूतरे पर विजयनगर राजा नवरात्रि पूजा करते थे। वहीं पर वे दशहरे की सभा का आयोजन करते थे जिसमें उनके सभी मुख्य लोग, नेता और अधिकारी भाग लेते थे। इसमें यूरोप के राजदूत, एवं सुलतानों के भाग लेने के प्रमाण भी मिलते हैं।

- बड़े साम्राज्यों के राजा भवनों का निर्माण करवाते समय विविध शैलियों का प्रयोग क्यों करते होंगे?

बगीचे, समाधियाँ व किले

मुगलों के समय शिल्पकला अधिक जटिल थी। क्योंकि मुगल राजा व्यक्तिगत रूप से साहित्य, कला और शिल्प में विशेष रुचि दिखाते थे। बाबर ने अपनी आत्मकथा में बगीचों के प्रति अपनी रुचि दर्शायी है। इसमें बगीचों की योजना, निर्माण आदि की चर्चा है। यह बगीचा आयताकार दीवारों के भीतर था। इसकी सिंचाई के लिए कृत्रिम नहर की व्यवस्था थी। यह बगीचा चार भागों में विभाजित था। इसके लिए चारदीवारी भी बनवाई गई थी।

इन बागों को चहार बाग के नाम पुकारा जाता था, क्योंकि ये चार सममीतिय भागों में विभाजित थे। अपने अकबर के साथ-साथ जहाँगीर और शाहजहाँ ने कई सुंदर बाग बनवाये, जिनमें से कुछ काश्मीर, आगरा और दिल्ली में भी थे। (चित्र 22.11 में देखिए।)

अकबर के काल में कई सुंदर भवनों का निर्माण करवाया गया। अकबर द्वारा बनवाये गये भवनों में उसके मध्य एशिया के वंशज तैमूर की समाधियों हैं। मुगलों के निर्माण में मुख्य शिखर गुबंद व ऊँचे-लंबे मुख द्वार (Pishtaq) मुगल शिल्प कला के महत्वपूर्ण पहलू है। सर्वप्रथम हुमायुँ की

चित्र 22.10d महानवमी डिब्बा

SCERT TELANGANA

समाधि में भी इसके दर्शन होते हैं। यह चहार बाग उद्यानों के मध्य में परंपरागत ढंग से बनवाया गया है। इसे -(आठ कमरों से घिरा एक केंद्रीय हॉल) के नाम से जठाना जाता है। आठ स्वर्ग (eight paradises or *hasht bihisht)* या हश्त बिहिश्त, सभागार के चारों ओर आठ कमरे हैं। इसके निर्माण में लालपत्थरों और कोनों के लिए संगमरमर के पत्थरों का इस्तेमाल किया गया है।

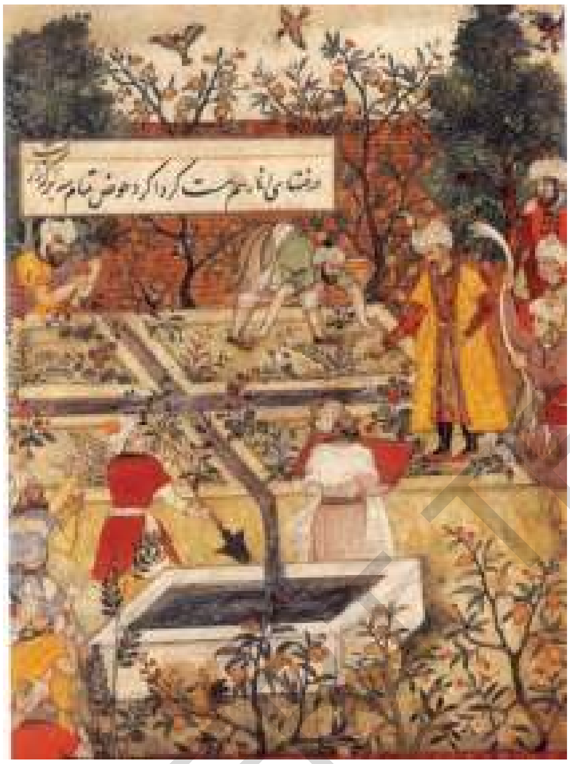

चित्र: 22.11 A में काबुल में बाबर चहारबाग का निर्माण करते कर्मचारियों का निरीक्षण करते हुए, ध्यान दिजिए कि किस प्रकार नहरे चहार बाग की विशेषता को दर्शाती है।

चित्र: 22.12 हुमायूँ की समाधि क्या आप पानी की नहर देख सकते है ?

शाहजहाँ के काल में अनेक मुगल शिल्प, वास्तु शैलियों का मिश्रण करते हुए नवीन वास्तु शिल्पों का निर्माण किया गया। उसके काल में बड़े पैमाने पर निर्माण कार्य किया गया जो विशेषकर आगरा और दिल्ली में किया गया। आगरा और दिल्ली के क्षेत्र में किया गया। इसमें दीवान-ए-खास या दीवान - ए - आम की योजना निजी व आम सभासदों को संबोधित करने के लिए की गयी। इस स्थान का वर्णन चिहिल सुतुन (*chihil sutun)* या चालीस खंभों के सभागार के रूप में किया जाता है, जो एक बड़े क्षेत्र में है।

शाहजहाँ द्वारा बनवाया गया सभागार विशेषकर मसजिद की तरह है। राजगद्दी के नीचे स्थित स्तंभ को पवित्र किब्ला माना जाता है। क्योंकि मुसलमान लोग नमाज करते समय मक्का की ओर अपना मुँह रखते हैं, इसलिए इसमें इस बात का ध्यान रखा गया कि सभा संबोधन के समय सबका मुँह उसी दिशा में रहे। इन शिल्पों के द्वारा ही राजा को धरती पर ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में बताने का विचार आया था।

दिल्ली के लाल किले में शाहजहाँ द्वारा निर्मित नया न्यायालय राजा का शासन और न्याय से संबंध दर्शाता है। बरामदे में राजसिंहासन के पीछे स्थित दैवसंबंधी पित्र दुरा (*pietra dura)* शैली है जो तथा ग्रीक भगवान आर्फियस का बाँसुरी बजाते हुए चित्र दर्शाता है। यह मान्यता है कि

चित्र: 22.14 आगरा में स्थित नदीमुख के सामने बगीचे में मरम्मत की जा रही। नदी देखिए कि किस तरह प्रमुखों व्यक्तियों के महल बगीचे यमुना नदी के दोनों किनारों पर निर्मित किए गए इसी के बाएं ओर ताजमहल है

SCERT TELANGANA

चित्र: 22.15 आगरा का ताजमहल

ऑर्फियस के संगीत को सुनकर खूँख्वार जानवर भी भेदभाव छोड़कर शांति से साथ रहने लगते हैं। शाहजहाँ द्वारा निर्मित सभागार अमीर-गरीब का भेद मिटाने व सबको समान न्याय देते हुए शांति के साथ रखने के उद्देश्य से बनवाया गया था।

शाहजहाँ ने अपने शासन के आरंभिक काल में अपनी राजधानी आगरा में यमुना तट पर अपना भव्य आवास बनवाया। ये चहारबागों के मध्य में स्थित था। अनेक इतिहासकारों ने इस चहारबाग को नदी मुख उद्यान (river-front garden) का नाम दिया है। इसके आवासीय प्रांत चहारबाग के मध्य में न होते हुए नदी के किनारे व उद्यान के अंत में निर्मित किये गये हैं।

शाहजहाँ ने इस नदी-मुख उद्यान को अपने द्वारा निर्मित विश्व प्रसिद्ध इमारत ताजमहल में स्थान दिया। यह बिल्कुल यमुना नदी के सम्मुख है। यहाँ नदी के पास ऊँचे सतह पर संगमरमर से भव्य समाधियों का निर्माण करवाया गया है। चहारबाग इसके दक्षिण में स्थित है। दिल्ली में शाहजहाँ द्वारा स्थापित नगर शाहजहाँबाद में बनवाया गया राजमहल भी नदी के किनारे है। इसका केवल यह मतलब निकलता है कि उच्च वर्ग के राजा नदियों के किनारे महल बनाने में रुचि लेते थे। जैसा कि उसके बड़े बेटे दारा शिकोह ने भी किया था। दूसरे लोग अपना आवास यमुना नदी से दूर शहर में बनवाते थे।

- मान लो तुम शिल्पकलाकार हो और बाँस की लकड़ी से बने पटरे पर ज़मीन से पचास मीटर की ऊँचाई पर खड़े होकर काम कर रहे हो। यदि तुम्हें कुतुबमीनार की पहली मंजिल पर एक शिलालेख लगाना हो, तो तुम क्या करोगे?

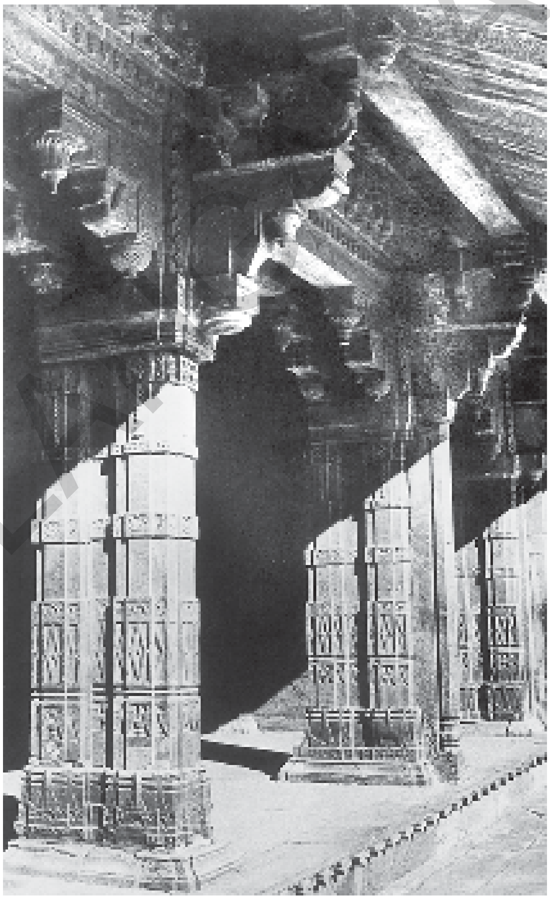

चित्र: 22.16 फतेहपुर सीकरी में जोधाबाई महल के अलंकृत स्तंभ जो बाहर निकले हुए छत को सहारा दिये हुए हैं ये गुजरात क्षेत्र की निर्माण कला का अनुकरण करते हैं।

उसी समय मुगलों के समान ही गोलकोंडा (हैदराबाद) के कुतुबशाही शासक भी व्यापक निर्माण क्रियाकलापों में संलग्न थे। इसके अंतर्गत हुसेन सागर, गोलकोंडा किला, कई बगीचे (जिसमें तालाब और फौव्वारे थे) तथा उनके लिए सुंदर मकबरों के निर्माण सम्मिलित हैं। प्रसिद्ध चारमीनार व मक्का मसजिद का निर्माण भी उनके शासन काल में किया गया था। उन्होंने फारसी, मुग़ल और दक्कनी शैली को मिश्रित किया था।

चित्र : 22.16 कुतुबशाही मकबरे का दृश्य

चित्र: 22.16a हय्यात बख्शी बेगम का मकबरा

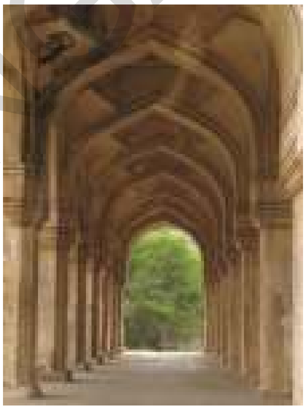

चित्र : 22.16b कुतुबशाही मकबरे का महिराब

मुख्य शब्द :

शिलालेख

स्मारक (स्मारक)

राजवंश

शिल्प

राज्याभिषेक

हमने क्या सीखा?

1. किस प्रकार से ट्रिबेट शिल्प, अर्कुएट शिल्पकला से भिन्न था?
2. शिखर से क्या तात्पर्य है?
3. मुगलों के चहार बाग के मूलतत्व क्या थे?
4. मंदिर राजाओं के वैभव को किस प्रकार दर्शाते हैं?
5. परिचय का दूसरा अनुच्छेद पढ़िए जो पृष्ठ १९५ पर है और टिप्पणी लिखिए।?
6. पता लगाइए कि क्या आपके गाँव या कस्बे में किसी महापुरुष की प्रतिमा या समाधि है? वह वहाँ क्यों स्थापित की गयी। इसका क्या उपयोग है?
7. अपने पास के किसी उद्यान या बगीचे में जाओ और बताओ कि यह किस प्रकार मुगलों के बागों से समान या भिन्न है?
8. भारत के मानचित्र में निम्न स्थानों को अंकित किजिए।

   अ) दिल्ली आ) आगरा इ) अमृतसर ई) तंजाऊर उ) हम्पी ऊ) यमुना नदी

SCERT TELANGANA

शैक्षिक मापदंड (AS)

कक्षाकक्ष प्रक्रिया : इस समय का उपयोग उस क्रियाकलाप के लिए किया जाना चाहिए जिससे बच्चा प्रस्तुत विषयवस्तु समझ सके। विषयवस्तु के मध्य से प्रश्न पूछना, इस कार्य में सहायक हो सकता है। ये प्रश्न विविध प्रकार के होने चाहिए जिनमें विविध पहलुओं पर तार्किक विचार करने, कारण और प्रभाव बताने, सुव्यवस्थित करने, मनोचित्रण/भावचित्रण, निरीक्षण, विश्लेषण, चिन्तन एवं कल्पना, प्रतिक्रिया, व्याख्या करने के अवसर हों। प्रत्येक पाठ की विषयवस्तु के मुख्य भाव पर उसके उपसंकल्पनाओं सहित चर्चा होनी चाहिए। साथ ही उसमें दिये गये मुख्य शब्दों पर भी।

1) **भावगत बोध (AS1):** पूछताछ व चर्चा के माध्यम से भाव अंतर्बोध व सीखने के लिए प्रेरित करना चाहिए। उदाहरणतः सजीव उदाहरणों के माध्यम से संदर्भ समझने, उसकी व्याख्या करने, निरीक्षण करने आदि।

2) **विषयवस्तु पढ़ना, अर्थग्रहण और प्रतिक्रिया (AS2):** समय-समय पर बच्चों को संदर्भों जैसे-किसानों, मिल मज़दूरों, या चित्र जो पाठ में दिये गये हैं, जो सीधे-सीधे विषयों से संबंधित नहीं हैं, उनके बारे में चर्चा करवायें। छात्रों को विषयवस्तु संबंधित मुख्य भाव समझने और व्याख्या करने का समय दिया जाना चाहिए।

3) **सूचनाप्राप्ति कौशल (AS3):** पाठ्यपुस्तक में सामाजिक अध्ययन शिक्षण के प्रत्येक पहलू का समावेश संभव नहीं है। उदाहरणतः शहरी क्षेत्र के बालक को उनके क्षेत्र के चयनित प्रतिनिधि के बारे में तथा ग्रामीण प्रांत के बच्चों को सिंचाई के साधनों के बारे में जानकारी एकत्र करने के लिए कहा जा सकता है। अर्थात छात्रों के क्षेत्र के अनुसार बच्चों को कार्य दिये जा सकते हैं। उनके द्वारा प्राप्त तथ्य, पुस्तक के तथ्यों से भिन्न हैं कि नहीं अच्छी तरह देख परख लें। इन तथ्यों का परियोजना के माध्यम से संचय करना सूचनाप्राप्ति कौशल है, जिसका सामाजिक अध्ययन शिक्षण में विशेष महत्व है। उदाः तालाबों के बारे में जानकारी- वे इससे संबंधित चित्र या मानचित्र बना सकते हैं। अथवा संग्रहित तथ्यों को पोस्टर या चित्र के माध्यम से प्रस्तुत कर सकते हैं। इस कौशल में संग्रहित सूचनाओं की तालिका बनाना या उनका विश्लेषण भी समाहित है।

4) **तात्कालिक विषयों पर कारण बताना एवं तर्क देना (AS4):** बच्चों को अपने रहन-सहन का दूसरे क्षेत्रों के लोगों के रहन-सहन के तरीकों की तुलना, अपने समय की परिस्थितियों से अतीत की परिस्थितियों की तुलना करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। हो सकता है कि सबके उत्तर भिन्न हों, उन्हें कारण बताने, सूचना देने, उन्हें पुनर्व्यवस्थित करने व उनकी व्याख्या करने का मौका मिलना चाहिए।

5) **मानचित्र कौशल (AS5):** पाठ्यपुस्तक में विविध प्रकार के मानचित्र और चित्र दिये गये हैं। मानचित्र संबंधी प्रस्तुतीकरण में निपुणता एवं उसमें स्थान आदि पहचानना, दोनों ही महत्वपूर्ण है। मानचित्र कौशल के विकास के विविध स्तर हैं- कक्षा का मानचित्र बनाना और ऊँचाई, दूरी आदि मानचित्र में दर्शाना आदि। इसमें पाठों में दिये गये पोस्टरों व फोटोज का चित्रांकन भी करवाया जा सकता है। उपयोग में लाने वाले चित्र पाठों में भी हो सकते हैं, बाहर के भी। कभी-कभी चित्रों या शिल्पों को शीर्षक देने के काम भी दिये जा सकते हैं।

6) **प्रशंसा एवं संवेदनशीलता (AS6):** हमारा देश विविधताओं से भरा है। यहाँ अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। अनेक धर्म और जातियाँ हैं। धनी, निर्धन, लिंग आदि की भिन्नता भी मौजूद है। सामाजिक अध्ययन को इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए, छात्रों में इनके प्रति संवेदशीलता का भाव विकसित करते हुए सामाजिक जिम्मेदारी उठाने के लिए प्रेरित करना चाहिए, जिससे ये विविधताएँ हमारे लिए समस्या न बनकर हमारे विकास का आधार बनें। अध्यापक कक्षा 6 एवं 7 की सामाजिक अध्ययन पाठ्यपुस्तक द्वारा बच्चों को सामाजिक अध्ययन के विषयों का परिचय करवायें।

SCERT TELANGANA

परिशिष्ट (Appendix)

अतिरिक्ति जानकारी और मानचित्र (जहाँ कहीं आवश्यकता है) जोड़े जाए।

संसार का राजनैतिक मानचित्र

SCERT TELANGANA

भारत का प्राकृतिक मानचित्र

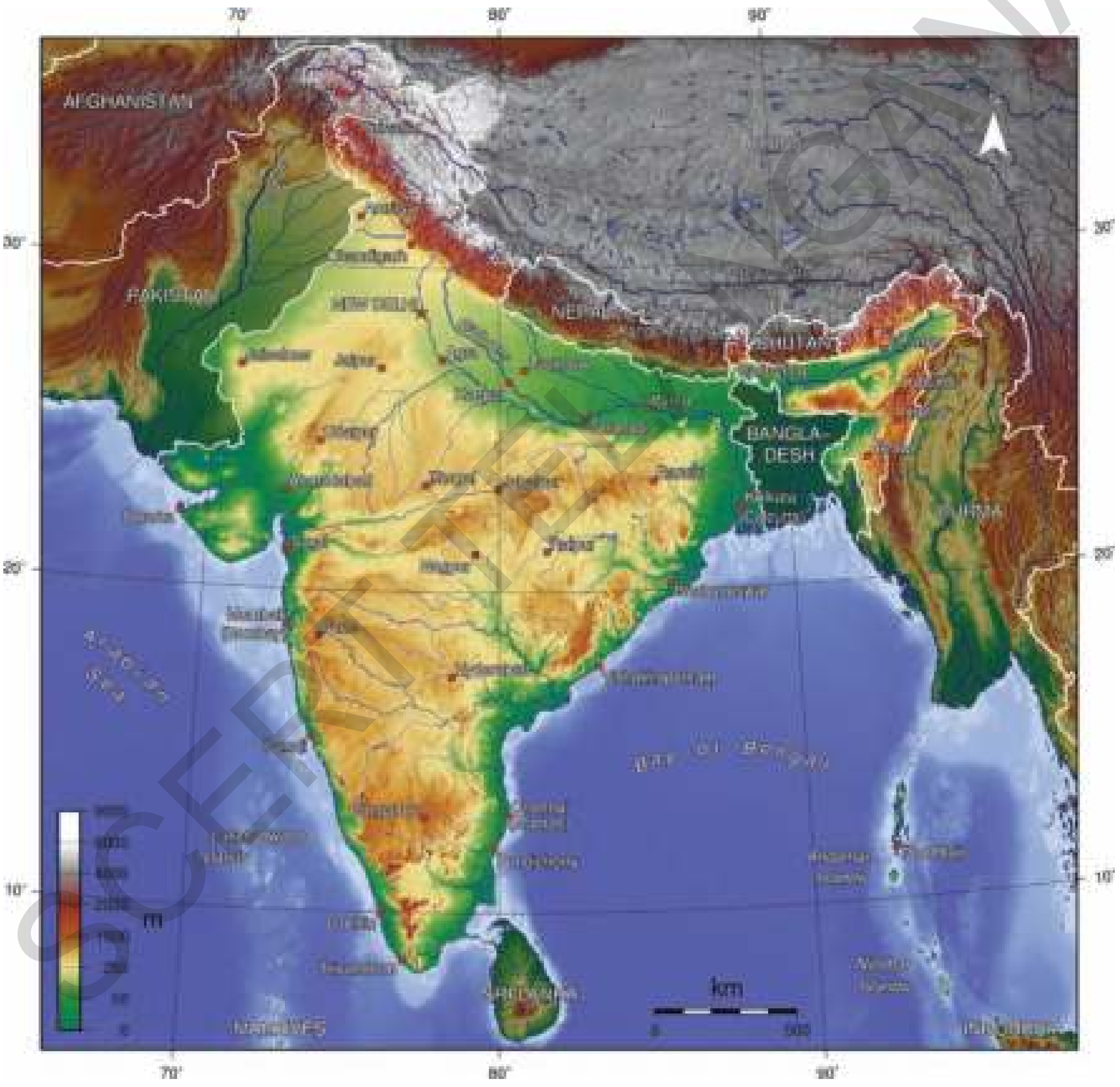

SCERT TELANGANA

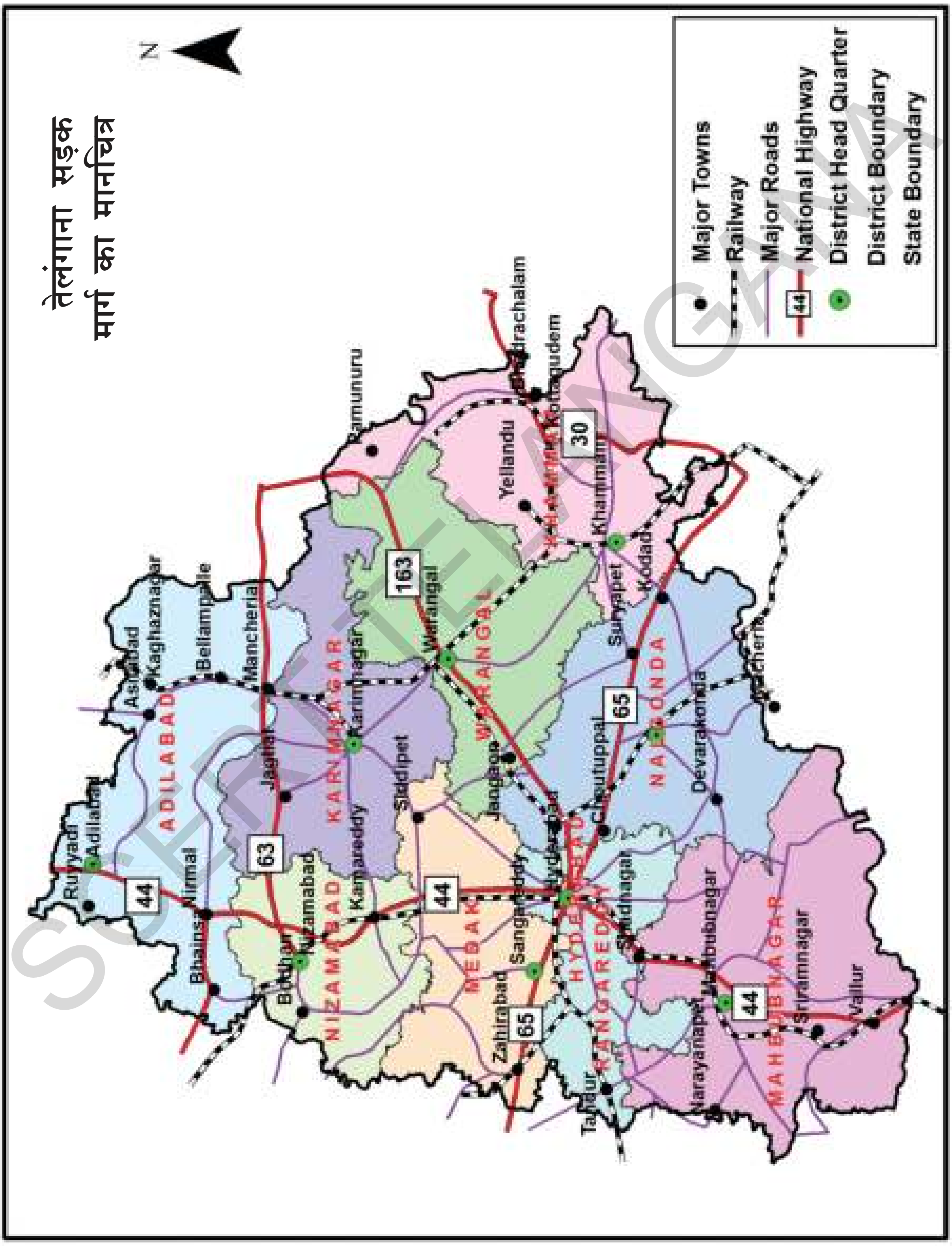

तेलंगाना सड़क मार्ग का मानचित्र
N
Major Towns
Railway
Major Roads
National Highway
District Head Quarter
District Boundary
State Boundary
ADILABAD
NIZAMABAD
KARIMNAGAR
WARANGAL
MEDAK
HYDERABAD
RANGAREDDY
NALGONDA
MAHABUBNAGAR
Adilabad
Nirmal
Bhainsa
Bellampalle
Mancheria
Kaghaznagar
Jagtial
Karimnagar
Kamareddy
Bodhan
Nizamabad
Siddipet
Warangal
Jangaon
Sangareddy
Zahirabad
Tandur
Shadnagar
Mahbubnagar
Narayanapet
Srirampur
Vallur
Devarakonda
Choutuppal
Suryapet
Kodad
Khammam
Yellandu
Kothagudem
Bhadrachalam
44
63
65
163
30

विश्व का बाह्य रेखीय मानचित्र

SCERT TELANGANA

तेलंगाना का राजनैतिक मानचित्र

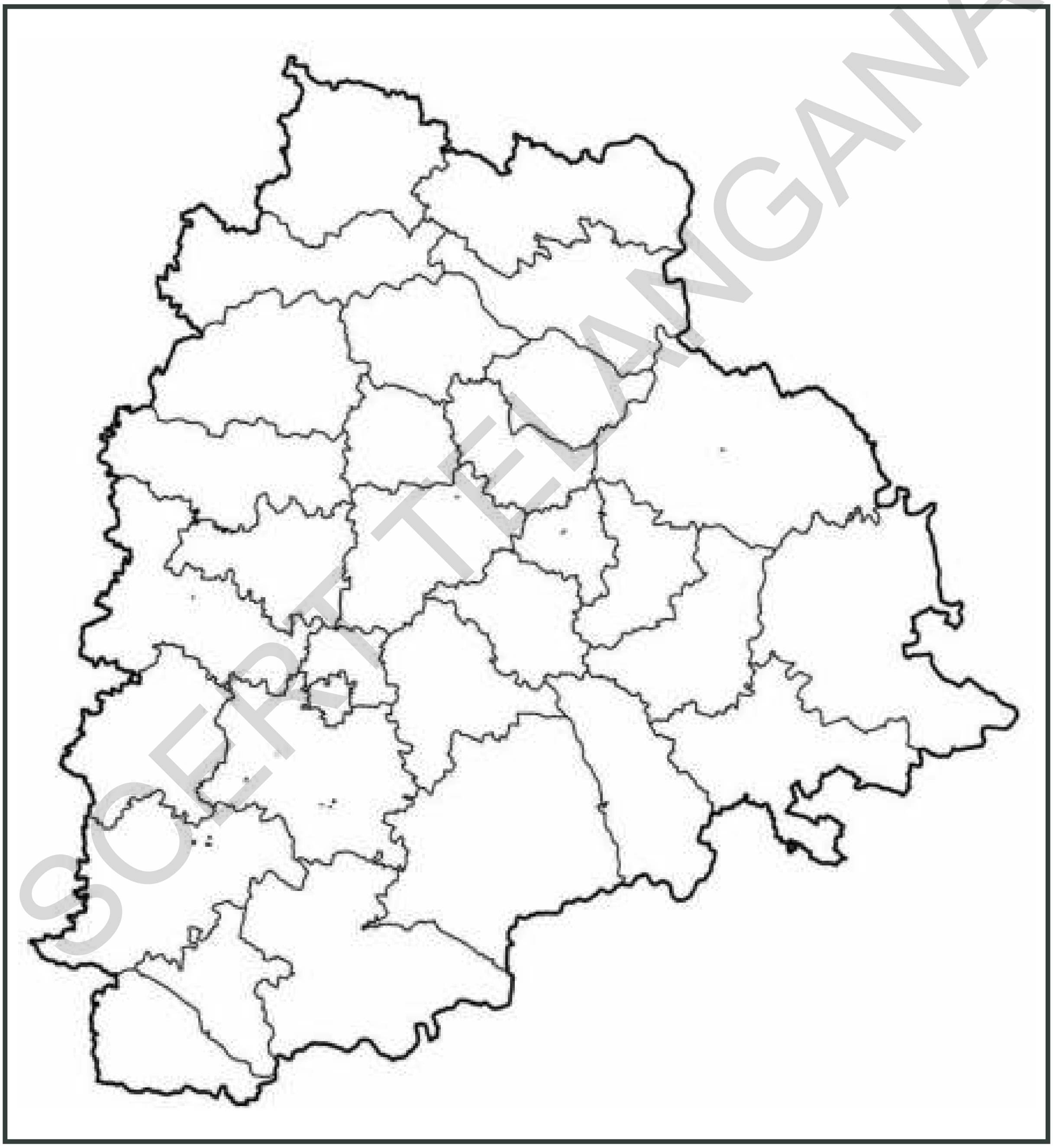

SCERT TELANGANA

Telangana State Symbols

Sl. No.	State Symbol	Common Name	Telugu Name
1.	State Animal	Spotted Deer	Jinka
2.	State Bird	Indian Roller	Pala Pitta
3.	State Tree	Jammi Chettu	Jammi
4.	State Flower	Tangedu	Tangedu

State Animal

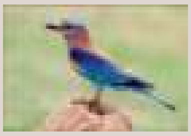
State Bird

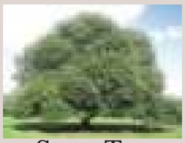
State Tree

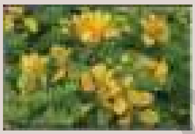
State Flower

State Logo

National Symbols of India

National Flag : Designed by Sri Pingali Venkaiah

National Symbol : Lion Capital - Adopted from the Emperor Asoka's dharma stupa established at Saranath.

National Tree : Banyan tree

National Flower : Lotus

National Language : Hindi

National Fruit : Mango

National River : Ganges

National Animal : Royal Bengal Tiger

National Anthem : Written by Sri Ravindranath Tagore.

Jana gana mana...

National Bird : Peacock

National Song : Vande Mataram Written by Sri Bamkim Chandra Chaterji

National Aquatic Animal : Dolphin

National Calendar : Based on Shaka Samvatsara (Chaitra masam to Phalguna masam). We follow the Gregorian Calendar officially.

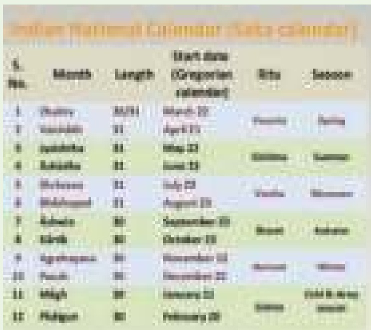

National Heritage Animal : Elephant

Indian Standard Time (IST) : Based on 82 1/2 degrees East Longitude. Our local time is 5hrs.30min. ahead of Greenwich mean time(GMT).

SCERT TELANGANA

Timeline of Satavahana Kings
(230 BCE - 225 CE)

Srimukha	271 BCE - 248 BCE
Krishna	248 BCE - 230 BCE
Satakarni - I	230 BCE - 220 BCE
Satakarni - II	184 BCE - 128 BCE
Hala	42 CE - 51 CE
Goutamiputra Satakarni	62 CE - 86 CE
Vasishtaputra Pulomavi	86 CE - 114 CE
Sivasri Satakarni	114 CE - 128 CE
Yagyasri Satakarni	128 A.D. - 157 CE

Timeline of Chola Kings
(900 CE - 1279 CE)

Vijayalaya	850 CE - 871 CE
Aditya Chola	871 CE - 905 CE
Parantaka - I	905 CE - 907 CE
Rajaraja - I	985 CE - 1016 CE
Rajaraja Chola	1016 CE - 1044 CE
Rajadhi Raja	1044 CE - 1052 CE
Veera Rajendra	1064 CE - 1069 CE
Kuluthonga Chola	1070 CE - 1121 CE
Rajaraja - II	1173 CE - 1178 CE
Kuluthonga Chola -III	1178 CE - 1219 CE
Rajendra - III	1256 CE - 1270 CE

Telangana Fact Sheet

- Telangana Area : 1,12,077 sq km
- Density : 307
- Latitude extent : $15^0 46'$ N - $19^0 47'$ N
- Longitudeval extent : $77^0 16'$ Eastern longitude
  $81^0 30'$ Eastern longitude
- Country : India
- Region : South India
- Formed on : June 2nd, 2014
- Capital : Hyderabad
- No. of Districts : 31
  (Adilabad, Komarambheem, Bhadradri, Jayashankar, Jogulamba, Hyderabad, Jagitial, Janagoan, Kama Reddy, Karimnagar, Khamma, Mahabubabad, Mahabubnagar, Manchiryal, Medak, Medchal, Nalgonda, Nagarkurnool, Nirmal, Nizamabad, Ranga Reddy, Peddapalli, Rajanna, Sanga Reddy, Siddipet, Suryapet, Vikarabad, Wanaparthy, Warangal Urban, Warangal Rura, Yadadri.)
- Official Languages : Telugu, Urdu
- No.of Assembly seats : 119
- No.of Council seats : 40
- No.of Lok sabha seats : 17
- No.of Rajya sabha seats : 7
- Important Rivers : Godavari, Krishna, Manjira, Musi
- No. of Zilla Praja Parishats : 9
- No. of Mandal Praja Parishats : 443
- No. of Municipal Corporations : 6
- No. of Municipalities : 38
- No. of Revenue Mandals : 464
- No. of Gram Panchayats : 8778
- Total Population (as per 2011 census) : 351.94 Lakhs
- No. of Males : 177.04 Lakhs
- No. of Females : 174.90 Lakhs
- Sex Ratio (No. of Females per 1000 Males) : 988
- Density of Population (per Sq.k.m.) : 307
- Literacy Rate : 66.46%
- Male Literacy Rate : 74.95%
- Female Literacy Rate : 57.92%

SCERT TELANGANA

सीखने की संप्राप्तियाँ (Learning Outcomes)

सामाजिक अध्ययन
(Social Studies)
कक्षा - VII (Class-VII)

बच्चे...

- बाढ़ जैसी आपदाओं के समय लिये जाने वाले बचाव कार्यों की व्याख्या करता है तथा आपदाओं के कारणों की व्याख्या करते हैं।
- काकतीय, मुगल और विजयनगर राजाओं की सैन्य कूटनीतियों और प्रशासन की व्याख्या करते हैं।
- मंदिरों, मकबरों और मसजिदों के निर्माण के लिए उपयोगी शैली और तकनीक में विशिष्ट विकास का वर्णन करते हैं।
- विभिन्न धार्मिक आंदोलनों के उद्भव के कारणों का विश्लेषण करते हैं।
- राज्य के मानचित्र में उनके चुनाव-क्षेत्र को दर्शाते हैं।
- मानचित्र का वर्गीकरण करते हैं और उसके उपयोगों की व्याख्या करते हैं।
- उच्च भूमि और सतही भूमि पर रहने वाले लोगों के बीच अंतरों के ब्योरो को दर्शाती तालिका बनाते हैं।
- हाइड्रोसाइकल (जल चक्र) की व्याख्या करते हैं।
- मछुआरों की जीवन स्थितियों को प्रतिबिंबित करते हैं।
- यूरोपीय नदियों का विवरण एकत्रित करते हैं और तालिका बनाते हैं।
- आफ्रीका के मानचित्र में अफ्रीका के मरूस्थल दर्शाते हैं और उसके बारे में व्याख्या करते हैं।
- बाल मजूदर प्रणाली के लिए एक करपत्र तैयार करते हैं।
- औद्योगीकरण के कारण उत्पादन में आये परिवर्तन का विश्लेषण करते हैं।
- 1857की क्रांति के कारणों का विश्लेषण करते हैं।
- विधानसभा में कानून बनाने की प्रक्रिया की व्याख्या करते हैं।
- ईंट की भट्टियों में काम करने वाले मज़दूरों की परिस्थितियों की व्याख्या करते हैं।
- मंदिरों के विध्वंस पर व्याख्या करते हैं।

SCERT TELANGANA